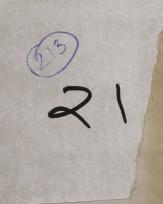


1-343 110111



## भू मि का.

33 KE

दशेरा अथवा विजया दशमीने दहाडे पाडां, बकरां आदि निर्दोष प्राणीओनुं देवीने बळीदान आपवानुं धोरण केटलाक देशी राज्योमां चालतुं आवतुं हतुं; अने ते धोरण चालवानुं कारण मात्र एम समजवामां आवे छे के, वाममार्गीओनुं जे वस्वते प्रबल हतुं ते वस्वते दाखल थइ गयेलुं. जेम जेम विद्यानी दृद्धि थती गइ तेम तेम केटलाक विचक्षण राजक त्ती-ओए एवा बलिदान आपवाथी देवी रंजन थायज नहीं एवं समजी, ते अनार्यरिवाज बंध कर्यों.

आम छतां पण केटलेक स्थळे ए रीवाज हजी हैयाति भोगवे छे. अने तेथी आ ग्रंथथी एम बतावी आपवा प्रयत्न कर्यो छे के, वेद जेवा गंभीर अने माहात्म्यवान धर्मशास्त्रमां आवं बलिदान आपवानुं कोइ पण स्थळे कह्युं नथी एवो वेदशास्त्रसंपन्न पुरुषोनो अनुभव छे. आजथी लगभग १२ वर्ष उपर, गुजरातमां आवेल धर्मपुर राज्यमां, आ रीवाज घणा मोटा आकारमां चालतो हतो; तेथी त्यांना महाराजा साहेबनी इच्छाथी, हिंदुस्थानना विद्वान पंडित महाश्रयोना अभिप्राय पूछवामां आव्या हता के बलिदान आपवुं ते शास्त्रोक्त छे के नहीं? आवा जूदा जूदा सात प्रश्नो पूछवामां आव्या हता, अने तेना उत्तरो हिंदुस्थानना समर्थ पंडित राजोए आपी एम सिद्ध करी बताव्युं छे के, वेद जेवा पवित्र धर्मशास्त्रमां आवुं घातकी कार्य उपदेश्युंज नथी; मात्र केटलाक स्वार्थी माणसोए, देशी राज्यकर्त्ताओनी धर्म श्रद्धानो लाभ लइ आवुं अनिच्छित कार्य प्रवेशावी दीखुं छे. धरमपुरना महाराजा साहेबे पूछावेला प्रश्नोना उत्तरो विचारी आ रीवाज बंध कर्यो छे; अने ते उपरथी ते उरोनो संग्रह करी, आ पुस्तकमां दाखल करवामां आव्यो छे. उत्तरो घणी मोटी संख्यामां आव्या छे, एटले तेमांना केटलाक आ पहेला भागगां दाखल करवामां आव्या छे, अने बाकीना बीजा भागमां दाखल करवामां आवशे.

मोरबीवाळा अष्टावधानी शीघ्रकवि शंकरलाल महेश्वर भट्ट, जामनगरवाळा शास्त्रीजी हाथी भाई हरिशंकर, लीमडीवाळा भट्टजी बैजनाथ मोतीराम, मुंबईवाळा पंडित जेष्टाराम मुकुंदजी आदि समर्थ पंडित राजोना अभिप्रायोनो आ पुस्तकमां समावेश करवामां आव्यो छे, अने ते उपरथी जोई शकाशे के, वेदशास्त्रनी प्रवीणता आ पंडित राजोनी छे ते देशमशहूर छे; एवा पंडित राजोना अभिप्राय जोया पछी, एम आशा राखवी केवळ योग्य छे के, आ क्रूर रीवाज जे जे स्थळे चालतो हशे ते ते स्थळना राज्यकर्त्ता साहेबो अवस्य बंध करशे.

आ हिलचाल सर्व देशीय छे जे जे स्थळे आ रीवाज पचलित होय ते स्थळना महाजनीए आ कार्य माथे लइ, पोतपोताना राज्यकर्त्तानी समीप अरज करवी घटे छे; अने तेमां अवश्य हिंदुस्ताननी तमाम द्वार्ट्स प्रजानमदेद पर्मा विना रहेशे नहीं.

श्री जैन श्वेतांबर कोन्फरन्स

### अनुक्रमणिका.

#### A 35 A :-

नंबर	. नाम-					₽ <b>₽</b> .
8	पंडित ज्येष्ठाराम मुकुन्दर्जा विगेरे छ शास्त्रीओनो अभि	प्राय	••••	••••	••••	8
२	लींबडीवाळा वैजनाथ मोतीराम भट्टनो अभिप्राय			••••	••••	8
३	वडोदरावाळा रामकृष्ण शास्त्रीनो अभिप्राय		••••		••••	२२
8	जामनगरवाळा शास्त्री हाथीभाई हरिशंकरनो अभिप्राय		••••		• • • •	70
٩	शास्त्री कालिदास गोविंदजीनो अभिप्राय					३१
Ę	पंडिता जमनाबाईनो अभिप्राय			••••	• • • • •	३८
	शास्त्री महीधर हरिभट्टनो अभिप्राय			••••	••••	४२
	पंडित गट्टुलालजीना शिष्य शास्त्री माधवजी गोपाळजीन		प्राय	••••	••••	83
	मुंबईना पर्चास शास्त्रीओनो सामटो अभिप्राय		••••	••••	••••	8 ई
90	शास्त्री रेवाशंकर मावजी देवेनो अभिप्राय			••••	••••	٩ ۶
99	मोरबीवाळा शास्त्री शंकरलाल माहेश्वरनो अभिप्राय	••••	••••		••••	90
•			••••			€8
•		••••	••••	••••	••••	६९
•	शास्त्री विश्वनाथ नारायणजीनो अभिप्राय	••••	••••	••••	••••	98
		••••	••••	••••	••••	७९
	मेहेता मुरारजी वल्लभभाईनो अभिप्राय	••••	••••	••••	••••	८९
	मि॰ नाथाभाई मणीभाईनो अभिप्राय	••••	••••	••••	••••	९२
	•	•••	••••	••••	••••	९३
		••••	••••	• • • •		९५
	अमलसाडवाला शास्त्री रामकृष्ण इच्छारामनो अभिप्राय	••••	••••	••••	••••	१०१
	-	••••	••••	••••	••••	200
77	पंडित बालाजी विञ्चल गावसकरनो अभिप्राय	****	••••	••••	••••	8 \$ \$

## भाग ३ जो.

### अनुक्रमणिका.

नंबर	नाम				पृष्ठ.
9	स्वस्थान मोरवीना ठाकोर साहेबनो उत्तर		****	•••	۶
२	" विजावरना महाराजा साहेबनो उत्तर	•••	••••	***	,,
ş	,, गोंडलना महाराजा साहेबनो उत्तर		••••	***	" <b>ર</b>
૪	,, सायलाना ठाकोर साहेबनो उत्तर	••••		••••	૨
Ģ	,, बोबिलीना महाराजा साहेबनो उत्तर	••••	••••		3
Ę	,, धांगधाना ठाकोर साहेबनो उत्तर	••••	••••	••••	•
હ	" सूनीना महाराणा साहेबनो उत्तर	••••			8
L	" कोटडासांगाणीना ठाकोर साहेबनो उ	न्तर	••••	****	Ç
९	" वाराहीना ठाकोर साहेवनो उत्तर	••••	••••	****	દ્
१०	,, कटोसणाना ठाकोर साहेबनो उत्तर	••••		-	<b>,</b>
११	,, हींबडीना ठाकोर साहेबनो उत्तर	4000	••••	••••	97 19
<b>१</b> २	,, पाटडीना ठाकोर साहेबनो उत्तर	****		••••	17
<b>?</b> ₹	" खंबातना ठाकोर साहेबनो उत्तर	****	••••	****	" 6
१४	"		7000	••••	
१५		 ਹਜ਼ਾ	••••	••••	" ?
१ <b>६</b>	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	344	•••	••••	99
8	" राजूलाना महाराजा साहबना उत्तर मुंबई समाचार मु. मुंबई	••••	••••	••••	१०
		****	•	••••	•
2	अखबारे सोदागर मु. मुंबई	••••	••••	••••	१२
ş	अखबारे इसलाम गु. मुंबई	••••	••••	••••	१३
૪	जामेजमशेद हु, मुंबई ू	••••	••••	****	१४
५	निर्दोषी पाणिओनो वकील सांजवर्तमान त	था अखबारे	ंसोदागर <b>ः</b>	प्रत्ये	
	मोकलेला तेनो पत्र मुं. मुंबई	•• •	••••	****	<b>૧</b>
६	सयाजी विजय मु. वडोदरा	••••	••••	••••	१६
9	77 77 ***	••••	••••	••••	१७
	बकरानो बसी	•••			16

#### ₹

# भाग २ जो.

### अनुक्रमणिका.

नंबर	नाम		-			पष्ठ.
<b>१ मुंब</b> ईवासी <sup>५</sup>	शास्त्री कहानजी जीव	वणरामनो अधि	भेषाय	••••	••••	ş
२ आर्यसमाज	वाला मि. सेवकला	ठ करशनदासन	ो अभिप्राय	••••	••••	9.3
३ श्री रेवाथि	श्रोसोफीकछ सोसाय	ग्टीनो अभिमा	य	••••	<b>~**</b>	१९
४ बडोद्रावा	ग्र शास्त्री राजाराम <sup>ः</sup>	काशीनाथनो 🤻	भभिमाय	••••	••••	२४
	नाथ ऱ्यंबकनाथनो		••••	••••	••••	२६
	वैद्य धीरजराम दल			••••	••••	<b>३</b> ९
	वैद्य तलखचंद तार।			••••	****	3 8
	ग भट्ट महाशंकर गो।			••••	••••	33
	ग <mark>शास्त्री</mark> करुणाशंक			****	••••	३५
	ग्र दवे नीलकं <mark>ठ मक</mark>			••••	••••	₹ ξ
	ग शास्त्री छगनलाल			••••	••••	36
?२ जुनागढवा	<b>ळा शास्त्री गोराभाई</b>	रामजी पाठक	नो अभिपार	T	••••	४२
?३ शास्त्री हा	दित्त करुणाशंकरनो	अभिप्राय	••••	••••	••••	५७
१४ वैद्य रघुन	थ इंद्रजीनो अभिमा	य	••••	••••	••••	६१
	ला पारेख वनेचंद <b>प</b>			••••	••••	६२
?६ धोराजीवा	ला पारेख पोपट मो	तीचंदनो अभि	<b>भाय</b>	••••	••••	६६
१७ वेरावळवा	<b>ला मि. मदनजी</b> जु	ठानो अभिप्राय	Ī	••••		६९
१८ प्रयागवाल	ग शास्त्री भीमसेन व	शर्मानो अभिप्रा	य	••••	••••	<i>હ</i> ?
२० गोंडलवा	रा शास्त्री केवळराम	लीलाधरनो अ	भिप्राय	****	••••	७६
२१ गुंसाइ शं	करगरजी भैरवगरजी	ना अभिप्राय		****	••••	98
	वाला जोशी मयाशंव		नो अभिप्राय	Ŧ	••••	७९
	डीया पारसीनो आ		••••	•••	••••	૮१
२४ एवलावा	सी रजपुत शंकरसिंह	र छट्टींसहनो अ	भिप्राय	••••		८४
२५ लींबडीव	ाला शास्त्री कानजी	पुरुषोत्तम भट्ट	नो अभिप्रा	य	****	९०
	ा हिंदुशास्त्र आधारे		इना जबाब	••••	••••	90
	सिद्धांतमताचार्यन <u>ो</u>		••••	••••	<b>2019</b>	१०६
२९ अपदाब	दिवाला शास्त्री रामन	वंद्र दीनानाथ भ	ાટનો અમિ	माय		११६

नंबर	नाम				पृष्ठ,
९	मोहिनी, मु. कनोज	• • • •		•••	१९
र०	गुजरातंमित्र तथा गुजरातदंर्पण मु. सुरत	••••	****	••••	<b>77</b>
\$ \$	दशराने दिवसे देशी राज्योमा थतो पशुवध	अने जैन	। कॉन्फरन्स <b>ः</b>	••••	२०
१२	गुजराती पंच, मु. अहमदावाद	••••	••••	••••	२२
१३	जैन, मु. अहमदाबाद	••••	••••	••••	२,३
१४	र्जेन विजय, मु. मुंबई	••••	0000	••••	3,8
१५	धी इंडियन एडवर टाईझर, मु. अहमदावाद	••••	••••	••••	ર્લ
१६	र्धा कारोनेशन एडवर टाईझर	••••	****	••••	30
१७	एडव्होकेट ॲंक्प इन्डिया, मु. मुंबई.	••••	••••	••••	<b>3</b> 3
१८	धी रंगून गॅझिट, मु॰ रंगून	••••	••••	••••	3 %
१९	धी हिंद प्याद्रियेट, मु॰ कलकत्ता	••••	<b>5000</b>	••••	7
२०	पंजाब टाइम्स, मु. रावलिपंडी	••••	••••	••••	<b>,</b> ,
२१	जबलपुर पोष्ट, मु. जबलपुर	••••	••••	••••	

सूचना—भाग बीजानो अनुक्रम नंबर ओगणीस तथा नंबर छवीस भूलथी रही जवाथी तेना बदले नंबर वीस तथा सत्तावीस नांखवामां आवेल छे.

### पशुवधना संबंधमां हिंदुशास्त्र शुं कहे छे?

### "मा हिंस्यात् सर्वाणि भूतानि"

(वेदश्रुतिः)

#### नं. १

पंडित ज्येष्टाराम मुकुंदजी विगेरे छ शास्त्रीओनो अभिप्राय.

राः राः डाक्टर प्राणजीवन महेता जोगः

आप तरफथी वलसाड ता. ९-९-९४ नी सालनी ७ प्रश्नावलीनी एक सूचना मली छे. जेनी पहोंच स्विकारवानी जोडे करेला प्रश्नोनो एकसामटो खुलासो नीचे प्रमाणे छे.

बलेव अने द्रोराना पर्व संबन्धे आपणा देशी आर्य जनोना ग्रन्थोमां तो कोइ पण प्राणिनी हिंसा के हनन करवा माटे सर्वथा आज्ञा नथी. त्रत नियमादिकना पुस्तकोमां उपर लखेलां पर्वमां त्रत करवानुं लखेलुं छे; पण कोइ देव के देवीने उद्देशे करीने प्राणिवात करवानी आज्ञा नथी. त्योर पशु प्राणिनो वात करवाने क्यांथी रीत शरु थई छे? ते तो स्पष्ट समजवुं पण कठीण छे.

हवे आ प्रसंगनो उद्देश करी महाराज नामदार राणाश्री मोहनदेवजी महाराजाए उपर दर्शा-वेली पशुहिंसाने अनिभमत जाणी अने चारे तरफ पोताना अभिप्राय जोडे लोकोना अभिप्राय लई जीवघातनुं निवारण थवा यत्न करेल छे. ए अनेक धन्यवाद लायक बनाव छे. तेमां वली द्यावन्त दरबार मोसुफना विचारने अनुमोदन आपनारा आप पण असंस्य धन्यवादना पात्र छो. एक हुं तो शुं, पण द्यावन्त मनुष्य प्राणीमात्र आपने धन्यवाद बोलशे. कदाचित् पामर प्राणिने जो कार्याकार्यनुं ज्ञान हशे तो तेओ पण बोलशे.

हवे ज्यारे द्शरा अने बलेवना पर्वोपर देव के देवीने अर्थे कोइ पण तेवा प्रकारे जीवचात अथवा बलिदान करवा विशे विधि नथी. त्यारे पछी ते बाबतने लांबी विस्तारवाली करी वधारे प्रश्नो करवा ते निरर्थक छे.

जो नवरात्रना अर्चनना उद्देशे करीने पशु आदिनो घात थतो होय तो नवरात—बलेव दशराने तो कई लागतुं वल्रगतुं नयी; तेम श्रीतकर्म यज्ञ यागादिनो संबन्ध पण दशरा बलेव जोडे स्यो छे! आ प्रश्न पत्रमां तो आरंभे अने उपसंहारे दशरा तथा बलेव लखेल छे कांई नवरात्र के देवदेवीय-जनतो लखेलज नथी तेवुं जाणीने दरेक प्रश्ननुं विवेचन करी तेना जूदां उत्तर न कल्पतां आटलाथी उत्तर पूर्ण थाय छे.

स्त्रीसंग, हिंसा, मद्य, आ जगतमां रागतः प्राप्त छे. तो तेनी शास्त्रकारोए व्यवस्था करी छे. पण छेवटे तात्पर्यमां तो तेवां कृत्योथी निवृत्ति इष्ट छे. एम श्रीमद्भागवतादि सात्त्विकधर्मबोधक शास्त्रोनो मत छे. अने ते ते ग्रन्थो प्रसंगवशात् पोतानो अभिप्राय स्फुटपणे बोछी रह्या छे.

अहिंसा प्रधान जैनधर्म तो हिंसाना काममां व्यवस्थाकथन करवा करतां निवृत्तिज पसंद करे छे तो ते लोकसिद्ध छे. अने हिंसानिवृत्यर्थे अनेक वचनो उपलब्ध छे. पण ते विषे सविस्तर लखतां बहु लंबाण थवाना भयथी फक्त थोडां वचन लख्यां छे. ते पण श्राद्ध प्रकरणने लड़ने लख्यां छे. कारण केटलांक बहु डाहपण डोलीने मन्वादि धर्मशास्त्रनां वचनो बोली देखाडीने लोनकोने हिंसामां प्रवर्त करवा तैयार थई जाय छे.

जीवने अभयदान करवानी प्रशंसा.

चतुर्वर्गिचितामणौ परिशेषखंडे श्राद्धकल्पे श्राद्धोपकरणप्रकरणे चमत्कारखंडे ॥ यःश्राद्धदिवसे विद्वान् , प्राणिनामभयं वदेत भयं न तस्य किंचित्स्यादिहलोके परत्र च

तत्रैव सौरपुराणे
यद्यस्य भय मुत्पन्नं स्वतो वा परतोऽपि वा
श्राद्धकर्मणि संप्राप्ते तत्तस्यापनयेत्सुधीः ॥ १ ॥
राजतश्रोरतो वापि व्यालाच्च श्वापदादपि
संजातां तु हरेन्द्रीतिं पितृकर्मणि शक्तितः ॥ २ ॥
एकतःऋतवः सर्वे सर्वस्ववरदक्षिणा
एकतो भयभीतस्य प्राणिनःप्राणरक्षणं ॥ ३ ॥
अतोर्थं सर्व कालेषु दद्यादभयदक्षिणां
श्राद्धकाले विशेषेण सहि धर्मः परो मतः ॥ ४ ॥
यथाद्यभयदानेन तुष्यन्ति प्रपितामहाः

न तथा वस्त्रपानाञ्च रत्नालंकारकांचनैः ॥ ५ ॥

एतस्मादभयं देयं श्राद्धकाले विजानता अभयस्य प्रदातारो भयं विदन्ति न कचित् ॥ ६॥ जन्ममृत्युभयाभावादभयं मोक्ष उच्यते मोक्षमेव नरो याति प्राणिनामभय प्रदः॥ ७॥

श्राद्धमधिकृत्य ब्रह्मवैवर्ते

जीवितस्यप्रदानाद्धि नान्यद्दानं विशिष्यते तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देयं प्राणाभिरक्षणम् ॥ १ ॥ अहिंसा सर्वदैवत्यं पवित्रं सर्वपावनम् ॥

इत्यादि बहु वचनो छे. जो तेवो अवकाश मले तो मोटा निबंधो लखाय.

- (१) सम्मतिरत्रार्थे काशीशेष वेङ्कटाचल शास्त्रिण:
- (२) सम्मातरत्रार्थे वालजी तनुज क्षेमजीशास्त्रिणः
- (३) सम्मतिरत्रार्थे मुकुन्दात्मभुवोज्येष्टारारामशर्मणः॥
- (४) सम्मतिरत्रार्थे पुरुषोत्तमात्मजशास्त्री जयकृष्णशर्मणः
- (५) सम्मातिरत्रार्थे हरजितात्मज भगवच्छर्मणः
- (६) सम्मतिरत्रार्थे नथ्वंगज मुरारिशर्मणः ॥

### नं. २

#### लींबडीवाळा वैजनाथ मोतीराम भद्दनो अभिप्राय.

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुद्दच्यते ॥ पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवाविशव्यते ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अनुमान प्रमाण तथा प्रत्यक्ष प्रमाण विचारीए. अनुमान अने प्रत्यक्ष प्रमाण प्रथम स्यूळ बुद्धिथी विलोकिये तो आ दुनिआमां श्रुम अशुम बनावो बने छे ते बनावोनो कोई कर्ता होवो नोईए—कारण के कारणाभावात् कार्याभावः अ वैशोषिक सूत्र छे. अनो अर्थ अवो छे के कारणना अभावे कार्यनो अभाव छे,—अटले कारण विना कार्य थतुं नथीं. ते कारण बे छे एक उपादान, बीजुं निमित्त. निमित्त कारण ए के कुंभार चक्र अने दंड. माटी ए उपादान कारण छे अने घडो ए कार्य छे. आमां निमित्त कारण कुंभारज कहेवाय छे अने चक्रने दंड ए तो सहकारि कारण छे माटे छोडी दईए छिए तेम उपादान कारणने पण छोडीए छीए. कारण के ए तो जड छे. कुंभार निमित्त कारण छे ने ते चैतन्य छे एम ते बतावी शके छे. ए प्रमाणे आ श्रुमाशुम बनावोनुं निमित्त कारण कोई होंचु नोईए. कारण के "कार्यात् कारणं प्रतीयते" अर्थः—कार्यथी कारण जणाय छे. ए बनावोनो करनार कोई नोईए एम अनुमानमां आवे छे. त्यारे एनो बनावनार कोण हशे? अने ते बे शुम अने अशुम कार्य थाय तो तेना कर्त्ता एक हशे के बे एम विचारतां एम अनुमान जाय छे के ए बेना कर्त्ता बे जुदा जणाय छे कारण के मारा छे तेनार्था नठारुं भाग्ये ज थाय छे, अने नठारार्था सारुं भाग्येज थई शके छे. जेथी एक सारुं करनार अने एक नठारुं करनार एम बे जणाय छे. आ जे करनारा छे ते देखाता नथी तेथी एमने देव एवी संज्ञा आपीये छीये कारण के अदृदय छे.

हवे राजानो धर्म एवो छे के जेम बने तेम प्रजा सुखी थाय एम करवुं. प्रजाने पीडा थती होय तो ते पीडा दूर करवा माटे कदाच जानमालनी नुकशानी थाय तो खेर पण प्रजाने दुःखी थवा न देवी. त्यारे प्रजाने दुःख देनार आ बे देवमांना एक जे अशुभ कार्यवाळा छे ते होवा जोईए. ए देवो साये राजा युद्ध करी शके तेम नथी तेथी तेने कई आपीने पण संतोषवा जोईए, जेथी प्रजाने पीडा दूर थाय अने तेओ खराब कृत्य करनारा छे, माटे तेमनो खोराक पण खराब हशे, एम धारी तेने तेना लायक खोराक आपवो जोईए. अने ते खोराक आपतां कदाच एक जीवनी हिंसा थतां घणा जीव उगरता होय तो एक जीवनी हिंसा थवाने अडचण नथी एम धारीने तेने एक जीव वर्षो-वर्ष आपवाथी तेओ पीडा नहि करे एम धारी तेमने राजाए आपवो. अगर जो नहीं आपे तो पीड़ा करशे; माटे तेमने भेट आपवी कारण के तेमनी साथे युद्ध करी जीती ताबे करी शकाय तेम नथी. हवे आपणे विचार करीए के आ बे देवमां बळवान कोण छे? अने बळवानना पक्षमां रहीए तो नबळो काई करी शके के नहीं? अने नबळाना पक्षमां रही बळवाननो द्रोह करीए तो नबळो काई

सहाय करी राके के नहीं? जो न करी राके, तो पछी नबळाना पक्षमां न रहेवुं. हवे आ बे देवमां शुभ कर्म करनार देव छे ते बळवान छे, अने अशुभ कर्म करनार निर्बळ छे; एम जणाय छे. कारण के अञ्चभ कर्म करनार रांकनी पेठे दबायला जोवामां आवे छे.वळी ज्ञुभ करनाराओनो पक्ष ईश्वर करे छे अने अञ्चाभ करनाराओनो ईश्वर संहार करे छेएम सांभळवामां आवे छे तो आ अञ्चाभ करनार देवने तेमने लायक तेवो खोराक आपतां शुभ कर्म करवावाळा देवो नाराज थायके केम <sup>१</sup> तो विचारी जोतां अल्बत नाराज थवाज जोइए, अने ज्यारे नाराज थाय तो पछी अ बळवान देवनो दोह करी निर्बळ देवना पक्षमां रहेवाथी दु:ख अवस्य सहेवुंज पडे. हवे विचार करीए के ए अशुभ देवनो खोराक शुभ छे के नहीं ? कारणके जो बीजो खोराक न होय तो लाचार-जेमके सिंहनो खोराक मांसज छे, तेनी आगळ चहाय तेटला बीजा सारा पदार्थ मूकीए तो ते नकामा; तेम आमनुं तो नथी ? विचार करतां जणाय छे के ते देवोने एम नथी कारणके ते देवोने तेने बदल बीजा पदार्थी आपीए तो पण तेओ खराब खोराक आप्या बराबर तप्त थाय छे एम सांभळ्युं छे. तो जो बीजो खोराक सारा देवने अनूकुळ होय तो ते आप-वाने हरकत नथी; विचारतां प्रतिकूळ नहीं; कारणके तेथी शुभ देवने खोटुं नथी लागवानुं, ने अशुभ देवने तेथी तृप्ति पण तेवीज थाय छे. विचारतां अडचण नथी तो आथी बेनेनुं मन सचवाय छे ज्यारे बेनेनुं मन सचवाय अने बेने राजी थाय एम थतुं होय तो तेवा उपाय छोडीने बीजी रीते साराने<sub>।</sub> द्वेष करी अञ्चमने राजी करे तेना जेवो बीजो अणसमजु कोण ? कोईज नहीं; माटे सुज्ञे तो बन्नोने राजी रखाय तेम करवुं एटले पद्मुबलिने बदले बीजा पदार्थों आपवा—जेवाके साकरकोळुं, शेरडी. श्रीफळ, कमळ वेगरे आपवा ते उत्तम छे. अने तेथी बंने राजी थरो. तथा सांभळयुं छे के देवीए चोरूखुं कह्युं छे के मारा माहातम्यनुं एकवार श्रवण ते एक वर्ष मुधी पशुबलि वगेरे पूजा करी मारी प्रीति मेळवे तेना बरोबर छे ज्यारे पाठ श्रवणथी एटलो बघो लाभ छे तो ते वधु लाभ मूर्कीने ओछो लाम लेवानुं समजु तो नज करे. वळी ते देवनुं उपासन आपणे आधीन छे के ते देवने आधीन ? एम विचारतां उपासना देवने आधीन नथीं पण उपासकने आधीन छे, एम सांभळयुं छे, अने विचारतां पण एम ज जणाय छे के जेनी प्रीति मेळवनी ते प्रीति मेळवनारने आधिन छे. अने ते प्रीति प्रेमवडे छे, पण प्रेम विना चहाय तेवा सारा पदार्थों आपीए तेथी प्रीति थर्ता नथी; ने तेमनी साथे शुद्ध अंतःकरणथी, उजळा मनथी थोडुं आपीए तो ते पण बहु मनाय छे अने तेथीज प्रीति थाय छे.

स्थूळ बुद्धिए प्रत्यक्ष प्रमाणथी जोतां जे देवने बिल आपे छे ते देव देखातों नथी. एटलुंज निह पण जे आपीए छीए ते ते लेतों होय एम पण जणातुं नथी. तेना आगळ जेटलुं घरीए तेटलुं ने तेटलुंज रहे छे तेमां जरा पण फेरफार पडतों नथीं; त्यारे ए देव छे ए शी खात्री के ते देव आगळ आपणे ते पशुने मूकीए? तेम न मनाय तो तेना आगळ पशु मूकीए पछी जो तेनामां सामर्थ्य हरों तो ते पशुने ते देव उपयोगमां लेशे. अने जो न लेतो पछी ते देव छे, अने तेने न आपीए तो ते चुकशान करे एनी शी खात्री? ते तेनो पोतानो खोराक लई शकतों नथीं अगर काई फेरफार करी शकतो नथी. आपीए ते जो रुई शकतो नथी तो न आपवाथी नुकशान करशे ए पण केम मनाय ? कारण के जे कांई रुई शके निह, अगर कांई फेरफार करी शके निह ते सारुं अगर बुरुं पण शुं करी शकनार ? कांईज नहीं; माटे नाहक निचारा निरपराधी गरीब प्राणिने शा माटे मारबुं जोइए ? ते गरीब प्राणि पण राजानी प्रजाज छे. अने तेनुं पण राजाए बने तेटछुं रक्षण करबुंज जोइए. अने एवा निरर्थक पशु वध करवा नज जोइए. जो ते देवनी आगळ पशुने मूकतां ते पशुने ते हे तो भले वधींवर्ष आपबुं. पण जो नज छे तो पछीथी तेने आपबुंज नहीं. अने कदाच जो आपबुं तो तेने बदले बीजा पदार्थों ने कहेल छे ते आपवा, अने पाठ करवो ए उत्तम छे. तेथी हवा सुधरे छे, अने रोगादि उपव्रव हवा सुधरवाथी थता नथी. पशु वधथी कांई विशेष नथी. वळी बीजा राज्योमां ते वध नथी थता तो ते राज्योमां नुकशान थवुं जोइए, पण ए कांई जणातुं नथी. त्यारे बीजाए पण शुं काम नाहक एम करबुं जोइए ? आपणने जेम जीववानी होंश छे तथा ममत्व छे ते प्रमाणे ते प्राणियोने पण छे माटे नाहक निरपराधी प्राणियोने मारवां ए अन्याय छे.

हवे कदापिने ओम कहीए के राब्द देखातों नथी पण श्रवणेंद्रियजन्य प्रत्यक्ष छे, तेम ओ देव-कार्य थाय छे. ते कार्य अनुभवजन्य प्रत्यक्ष छे, जेम वायु देखातो नथी षण स्पर्राथी जणाय छे के वायु छे; तेम कार्यो थाय छे, अने ते कार्यो अनुभववामां आवे छे, ते पर्था अे देव छे अम सिद्ध थाय छे, तोपण ते अशुभ कार्य करनार छे तेम शुभकार्योनो अनुभव थाय छे तेथी शुभकार्योनो कत्ती पण कोई छे अने शुभ कार्य करनार प्रवळ छे अशुभ कार्य करनार निर्वेळ छे कारण के दरेक वखते शुभकार्योवाळानो पक्ष ईश्वरे कर्यो छे अने अशुभवाळानो पक्ष कर्यो नथी. माटे अञ्चभ कार्यो करनार निर्बळ छे तेनोज केवळ पक्ष स्वीकारवामां नुकज्ञान छे माटे बन्ने राजी रहे तेम करवुं; अने ते करवा माटे पशु वधने बदलें बीजुं कहेल छे ते करवुं. वळी तें देव खातो नथी अंटलें उपयोंगमां नथी लेतो एम कहेवाय निह; कारण के सुगंधी पदार्थ होय तो तेनी सुगंधी द्धेवाथी पण तृप्ति थाय छे; तेम रूप जोवाथी अने शब्द सांभळवाथी पण तृप्ति थाय छे, तो ते रूपथी प्रहण करे. अगर रूपथी प्रहण करे तो तेथी काई पदार्थ ओछो न थाय अगर फेरफार न थाय तेथी ते उपयोगमां न छीधुं एम न कहेवाय. तेनो खुलासो एम छे के जे पशुवध छे तेमां एवो सरस गंध नथी; तथा पशुवधमां ते पशुनुं माथुं उडावी देवाथी बहु रूपवान देखाय एम पण नथी. माभुं गया पछी विकराळ स्वरूप देखाय छे तथा ते वखतें पग शरीर विगेरे तरफडतां होय ने ध्रजतां होय छे तेथी राजी थवा जेवुं नथी. तेम आनंद पामवा जेवुं पण नथी. वळी ए रारीर पशुनां रजविधिनुं बनेल छे ते रज वीर्थ मळ छे- अने शरीर केवुं छे के चहाय तेवो सारो पदार्थ शरीरनी अंदर गंळावाटे गयो के तेने खराब करी नांखे छे. अेवुं इारीर छे तो ते मळमां सुगंधी क्यांथी ज होय, पण केवळ दुर्गेघ अने गर्लाची छे. कदाच एम कहो के ओवा देवोने ते गमे छे तो ते पण बने नहीं कारणके को इ गंदो अने अत्यंत गलीची करनार होय तेना आगळ बीजो जो गलीचीपणुं करे

तो तेने गमतुं नथी. जेम चोर छे ते चोरी करे छे; पण चोरेन घरे को ई चोरी करे तो ते तेने गमती नथी. तेमज आ तमारी करेल गलीची तेने केम गमशे? नहींज गमे. अने शुभतो गमे ज माटे पशुवध बंध करी तेने बदले बीजा अहिंसक अने बंने राजी थाय एवां पदार्थी आपवां उत्तम छे. अने तेथी वळी आपणुं धारेलुं काम थाय छे. अने शास्त्रने बाध आवतो नथी. माटे ए उत्तम छे-ए अनुमान अने प्रत्यक्ष प्रमाणो आप्या. हवे सूक्ष्म बुद्धिथी विचारिए-आपणुं आ स्थूळ दारीर पंच-महाभूतनुं बनेल जणाय छे. कठण भाग पृथ्वीनो, द्वी भाग जळनो, उष्ण भाग अग्निनो, गति भाग वायुनो अने पोलाण ए आकारानो भाग छे. आ स्थूल शारीरनी अंदर सुक्ष्म शारीर छे ते सुक्ष्म रारीर पांच ज्ञानेंद्रिय, पांच कर्मेंद्रिय, पांच प्राण, अंतःकरण चार ए रीते ओगणीरा तत्त्वनुं बनेल जणाय छे. अने एमना ओगणीश देवताओं छे एम सांभळ्युं छे हवे आथी शुभ ने अशुभ बे कृत्यो बने छे माटे तेना बे भागो जणाय छे. ज्यारे तेना शुभ अने अशुभ वृत्तिवाळा बे भाग छे त्यारे तेमना देवताना पण वे भाग होवा जोईए. आपणे एम सांभळ्युं छे के "पिंडे सो ब्रह्मांडे" त्यारे पिंड ( शरीर ) प्रमाणे ब्रह्मांडमां पण होवुं जोईए. ते विचारतां ते पण एमज जणाय छे. पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु अने आकारा ए पांच मळीने आ ब्रह्मांड शरीर छे. अने ते वैराट शरीर कहेवाय छे एम सांभळ्युं छे. त्यारे आ वैराटने पण सूक्ष्म दारीर होवुं जोइए अने विचारतां जणाय छे के छे. त्यारे जोइए तो मालम पडे छे के पांच कर्मेंद्रिय, पांच ज्ञानेंद्रिय, पांच प्राण ने अंतःकरण चार ते तेमने पण छे. तथा देवता पण तेज प्रमाणे छे. आपणुं अने एनुं बेउनुं एक सरखुं दारीर जणाय छे. आपणा दारीरने व्यष्टि अने आने समष्टि कहे छे एम सांभळ्युं छे. अने एमां पण शुभाशुभ कृत्यने शुभाशुभ देवताओ छे एम जणाय छे. खावानुं ते जठर द्वारा इंद्रियो तथा तेना देवताने पहोंचे छे. सांभळवुं श्रवणद्वारा तेमने पहोंचे छे, जोवुं नेत्रद्वारा पहोंचे छे, स्पर्श ते त्वचा इंद्रियद्वारा पोहोंचे छे. रस ते रसना द्वारा पहोंचे छे, अने गंघ ते घाणेंद्रिय द्वारा पहोचे छे. आ बधाने पहोंचे छे ए खरी वात, पण जो जठरा न होय तो ए बधां छूछां जेवा जणाय छे. अने ते द्वारा ए इंद्रियोने ने देवताने खोराक पहोंचतो होय एम मालम पडे छे. इंद्रियो तथा देवताओ आपणा शरीरमां जठरावडे खोराक खातां होय अने तेथी ज काम करवा राक्तिमान थतां होय तेम जणाय छे. तथा आपणे जे जे खाईए छीए ते ते जठरा ते देवोने पहोंचाडे छे. एटले जठरा द्वारा पहोंचे छे अने जेवो खोराक तेवा तेमांथी विचारो उठता होय तेम जणाय छे. तथा कहेवत छे के अन्न तेवो उद्गार ते वात खरी जणाय छे. हवे आपणे व्यष्टि प्रमाणे समष्टिमां जोइए तो तेनी जठरा प्रत्यक्ष " आग्ने " होय एम जणाय छे. अने आ अग्नि ते इन्द्रियो अने देवताओंने खोराक पहें चाडती होय एम जणाय छे तथा तेथी ज तेओ राक्तिमान रहेता होय एम जणाय छे. आपणे खाईए छीए ते जठरा प्रहण करीने जेम देवने पहोंचाडे छे तेम आ अग्नि पण ते इन्द्रियो तथा देवने पहोंचाडे छे. हवे विचारीए के आपणो आ

व्यष्टिन आ समिष्ट साथे कांड़ संबंध छे के केम? तो विचार करतां बहु ज निकट संबंध जणाय छे. अने एम जणाय छे के आ समष्टिथी ज आपणुं व्यष्टि शरीर बन्युं होय नी शुं एम लागे छे. ज्यारे समष्टिथी व्यष्टि बन्युं होय त्यारे तो समष्टि बळवान होवुं जोइए? ते विचार करतां ते तेमज जणाय छे. विशेष विचार करतां आ सर्व प्राणीओनां शरीर समष्टिथी बनेलां होय एम जणाय छे. एटछुं ज नहीं पण ते समष्टिद्वारा आपणने खोराक मळे छे एम तेथी ज पोषण थाय छे. ते न होय तो आपणे न ज होइए अने तेनी इन्द्रियोने देवता बळवान होय तो ज आपणी इन्द्रियोने देवता बळवान होय. एम जणाय छे. त्यारे एना ईदियोंने देवता शाथी बळवान थाय ए विचारतां आ प्रत्यक्ष अग्निमां खोराक आपवाथी त्यारे सारो खोराक आपवाथी सारुं अने नठारो खोराक आपवाथी नठारुं थतुंज हरो ? तो हा एमज थतुं जणाय छे. त्यारे तो आपणे ए अग्निने बहुज साचववो जोईतो लागे छे ? तो हा तेमन नणाय छे त्यारे तो आ यज्ञो ने कह्या छे ते बरोबर नणाय छे. ज्यारे ए यज्ञोनुं अवस्य कर्त्तव्य जणाय छे त्यारे ते यज्ञोमां सारां पदार्थो होमे सारुं अने नठारां पदार्थो होमे नठारुं थाय एम जणाय छे. अने आथी सर्व प्राणिओने जेवी असर करवी होय तेवी करी शकाती होय एम जणाय छे ने शुं श्वाह ? आपणा वृद्धोए शुं खुबी गोती काढी छे ने ? धन्य छे आपणां वृद्धोने. तेओए जे जे कार्यो बांध्यां होय छे ते बहु डहापण भरेलां होय एम जणाय छे. त्यारे आ यज्ञोमां पशु होम तथा पशु वध विषे विचारीए तेनुं केम छे ते जोइए? पशुशरीर ए पशुनो मळ रजवीर्यथी थयेल छे अने ते मळज छे तथा मळ छे ते कदी पण सारो पदार्थ होय नहि. ज्यारे ते सारो पदार्थ नथी त्यारे ए अग्निमा होमवाथी नठारुंज परिणाम आववानुं अने ए नठारुं परिणाम एम करनारनुं कोईनुं आब्युं छे के नहीं <sup>१</sup> एम विचारतां दैत्योनां राज गयां ने पायमाल थई गया तथा राक्षसो पण पायमाल थई गया ते तेथीज हरो ? एम जणाय छे कारण के एओए एवां कृत्यो बहु करेलां होय एम संभळाय छे. त्यारे ए दैत्यो तथा राक्षसोए एवां कृत्यो कर्या तेथी तेमनो तथा तेमना राजनो अने प्रजानो नारा थयो तेम हालना राजाओ जो एम करे तो तेथी पण अवस्य तेज परिणाम आवे एम जणाय छे. माटे राजा प्रजा जे शुभ इच्छनार छे तेमणे ए न करवुं ए अति उत्तम जणाय छे. खराब वस्तुओ होमतां नुकशान अने शुभ वस्तुओ होमतां फायदो जणाय छे. अने राजाए विशेषे करीने आ बाबतनी काळजी राखवी एम जणाय छे.कारणके सर्व प्रजानो आधार तेनापर बिरोप छे. अने प्रजाए पण काळजी राखवी जोइए के राजा तेम करतो होय तो तेने अटकाववो. कारणके प्रजाए राजाथी सुख मेळववानुं छे. राजा सुखीए प्रजा सुखी अने राजा दुःखीए प्रजा दुःखी तेमज प्रजा दुखीए राजा दुःखी अने प्रजा सुखीए राजा सुखी एम परस्पर संबंध जणाय छे. हवे सूक्ष्म बुद्धिथी प्रत्यक्ष प्रमाण नीचे प्रमाणे छे:--आपणा शारीरमां कठण भाग, द्रवीभागं, उष्णभाग, गतिवाळोभाग, अने पोलाण छे. पगथी जवाय अवाय छे, हाथथी आप छे थाय छे, गुद्धी मळ त्याग थाय छे, शिक्षथी पेशाब त्याग तथा रतिभोग थाय छे, मुखर्थी खनाय छे, नाकथी गंध जणाय छे, जिह्वाथी स्वाद जणाय

छे, चक्षुथी रूप जोवाय छे, चामंडीथी स्पर्श जणाय छे, अने कानथी शब्द श्रवण थाय छे. पांच प्राण—(प्राणथी श्वासोश्वास लेवाय छे अने अपानथी मळ त्याग कराय छे, उदानथी हेडकी होडकार स्वप्नां आवे छे, समान सर्व नाडीओमां रस पहोंचाडे छे, ज्यान सर्वागज्यापी रहेछ छे.) मन संकल्प विकल्प करे छे, बुद्धि निश्चय करे छे. चित्तथी चिंतवन तथा स्मरण (याद आववुं) थाय छे. अहंकारथी अभिमान भराय छे, ए एकज अंतःकरणना चार भाग छे, आ अंतःकरणनी शुभाशुभ वृत्तिओ थाय छे. अने तथी सुखदुःख प्राप्त थाय छे.

मुखर्थी जे खाइए पीए ते जठराग्नि तेने पचावे छे अने त्यांथी समान वायु ते रस सर्व नाडीओमां पहोंचांडे छे. अने तेथी अंतःकरणनुं पोषण थाय छे. जेवो जेवो खोराक खाधामां आबे छे तेवी तेवी वृत्ति थाय छे. अंतःकरण रसना द्वारा स्वाद जाणे छे, घाणद्वारा गंध जाणे छे, चक्षुद्वारा रूप जुए छे, नाकद्वारा स्पर्श जाणे छे, श्रवणेन्द्रियद्वारा शब्द सांभळे छे. अने शुभ वा अशुभ जेवा ग्रहण थाय ते प्रमाणे अंतःकरणनी वृत्ति शुभ अशुभ थाय छे. जमणो हाथ प्रबळ, डाबो हाथ निर्वळ, जमणो पग प्रबळ, डाबो पग निर्वळ, जमणी आंख प्रबळ, डाबी आंख निर्वळ, जमणो कान प्रबळ, डाबो कान निर्वळ वंगेरे प्रबळ निर्वळ छे.

वृत्तिओ प्रबळ निर्बळ थाय छे अने सारी खोराक होय तो सारी वृत्ति प्रबळ थाय अने नठारो खोराक होय तो नठारी वृत्ति प्रबळ थाय तथा सुख दुःखादि फळ पण ते ज प्रमाणे प्राप्त थाय छे. प्रबळ निर्बट ळने दबावे छे इत्यादि आपणे प्रत्यक्ष अनुभवीए छईए.

आ इन्द्रियो अंतःकरणादि ईश्वरनी संनिधियी चैतन्य छे, नहीं तो जड छे. जुओ मुखदाल शरीरमां ईश्वर ने इन्द्रिय अंतःकरणादि छईने ने ने नग्योए छे तेनां ते ते प्रमाणे जुदां जुदां नाम उपाधिमेदे आ प्रमाणे छे. पगे उपेंद्र, हाथे इंद्र, शिक्षे प्रनापति, गुदे यम, मुख अग्नि, वाणी सरस्वती (वेद ), घाण अश्विन कुमार, रसना वरुण, चश्च सूर्य चंद्र, त्वक् मरुत्, श्रवणे दिक्षाल, प्राणे वायु, मने चंद्रमा, बुद्धि ब्रह्मा, चित्त नारायण, अहंकारे रुद्ध, तथा शुभ वृत्ति ए पालुक, अशुभ वृत्ति ए संहारक ए प्रमाणेनां नामो छे. आ बताब्युं ते व्यष्टि स्थूल तथा व्यष्टि सूक्ष्म शरीर छे. हवे बहार नोतां कठण पृथ्वी, द्वीजळ, उष्ण अग्नि, गितमान् वायु, पोलाण आकाश, आ समष्टिस्थूल शरीर तथा नीचे प्रमाणे समष्टिसूक्ष्मशरीर छे. समष्टि सूक्ष्म शरीर—पग उपेंद्र, हाथ इन्द्र, शिश्च प्रजापति, गुद्ध यम, मुख अग्नि, वाणी सरस्वति (वेद ), घाण अश्विनकुमार, रसना वरुणदेव, चश्च सूर्य चंद्र, त्वक् मरुत्देव, श्रवण दिग्पाळ, प्राणवायु, मन चंद्रमा, बुद्धि ब्रह्मा, चित्त नारायण, अहंकार रुद्र" ए अंतःकरण छे. पालुक तथा संहारक ए शुभ तथा अशुभ वृत्ति. नेवो खोराक तेवी वृत्ति. आ बधा देवो छे. प्रत्यक्ष अग्नि खोराकने पचावे छे, वायु रसने पहेंग्चाडे छे. तथा प्रबळ निर्वळ पण व्यष्टि प्रमाणे छे. एम प्रत्यक्ष रिते जोवामां आवे छे. आ समष्टिथीन आपणुं व्यष्टि शरीर थयेल छे. माटे समिष्टि उपर आपणों सर्व आधार छे. तथा सर्व प्राणियोना सुःखदुःखनो आधार पण तेन छे आ

उपर कहेल समाष्टि रारीरने प्रत्यक्ष अग्निद्वारा जे आपीए छीए ते पहोंचे छे अने तेटलाज माटे आपणा वृद्धोए अग्निहोत्र राखवानुं, सवार सांज नित्यहोम करवानुं, ने यज्ञयागा-करवानुं कह्यं छे. अने ए यज्ञयाग होम विगरेथी हवा सुधरे छे, वृष्टि सारी थाय छे, ने रोगनो उपद्रव थवा पामतो नथी. तथा प्रजा सुखकारीमां रहे छे पण जो ए अग्निमां खराब पदार्थनो होम थाय तो सर्व प्राणियोने नुकशान थया विना रहेतुं नथी. जेम एक झेरी वस्तु छे ते एक माणस नेटली खाइने मरी नाय तेटली ते वस्तु जो अग्निमां नांखी होय तो नेटला माणसने धुमाडो लागे तेटला मरण पामे छे. वळी आपणी पासे थोडी वस्तु होय ने ते वस्तु घणा माणसने पहोंचाडवी होय तो, अग्निमां नांखवाथी घणाने ते एकसरखे हिस्से पहोंचे छे. तेवी ज रीते खराब पदार्थीने होमवाथी नुकशान अने शुभ पदार्थी होमवाथी फायदो छे माटे पशुनुं मांस होमवाथी नुकशान ज छे कारणके ते अग्निमां नांखवाथी हवा बगडे छे ने नठारो पदार्थ समष्टिना देवोने ( इंद्रियोने ) पहोंचे छे. अने ते द्वारा आपणने बहूज नुकशान थाय छे. माटे अवश्य पशुबिल अग्निमां न आपवुं तथा मांस होमवुं नहीं. त्यारे हुं बहार बिल आपवुं है तो तेम पण नहीं. एथी पण तेवीज नुकशानी छे. केमके हवा खराब करे छे. कारणके ते केवळ मळज छे. अने मळ्थी कोई खुशी थाय ज नहीं, नाखुश जथाय अने नाखुरा थवाथी नुकशान थाय छे. ते नुकशान जुओ दैत्योने अने राक्षसोने एम अकृत्य करवाथी थयेल छे तथा तेमनां राज्यो पण पायमालीपर आवी गयां छे वळी तेओ भुंडे हाल मरण पाम्या छे अने महा खराब थई गया छे. माटे जेमणे खराब थवुं होय तेमणे ए कृत्य करवुं. राजाए तथा प्रजाए बनतां सुधी ए कृत्य करवा देवुं ज नहीं. कारण के एथी बहु ज हानि छे अने ते आ वांचवापरथी तथा विचारथी अनुभवमां आवेल ज हरो. हवे यज्ञ करवा ए शास्त्रीय छे अने करवा ए ठीक एम अनुभवमां पण आवे छे. पण पशु-वध तो वामतंत्रोना ग्रंथो सिवाय बीजा कोई ग्रंथोमां जोवामां आवतो नथी. माटे ते प्रबळ गणाय नहीं. आसुरी संपत्तिवाळाओ एम करे छे. दैवी संपत्तिवाळा किंद एम करे ज नहीं. अने राजाने ए नज जोईए. आ बारू शुभ देवों ने पालक आगळ बताव्या छे तेने अपाय छे के अशुभ संहा-रक देवोने अपाय छे? जो शुभ देवोने आपता होय तो ते महाहानि छे. शुभ देवो तेने अंगीकार ज नहीं करे अने सामा गुस्से थरो तेथी नुकशान छे. अने अशुभ देवोने आपवार्थी ते मांकडाने दारु पाया बरोबर छे. खराब तो छे ज अने तेमने वळी आवी रीते उत्तेजन मळे तो तेओ शुं न करे ? तेओ नुकज्ञान करे छे ने आथी वधु नुकज्ञान छे. माटे सर्व रीते पशु वधनो निषेध छे. त्यारे राजाए सर्वेने यथा शक्ति सत्कार करवो ज जोईए, तथा ए संहारक देवो पण राजाने कोई वर्खते उपयोगी छे, माटे तेमनुं पण ओळखाण राखवुं जोइए अने तेमने दुभववा न जोइए ए पण एक ठीक छे. कोइ वखते काम छागे तेम छे तो पछी तेओने ते बलिने बदले बीजां पदार्थी कहाां छे ते आपवां एटल्ले कोइ जातनी अडचण आवरोज नहीं.

आ द्वंद्वाकृति अनादिथी चाली आवे छे. सारुं ने नर्छुं, शुभ ने अशुभ पाळक ने संहारक,

मुख ने दु:ख, पाप ने पुण्य, धमें ने अधमें, धमीं ने अधमीं, साचों ने जुठों, जो ए प्रमाणे द्वंद्वाकृति न होय तो सारुं नरसुं जणाय नहीं. माटे ए एक बीजाने जणावे छे तेटला माटे ए पण उपयोगी होइने ए प्रमाणे बनेल छे तो तेपण ठीक छे. 'जुठों साचाने बतावे छे तथा साचों जुठाने बतावे छे तेमज बळी धमीं अधमींने बतावे छे अने अधमींथी धमीं जणाय छे, माटे ए पण एक समजण्यी बनेल छे. आ उपरथी सर्वे मुझोने लक्षमां आव्युं हशे के पशुवध महानिषिद्ध छे माटे न करवो. आटलुं हवे मुझोने बहु छे ने अणसमजुने हजारी अध्योथी उपदेश ते कांइ नथी ने समजुने सहेज इसारों बस छे. एम धारी हुं आ विषे विशेष लखवुं बंध करुं छुं. जेने जेम गमे तेम कहे. बे रस्ता छे. शुभ ने अशुभना. ते बे बताव्या छे, तेमांथी जे जेने जोइए ते उपाडी ले. आ विषेनुं लखवा बेशीए तो ते एक मोटो ग्रंथ बने माटे टुंकामां तेनुं मात्र दिग्दर्शन करावी वधु लंबावतों नथी. आ अनुमान अने प्रत्यक्ष प्रमाणों आप्यां छे. तेमां तमारा साते प्रश्लोना उत्तर आवी जाय छे.

#### छतां दिग्दर्शनरूपे तेना उत्तरो पण लखुं छुं.

ए प्रश्नोना उत्तर आपवा माटे पहेलां प्रमाण ग्रंथोनां नाम जणाववां जोइए. प्रमाण विना कोई वस्तु सिद्ध थती नथी. माटे सर्व मान्य प्रमाणो नीचे प्रमाणे योगवासिष्टना मुमुक्षु प्रकरणना अढारमां सर्गमां विसष्ट महामुनिये श्रीरामने कह्यां छे. "अपि पौरुष मादेयं, शास्त्रं चेद्युक्तिबोधकम् । अन्यक्ताषमपि त्याज्यं, भाव्यं न्यायैकसेविना ॥ युक्तियुक्त मुपादेयं, वचनं बालकादिप, अन्य तृणमिव त्याज्य, मप्युक्तं परमेष्टिना ॥ योऽस्मत्तातस्य कूपोऽय, मिति कौपं पिवेत पयः । त्यक्त्वा गांगं पुरःस्थं तं, कोऽनुशास्त्यितरागिणम्" ॥

अर्थ—अपक्षपाती मनुष्ये युक्ति बोधक शास्त्र साधारण पुरुषे रचे छुं होय तथापि स्वीकारवुं, पण युक्ति वि-नानुं, ऋषिये कहे छुं होय तोय पण त्याग करवुं. केम के युक्तियुक्त वचन बाळकथी पण ग्रहण करवा छायक छे ने युक्ति विनानुं कादि प्रजापतिये कहे छुं तोपण तृणनी पेठे त्याग करवा छायक छे. एम छतां पण जे अमारा बापनो कुवो छे एवा हठथी पासे रहे छुं गंगानुं मीठुं जल मूकी कुवानुं खारुं पाणी पीए तेवा अतिरागीने कोण उपदेश करे?

युक्ति—षट् छिंगथी ग्रंथनां तात्पर्य (रहस्य)नो निर्णय करवो तेने युक्ति कहे छे. षट्लिंग एटले षट् प्रमाण—ते आ प्रमाणे छे. प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, राब्द, अर्थापित्त, अने अभाव. आ प्रमाणोमां कोई एक प्रत्यक्षनेत्र माने छे. कोई प्रत्यक्ष अने अनुमान एम बे भाने छे. कोई त्रण माने छे कोई चार माने छे. पूर्वमीमांसा तथा उत्तर मीमांसावाळा छप्रमाण माने छे तथा बीजा आठ प्रमाण माने छे. पण ते बधानो समावेश घणुं करी त्रण प्रमाणमां थाय छे. पातंत्रल योगदर्शनमां कह्युं छे के "प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि" (प्रथम समाधिपादनुं सूत्र ७ मुं) अथे—प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम ( शब्द-प्रमाण ), ए प्रमाणे छे. यथार्थ ज्ञाननुं ने करण होय ते प्रमाण कहेवाय छे. इन्द्रियसिन्नकर्षद्वारा

चित्तनुं बहारनी वस्तुरूपे परिणाम ते प्रत्यक्षचित्तना बहारना संचार माटे इन्द्रियोद्वार रूप छे. धुमाडो देखीने अग्निनुं ज्ञान थाय ते अनुमान, आ बे सिवाय ज्ञानना साधनरूप एक त्रीजी वृत्ति छे ते द्वारा आ बे करतां जूदीन तरेहनुं ज्ञान उदय थाय छे. ए त्रीजी शब्द्यहण जन्य वृत्तिने आगम नामथी ओळखामां आवे छे. आ आगमज आपणा बधा ज्ञाननुं मूळ छे. आ आगमद्वारा आपणने त्रण प्रकारनुं ज्ञान मळे छे. ते एक "आ शुं?" ए प्रश्नना उत्तरवाळुं, बीजुं ज्ञानी पुरुषोनी स्वयं प्रवत्तीवेली शिक्षाद्वारा मळेलुं, अने त्रीजुं वयोवृद्ध तथा ज्ञानवृद्धनी परस्परनी वातो सांभळीने थयेलुं. ए रीते प्रमाणो बताव्या हवे शब्दप्रमाण नीचे प्रमाणे छे.

याज्ञवल्क्य स्पृतिना आचाराध्यायमां श्लोक छे के

श्रुतिः स्पृतिः सद्वाचारः, स्वस्यच त्रियमात्मनः।सम्यक्संकल्पजः कामो धर्ममूल मिदं स्पृतम्।।

अर्थ-श्रुति कहेतां वेद, स्पृति कहेतां धर्मशास्त्र, सदाचार कहेतां शिष्ट छोकोनी रीतभात, पोताना मनने गमतुं ते ए रीते के ने विषयमां शास्त्रोक्त अनेक पक्ष छे तेमां ने आपणने अंतुकुळ होय ते तथा सारा रुडा संकल्पथी उठेली अथीत् ने शास्त्रविरुद्ध नहीं होय एवी हरेक नियम पाळवानी इच्छा एटला धर्मनां मूळ एटले स्वरूप समजवानां प्रमाण छे. तथा श्लोक ३ मां कहेल छे के-पुराणं न्याय मीमांसा, धर्मशास्त्रांगमिश्रिताः।। वेदाः स्थानानि विद्यानां, धर्मस्य च चतुर्देश ॥ ३॥ अर्थ-पुराण कहेतां ब्रह्मपुराण, विष्णुपुराण इत्यादि, न्याय एटले तर्कविद्या, मीमांसा एटले वेदार्थ विचार, धर्मशास्त्र एटले मनु विगेरे ऋषिओए रचेला स्टतिव्रंथ, शिक्षा, कल्पसूत्र, व्याकरण, निरुक्त, छंद, अने ज्योतिष् ए वेदनां छ अंग, वेद चार-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अने अथर्वणवेद मळीने चउद् प्रकारना आ निबंधो विद्याओना एटले चतुर्विध पुरुषार्थनुं ज्ञान थवा माटे ने साधन छे तेवी विद्याओनां अने धर्मनां स्थान कहेतां आधार के पायाओ छे. वळी नीचे प्रमाणे विद्यानां अढार प्रस्थान छे. चार वेद, चार उपवेद, षट्वेदनां अंग, अने चार उपांग ते पुराण न्याय मीमांसा, अने धर्मशास्त्र. ए रीते वैखरी वाणी रूप विद्याना अंढार भेद छे तेमने प्रस्थान कहे छे. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ए चार वेद छे. आयुर्वेद, धरुर्वेद, गांधर्ववेद, अने अर्थवेवेद ए चार उपवेद छे. शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष् , अने छंदस् ए वेदनां छ अंग छे. १ ब्रह्म, २ पद्म, ३ बैष्णव, ४ शैव, ५ भागवत, ६ नारदीय, ७ मार्केडेय, ८ आम्नेय, ९ भविष्य, १० बहा वैवर्त, ११ लिंग, १२ वराह, १३ स्कंद, १४ वामन, १५ कौर्म्य, १५ मात्स्य, १७ गारुड, अने १८ ब्रह्मांड. ए अढार पुराण छे. न्याय शास्त्रमां न्याय तथा वैरोषिक, मीमांसा शास्त्रमां एक धर्ममीमांसाने बीजी ब्रह्ममीमांस. धर्ममीमांसाने पूर्वमीमांसा अने ब्रह्म-मीमांसाने उत्तरमीमांसा कहे छे. धर्मशास्त्र एटले स्पृतिओ, याज्ञवल्क्य स्मृतिना आचाराध्यायनो श्लोक ४ थो. ''मन्वत्रिविष्णुहारीत-याज्ञवल्क्यो श्वनोंगिराः । यमापस्तबसंक्तीः कात्यायनचृ-इस्पती ।। ४ ॥ पराश्वरच्यासशंख-लिखिता दक्षगौतमौ, शातातपो विशिष्टश्च धर्मशास्त्रमयोजकाः ५

अर्थ-मर्नु, अति, विष्णुं, हॉरीत, याज्ञवलंक्य, उरार्का, अंगिरां, संवर्त्त, शातातंप परारोरं, गीतंमें, शांखें, दक्षें, आपस्तंबं, यमं, बृहर्संति, व्यांसं, कात्यांयन, देवेते, नारदें, इत्यादिक उपर बतावेल सर्वज्ञ थया छे. तेमणे वेदने अनुसार स्पृतिनामे प्रंथो कर्या छे. तेने धर्मशास्त्र कहे छे. अने ते तेमना नामथी ओळखाय छे. तेम सांख्यशास्त्र, योगशास्त्र, ए पण धर्मशास्त्रनां अंतर्भूत छे. हवे आमां पहेले नंबरे प्रमाणभूत वेद, पछी स्पृति, पछी शास्त्र; पछी इतिहास अने पछी प्रराण, पछी, अन्य ग्रंथो प्रमाण भूत छे:-श्रुतिस्मृतिपुराणेषु विरुद्धेषु परस्परम् इत्यादि-अर्थ:-श्रुति अने स्पृतिनो विरोध आवे तो श्रुति बळवान् छे. अने स्पृति तथा आचारनो विरोध आवे तो स्मृति बळवान् छे.

ए प्रमाणे राब्द्प्रमाणना यंथो ने सर्व मान्य छे ते बतावीने हवे ते प्रश्नोना उत्तर पेहेला राब्द-प्रमाणथी आपीए छीए अने ते राब्द प्रमाणमां पण पहेलां ने शास्त्रमां वधनुं कहेलुं छे, तेज शास्त्रोनां तेना विरुद्धना प्रमाण आपीने पछी एक एकथी विशेष बळवान् प्रमाण एक पछी एक यथानुक्रम प्रमाणे आ सार्थ द्शीवेल छे.

#### प्रभो.

प्र०-१ बळेव, दशरा विगेरे पर्वोपर देवींके देवने भोग आपवाना निमित्तथी पशुवध (पाडा, बकरां विगेरे प्राणीनो भीग) एवा प्रकारनी पशुहिंसा करवानुं क्या शास्त्रमां कह्युं छे ए पेहेलो प्रश्न छे.

उत्तर:—मार्कंडेय प्रराणगत, चंडीपाठ कवच १८ मां (श्लोक २०) सुरथ राजा प्रत्ये मार्कंडेय ऋषि कहे छे. रुधिराक्तेनबिलना मांसेन सुरया नृप, प्राणामाचमनीयेन चंदनेन सुगंधिना ॥ २०॥ अर्थ:—हे राजा रक्तप्रोक्षण करेला अन्नतुं बलि, मांस तथा मद्यपण ए चंडी-काने समर्पण करवां, पछी नमस्कार, आचमन, सुगंधयुक्त चंदन इत्यादिथी पुजन करवुं. तथा देवी-पुराणमां कहेल छे के. अश्विन पूजियत्वा तु अर्थरात्रेष्ट्रमीष्ट्रच, घातयंतिपञ्चन् भक्त्या ते भवंति महाबलाः ॥ तथा—पशुघातश्रकर्तव्यो, गवयाजवधस्तथा ॥ (वळी)—तत्राञ्चपेषछागमित्रप्रस्वमांसाना मुत्तरोत्तरमाञ्चस्त्यं फलविशेषश्च अर्थ—देवीपुराणमां कहां छे के आसोमासमां अष्टमीने दिवसे अर्थ रात्रे जे मातानुं पूजन करीने भक्तिवडे करीने पशुने मारे छे; ते महाबळवान् थाय छे. पशुघात करवा योग्य छे. बलिदानमां अश्व, घेटो, बकरो, पाडो, ने पोतानुं मांस एम उत्तरोत्तर श्रेष्ठ छे ने तेनुं फळ पण उत्तरोत्तर श्रेष्ठ छे.

ए सिवाय कालीपुराण तथा बीजा वामतंत्रना ग्रंथोमां घणे ठेकाणे छे. पण दशरा तथा बळेवने दिवसे बिल आपवानो निषेध नीचे प्रमाणे छे.—नंदायां ज्वलते विन्हः पूर्णीयां पशुघातनम्, भद्रायां गोकुले कीडा, तत्रराज्यं विनश्यति"

अर्थ:—पडवे, छट्ठ, अने एकादशी ए नंदा तिथि छे. ते दिवसे जो होली प्रगटे छे तो, तथा पांचम, दशम, अने पूनम ए पूर्णातिथिने दिवसे पशुघात पशुनो बलि आपे तो, अने बीज, सातमने बारस ए भदा तिथिमां जन्माष्टमीनो उत्सव करे तो, जे देशमां ए प्रमाणे थाय त्यां राजनो

नारा थाय छे. ए प्रमाणे कालीपुराण ब्रह्मवैवर्तपुराण तथा नारद पुराणमां कहेल छे, माटे दशरा तथा बळेवने दिवसे बाले आपवानो निषेध छे ते दिवसे पशुवध न करवो.

प्र. २. जे शास्त्रमां कहुं होय ते शास्त्र आर्य लोकोमां सर्वमान्य गणाय छे के केम ? अथवा बहुमान्य गणाय छे के केम ?

उत्तर. जे शास्त्रमां कहेल छे ते शास्त्र आर्य लोकोमां सर्वमान्य गणातां नथी, तथा बहुमान्य पण गणातां नथी. छेवटनी कनिष्ट पायरीनां छे. ते आगळ दशीवेल शब्द प्रमाणना सर्वमान्य ग्रंथोथी जाणशो के ते सर्वमान्य नथी.

- प्र. ३. ते शास्त्र करतां पण जे शास्त्रनुं प्रमाण वधारे बलवान् गणातुं होय एवां कोइ शास्त्रमां ते हिंसानो निषेध कर्यों छे के केम?
- उत्तर, ते शास्त्र करतां पण ने शास्त्रतुं प्रमाण वधारे बळवान् होय एवा घणा शास्त्रोमां ते हिंसानो निषेध छे, एटछुंज नहीं पण तेने ते शास्त्रोमां पण निषेध करेल छे. अने ते सर्वे नीचे प्रमाणे छे.

पहेलां तेमना शास्त्रोनोज निषेध लखीए छीए.

मार्केडेय पुराणगत चंडीपाठ कवच १५ श्लोक १९–२०–२१–देवीदेव प्रत्ये कहे छे. सर्वे ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् पशुपुष्यार्घ धुपश्च, गंधदीपै स्तथोत्तमः ॥ १९॥ विप्राणां भोजनैहोंमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशं ॥ अन्यैश्च विविधेर्भोगः पदानैवित्सरेण या ॥ २०॥ **प्रीतिर्मिक्रियते सास्मिन्सकृत्युचरिते श्रुते श्रुतं हरित पापानि तथारोग्यं प्रयच्छित ॥ २१ ॥** अर्थ-देवी देव प्रत्ये कहे छे के आ सर्वे माहात्म्य (चंडीपाठ) मारुं सिन्नधान करनार छे, माटे पशुबलि, जळ, दुग्ध, दुर्वाग्र, दहीं, अक्षत, तील, यव, तथा हिरण्यगर्भ एवा आठ पदार्थ युक्त अर्घ्य तथा उत्तम सुगंधित गंध, पुष्प, धूप, दीप वगेरे अने ब्रह्मभोजन होम प्रति दिवसे पंचामृतनो अभिषेक तथा अनेक प्रकारनां पुष्पोनी माळाओ वगेरे भोगो मने तथा मारा उद्देशथी ब्राह्मणोने वस्त्रा-लंकारादि दानो आपवा पूर्वक एक वर्ष पर्यंत मारी पूजा करीने जेओ मारी प्रीांत उत्पन्न करे छे, ते प्रीति मारुं आ सुचरित्र (चंडीपाठ) एकवार श्रवण करवाथी मने पहोंचे छे. कारण के आ चरित्र मात्र सांभळवाथीज सकळ पापोनुं हरण करे छे, तथा शरीरने विषे आरोग्यता आपे छे ॥ २१ ॥ तथा कालीपुराणमां कहे छे के-नंदायां ज्वलते वन्हिः पूर्णायां पशुघातनम् ॥ भद्रायां गोकुले क्रीडा तत्र राज्यं विनश्यित ।। अर्थ-ज्यां, नंदा कहेतां पडवे छठ्टेने एकादशीमां होली प्रगटाय छे, तथा पूर्णा कहेतां पांचम, दराम, अने पुनेमने दिवसे बिल पशुघात थाय छे. अने भद्रा कहेतां बीज, सातम, ने बारशने दिवसे जनमाष्टमीनो उत्सव थाय छे. त्यां राज नाश पामे छे आ वाक्य ब्रह्म वैवर्त तथा नारदादिक प्रराणमां पण छे.

कलियुगे वर्ज्य तेमां आने लगतांज लखेल छे. वृहन्नारदीये ''देवराच स्नतोत्पत्ति मेधुपर्क पशोर्वधः मांसदानं तथा श्रादे वानप्रस्थाश्रम स्तथा ।। अर्थ-दीयर थकी पुत्रनी उत्पत्ति, मधुपर्क, पश्चनो वध, श्राद्धमां मांसनुं दान तथा वानप्रस्थाश्रम ए कलियुगमां त्याज्य छे. हेमाद्रि, ब्राह्ममां कहे छे के, गोत्रान्मातुः सपिंडाया विवाहो गोवधस्तथा, नराश्वमेधो मद्यं च कलौ वर्ज्यं द्विजातिभिः ॥ माताना गोत्र थकी तथा पोताना सिपंडी गोत्र थकी विवाह न करवी, गोवध न करवी तथा नरमेध, अश्वमेध, अने मद्यपान कलियुगे ब्राह्मण क्षत्रि अने वैदंयने वर्ज्य छे. अक्षता गौ पशुश्रीव श्रादे मांसं तथा मधु, देवराच सुतोत्पत्तिः। कलौ पंच विवर्जयेत् ॥ इति निगमोक्तिः॥ अक्षत स्त्री, गाय, पशु,श्राद्धमां मांस तथा मद्य, दीयर थकी पुत्रनी उत्पत्ति ए पांच कलियुगमां वर्जवां एम निगममां कहेल छे. वरातिथिपि-तृभ्यश्च पशूपाकरणक्रियेति कल्चिवर्ज्येषु ॥ हेमाद्रावादित्यपुराणे च॥ वरने, अतिथिने, पितृने, पशुरूपी उपाकरण किया ते कलियुगमां वर्ज्य छे एम हेमादि तथा आदित्य पुराणमां छे. भागवतना चोथा स्कंधमां प्राचीन बर्हिषी राजाने नारदे कह्यं छे के-- हे प्राचीन बर्हिषी राजा, तें जे यज्ञमां हजारो पशुओ मारी नांख्यां ते तें केवळ अधर्म कर्यों छे. कारण के ते पशुओ तारी वाट जोड़ने रह्यां छे, के आ राजा क्यारे मरे के तेणे अमने जेम मारेल छे ते प्रकारे पाछुं अमारुं वैर लइए. माटे हे राजन् ते पद्मुओ तारी वाट जोइने ऊभा छे तेमने प्रत्यक्ष जो. मतल्ब के अहिंसा एज परम धर्म छे. महाभारतांतर्गत राांति पर्वना अध्याय १५२ मां कहेल छे के "अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा, अनुग्रहश्च दानं च सतां धर्मः सनातनः ॥ अर्थः-मन, वाणी तथा कर्मे करी प्राणी मात्रनो द्रोह न करवो, द्या राखवी, तथा उपकार करवो ए सत् पुरुषनो सनातन धर्म छे. तथा अध्याय ११६ मां कहेल छे जे-अहिंसा परमो धर्म स्तथाऽहिंसा परोदमः ॥ अहिंसा परभंदानमहिंसा परमं तपः ॥ अर्थः-अहिंसा ए उत्तम धर्म, उत्तम दम, उत्तम दान, तथा उत्तम तप छे. वळी एज पर्वमां कहेल छे जे-यथा नागपदे न्यानि पदानि पदगामिनाम् ॥ सर्वाण्येवापि धीयंते पदजातानि कौंजरे ॥ एवं मर्व महिंसायां, धर्मार्थमपि धीयते ।। अर्थः-जे प्रकारे हाथीना पगमां पगवडे चालनार सर्व प्राणियोना पग अंतर्भृत थाय छे ते प्रमाणेज यज्ञ, तप, दानादिक सर्वे धर्म अने अर्थ अहिंसाने विषे अंतर्भूत थाय छे. विष्णुरामीए कहेल छे ने-मतर्व्यमिति यद्दुःखं पुरुषस्योप जायते ।। शक्यस्तेनानुमानेन परोऽपि परिरक्षितुम् ।। अर्थः--पुरुषने मरण संबंधा जे दुःख थाय छे, ते उपमाए जोइ ते अनुमानथी अन्य प्राणियोनी पण रक्षा करवा योग्य छे. तेमज महाभारतांतर्गत अनुशासन पर्वना अध्याय १११ तथा ११६ मां कहेल छे जे-प्राणा यथात्मनोऽभीष्टा भूतानामपि वै तथा, आत्मौपम्येन मंतव्या बुद्धिमद्भिःकृतात्मिभिः अर्थ-ने प्रमाणे पोतानो प्राण पोताने प्रिय छे तेज प्रमाणे बीजा प्राणियोने पण तेओनो प्राण तेओने प्रिय हशे ए प्रमाणे पोतानी उपमाए बुद्धिमान ज्ञानियोए विचारवुं. वळी कह्युं छे के**-नहि प्राणात्प्रियतरं लोके किंचन विद्यते ।। तस्मा**इयां नरः क्यी द्यथात्मनि तथापरे ।। अर्थ-वळी जगत्मां प्राणयी अधिक प्रिय कांइपण जणायलुं नथी ते

कारण माटे मनुष्ये पोतानी उपमावडे जोइ बीजापर दया राखवी. वळी कह्यं छे के-प्राणदानात्परं दानं न भूतं न भविष्यति ।। नह्यात्मनः प्रियतरं किंचिदस्तीह निश्चितम् ।। अर्थ-प्राणदानथी बीजुं अधिक श्रेष्ठदान आज सुधी थयुं नथी अने थरो पण नहीं. कारण के आत्माथी बीजुं कांइ पण अधिक प्रिय छे ज नहीं. ए निश्चय है. तथा कहुं है के अनिष्टं सर्व भूतानां मरणं नाम भारत, मृत्युकालेहि भूतानां सद्यो भवित वेपथु: ॥ अर्थ-सर्व प्राणिमात्रने मृत्यु महा अनिष्ट छे; कारण के मृत्युकालमां प्राणियोने तत्काळ कंप थाय छे. माटे बिचारा गरीब निरपराधी प्राणियोनी जींदगी पर्यंतनुं सुख तोडी नांखवुं एनाथी बीजुं कोइ पापाचरण नथी. वळी प्राणियोनी सर्वे जातिओमां आनंद रहेलो छेज जेथी तेमने पण मनुष्यनी पेठे घणुं जीववानी होंदा होय छे, अने तेओ पोतपोताना कुटुंबमां घणो स्नेह बांधे छे; नेथी एक बीजाने वियोग थतां तेओ अत्यंत दुःखी थाय छे. एम आपणे प्रत्यक्ष अनुभवधी जोईए तो आपणा अनुभवमां पण आवे छे. शांति पर्व मोक्ष धर्म-अध्याय ८८ मां धर्मनुं एवुं लक्षण आपेलुं छे के सर्वभूतनुं हित तथा सर्वभूत साथे मित्रभाव राखवो ए धर्म प्राचीन छे. सर्व प्राणियोने अभय आपे छे; तेज अभय पामे छे. तप करवाथी, यज्ञ करवाथी, दान करवाथी, अने वेदांत वाक्योनुं चिंत-वन करवाथी, जे जे फळ प्राप्त थाय छे, ते फळ एक अभयदानरूप धर्म करवाथी पण प्राप्त थाय छे. जे पुरुष सर्व प्राणियोने आलोकमां अभयदानरूपी दक्षिणा आपे छे, तेने सर्व यज्ञनुं फळप्राप्त थईने ते पण अभय दक्षणा पामे छे. ऋषिओए अने योगीओए नहुष राजाने एम कह्युं छे के, तें गायने हणी ते पोतानी माने हण्या बरोबर पाप कर्युं छे, तें प्रजापतिने हण्या बरोबर पाप कर्युं छे.-इत्यादि, इत्यादि, अध्याय ८९ मां अहिंसानी स्तुति अने हिंसानी निंदा विषे प्रजाना उपर द्याओं विचल्यु राजाए कह्युं छे. अध्याय ९२ मां-तुलाधारे जाजलीने अहिंसाधर्म कहेल छे. अध्याय ९७ मां-हिंसा करवी ए यज्ञ कमे नथी—हिंसात्मक यज्ञ करवाथी सत्यनामे ब्राह्मणनुं मोटुं तप नारा पाम्युं. अध्याय ९३ मां प्राणियोनी हिंसा कर्या विना ऐश्वर्य प्राप्त थाय एवो धर्म गृहस्थने अने योगीने कल्याणकारी होय ते कह्यो छे. अध्याय ११७ मां जे हिंसायुक्त नथी ते आर्य पुरुषनुं सत्पुरुषो पूजन करे छे. पातंजल योगदर्शन साधनपाद सू. ३० तथा ३२.

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ॥ ३०॥ शौचसंतोषतपस्वाध्यायेश्वरप्रणिधा-नानि नियमाः ॥ ३२॥ अर्थः—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अने अपरिग्रह ए यम छे.॥३०॥ पवित्रता, संतोष, तप, स्वाध्याय अने ईश्वरप्रणिधान ए नियम छे. सूत्र ॥ ३१॥ तथा सूत्र ३२ मां कहेल छे के—सू० जातिदेशकालसमयानविच्छन्नाः सार्वभौमा महाव्रतम् ॥ ३१॥ अर्थः—जाति, देश, काळ अने समयथी ते यमनो भंग नथतां जो सर्व अवस्थामां ते सुस्थिर रहे तो ते महाव्रत कहेवाय छे. पछी सूत्र ३३ वितर्कवाधने प्रतिपक्षभावनम् ॥ ३६॥

अर्थ-वितर्कनां नारामां तेना प्रतिपक्षनी भावना हेतु छे. ॥ ३३ ॥ तथा सूत्र ३४ वितर्का हिंसादयः कृतकारितानुमोदिता छोभक्रोधमोहपूर्वका मृदुमध्याधिमात्रा दुःखाज्ञानानंतफला

इति प्रतिपक्षभावनम् ॥ ३४॥ अर्थः-हिंसादिक वितर्को छे तेना कृत, कारित, अने अनुमोदित ए त्रण प्रकार छे, लोभ, कोघ अने मोहपूर्वक ए वितर्कोनी उत्पत्ति थाय छे. ए विकल्पना मृदु, मध्य, अधिमात्र एवा अवांतर भेद छे. उक्त विकल्प दुःख अने अज्ञानरूपी अनंत फळो उत्पन्न करे छे. एवी रेतिनी प्रतिपक्षभावना करवी ३४. ए अहिंसाथी जे फळ थाय छे. ते कहे छे. सूत्र ३५. अहिंसाप्रतिष्टायां तत्संनिधौ वैरत्यागः ॥ ३५ ॥ अर्थ-अहिंसा सिद्ध थवाथी ते मुनि पासे वैरनो त्याग थाय छे. आ यम नियम ते सांख्य, न्याय, वैशेषिक, अने बंने मीमांसा ए शास्त्रोने संमत छे; एटछुंज नहीं पण सर्वे धर्मवाळाओने पण संमत छे. कोई पण धर्ममां आनो निषेध करेल जोवामां आवतो नथी. तेम कोई शास्त्रमां पण आयम नियमनो निषेध नथी अने ते राजाथी ते चांडाल पर्यंत सर्वने मानवा तथा पाळवा योग्य छे. हवे ए अहिंसानुं लक्षण योगसूत्रपर न्यास भाष्य छे तेमां लखेल छे ने "तत्रा-हिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूताना मनभिद्रोहः ॥ अर्थः—सर्व प्रकारे सर्वदा सर्व प्राणियोनो अद्रोह करवो ते अहिंसा छे. तथा याज्ञवल्क्य संहितामां कहेल छे ने "कर्मणा मनसा वाचा सर्वभूतेषु सर्वदा, अक्रेश-जननं प्रोक्तमहिंसात्वेन योगिभिः॥ अर्थ-सर्वदा सर्व प्राणियोने ने मन वचन अने रारीर वडे क्लेरानी उत्पत्ति न करवी तेनुं नाम अहिंसा छे. तथा याज्ञवल्य स्मृतिना आचाराध्यायमां कहेल छे के अहिंसा सत्य मस्तेयं शौच मिंद्रियनिग्रहः ॥ दानं दया दमः क्षान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनं ॥ अर्थ-अहिंसा, सत्य, चोरी न करवी, पवित्रता, इन्द्रियनिग्रह, परोपकार, दया, मनतुं दमन, तथा क्षमा ए नव सर्वेने धर्मनां साधन छे. आ याज्ञवल्क्यना मतमां अत्रिसंहिता, विष्णुस्मृति, हारितस्मृति, औद्रानसस्मृति, अंगिरसस्मृति, यमस्मृति, आपस्तंबस्मृति, संवर्त्तस्मृति, कात्यायनस्मृति, बृहस्पति-स्मृति, पराशरस्मृति, व्याससंहिता, शंखसंहिता, छिखितसंहिता, दक्षसंहिता, गौतमसंहिता, शाता-तपसंहिता, विशाष्टसंहिता, पुल्रस्त्यस्मृति, बुधस्मृति अने कञ्यपस्मृति जरा पण विरुद्ध नथीः यजुर्वेद श्रुतिः नतं धिद्यिऽइमा जजा नान्य घुषम् क्रमंतरं बभूव, नीहारेण प्रादृता जल्प्या चा सु तृपऽउनथन्नासश्चरंति ।। अर्थ-ते परमेश्वरने आपणे जाणता नथी जे आ प्रजाओने उत्पन्न करे छे (करता हवा) कारण के तेने ने आपणे घणुं अंतर होतुं हवुं. माटे ते परमेश्वरना रूपने जाण्या विना अज्ञानमां वींटाएला प्राणि बकवाद करे छे अने कहे छे के आवी रीतिये पशुओनी हिंसा करवाथी तथा मांस भक्षण करवा थकी अनेक जातनुं आ लोक तथा परलोकनुं सुख मळे छे. ए प्रमाणे बकवाद करे छे, ते केवळ कर्मजड छे. कांइपण धर्मने जाणता नथी. मिथ्या बक-वाद करे छे. केनी पेंठे के जेम मोटो वंटोळीओ आवेलो होय अने तेमां राख उडेली होय अने आंखो बुरायेली होय, काई न जोइ शकतो होय, ने तेने पूछयुं होय के पूर्व दिशा कई? त्यारे ते जेम जाण्या विना पश्चिम के दक्षिणने पूर्व कहे, तेम अज्ञानी मूर्ख पुरुषो हिंसा करवा थकी आ लोक पर-लोकनुं सुख मळे एम बकवाद करे छे. तेने शुं फळ मळे छे ते कहे छे के, केवळ नीच अवतारो वारंवार पामे छे. तथा श्रुति:-अथ कुपूया चरणा अभ्यासो हयते कुपूयां योनि मापद्येरन् श्वयो-

नि वा शूकरयोनि वा चांडालयोनि वा इति. अर्थ-शास्त्र निषिद्ध जे यज्ञमां पशुवध इत्यादि पाप-कर्मीने करनार पुरुष जलदीज नीच योनिने प्राप्त थाय छे. कदि श्वान योनिने पामे छे, कदि शुकर योनिने पामे छे, ए आदि र्रुइने बीजी पण अनेक अनेक नीच योनियोने पामे छे यजुर्वेद ईशोपनिषद् अथवा वाजसनेय संहितोपनिषद्मां कहेल छे के श्रुति:-अन्धन्तमः प्रविश्वन्ति येऽविद्या मुपासते ततो भूय इवते तमोय उ विद्यायाऽरताः ॥ १२ ॥ अर्थ-ने पुरुष केवळः कर्मने करे छे ते पुरुष अदर्शनरूप तमने पामे छे. अने जे पुरुष केवळ उपासनामां प्रीतिवाळो छे ते पुरुष दारुण तमने पामे छे।।९।। श्रुति:-अन्धन्तमः प्रविश्वन्ति येऽसंभूति मुपासते ततो भ्रय इवते तमोय उ संम्भूत्या अताः १२ अर्थ:-जे पुरुष कारण अन्याकृत नाम मायानी उपासना करे छे, ते पुरुष अर्द्शनरूप तमने प्राप्त थाय छे. तथा ने पुरुष हिरण्यगर्भरूप नाम कार्यनी उपासना करे छे ते पुरुष अधिक घोर तमने पामे छे. तथा शिरउपनिषद् , गर्भोपनिषद् , नादींबंदु उपनिषत् , ब्रह्मांबंदु उपनिषत् , अमृतबिंदूपनिषत् , ध्यानांबेंद्रपनिषत्, तेजोबिन्द्रपनिषत्, योगतत्वोपनिषत्, संन्यासोपनिषत्, आरुणेयोपनिषत्, ब्रह्मविद्योपनिषत्, क्षुरिकोपनिषत्, चूलिकोपनिषत्, अर्थविशालोपनिषत्, ब्रह्मोपनिषत्, प्राणाग्नि-होत्रोपनिषत् , नीलरुद्रोपनिषद् , कंठश्रुत्युपनिषत् , पिंडोपनिषत् , आत्मोपनिषत् , दामपूर्वतापन्युप-निषत् , रामोत्तरतापन्युपनिपत् , हनुमदुक्तरामोपनिषत् , संवोपनिपत् , हंसोपनिषत् , जाबालोप-निषत् अने कैवल्योपनिषत् एओमां क्यांइए पण दसेरा तथा बळेव पर के बीजे पर्वे पशुवध करवो एम छे ज नहीं. वळी−ईरा, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य, तौत्तिरीय, ऐतरेय, छांदोग्य ए उपनिषदो जे चारे वेदनां छे तेमां कयांइ पण पशुवध छेज नहीं. तथा वृहदारण्यमां पण दसेरा बळेवे पशुवध करवो एवं क्यांइ पण छेज नहीं.

प्र. ४. राजाओने ते अवस्य कर्तव्यज छे, अने ते न करवामां आवे तो बळवान् शास्त्रनी आज्ञा तोडी गणाय एवं कांइ स्पष्ट प्रमाण छे के केम ?

उत्तर—राजाओने ते अवश्य कर्तव्य छे एम कोइ कोइ कहे छे. अने मार्कडेय ऋषिए मुरथ राजाने चंडीपाठमां कहेल छे ते आगळ बतावेल छे, पण ते नहीं सरखुं छे. एटले खास एवी कांई फरज विशेष होय एम जणातुं नथी. अने ते न करवामां आवे तो कांई बळवान् शास्त्रनी आज्ञा तोडी गणाय एवुं कांई स्पष्ट कारण छेज नहीं. पण न करवुं ए उत्तम छे. अने ते आगळना प्रमाणोथी जाणी लेशो.

पश्च—५ ए हिंसानी प्रवृत्ति जो न करवामां आवे तो तेथी राज्यने, प्रजाने के राजाना अंगे कोइपण प्रकारनो आपत्तियोग आवे अथवा अकार्य कर्युं गणाय एवुं कोइ बळवान् शास्त्रमां कह्युं छे के केम?

उत्तर—ए प्रमाणे कोइ पण बळवान् शास्त्रमां कह्युं नथी. पण न करवाथी फायदा बताव्या छे. अने ते प्रश्न त्रीजाना खुलासामां जे प्रमाणो आप्यां छे तेथी वाकेफ थशो. करवाथी नुकशान छे.

प. ६. ते पशुवधने बदले बीजी कोइ हिंसारहित क्रिया करी ते पर्व आराधवामां आवे तो तेथी कंइ बळवान् शास्त्रनी आज्ञानो भंग कर्यो गणाय के केम? तेवी हिंसा रहित शुं शुं क्रिया बराबर गणाय? उत्तर—ते पशुवधने बदले बीजी कोई हिंसारहित किया करी ते पर्व आराधवामां आवे तो तेथी कंई बळवान् शास्त्रनी आज्ञानो भंग कर्यो गणाय निहं पण सारुं छे. एवी हिंसारहित कियाओ बराबर गणाय तेवी नीचे प्रमाणे छे, कालीपुराणे—कूष्मांड मिक्षुदंडच, मांसं सारस मेवच, एते बालिसमाः प्रोक्ता स्तृप्तौ छागसमाःसदा ॥ साकरकोळुं, शेरडीनी कातळी, मांस, सारसपक्षी ए बधाय बलिदान समान कह्यां छे. एओ तृप्तिने विषे निरंतर बकरानी तुल्य छे. रुद्रयामले—छागाभावेतु कूष्मांडं श्रीफलं वा मनोहरं वस्त्रसंविष्टुतं कृत्वा छेदयेच्छुरिकादिना. अर्थ—रुद्रयामलमां कह्यं छे के बकराना अभावे, साकरकोहोळुं अथवा सुंदर श्रीफळ तेने लूगडुं वींटाळीने छरीवडे छेदवुं.

**সश्न**—७ पशुवध करवाने बद्छे तेनां नाक कानने छेको मारीने ते प्राणिने छूटुं मेली देवामां आवे तो क्रिया पूर्ण थई गणाय के केम?

उत्तर-एम करवुं ते ठीक नथी. निषेध छे. एटले नाक कानने छेको करवो ते ठीक नथी. तंत्रांतरे. ओष्टस्य चिबुकस्यापि नेंद्रियाणां तथैवच, रक्तं मांसं बल्टिदाने न दातव्यं कदाचन ॥ अर्थ-होठनुं, नाकनुं ने इंद्रियोनुं मांस अथवा रुधिर बलिदानमां कोइ वखत आपवुं नहीं. छूटुं मेली देवुं उत्तम छे अने ते आगळ त्रीजा प्रश्नना खुलासाथी वाकेफ थवं. त्यारे आवा यज्ञो कोण करे छे? तो विशेष आसुरी संपत्तिवाळा करे छे. एम कृष्ण भगवान् कहे छे. भगवद्गीता अध्याय १६ श्लोक ५ मो. देवी संपद् विमोक्षाय निबंधायासुरी मता ॥ अर्थ-देवी संपत् मोक्ष कारणे ने आसुरी बंधन कारणे छे. तथा श्लोक ६ मां कहेल छे के **द्वौभूतसर्गी। लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एवच ॥ अर्थ**—आ लोकमां देवनी अने असुरनी एवी बे प्रकारनी भूतमृष्टि छे. अध्याय १७ श्लोक ४ यजंते सात्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः प्रेतान्भूतगणांश्रान्ये यजंते तामसा जनाः।। अर्थ-सात्विक जन देवने यजे छे. राजस ते यक्ष राक्षसने अने तामसजन ते भूतगणने यजे छे. अध्याय १६ <sup>न्</sup>रोक १७ **आत्मसंभा**-विताः स्तन्था धनमानमदान्विताः । यजंते नाम यज्ञैस्ते दंभेना विधिपूर्वकम् ।। अहंकारं बलंदर्प कामं क्रोधंच संश्रिताः ॥ मामात्मपरदेहेषु पद्धिषंतोऽभ्यसूयकाः ॥ अर्थः-कोइ सत्पुरुषे पूज्य करेला नहीं पण पोतेज पोतानी मेळे पूज्य बनी बेठेला, अनम्र, धनथी थयेला मान अने मदवाळा, अहंकार, बल, गर्व, काम अने क्रोधनो आश्रय करीने रहेला अर्थात् अहंकार आदि दुर्गुणोमां बुडेला, सन्मार्गमां चाळनारा पुरुषपर दोषनो आरोप करनारा तथा हुं जे बीजाना देहमां चैतन्यांशवडे रह्यो हुं तेनो द्वेष करनारा ते उपर कहेळा आसुरो जीवो दंभथी मात्र नामनाज यज्ञोवडे यजन करे छे. १७-१८ अध्याय १७ श्लोक १० यातयामं गतरसं पूतिपर्युषितं च यत् । उच्छिष्ट मपिचामेध्यं, भोजनं तामसप्रियम् ॥ अर्थः-प्रहर पछी निरस, दुर्गीधिवाळुं, वासी, जमतां वधेलुं, अपवित्र, भोजन (यज्ञमां निषिद्ध के अभक्ष्य ) ते तामस जनने प्रिय छे. अध्याय १६ श्लोक १९-२० तानहं द्विषतः क्रूरा न्संसारेषु नराधमान् ।। क्षिपाम्यजस्नमशुभानासुरीष्वेवयोनिषु ॥१९॥ आसुरीं योनि मापना मूढा जन्मनि जन्मनि ॥ मामप्राप्यैव कौंतेय ततो यांत्यधमां गतिम् ॥ २० ॥

अर्थ:—मारो द्वेष करनारा तथा कूर ने अधम पुरुषोने जन्म मरणना मार्गरूप संसारमां अतिकूर व्याघ्रादि योनियोमां ज हुं नांखुं छुं. अर्थात तेवा पापीने एवा फळ आपुं छुं ॥ १९ ॥ ए आसुरी योनिने पामेला ते मूढ पुरुषो हे कुंताना पुत्र १ मने पाभ्या विना अर्थात् मारी प्राप्ति तो तेमने होयज क्यांथी पण मने पाम-वाना उपायरूप सन्मार्गने पाम्याविना तेथी पण माठी गतिने पामे छे. अर्थात् क्रमि कीट आदि योनिमां उत्पन्न थाय छे.

(इति शिवम् ॐ शांतिः शांतिः शांतिः) संवत १९५० ना भादरवा वदी ३ चंद्रवार. लखनार वैजनाथ मोतीराम भट्ट. लींबडी. ॐ तत्सत्

#### राः राः प्राणजीवनदास जगजीवनदास मेहेताः

चीफ मेडीकल ऑफिसर, साहेब मु. धरमपुर.

आपने विदित करवानुं के आपना सवालना जबाब में मोकलाव्या छे तेमां नीचे लख्या प्रमाणे सुधा-रशोजी. (१) शब्द पुराणमां ज्यां अदार पुराणो गणाव्यां छे त्यां आ श्लोक दाखल करशो. पद्म पुराणना उत्तरखंडना १४ मा अध्यायमां शिवजीए पार्वतीने कह्यं छे के—वैष्णवं नारदीयंच तथा भागवतं शुभम्। गारुडंच तथा पाद्मं वाराहं शुभदर्शनम्।। सात्विकानि पुराणानि विज्ञेयानि शुभानि वै।। ब्रह्मांडं ब्रह्मवैवर्त मार्कडेयं तथैवच, भविष्यं वामनं ब्राह्मयं राजसानि निवोधमे॥ मात्स्यं कोम्यं तथा लिंगं शैवं स्कादं तथैवच, आग्नेयंच षडेतांनि तामसानि निवोधमे॥ अर्थ—विष्णुपुराण, नारदपुराण, भागवतपुराण, गरुडपुराण, पद्मपुराण, अने वराहपुराण ए छ पुराण सात्विक गुणनां जाणवां. तथा ब्रह्मांड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कडेय, भविष्य, वामन अने ब्रह्म ए छ पुराण राजस गुणनां छे. मत्स्य, कूर्म, लिंग, शैव, स्कंद तथा आग्ने ए छ पुराण तामस गुणना जाणवां.

- (२) तमारा छट्टा प्रश्नना जवाबमां कालीपुराणनो श्लोक कूष्मांड मिश्चदंडंच माषं कंसारमेवच, एते बिलसमाः मोक्ताः स्तृप्तौ छागसमाः सदा । अथ-साकरकोछं, रोरडीनो सांठो, अडद (अडदना लोटनो हरकोइ बनावेल पदार्थ अगर अडदनी पलाळेली दाळनां वडां विगेरे) तथा कंसार एओ बिल समान कहेल छे अने तथी सदा बकरा अगर पाडा समान तृप्ति थाय छे.
- (३) सूक्ष्म बुद्धिथी अनुमान प्रमाण आपेल छे. तेमां ए नठारुं परिणाम एम करनारन्नं कोइन्नं आल्युं छे के नहीं ? एम विचारतां—त्यांथी काशीनो राजा सुदक्षिण तेणे यज्ञमां पशुहिंसा करी तेथी सुदर्शन चक्रे काशी बाळीने सुदक्षिण राजाने हण्यो, शक्कानिनो प्रत्र वृकासुर ते यज्ञमां मांस होमवाथी मरण पाम्यो, जरासंधे भैरव यज्ञ कर्यों ने तेमां पशुवध कर्यों तेथी मृत्यु पाम्यो, कंसे धनुयोंग भैरवयज्ञमां पशुवध कर्यों तेनुं फळ ए मळ्युं के तेने श्रीकृष्णे श्राताओं सिहत मार्यों, प्राचीन बिह राजाए यज्ञों कर्या, ने पशु हिंसा थयेल ते पशुओं ते राजाने मारवा माटे वाट जोड़ने रह्यां हतां के राजा क्यारे मरे अने अमारुं

वैर छइए ? एवं नारदे ते प्राचीन बर्हि राजाने प्रत्यक्ष देखाडयुं हतुं. अने पछीथी पोतानी भूल कवृल करी यज्ञ करवा बंध कर्या अने नारदना उपदेशथी बची गयो. सहस्रार्जुने यज्ञ कर्यों त्यारपछी तरतज जमदिम्न साथे वैर थयुं ने तेनो नाश थयो. एटछुंज नहीं पण तेना छांटा बीजाथी स्त्रियोने उड्या ने एकवीशवार नक्षत्री पृथ्वी थई ते एनुंज परिणाम होय एम जणाय छे. तथा पांडवोओए राजसूय यज्ञ कर्यों ने त्यार पछीथीज तेमनी विपरीत बुद्धि थई, दुर्योधननुं हास्य कर्युं, जूगटुं रम्या तेथी राजपाट खोइ बेठा अने बार वरस वनवास भोगववो पडचो एम महा हेरान थई गया. तथा महाभारत युद्ध थयुं, तेमां श्रीकृष्णनी सहायताथी पांडवो बची गया. पण ए महाभारतना युद्धथी बहुज नुकशान थयुं. महाभारतना युद्ध पहेलां एकज धर्म हतो. पण ए महाभारत युद्ध थया पछी राजाओमां कुसंप पेठो. सार्वजनिक हित विचारवानुं बाजुपर रह्यं. अने ए कुसंप वधतो जतां मांहोमांहे वढी मुआ अनेक जातना धर्मो नीकळया तेमां पण लडाइओ थईने खराब थई गया. अने तेनां मूळ एटलां बधां उंडां पेशी गयां के हाल आपणा घरमां पण एकसंप नथी. एटले सुधीनी स्थितिमां आपणे हाल आवी गया छइए; ते ज्यां सूधी आपणे एकसंप नहीं थवाना तथा सार्वजनिक हित तरफ लक्ष राखी तेवां कार्यो नहीं करीए त्यां सूची उन्नति थवी मुस्केल छे. आ थोडुं माठुं परिणाम छे? आथी बीजुं माठुं परिणाम ह्यं ? कारण के विनाशकाले विपरीतबुद्धिः विनाश काळे विपरीत बुद्धि थाय छे. ए प्रमाणे विपरीत बुद्धि थइने एनां फळ आपणे हुनू भोगवीए छीए. वळी कह्युं छे के बुद्धि यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेश्व कुतो बलं अर्थ-जेने सारी बुद्धि तेज बळवान् छे. बुद्धि रहित क्यांथी बळवान् थाय ? अने ते बुद्धि कर्मानुसार छे. जुओ बुद्धिः कर्मानुसारिणी. बुद्धि कर्मने अनुसार थई (बगडी ) अने तेथोज एवां माठां परिणामो आव्यां जणाय छे. तथा बीजा राजाओ जेमणे जेमणे ए कृत्यो कर्या तेमने पछीथी बहु खराबी थई छे ते तेमना इतिहासपरथी जणाय छे. ज्यारे आ यज्ञ कर्ममां एवी खराबी छे त्यारे यज्ञ कर्म सिवाय पञ् बालि आपवाथी नुकशान थाय तेमां शुं नवाई? वळी कृष्ण सरखा जेना सहाय करनार तेमने पण नुक-शान थयुं. त्यारे हालना साधारण राजाओने नुकशान थाय तेमां शुं आश्चर्य? अने ए नुकशान तो यज्ञोथी एटले शुक्त कृष्ण कर्म करवाथी थयुं. शुक्त कृष्ण कर्म ए के जेमां पुण्य अने पाप बन्ने होय ते. ए शुक्तकृष्ण कर्मथी नुकशान थयुं त्यारे पशुबिल जे केवळ कृष्णकर्म तेनाथी तो फायदो क्यां-थीज थरों? माटे ए अत्यंत निषिद्ध जणाय छे. वळी दैत्योनां राज गयां, अने तेओ पायमाल थई गया ते तेथींन हरो, एम जणाय छे. माटे पशुबिल आपवुं अत्यंत निषेध जणाय छे. कारण के एओए एवां कृत्यो बहु कर्यो होय एम संभळाय छे. आहीं सुधीनी वचमां आ उपर छखेल वधारवुं.)

(४) सूक्ष्म बुद्धिए प्रत्यक्ष प्रमाणमां तेनुं नुकशान जुओ अहीं सूक्ष्म बुद्धिथी अनुमान प्रमाण आपेल छे; अने त्यां महान् नुकशान थाय छे ते बतान्युं छे, तेथी आंही ए लखतो नथी. (आ क्यार्वुं,) तथा दैत्यो अने राक्षसोने एम अकृत्य करवाथी थयेल छे. (आ मेळवी देवुं.)

लि. भट्ट वैजनाथ मोतीरामना जय सच्चिदानंदर

### नं. ३

### वडोद्रावाळा रामकृष्ण शास्त्रीनो अभिप्राय.

(संस्कृतमां.)

अस्ति स्वस्तिश्री धर्मपुरराज्यासनालङ्कारभूतो धर्मनिष्ठः श्रीसप्तसमेतः श्रीमोहनदेवनामा भूमिवृद्धः सच सर्वप्राणिसुखदुःखमात्मसदृशंमन्वानःकेवलंधर्म-प्रवणमना मनागिप हिंसायांप्रवृत्तिमकुर्वाणो निर्वाणोत्कंठितांतःकरणः करणासिक्तिन्वयमयन धर्मभीरुतया मया किं कर्तव्यं किं न कर्तव्यमितिसंशयानः सर्वत्रापि शास्त्रानुज्ञां समीहमानः किंचित् प्रश्नयति "आप जाणोक्चो विगेरे." अत्रताव-दिदंविचार्यते किं एतावतकालपर्यतं प्रचलितकर्मधर्मत्वेन प्रगृहीतमधर्मत्वेन वा श्यदि च धर्मत्वेनितिचेन्नास्ति प्रश्नावकाशः परंपरागतधर्मस्य राज्ञोऽवश्यकर्तव्यतात् । न च धर्मोऽपि परमतालोचनतया धर्मइवाभासतइति परिहेयः। परमतविरोधस्याकिंचित्करत्वात् । अत एवाच्यते " स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मोभयावहः"

किं च यदि परमतिवरोधस्यापि परिजिहीर्षा, तर्हिसानयुक्ता, दानपञ्चमहाय-ज्ञादि परित्यज्य सर्वेषां श्रमणत्वपरिग्रहापत्तेः । अस्ति च परमते जलव्ययादिना जीविहंसारूपोऽधर्मः । यवनैरिप जलव्ययभीरुता स्वीक्रियते मासिकर्तुसमयइति-प्रसिद्धतरम् किंबहुना जातिभेदहानिरिप इदानीमेव कर्त्तव्या स्यात सर्वेषामिति महान कोलाहलःस्यात ॥ किं च ॥ "क्षित्रयस्य विजितम्" ॥ इति रमृत्या क्षत्रि-यस्यजयलब्धस्वामित्वमुक्तं तन्नैवघटेत अस्ति च जयेजयेपरसैनिकप्राणवियोगा-नुकूलव्यापारूपाहिंसाजागरूका । न च क्षत्रियस्य शस्त्रनिष्टता एवधर्म इति विष्णुरस्यते रणेशस्त्रव्यापारे न दोषइति । राज्यश्रुतिरस्यतिसदाचाराणां पूर्वपूर्वस्य-बलीयस्त्वेन सर्वभूतिहंसा न कर्त्तव्येत्यर्थिकायाः श्रुतेः रमृत्यपेक्षया प्रबल्पतेन वैष्णवस्मृतेरिकेंचित्करत्वापत्तिः ॥

स्यादेतत् श्रुत्योर्विरोधपरिहारार्थं मीमांसाशास्त्रं तत्र कर्षिजलाधिकरणन्यायः तेनात्रविजयार्थरणव्यतिरिक्तविषये हिंसानिषेधिकाश्रुतिः प्रवर्त्ततइति श्रुत्पर्थसंकोच इतिचेत्सत्यं कपिञ्जला हियागद्रव्यतयाश्रुतावुक्ता यागे च द्रव्यं देवते।देशेन दीयते इति तत्र किपञ्जलाधिकरणन्यायप्रवृताविप रणे कथं तत्प्रवृत्तिः ? न हि रणे काचिद्पिदेवतोद्देश्यता। ननु रणं नाम कश्चन यज्ञः तत्र हननं न हिंसा तस्या-लभनशब्देन व्यवहारादितिचेन्न। हिंसायामालभने च प्राणादि वियोगानुकूलव्या-पारस्य सत्त्वेन हिंसात्वात किं च देवतोद्देशेन पशुहननमालभनमित्युच्यते इति भागवतीयलोके व्यवायश्लोकटीकायां श्रीधरस्वामिनोक्तं। न च रणे देवतोहेशेन पशुहननं किंतु केवलं परराज्यप्राप्तिकामतया मनुष्याणां हननमिति तत्र हिंसा-निषेधकतया श्रुत्या निर्भयं प्रवर्त्तितव्यं। सत्यांचतादृक् श्रुतिप्रवृत्तौ क्षात्रधर्महानिः रपष्टैव तथैव च "धर्में नष्टेकुलंकुत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत" इतिगीतोक्तधर्ममागेणा-धर्मव्यातिः । सा माभूदेतदर्थक्षात्रेणधर्मेण राज्ञा भाव्यं अत एव गीतोत्पित्तरिष संगच्छते ॥ अन्यथा पूर्वब्रह्मणा श्रीमद्भागवता श्रीकृष्णेन गीते।पदेशकद्वारा अर्जुने शौर्याधानपूर्वकश्रुतिविरुद्धनानागोत्रविशसनप्रवृत्तिबुद्धिसमुलितः कथंका रंकृता स्यात् तस्माद्रणे दोषाभावेऽपि अन्यत्रदोष एवेति चेन्मैवम्

विधिपूर्वकस्य देवतोद्देश्यकहननस्य परंपरागतस्वधर्मतया अदुष्टत्वात् अतएव रणस्यापि धर्मता अन्यथा गीतोत्पत्त्यादरेपि दोषग्रस्तता स्यात् ॥ नतु देवतो-देशेऽपि प्रागुक्तरीत्या हिंसात्वमेवेति वाच्यं तत्र हिंसाशब्दस्य प्रवृत्यभावात् ॥ यदि च साम्यं दृष्ट्या एकःशब्दःप्रवर्तेत ति धनदण्डापहारयोःकोभेदःउभयत्रापि अदित्सतोधनग्रहणं तथाहि अपहर्तानिःकोशंनिश्चिशतांदर्शयित्वा बलात्कारेण धनं लिप्सति राजा च सर्वत्र प्रसृमरं प्राणहारकं प्रतापं प्रदर्श्य बलात्कारेण धनं लिप्सति उभयोरपयति धनस्वामी धनम् । तत्रापहर्ता चोरः राजा न चोर इत्यत्र नास्ति विनिगमना, विनासाङ्केतिकाभ्यामपहारदण्डशब्दाभ्यां । एवं च यथादण्डं स्वकरं च गृह्णनभूपति नेपापभाक् । तथाऽऽलभनशब्देऽपि ज्ञेयं । अत एव

विष्णुरमृतौ—प्रजाभ्योबल्यर्थं संवत्सरेण धान्यतःषष्टमंशमादद्यात्सर्वसस्येभ्यश्च दिकं रातं पशुहिरण्येभ्यो वस्त्रेभ्यश्चेत्युक्तम् मनुरपि—यज्ञार्थं परावः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा "इत्यादिभिः श्लोकैरुक्तवान् ॥ तथाविष्णुस्मृतौ गृहस्थ एव यजते, गृहस्थस्तप्यते तपः" इति यज्ञविधिरुक्तः ॥ तथा तत्रैव "पूजाईमपूजयन्" इत्यादिनाऽपूजकस्य दण्डोऽघ्युक्तः एवं तत्रैव "पर्वसु शान्तिहोमं कुर्यात्" इति रवकुलाचारेण कर्म कुर्वतो न हानिस्तथाच मनुविष्णू ॥ आचाराल्लभते चायुरा-चारादीप्सितां गर्ति, आचाराद्धनमक्षय्यमाचाराद्धन्त्यलक्षणम्॥ सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान्नरः ॥ श्रद्दधानोऽप्यसूर्यश्च रातं वर्षाणि जीवति ॥ तथा मनुः ॥ येनास्यिपतरोयाता येन याताः पितामहाः ॥ तेन यायात् स तं मार्ग तेन गच्छ-न्नदुष्यति ॥ तथा ॥ नास्तिक्यं वेदनिन्दां च, देवतानां च कुत्सनं ॥ द्वेषंदंभं च मानं च, क्रोधं तैक्ष्ण्यं च वर्जयेत् ॥ सर्वत्र सत्वेन यद्यपि यज्ञे हननं संभवति नान्यत्रेति चेन्न ॥ "विषन्नागदमंत्रधारीस्यादिति" विष्णुस्मृतौ राजधर्मत्वेनोक्तेः ॥ मंत्रशास्त्रे च बलिदानरूपेण पशोर्देयतोक्ता अतं एव निर्णयसिन्धौ नवरात्रप्रकरणे सिंहमहिषादीनां बलिदानत्वेनोक्तिर्दृश्यते तस्माद्यदि अयं कुलाचारःस्यात् दृढतरः समूलश्च तर्हिनैव निरोद्धंशक्यः प्रत्युतरोधनं निषेधति लघुहारीतः ॥ यः कश्चिक् रुते धर्म विधिहित्वा दुरात्मवान् । न तत्फलमवाप्नोति कुर्वाणोपि विधिच्युतः ॥ किं च परदेशावाप्तौ तदेशधर्मान्नोिंछचात् ॥ इति विष्णुस्मृतौ देशाचारपरित्यागस्य निषेध उक्तः ॥ तथा तत्रैव पितृदेवताभ्यर्चनमन्तरा प्राणिघातकोऽपुण्यक्र-दित्युक्तम् ॥

दितीयिसम् पक्षे नैवास्ति अधर्मसेव्यता किस्मिन्नपि मते इति निर्विवादम् । ननु शास्त्रा द्रूढिर्बलीयसीति रूढ्या परम्परागम्यधर्म मिप परित्यक्तुं परिशङ्कते मनःइति चेन्न यारूढिः शास्त्राविरोधिनी तस्या एव प्राबलस्य शिष्टसंग्रहीत्वेन अधर्मफलिकाया निर्मूलाया रूढेर्न प्रयोजकत्वम् ननु रूढिर्नाम कुलक्रमागत आ-चारः स च प्रत्येककुलेभिन्नः यथा नवरात्रव्रतविषये नव दिनानि केषांचित्केवलं फलाहारः केषांचिदेककृत्वोभोजनं केषांचित् अनाहार इतिनानाविधत्वं सिद्धं इति रूढि: प्रबलेतिचेत्सत्यं परं सापिरूढिर्न शास्त्रविरोधिनी तथा च निर्णयसिधौ हेमाद्रौ भविष्ये ॥ "एवं च विन्ध्यवासिन्या नवरात्रोपवासतः। एकभक्तेनतत्केन तथैवाया चितेनचे" त्युक्तंतनमूलिका सा रूढिः ॥ ननु यदि सर्वत्र कुलाचारे शास्त्रप्रामाण्यम-स्ति तर्हि उपनयनप्रकरणे याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्रथमतस्तत्कालं दर्शयित्वान्ते ॥ एके इति किमर्थमुक्तम् तथा "श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः इत्यत्र सदाचारस्विप्रयवचनं च किमर्थ मिति चेन्नतेन भवदिष्टसिद्धिः यतोमनुवि-ष्ण्वाश्वरायनादिवचनेषु षष्ठपञ्चादिवर्षाणामुपनयनकारुतयोक्तत्वेन तन्मूरुककुरुा-चारार्थयाज्ञवल्कीये । एकेत्यादि ॥ स एव सदाचारो यः सिद्धः शास्त्रज्ञैरा चरितः ॥ स्वस्य च प्रियमात्मनः इत्यस्य तु व्यवस्थाविकल्पाविषयतया मिता-क्षरायामुक्तेरिति । तन्नास्माकं प्रतिकूलं अथ यदि कथमपि न परावर्त्तते युक्तया भवन्मनश्चेत् गृह्यतामिदं याज्ञवल्यवचनम् "अस्वर्ग्य लोकविद्विष्टं धर्म्यमप्या-चरेन्नतु ॥ इति नैवाधर्म आचरितव्यः ॥ अधर्मश्रानेकविधः ॥ इहान्तःपाती हिंसारूपोप्ययमधर्मः स च पर्युदस्तआपस्तम्बेन "मोक्षोभवेन्नित्य महिंसकस्य" इति ॥ बृहरपति रपि 'धनं फलति दानेन, जीवितं जीवरक्षणात् ॥ रूपमैश्वर्य मारोग्य महिंसाफलमश्चते ॥ इति स्थितम् ॥

- १ हिंसा तु न कस्मिन्नपि शास्त्रेऽभिहितेति न प्रथमप्रश्नावकाशः
- २ द्वितीयस्तु प्रश्नो मृगतृष्णिकाजलसंरक्षणार्थ सेतुबन्धप्रयासवदिफलइ-ति दर्पणगतप्रतिबिबस्य मूलं दर्पणपृष्टे मार्गयतः शिशुजनस्येव विलिसितम् ॥ यतो हिंसाप्रतिपादकं शास्त्रमेव न भवतीति कुतस्तस्य बहुमान्यता सर्वमान्यता च । यदि चात्र मृगयादिहिंसा रागतः प्राप्ता व्यसनत्वेन शास्त्रेप्रतिपरिगणितेति तदेवं शास्त्रं हिंसाप्रतिपादक मुच्यते तर्हि ततोप्यधिका श्रुति हिंसानिषेधिका सर्वैः शिरसावन्द्या वर्त्ततएव ॥ अतएवोक्त मापस्तम्बेन ॥ आत्मवत्सर्वभूतेषुयः पदयतिस पदयति ॥ तदेव गीतायां एतेन तृतीयोपि प्रश्नो दत्तोत्तरः ॥

हिंसातु न केनापि राज्ञा कर्तव्येति मृगयारमणनिषेघोऽपि प्राप्तः किंच देवार्थ मालभनमपि तन्न विजयादशमीदिने विहितं कापि प्रतीयते । ननुमास्तुविहितं कुलकमागतं वर्तत इत्युच्यते तिहं विधानाभावात् सा हिंसा संपन्ना हिंसायाश्च निषेधिकाश्चितितेते नच श्चतेःपन्थाः केनापि वर्णेन परित्युक्तं शक्यइत्यलं पल्लविन्तेन । एतेनयदि एवं विचारपरोयः कोऽपि राजा इतःपरं कदाचिदपि वृथा मांसाशी स्वानन्दहेतवे मृगयारमणमनाश्च स्यात्तिंकुलद्रोहीभूत्वा महापापेन युज्यते इत्यर्थात्समायातम् ॥

५ यदि हिंसाऽऽलभनविधायंकवचएवमभविष्यत्तदातद्दकरणे राजा प्रजा चानिष्टेन फलेन समयोक्ष्यत परन्तु विजयादशमीविषयकधर्मसिन्धुनिर्णयसिन्धु-पर्यालोचनया तु तादृशपशुहननपरं वचनं नोपलभ्यते॥

नवरात्रप्रकरणे निर्णयसिन्धौ क्षत्रियेण—"अश्वमेषछागमहिषस्वमांसाना मुत्तरोत्तरं प्राश्वास्य" मुक्तं तदि न दशमीविषये" मेषाभावे कृष्माण्ड इत्यादि तत एवावगन्तव्यम्" ननु विजयः शत्रुवधेन कर्तव्यः न च शत्रुवधः कापि धर्मत्वेनाभिहित इति कथं विजयसिद्धिः इति चेत्सत्यं परन्तु नहि तित्तिथौ शत्रु-कर्त्तव्यव्यपदेशेन महिषस्यवा किंतु केवलमपराजितापूजनं सीमोळ्ळंघनादि च देवीपुरतः शत्रुवध उक्तः सोपि पैष्टिकशत्रोरष्टम्यां बलिप्रदानसमय एवेतिशम् ॥ अल्पकालतयानेके, ग्रन्थानालोचिता उभौ, सिन्धूरमृतीश्च आलोच्य लिखितं तु यथास्थितम् ॥ तिथिराश्विन सुदि षष्ठी संवत् १९५०

वेद धर्मशास्त्र पाठशाळा, रामकृष्ण शास्त्री, वडोदराः

## जामनगरवाळा शास्त्रि हाथीभाई हरिशंकरनो अभिप्राय.

राः राः स्नेही बंधुवर्घ, मेहेता-प्राणजीवन जगजीवन. चीफ मेडिकल आफीसर.

मु. धरमपूर.

ली. हितेच्छु—द्वे. हाथी भाई वि. हिर्श्वांकरना आशीर्वोद फुरसद वखते मान्य करशो. विशेष लखवानुं के महाराजा मोहन देवजी तरफथी वर्तमान पत्रमां जे सात प्रश्नो पूछाव्या छे तेनो लंबाणना भयथी विशेष अनुवाद निह करतां मात्र उत्तर ज लखी जणावुं छुं.

१ नवरात्रि समाप्ति निमित्तकज देवीनी महापूजा करवामां आवे छे, तेमां पशुहिंसा करवानुं कोइपण आर्य प्रंथोमां छखेछुं जोवामां आवतुं नथीं। शंबर तंत्र, महामाया तंत्र, अष्टयामळ विगे रे चोसठ तंत्र प्रंथो छे. तेमां वामाचारथी कोइ स्थले कंइ स्थले कंइ छढ़ेयुं होय तो होय, भगवत्पूज्यपाद श्री शंकराचार्य सींद्य छहरीना ३१ मा श्लोकमां कह्युं छे के "चतुःषष्ठी तंत्रैः सकल मितसंधायभुवनं" तेमां अतिसंधाय पद छे तेनो छक्ष्मीधराचार्य अर्थ छख्यों छे जे तंत्रो जगतनां अतिसंधानकारक छे—अर्थात् जगतनां विनाश हेतु भूत छे. माटे भगवतीनुं आराधन केवल सामादिकाचार दक्षिणमार्गीज करवुं तेम स्पष्ट छखेलुं छे, तथा तेवां वाम तंत्रोनुं सर्वथा अनादरणीयत्व स्थापित करेलुं छे, जेथी तेवा प्रकारनी पशुहिंसा शास्त्रविहित मानी शकाती नथीं।

२ तेवा तंत्र ग्रंथो बहु मान्य पण नथी, तो पछी ते सर्व मान्य गणवानी वात दूरथीज पाछी वळी निकले छे. किंच आचार्य स्वामिए तेनो उपर लख्या प्रमाणे अनादर सूचन्यो छे. तेथी शिष्टाचारपरिपाटीमां तेओनी गणना नथी एटले मान्य गणनामां पण आंचको खावा जेवुं छे.

३ तंत्र प्रंथो करतां प्रामाण्यपात्र श्रुति, स्मृति विगेशिमां पशु हिंसानो निषेध अनेकशः जोवामां आवे छे. जेमांनां थोडां वाक्यो अहीं नीचे टांकी बताववामां आवे छे "माहिँसी उरुषम् जगत्" यजुर्वेद संहिता अध्याय १६ मंत्र ३. आनो अर्थ एवो छे के कोइ पण चेष्टा करता जीवनी हिंसा कर मा. निहंस्यात्मविभूतानि" शतपथ ब्राह्मण. सर्वप्राणि मात्रनी हिंसा करवी निहः योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्त्यात्मिहितेच्छया ॥ सजीवंश्रमृतश्रेव नकचित् सुखमेधते॥ मनु अ० ५-४५ जे

मन्जप्य अहिंसक ( लोकने उपद्रव निहं करनारा ) प्राणिओने, पोतानुं हित करनानी इच्छाथां मारे छे, ते जीवतां सुधा तथा सुना पछा पण सुखने पामतो नथी. यावन्ति पशुरोमाणि तावत्कृत्वोह मारणं ॥ दृथा पशुद्रः प्रामोति पेत्य जन्मिन जन्मिन ॥ मन्ज अध्याय ५-१८. ने पुरुष वृथा पशुने मारे छे. ते नेटलां पशुनां रोम होय छे तेटलीवार ते पशुना हाथथी मरण दुःख पामे छे. इत्यादि श्रुति स्मृतिमां हिंसाना निषेधक तथा निंदक वचनो जथावध छे. मनुमहात्मा ए धर्मना लक्षणमां— धृतिःक्षमादमोऽस्त्येयं शौचिमिन्द्रयनिग्रहः॥ अहिंसा मत्यमकोधो दशकंधमेलक्षणं ॥ ए वाक्यमां धर्मलक्षणांतर्गत धृत्यादिक गुणोमां अहिंसाने गणावेल छे. तेथी हिंसा अधर्म छे. महाभारत शान्तिपर्व अध्याय २७२ मां—तस्यतेनानुभावेन मृगहिंसाकृतस्सदा ॥ तपोमहत्तममुच्छिनं तस्मादिंसा न यित्रया ॥ १ ॥ अहिंसा परमो धर्मो हिंसाऽधर्मस्तथाविधः ॥ सत्यं तेहं प्रवक्ष्यामि योधमः सत्यवादिनां ॥ आनो अर्थ नीचे मुनब छे. निरन्तर हिंसा परायण ते मुनिनुं घणा काळथी संचय करेलुं तप क्षीण थई गयुं माटे हिंसा करवी ते यज्ञोचित कर्म नथी. अहिंसा परमधर्म छे. अने हिंसा करवी ते परम अधर्म छे. हुं तो सत्यवादिनां धर्म प्रमाणे छे ते यथार्थ कहुं छुं. आवी रीते हिंसानो भीष्म पितामहे स्पष्ट अनादर बतावेल छे ए प्रमाणे श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहास विगेरे विशिष्ट प्रमाणवाला ग्रंथोमां हिंसा निषेध करेल छे.

8 हिंसा करवी ते राज्यनुं अवश्य कर्तव्य छे तेवुं कांइ शास्त्र वचन छेज नहिं. मृगयाविहार विगेरेमां पण मात्र सिंह व्याघादिक उपद्रव करनार प्राणीनो शिकार करवो कहेल छे पण बीजी हिंसा शास्त्रनी अनुमत नथी. तेम उपरना मनु. अ. ४५ मां स्ठोक उपर्था स्पष्ट विदित थाय छे. नच प्राणिवध: स्वर्ग्य: प्राणीहिंसा कांइ स्वर्गमां साधनभूत नथी तेम स्ठोक छे. श्रुति: स्मृति: सदाचार: स्वस्यच प्रिय मात्मनः एतचनुर्विधं प्राहु: साक्षाद्धमस्य छक्षणम् ॥ धर्मलक्षणमां श्रुति—स्मृतिनी साथे सदाचार तथा पोताने जे प्रिय लोगे ते ज धर्म गणावेछ छे. एउले जे सदाचार बहिप्कृत होय तेम जे आत्मने प्रिय न लोगे ते कर्म धर्मलक्षणाक्रान्त थइ शकतुं नथी. अर्थात् तेवी हिंसा न करवाथी बलवान् शास्त्रनी आज्ञा तोडया जेवुं कर्गुं नथी. प्रत्युत धर्मज्ञाननुं अनुकरण कर्युं गणायः स्मृति संग्रहमां कह्युं छे के:—श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवा वधार्यतां। आत्मनः प्रतिकृलानि परेषांनसमाचरेत् ॥ आ वाक्यने अनुसरीने मोक्ष मूलर साहेबे एक महावाक्य पोताना धर्मसंवंन्धी भाषणमां लख्युं छे. Therefore let no one to do others what he would not have done to himself. एवं कांइ पण कृत्य बीजा प्रते न करवं के जे कृत्य आपणे आपणीज प्रति करवा इछीए नहीं. आ महावाक्य धर्मनुं रहस्य छे. अर्थात् हिंसा वर्गनार्थक, धर्म-शास्त्रना वाक्यने अनुसरवं उचित छे.

५—एवा प्रकारनी हिंसानी प्रवृत्ति नहीं करवाथी राज विगेरेने आपत्तियोग थाय ज नहीं. कारण के जीवने अभयदान देवुं, ए सर्व दानथी श्रेष्ट दान थाय छे. जेम महाभारत शांति पर्वमां मोक्ष धर्मना अ० मां कहेल छे. श्लोक नीचे मुजब.

#### जीवानां रक्षणं श्रेष्टं जीवाजीवितकांक्षिणः तस्मात्सर्वप्रदानेभ्योऽभयदानं विशिष्यते ॥

जीवोनुं रक्षण करवुं ए श्रेष्ट छे. कारण के सर्व जीवो जीवितनी आकांक्षावाला होय छे माटे सर्वदान करतां जीवोने अभयदान देवुं ए श्रेष्ट गणाय छे. एवा उत्त्कृष्ट दाननुं फल उत्कृष्ट गतिनेज आपे छे. विष्णुपुराणे उक्तं ॥

> कपिलानां सहस्राणि योद्दिजेभ्यः प्रयच्छति एकस्मायभयंदद्यात् तयोस्तुल्यंफलं स्मृतम् ॥

हजारो कपिछा गोदान करनारने तथा एक जीवने अभयदान देनारने समान पुण्य थाय छे. अर्थात् हिंसा परिवर्जनथी अनिष्ट परिणामंनी आशंका ते साकर खाधाथी मोढुं बलवाना भय जेवी छे. अहिंसा नियम पालनारने आपत्तियोग आवे नहीं एटलुंज नहीं पण विशेषमां ।। सामंपश्यन्नात्मयाजी स्वारा-ज्यमधिगच्छति ॥ इत्यादि स्मृति वचनोमां एवा पोतानी पेंठे सर्व प्राणीमां समभावथी वर्ती आत्मानुं यजन करनार पुरुषने स्वराज्य सुखनी प्राप्तिरूप उत्तम फल पण दर्शावेल छे. जेथी राजा तथा प्रजा के इतर जातिना माणसना अंगने अनिष्ट प्राप्तिनी शंकाने अवकाश मळतो नथी. अने तेथी हिंसानी प्रवृत्ति करवी एज अकार्य गणाय एवां अनेक शास्त्र वचनो छे-भगवाने पोते कहेल छे के-

> योमां सर्वगतंज्ञात्वा नचहिंस्यात्कदाचन ्तस्याहं न प्रणक्ष्यामि सचमेनप्रणस्यति॥ इति विष्णुपुराणे.

हे-राजन् जे मनुष्य सर्व प्राणिमां अंतर्यामि रूपे रहेला मारा स्वरूपने जाणीने कोई पण काले तेनी हिंसा करतो नथी, एने हुं निरन्तर अविनष्टरूपे प्रकाशुं छुं अने ते मने हमेशां अविनष्टरूपे प्रकाशे छे.

६—उपरना विवेचनथी प्रावधने माटे बळवान शास्त्रोमां विधि नहीं पण उलटो निषेध करेलो छे. एम स्थापित थ्युं एटले प्रावध रहित क्रियाओथी आराधना करवामां शास्त्रनी आज्ञानुं भंग कर्युं न गणाय पण ते शास्त्र प्रमाणेज कर्युं कहेवाय. हवे ते क्रियाओं कई १ ए जाणवुं जोइए. लघुस्तवमां वर्ण क्रम प्रमाणे द्रव्य कहेल छे. ॥ विप्राःक्षोणिभुजोविशस्तदितरे क्षीराज्यमध्वासवैः ब्राह्मण दूध देवीने धरावे, क्षत्रिय वी धरावे, वैश्य मध धरावे अने ए त्रण वर्णथीं इतर जे शुद्ध ते आसव धरावे. ते प्रमाणे जे व्यवस्था कही तदनुसार-अनुष्ठान करवुं. सप्तश्वतीना अ० १२ ॥ श्लोकः

पशु पुष्पार्घपृषेश्च गन्धदीपस्तथोत्तमेः

विप्राणां भोजनैहोंमेः प्रोक्षणियरहर्निशं ॥ अन्येश्च विविधेभींगैः प्रदानैर्वतसरेण या

प्रीतिमें कियते सास्मिन सकृत्सुचरिते श्रुते ॥

सारी रीते पुष्प, अर्घ, धूप, गन्ध, दीप इत्यादि उत्तम उपचारथी तथा ब्राह्मण भोजनथी तथा बीजा विविध भोगथीएक वर्ष पर्यंतम। हं आराधन करे अने तेथी जेवी मने प्रीती थाय तेवीज प्रीति आ सप्तरातीरूपे मारुं चरित्रनुं को ई पुरुष एक ज वार श्रद्धार्थी श्रवण करे तेथी थाय छे एम देवीना पोताना वाक्यमां कहेलुं छे. उपरना श्लोकमां पशु शब्दनो मेष विगेरे पशु एवो अर्थ कांई समजवा नहीं पशु ए अव्यय छे अने तेनो सम्यक् सारी रीते एवो अर्थ सिद्धान्तकौमुदीनी टीका मनोरमाना अव्थयार्थ प्रकरणमां भट्टोजी दीक्षिते कीघेलो छे. तेम ज नागोजी भट्ट तथा रामाश्रमे पण सप्तरातीनी टीकामां पशुपथास्यात् तथा जेम ठीक थाय तेम एम अर्थ लई दार्शित करी ते अव्ययना अर्थने क्रियाविशेषण तरीके घटाव्यो छे. अर्थात् देवीना आराधनमां मुख्य गणाता चंडीपाठमां पशु हिंसा करी देवीने बली आपवानुं क्यांई लख्युं नथी पण ए त्रयोदशाध्यायात्मक स्तोत्रपाठश्रवणादिकनुं घणुं ज फल देवीए स्वमुखर्थी कहयुं छे. आपणे तेनो अनादर करी इतर तंत्रोनुं आचरण करवुं ए अनुचित छेन छे. ''कलौ चंडीविनायकौ'' एवा वाक्यथी कलियुगमां चंडीनुं प्राधान्य कहेलुं छे ते चंडीमां पशुहिंसानो गंध पण नथी. माटे तादक पशुहिंसा जेवां कर्म नहीं करतां इच्छानुसार देवीनुं पूजन करवा माटे पुष्प अर्घादि उपचारो कह्या ते सघला अथवा तेमांना जेटला उपलब्ध होय तेटला उपचार्थी पूजन करी तेनां सुचरित सप्तरातीनुं श्रवण, पठन, अर्थानुसंधान पूर्वक करवुं, उत्तम घृत पायसादि पदार्थोंथी होम करवों अने ब्राह्मणभोजन विगे रे देवीप्रसादजनक कर्मी करवां जेथी देवीनी आज्ञा प्रमाणें तेवी आराधना सर्वाग संपन्न थई गणाय. अने तेथी शास्त्रनः भंगनी आज्ञानी शंकातो उठीज शकती नथी.

७ प्राणीना नाक कान वंगरेने छेका देवानी कल्पना तो उपहासास्पद जेवी गणवा योग्य छे. कारण के जीव प्राणीमात्र उपर दया राखवी विगेरे मनुप्रभृति महर्षिओनी जागती आज्ञा छे. तो पछी छेका देवा जेवुं घोर कर्मज प्राणीने अत्यन्त दुःखनो अनुभव करावे छे, तेवुं कर्म शास्त्रानुमत छे एम केम मानी शकाय. तेवी रीतनी किया करवानुं कांइ मान्य प्रन्थमां कहे छुं नथी. एटछे आ सर्व चर्चानो सारांश एम समजवानो छे के हिंसा ए पाप कृत्य छे. अने अहिंसाज सर्व मान्य धर्म छे. इति शिवम्

हुं विदेश गयो हतो. गई काल रात्रे आन्यो त्यारे मारा पूज्य पिताश्रीए आवेल प्रश्न पत्र वंचा-ल्युं, उत्तर छर्ती मोकलवाने बांधेली मुद्रत तो वीती गई छे, तथापि बधा विद्वानोना उत्तरो साथे छपावी प्रगट करवाना हो तो तेमां एक संख्या वधे तेवा उद्देशथी आ उत्तरपत्र लखी मोकलेल छ. टपालनो टाईम न्यतीत थई जाय छे, तेथी फेर कोंपी कर्या शिवाय तमोने तेमनुं तेम मोकलेल छे. जो कांइ पण प्रकारना उपयोगमां आवे तो यथेच्छ उपयोग लेशो अने जो अनुपयुक्त गणो तो पाछुं मोकली आपवा अवस्य कृपा करशों कारण के मारी पासे में नकल राखी नथी.

## हाथीभाई हरिशंकर.

## शास्त्री कालिदास गोविंदजीनो अभिप्राय.

रा. रा. प्राणजीवनदास स्वस्थान धर्मपुर.

जामनगरथी लि. हितेच्छु कालिदास गोविंद्जीना प्रणाम साथे लखवानुं के आपना महाराज तर-फथी अत्र सात प्रश्नोना उत्तर माग्या छे, तो ते उत्तर मारी यथामती नीचे लखुं छुं, तो आप मेह-रबानी साथे हजुरमां दाखल करशो.

१ बलेवने दिवसे राजाए देवी के देवने पशुनी भोग आपवे एवं वचन कोइ पण ग्रन्थमां जोवामां आवतुं नथी.

दशराने दिवसे देवीने पशुनो भोग आपवो तेवो विधि नथी पण मात्र महानवमीने दिवसे आपवानो विद्याभ्यास छे. रूपनारायणीय नामना प्रन्थमां ब्रह्मपुराणनुं अने हेमाद्रि नामना प्रन्थमां भविष्यपुराणनुं जे वचन लख्युं छे. ते उपरथी निर्णयिसिधु करनाराए नवमीने दिवसे देवीने वास्ते पशु-वध करवानो निर्णय लख्यो छे. पण निर्णयिसिन्धु करनाराए जाते ब्रह्मपुराणना के भविष्यपुराणनां असल पुस्तको तपासीने ए वचनो लख्यां नथी एम निर्णयिसिन्धु करनाराना पोताना लखवा उपरथीज स्पष्ट मालम पडे छे. निर्णयिसिन्धु करनाराए एज प्रकरणमां एटले आश्विनमासना प्रकरणमां देवीपुराणमां तथा रुद्धयामल्लमां पशुवध विषयक वचनो लखेलां छे के जे वचनो तेणे पोते ते प्रन्थोमां जोएलां होय एम जणाय छे. ए वचनोमां स्पष्टरीते कहेलुं छे के आश्विन शुदि नवमीने दिवसे देवीने पशुनो भोग आपवो. धर्मिसन्धु करनारो निर्णयिसन्धुने ज अनुसरीने लखे छे. अने तेना लख।णनुं मूलनिर्णय-सिन्धुनां वचनो छे. माटे ते विशे विवेचन करवानी जरूर जणाती नथी. मूल संस्कृत वचनो जोवां होय तो निर्णयिसन्धुना बीजा परिच्छेदना आश्विनमासनां कर्तव्योना निर्णयमां जोइ लेवां.

मार्केडेय पुराणना आठमां मन्वंतरनी कथा संबन्धी सप्तशाती पाठ के ने दुर्गापाठ तरीके जगत्प्रसिद्ध छे, तेनी समाप्ती पछीना वैकृतिक नामना रहस्यमां ॥ रुधिराक्तेन बिलिना मांसेन सुरयानृप ॥ प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगांधिना ॥ ए श्लोकमां लोहीथी खरडेला बिलिथी, मांसथी मिद्राथी—प्रणामथी—आचमनथी—अने सुगन्धी चन्दनथी देवीने पूजन करवानुं छल्युं छे. तो ते उपरथी पण देवीने पश्चनो भोग आपवानी रूढि चालेली होय एम कही शकाय छे. मार्केडेय पुराणनां असल पुस्तकों जोतां केटलीएक प्रतोमां रहस्य प्रकरण जोवामां आवे छे. अने केटलीएक प्रतोमां ए प्रकरण मुद्दल छे नहीं तथी शोधक विद्वानोने रहस्य प्रकरणना प्रमाणिकपणा विषे विश्वास आवतो नथी.

२—पुराणोनी अपेक्षाथी मनुस्मृति वगे रे धर्मशास्त्रो बलवान् गणाय अने धर्मशास्त्रोनी अपेक्षाथी वेद बळवान् छे ए वाद निर्वीवाद छे. आ उपर्था सिद्ध थाय छे के जेवां वेद अने धर्मशास्त्रो आर्य लोकमां माननीय छे, तेवां पुराणो माननीय नयी. देवीपुराण तथा कालिकापुराण—अहार पुराणोनी गणतरीमां न होवाथी तेओने पुराणोनी पंक्तिमां पण दाखल करी शकाय तेम नथी. तो पछी तेओने सर्वमान्य के बहुमान्य शी रीते कही शकाय? मद्यमांस तथा मेथुन वगेरे विषयोमां लंपट थयेला शाक्त तथा कापिलक वगेरे लोकोए पुराणोना नामथी तथा तंत्रोना नामथी एवा एवा घणा घणा प्रन्थो उभा करेला छे, अने अमुक प्रामाणिक प्रन्थोमां पण जूज स्थले नवीन वचनो नांखेलां छे, एम प्रौढ विद्वानो घणां घणां कारणोथी माने छे. देवीपुराण विगेरे पुराण नामधारी प्रन्थोने अने रुद्रयामल वगेरे तंत्र प्रन्थोने प्रमाणिक विद्वानो अनादरनी दृष्टीर्थीज जुवे छे. अने तेओमां जे पशुवधादिक कमों लखेलां छे, तेओने वेदिक वर्णाश्रम धर्मथी विरुद्ध होवाने लिधे पाखंडरूपज गणे छे. मनुस्मृति ९ मा अध्यायना २२५ रुरोकमां लख्युं छे के—राजाए पाखंडी लोकने शहेरथी बहार काढी मूकवा जोइए. देवीपुराण, कालि-कापुराण तथा रुद्धायमल वगेरे प्रन्थोमां एवा एवा नीचा दुराचारो करवानुं लख्युं छे के जे दुराचारोने आपणां धर्मशास्त्रो प्रवल पापरूप गणे छे. आनो नमुनो जोवो होय तो निर्णयसिन्धुना आधिन मासना प्रकरणमां लखेलुं कालिकापुराणनुं—

## भगर्लिगाभिधानैश्चभगार्लिगप्रगीतकैः भगर्लिगिकयाभिश्च प्रीणयेद्वरचण्डिकाम् ॥

ए वचन जुवो. निर्णयसिन्धुना कर्ताए पोताना समयमां आर्य छोकोना जूदा जूदा वर्गोमां जे क्रियानी रुढीओ चालती हती तथा ते रुढिओनां जे प्रमाणो मानतां हतां तेओने फक्त एकंदर करीने कमवार लख्यां छे. तेथी निर्णयसिंधुमां जे कांइ लख्युं छे, ते सघलुं धर्मरूपज छे, एम मानवुं ते विवेकथी विरूद्ध छे.

३—पुराणोमां के तंत्रग्रंन्थोमां वांधो नहीं लेतां कबुल करीए छीए के तेओमां देवी अने देवने वास्ते पशुवध करवानुं ने लख्युं छे, ते मान्य छे तोपण वेदोनुं तथा मनुस्मृति वेगेरे धर्मशास्त्रोनुं बलवान्पणुं पुराणोधी तथा तंत्रोधी घणुं अधिक छे, ए निर्विवाद छे. अने वेदोमां के धर्मशास्त्रोमां कोइ जग्याए पण नवरात्रि किया करवानुं अथवा ते प्रसंगमां देवीने पशुनो भोग आपवानुं लख्युं- न नथी, ए निःसंशय छे. एटलुंन नहीं पण ते बलवान् शास्त्रोए एवी अवैदिक हिंसा करवानो एटले ने हिंसा करवानो वेदे आज्ञा करी नथी तेवी हिंसा करवानो निषेध—

"नावेद विहितां हिंसा मापद्यपि समाचरेत्" योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्यान्म सुखेच्छया सजीवश्चमृतश्चैव न कचित् सुखमेधते॥ १॥ योबंधनवधक्केशान् प्राणिना न चिकीषीति ससर्वस्यहितप्रेप्सुः सुखमत्यंतमश्चृते ॥ २ ॥ यद्ध्यायितयत्कुरुते धृतिं बध्नाति यत्रच तद्वाभात्ययत्नेन यो हिनस्ति न किंचन ॥ ३ ॥ ॥ अनुमंता विशसिता निहंता ऋयविक्रयी संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥

इत्यादि घणां वचनोथी स्पष्टरीते कहेलो छे. याज्ञवल्क्य स्मृतिना आचाराध्यायना १७९ मां वसे-त्सनरके घोरे दिनानि पशुरोमिभः ॥ संमितानिदुराचारो यो हन्त्यविधिना पशुन ॥ ए श्लोकमां पण जे घणी वेदोक्त यज्ञादि किया वगर पशुओनी हत्या करे तेने पशुओनां रुवाटां जेटला दिवसो सुधी घोर नरकमां रहेवुं पडे एम कह्युं छे.

भागवत पुराण सर्व पुराणोमां घणुं मान्य अने प्रतिष्टित छे. तेना सप्तमस्कंघना १५ मा अध्यायमां नैतादशोऽपरोधर्मोनृणां सद्धमिमच्छताम् ॥ न्यायोदंडस्य भूतेषु मनोवाकायजस्ययः॥ ए श्लोकथी जणाव्युं छे के अहिंसा समान बीजो कोइ उत्तम धर्म नथी. एज पुराणमां चतुर्थ स्कन्धमां २६ अध्यायमां

तीर्थेषु प्रतिदृष्टेषु राजा मेध्यान् पशून् वने ॥ यावदर्थमलंलुब्धो हन्यादिति नियम्यते ॥

ए श्लोकथी तथा एकाद्दा स्कंघना पांचमां अध्यायमां

### लोकेव्यवायामिष**म**द्यसेवा

इत्यादि श्लोकथी वेदोक्त हिंसाना कारणनो निर्णय कर्यो छे. वेदमां ज्योतिष्टोम आदि पशु हिंसा करवानी ने आज्ञा करी छे, ते पण हिंसाने अवश्य कर्तव्य जणाववाना अभिप्रायथी करी नथी पण स्वाभिरुचिथी करवामां आवती हिंसामां केटलोक अटकाव नांखी तेने ओछी कराववाने वास्ते करी छे. ने छोकरो बहुज रमतीयाल होवाथी भणतो न होय तेने तेनो बाप कहेके तारे एक कलाक रमवुं. आ वाक्यनो अर्थ तुं एक कलाक नहीं रमे तो हुं तने मारीश, एवो नथी, पण तारे रमत कर्या विना नज चालतुं होय तो एक कलाक रमवानी छूट छे एवो अर्थ छे. तेम वेदे ज्योति-ष्टोम आदि यज्ञोमां पशुवध करवानी जे आज्ञा करी छे, तेनो अर्थ जो आ यज्ञोमां पशु वध करो तो पापी थशो एवो नथी पण जो तमारे हिंसा विना नज चालतुं होय तो, ज्योतिष्टोम आदि यज्ञोमां ज करजो. अने बनी शके तो तमाम हिंसा छोडी ज देजो एवो अर्थ छे. आ निर्णय करीने अन्ते ॥

## येत्वनेवंविदोऽसन्तः स्तब्धाःसद्भिमानिनः पशून दुष्टन्तिविस्तब्धाः प्रेत्यखादन्तितेचतान् ॥

ए श्लोकथी जणाः युं छे के आ स्वरा निर्णयने नहीं जाणी धार्मिकपणानो डोल वालनारा जे लोको निः शंक रहीने पशुओनो वध करे छे, ते लोको मरण पाम्या पछी तेओने ते पशुओ लाय छे.

महाभारत के जेनुं मान्यपणुं धर्मशास्त्रोना जेनुं ज गणवामां आवे छे, तेना अनुशासन नामना तेरमा पर्वनां सोलमा अध्यायमां

> ॥ अहिंसा परमोधर्मस्तथाऽहिंसा परोदमः॥ ॥ अहिंसा परमं दान महिंसा परमं तपः ॥ ॥ अहिंसा परमोयज्ञस्तथाऽहिंसा परं फलम् ॥ ॥ अहिंसा परमं मित्र महिंसा परमं सुखं॥ ॥ सर्वयज्ञेषु वा दानं सर्व तीर्थेषु वा स्नुतम् ॥ ॥ सर्वदान फलं वापि नैवतुल्य महिंसया ॥ ३ ॥ ॥ अहिंस्रस्य तपोऽक्षय्यमहिंस्रो यजते सदा ॥ ॥ अहिंस्रः सर्व भूतानां यथा माता यथा पिता ॥ ॥ ४ ॥ ॥ एतत्रफलमहिंसाया भूयश्च कुरुमुद्रव ॥ ॥ नहिशक्या गुणावक्तु मपि वर्षशतैरपि ॥ ॥ ५ ॥ ॥ अहिंसा लक्षणोधर्म इति धर्म विदोविदुः॥ ॥ यदिहंसात्मकं कर्म तत्कुर्यादात्मवान्नरः ॥ ६ ॥ ॥ अभयं सर्वभूतेषु योददाति द्यापरः ॥ ॥ अभयं तस्य भूतानि ददतीत्यनुशुश्रुम ॥ ७ ॥ ॥ नहिप्राणात् प्रियतरं लोके किंचन विद्यते ॥

इत्यादि अनेक वचनोथी अहिंसानीज स्तुति अने ते द्वारा हिंसानेज धिकारी छे.

द्शरा विगेरे पर्वमां देवीने पशुनो भोग आपवानी ने किया हाछ चाले छे ते किया वेदोक्त छेन नहीं तेथी वृथा हिंसारूपन गणाय. मनु पांचमा आध्यायमां कहे छे के—

॥ तस्माइयांनरः कुर्यात् यथात्मनि तथापरे ॥ ८ ॥

## यावन्ति पशुरोमाणि तावत् कृत्वोह मारणम् । वृथापशुघ्नः प्राप्नोति प्रेत्य जन्मनि जन्मनि ॥

ए श्लोकथी वृथा हिंसा करनारने अनेक जन्मोमां अनिष्ट फल प्राप्त थवानुं जणाय छे.

४-राजाओं दरारा वगेरे पर्वमां देवीने के देवने पशुनो भोग अवस्य आपवो जोइए. एम देवी-पुराण-कालिकापुराण तथा तंत्रो वगेरे अप्रमाणिक ग्रन्थोमां पण लख्युं नथी. त्यारे प्रमाणिक ग्रंन्थोमां तो क्यांथीज होय? देवीने के देवने पशुनो भोग नहीं आपवाथी निर्वेळ ग्रंथोनी पण आज्ञा सुटती नथी त्यारे बलवान् शास्त्रोंके जेओमां देवीने के देवने वास्ते एवे। पशुवध करवानो इशारो पण कह्यो नथी, तो तेओनी आज्ञा तो क्यांथीज सुटे?

धर्मसिंधुना कर्ता के जे निर्णय।सिन्धुने अनुसरनारों छे ते पोताना ग्रंथना बीजा परिच्छेदमां नवरात्र प्रकरणमां कहे छे के, क्षत्रियवैश्ययोमीसादियुतराजसपूजायामप्यधिकारः ।। सचकेवलं काम्य एव नतु नित्यः निष्कामक्षत्रियादेः सात्विकपूजाकरणे मोक्षादि फलातिश्यः। एवं श्रूद्रादेरिपे। ए संदर्भथी स्पष्ट जणाय छे के क्षत्रियने अने वैश्यने मांस वगेरे पदार्थोथी संयुक्त जप होमवाली रजोगुणी पूजामां पण अधिकार छे. परन्तु ते अधिकार फक्त काम्य छे. एटले मनमां कांइ स्त्रीप्राप्ति वगेरेनी कामना होय तोज तेवी पूजा करवी. पण दरवर्षे तेवीज पूजा करवानुं आवश्यक नथी. जो क्षत्रिय के वैश्य निष्काम रहिने सात्विक एटले मांसादिकना उपयोग वगेरेनी पूजा करे तो तेने मोक्ष वगेरे फलो बहुज प्राप्ति थाय छे. श्रूद्रादिकने वास्ते पण एमज छे. एटले तेओने पण मांसादिक वाली पूजा करवानी कशी जरुर नथी. मांसादिकथी रहित पूजा करवाथी सर्वोत्तम फल मले छे" निर्णयसिन्धुना कर्ता पण पोताना एज प्रकारना प्रकरणमां साचकाम्या नित्या च ए वाक्यथी ए प्रमाणेज जणावे छे.

५—देवीने के देवने वास्ते एवी हिंसानी प्रवृत्ति न करवामां आवे तो तेथी राज्यने के प्रजाने के राजाने अंगे कोइ पण प्रकारनो आपत्तियोग आवे अथवा अकार्य कर्युं गणाय एम कोइ पण बल-वान् शास्त्रमां लख्युं नथी. बलवान् शास्त्र तो एक तरफ रह्यां परन्तु कोइ निर्वेल शास्त्रमां पण लख्युं नथी.

६—एवा पशुवधने बदले बीजी कोइ हिंसा रहित किया करी ते पर्व आराधवामां आवे तो तेथी कोइ पण बलवान् शास्त्रनी आज्ञानो भंग कर्यो गणाय एम नथी केम के कोइ पण बलवान् शास्त्रे एवा पशुवधनी आज्ञा करीज नथी.

महा भारतना अनुशासन पर्वनां ११५ मा अध्यायमां

श्रूयतेहि पुराकल्पे नॄणां त्रीहिमयः पशुः । येनायजंतयज्वानः पुण्यलोक परायणाः ॥

### प्रजानां हित कामेन त्वगस्त्येनमहात्मना आरण्याः सर्वेदैवत्याः प्रोक्षितास्तपसामृगाः

ए वचनोथी जणाव्युं छे के पूर्वे वेदोक्त यज्ञ करनारा लोको यज्ञोमां पशुवधने बदले भातनो पशु बनावी तेनो वध करीने यज्ञनी मूर्ति मानता हता अने प्रजाओनं हित इच्छता. महात्मा अगस्त्य मुनिए तो पशुओधी यज्ञ करीने पण पशुओनो वध कयों नहोतो. परन्तु यज्ञमां पशुओने हाजर करीने पछी तेओने छोडी मेल्या हता. महाभारतना टीकाकार नीलकंठे उपरना श्लोकर्ना व्याख्यामां प्रमाण-रूपे पर्यिकृतानारण्यानुत्सृजंति ए वैदिक श्रुति आपेली छे. श्रुतिनो अर्थ एवो छे के पशुओने यज्ञमां हाजर करी तेओना उपर करवानी बीजी क्रियाओ करीने अंते तेओने जीवतां छोडी मेलवां.

हाल पण केटलाएक अग्निहोत्रीओ चातुर्मास्य वगेरे करे छे, तेओमां घणी नगोए लोटना पशु बनावी तेओनो वध करवामां आवे छे. ए वात सुप्रसिद्ध छे.

आ प्रामाणिक ग्रन्थोनां वचनो उपरथी ज्यारे वैदिक यज्ञोमां पण पशुओने छोडी मूकवाथी अथवा लोटना पशुओनो उपयोग करवाथी किया पूर्ण थई गणाय छे, त्यारे नवरात्र अथवा दशरा वेगेरेना दिवसोमां रूढिथी चालती अवैदिक कियाओ पशुओने छोडी मूकवाथी अथवा लोटना पशुनो उपयोग करवाथी पूर्ण थएली गणीशकाय ए न्यायसिद्धज छे.

मनुस्पृतिना पांचमा अध्यायमां

## कुर्याद्घृतपशुं संगेकुर्यात् पिष्टपशुं तथा। नत्वेवतुवृथाहन्तुं पशुभिच्छेत् कदाचन।

ए श्लोकमां कह्युं छे के—पशुनो वध करवाथीज मनने संतोष थाय, एम होय तो घीनो अथवा लोटनो पशु बनावीने काम चलावी लेवुं. परन्तु कदी पण पशुने नाहक मारी नाखवानी इच्छा करवी नहीं.

मार्केडेय पुराणनो सप्तराती पाठ ( चंडी पाठ ) के जेने तांत्रिक लोको वेद समान गणे छे, तेना बारमा अध्यायमां देवीए देवताओने—कह्युं छे के,

पशुपुष्यार्धधूपेश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः विप्राणां भौजनैहींमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् अन्यैश्चविविधेभींगैः प्रदानैर्वत्सरेणया प्रीतिमीकियते सास्मिन सकृत्सुचारितेश्चते॥

एक वर्ष सुधी अहर्निश पशु-पुष्प-अर्घ-उत्तम चंद्रनादिक तथा दीप एओथी, ब्राह्मण भोजनथी, होमथी, अभिषेकथी, बीजा पण अनेक प्रकारना भोगथी तथा मारा उद्देशथी करवामां आवतां दानोथी भक्त लोको मारा मनमां जे प्रीतिने उत्पन्न करे छे, ते प्रीति मारुं आ सुंदर चरित्र (सप्तराती ) एकवार सांभळवाथी उत्पन्न करी शकाय छे.

आ उपरथी सिद्ध थाय छे के जो कदापि अवैदिक मतने अनुसरीए तोपण दशरा जैवां पर्वोमां एक वखत चंडीपाठ सांभळवाथी ज देवीनुं पशुवधादिक सघळी कियाओ करतां अधिक अने सर्वोत्तम आराधन करी शकाय छे.

खरी वात आवी रीते छे एटला माटे देवीनी के देवनी पासे पशुओने हाजर करीने अंते छोडी मुकवाथी अथवा लोटना पशु बनावी तेओने आपवाथी, अथवा पशुसंबंधी कांइ पण किया नहीं करतां, फक्त चंडीपाठ सांभळवाथी पण ते संबंधी किया बराबर थएली गणाय. राजाओने एकवार चंडीपाठनुं श्रवण करवुं ते तो शुं, पण चंडीपाठ अथवा शतचंडी अथवा सहस्रचंडीनुं पुर-श्वरण करावनुं पण कांइ अश्वन्य नथी.

७ वेदानुसारी बहुमान्य अने प्रमाणिक बलवत्तर शास्त्रों तपासतां जणाय छे के जेम पशुनो वध करवानी जरुर नथी तेम ते बदल बीजी पण कशी किया करवी जरुर नथी. कारण के पापकर्मनो त्याग करवामांज गुण छे. तोपण बीजा प्रंथोथी चाली आवेली रुढिनो एकदम परित्याग करवामां मनने कांइ क्षोभ थतो होय अने ते क्षोभ उपर लखेली पशु विसर्जन पिष्ट पशुवध तथा चंडीपाठ श्रवण एओमांनी कोइ कियाथी नहीं मटे एम जणाय तो पल्ली जेम "यद्घाणभक्षो विहितः सुरायाः" ए भागवतना वचन प्रमाणे "सौत्रामणि" नामना वैदिक यागमां मिद्राना पानने बदले मिद्राने सुंघवाथी पण यागनी किया बराबर थइ गणाय छे, तेम आ विषयमां पण एज न्यायने अनुसरी पशुना वधने बदले तेना नाक कानने छेका दइ छूटा मेली देवाथी पण पशुवधनी कियाने बराबर थयेली मानवामां अयोग्यता नथी. एज शिवम् संवत् १९६१ ना भादरवा विद ४ बुधे.

## शास्त्रि कालीदास गोविंदजी मु. जामनगर.

### पंडिता जमनाबाइनो अभिपाय.

## राः राः स्नेही बन्धुवय-प्राणजीवन जगजीवन मेहेता.

चीफ मेडीकल ऑफिसर, साहेब मु. धरमपुर.

नमस्कार साथे लखनानुं के पशुवध विषेनी बाबत आपे थोडा दहाडा अगाउ प्रगट करनी जोइती हती. आपने आवती अमानास्या सुर्धामां उत्तरों जोइए छीए. ए मुदत घणीज टुंकी छे. अने प्रसिद्ध करेला प्रश्नोनो विषय घणोज विस्तीर्ण, विचारणीय अने विवादास्पद छे. हुं दिलगीर छुं के वखत घणोज टुंको रह्यो. नहीं तर त्यां आवीने आ विषयपर एक लंबाणथी व्याख्यान आपत. आविषयना संबंधमां मारे घणुंज लखनानुं छे. परंतु कालनो अनकाश घणो ज थोडो होनाथी अने नानी मोटी उपाधिओ जारी होनाने लीधे तेम बनी शक्युं नथी. आपनी विशेष जीज्ञासा हरों तो पाछळथी तेम करनामां आवशे. हाल तो आपना प्रश्नोनो टुकमां खुलासो आपी ते विषे केटलोएक मारो अभिप्राय, ठरान अने विज्ञित जाहेर करुं छुं.

आपनी सहीथी ता. २३-९-९४ना 'गुजराती 'न्यूस ऐपरमां बलेव तथा दरोरा वगेरे पर्वोमां देवीने के देवने भोग आपवाना निमित्तथी जे पशुवध थतो हतो अने थाय छे. ए रुढि प्रवेशनुं कारण शुं ? अने राजाओने माटे ते केम अवश्य कार्य धई पहुं छे ? ए खुलासो मागवा आपं सात प्रश्नोना उत्तर माग्या छे. ते उत्तर क्रमवार नीचे प्रमाणे छे.

१-दःशरा वगेरे पर्वोमां पशुहिंसा करवानुं खास कोइ धर्मशास्त्रनुं फरमान नथी.

२—कालीतंत्र, कुलार्णवतंत्र—अने रुद्धयामल तंत्र वगेरे कौल ग्रन्थोमां हिंसानुं प्रतिपादन कदाच होय पण तेवा ग्रंथे। सर्वमान्य के बहुमान्य गणांता नथी. अने तेवा शाक्त लोकोना ग्रंथो छपाइ प्रसिद्धिमां आव्या नथी के ने विषे पूरती छूटथी लखी शकाय.

३-हालमां बहुमान्य अने सर्वमान्य श्रुति अने स्मृति छे. तेमां अनेक जगोए हिंसानो निषेध करेलो जोवामां आवे छे. नहिंस्यात्सर्वभूतानि ॥ सर्व प्राणीओनी हिंसा करवी नहीं. ए श्रुतिनुं प्रमाण सर्व प्रमाणोथी बलवत्तर छे. ॥ सर्व पदं हस्तिपदे निमग्नं ए न्यायने अनुसरशो तो पछी बिजा पूरावानी जरुर नथी स्मृतिमां पण लखे छे के ॥ हिंसारतश्चयोनित्यं नेहाऽसौ सुखमेधते ॥

अर्थ-हिंसा करवामां प्रीतिवालो पुरुष कोइ दिवस सुख मेलवतो नथी " यजुर्वेदना घणा मंत्रमां पशुओना रक्षणने माटे प्रार्थनाओं करवामां आवेली ले.

४-राजाओने तो ए अवस्य त्याज्य छे. कारण के राजा जो पर्वने दिवसे हिंसा करहो के करा-वहो तो पछी प्रजा तो तेम करवामां मुद्दल अचकारो नहीं.

## राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्टाः पापे पापाः समेसमाः ॥ राजानमनुवर्तते यथा राजा तथा प्रजाः ॥

राजा जो धर्मिष्ट होय तो प्रजा धर्मिष्ट थाय छे, राजा पापी होय तो प्रजा पापी थाय छे, अने राजा जो समान होय तो प्रजा पण समान थाय छे. हरेक रीते प्रजाओ राजाने अनुसरे छे.

प्रश्न चोथानो उत्तर प्रथम प्रश्नना उत्तरमां गतार्थ छे. तो पण लखवानुं के हिंसानो त्याग कर-वाथी शास्त्रनी आज्ञा तोडी एवुं कोइ शास्त्रमां स्पष्ट के अस्पष्ट प्रमाण आपेलुं नथी.

५--प्रश्न पांचमुं पण उपरना उत्तरीथी उत्तरित थइ जाय छे. नामदार, महारणा मोहनदेवजी तरफथी आप छखो छो के " देवीने के देवने भोग आपवा निमित्त पशुवध थतो हतो ने थाय छे. शा कारणथी ते रुढिए प्रवेश कर्यों छे?" आ छखाण उपरथीज सिद्ध थाय छे के — राँजा ए विष्णुनो अंश छे. अने तेमनाज मुखर्थी प्रथम पीठिकामां परम मंगळमय प्रभुए आ वचनो बोछाव्यां छे. तो आ इश्वर प्रेरणाथी जणाय छे के पशु हिंसानी किया शास्त्रोक्त नथी पण रूढि छे. हवे आ रुढिनो प्रवेश शा कारणथी थयो—ए शोधवानी के जाणवानी एटछी बधी अगत्य नथी. प्रथम कालमां उत्पन्न थयेला यत्तिंकचित् कारण उपरथी अनेक रुढिओए आ देशमां घर घाल्युं छे. रुढिमां एटछुं जोवानुं छे के आ रूढि हितकारक छे के नुकशान कारक छे. जो नुकशान कारक होय तो तजी देवी. अने आ जंगली रुढि तजी देवाथी राज्यने—राजाना अंगने के प्रजाने कोइ जातनो आपत्तियोग आववानो नथी पण पशु रक्षण थवाथी अर्थशास्त्रना नियम प्रमाणे उलटो संपत्तियोग आवे छे.

६-पशुवध न करवो ए वात सिद्ध थई गई तो हवे तेना बदलामां कोइ किया करवी रहेती नथी. अने दशरा ( पांच महापाप अने पांच उपपाप हरनारी तिथि) ने रोज धर्मसिन्धु अने निर्णय सिन्धु वगेरे ग्रन्थोमां जे अपराजिताना पूजन वगेरे लखेलुं छे ते करवुं. एम करवाथीज बलवान् शास्त्रनी आज्ञा पाळी गणाय. धर्मसिन्धुना बीजा परिच्छेदमां उपाध्याय काशीनाथ लखे छे के-

## अत्राऽपराजिता पूजनं सीमोल्लंघनं रामीपूजनं देशांतरयात्रार्थिनां प्रस्थानंचविहितम्

विजया द्शमीने रोज आपराजितानुं पूजन, सीमानुं उल्लंघन, खीजडीनुं पूजन, अने प्रवास करवा इच्छनाराओनुं प्रस्थान ए कर्तव्य छे. आ माहेली क्रिया ए शास्त्रविधि प्रमाणे बराबर कर्युं कहेवाय.

७-पशुओने माटे वध करवाना बद्छामां नाक कानने छेको मारवानुं कोइ जग्याए फरमाव्युं नथी. विना कारण पशुना नाक कानने छेको मारवाथी वध करवानो मननो परिणाम थाय. तेथी नाहक हिंसाना पाप भागी थवाय छे. चोरी न करी होय अने चोरी करवा मननो संकल्प करीए के तेने लगती कोइ किया करीए तो पण अपराधी ठरीए छीए ए दृष्टांत प्रमाणे पशु हिंसानुं चिंतन करी तेना नाक, कानपर छेको मारवो ए निरर्थक पाप वोरी लेवा जेवुं छे.

प्रथम पीठिकामां आपनुं लखनुं छे के शा कारणथी ते राजाओने अवस्य कमे थह पड्युं छे? आना जनाबमां लखनानुं के बीजा सामान्य लोकोमां कोइ कोइ कारणथी रूढिमां फेरफार थनानो संभव छे. पण राज्य वर्गमां जे रूढि पडी ते बदलाती नथी, कारण के दरेक रूढिनो राजाना दफतरमां नोंध थाय छे, जेथी ते विषेनो कांइ पण पूर्वापर विचार न करतां दफतरमां लखाएली कलमोने शास्त्रवचन तुल्य गणी ते प्रमाणे हमेशां करनामां आवे छे.

बीजुं आपने कह कोमना कया शास्त्रोमां पूरावा जोइए छीए ए कांइ विशेष छखे हुं नथी. जो जैन शास्त्रना पूरावा जोइता होय तो आ अहिंसानो विषय ढगलाबन्ध यन्थोमां प्रतिपादन करेलो छे. तेमज मुसलमान पारसीओ अने इंग्रेज लोकोना शास्त्रोनो अभिप्राय पण अहिंसा उपर छे—कदाचित् कोइ खूणे खोचरेथी हिंसा करवानुं छुछुं पांगछुं प्रमाण नीकले तो ते निर्थक अने धर्मनी हानी करनारुं छे. कारण के हिंसा करवामां कोईयुक्ति आपणने टेको आपती नथी. आपणा स्मृतिकार बृहस्पीत लखे छे के

## केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्योहि निर्णयः युक्तिहीने विचारेतु धर्महानिः प्रजायते॥

आम छे छतां मुगां पशुओना प्राण छइ तेनो बिछभोग करी पेटने कबरस्तान बनावी पूरुं पापी करवुं ए सहृदयने अनुचित छे.

किंच, आ रूढिनो प्रवेश पूर्वकालमां आपणा देशमां कृषिविद्या ज्यारे वर्णा अनवड स्थितिमां हती त्यारे थएलो होवो जोइए. कारण के ते वस्तते अनाज पूरुं पाकतुं निहं. अने गुजारो तो करवो जोइए जेथी हिंसानो प्रचार वधी पड़यो हतो. पाछळथी जेम जेम खेतीवाडीनी विद्यानो शोध वधतो गयो तेम तेम हिंसा ओछी थवा लागी. अने केटलीएक नियमित थई गई—आ कालमां जैनीओनी प्रबळता पण वधती जती हती तेथी हिंसानुं काम वणुंज घटी गयुं. अने कोई वार तहेवारने दिवसे हिंसा थाय एवो जंगली रिवाज चालु रह्यो, जे आज थोडा प्रमाणमां छे छतां आपणना मनने कंपावे छे. रूढी देवीनुं प्राबल्य बधा जमानामां होवाने लीधे, आज सुधरेला जमानामां पण आ रिवाज पोतानुं मयंकर रूप देखाडे छे.

आ सृष्टिनो बीजो पण एक अचल नियम जोवामां आवे छे के सबलो नबलाने दबावे, दुःख दे अने पोताना ताबामां राखे. महामुनि वेद्व्यासे पण श्रीभागवतमां लखेलुं छे के

> अहस्तानि सहस्ताना मपदानि चतुष्पदाम् । फल्गूनि तत्र महतां जीवोजीवस्य जीवनम् ॥

कदाच आपने कोइ दुर्बळ प्रमाण मळरो तो पण तेनो वाच्यार्थ हिंसापर देखातो हरो पण लक्ष्यार्थ तो अहिंसापरज हरो. आ विषयनी विरोष जिज्ञासा जो आप राखता हरोो तो अवकाशानुसार हुं पूरता दाखला दलिलो सहित लखी जणावीश.

हुं आज्ञा पूर्वक जणाववा रजा लउं छुं के आपनुं धमपुर नगर छे. ते हिंसानो त्याग करी अन्वर्थ करो—आ बाबतपर वधारे भार दई लखवानी अगत्य एटलीज छे के जो हिंसा थती अटके तो धमशास्त्रनी मर्यादा प्रमाणे तेना पुण्यफळमां हुं पण एक भागीदार थाउं. जे हिंसानुं प्रतिपादन करे छे ते शास्त्र नथी पण कुशास्त्र, छे. हिंसानो त्याग करवाथी जो पाप पडतुं होय तो ते पाप हुं स्वीकारी लउं छुं. आ हेतुथी पण हिंसानी जरुर रहेती नथी. घणो विस्तार थई जवाने लीधे आटले-थीज बंध राखुं छुं. अने प्रत्युत्तरनी आकांक्षा राखुं छुं.

सौ. पंडिता-जमनाबाई-जामनगर.

### शास्त्री महीधर हारिभट्टनो अभिप्राय.

राज्यनीतिरंजितजनसमूहांतःकरणेषु निजानेकसद्भुण प्रकटीकृतसत्कीर्तिषु गोब्राह्मण प्रतिपाळ श्रीधमपुरनृपतिषु नवीननगरस्थहिरभट्टात्मजमिहधरशास्त्रिणःशुभाशिषांराशयः समुल्लसन्तु, श्रामह तत्रास्तु, परंच, समाचार ए छे जे आपनुं कुशळ पत्र आव्युं ते पहोच्युं तेने वांचीने मने आनंद थयो छे. घणा राज्योमां विद्वान् लोको थोडा होवाथी अंधपरंपराये करीने विजया दशमी विगरे मोटा पर्वमां जे पशुहिंसा राजाओ करे छे तथा करावे छे ते राजाओनी मोटी भूल छे. केमके धर्म शास्त्रमां किलवर्ज्य प्रकरणमां पशुहिंसानो घणो निषेष करेलो छे.

तद्वाक्यानि बृहन्नारदीये कथ्यन्ते ॥
समुद्रयातुः स्वीकारः कमंडलुविधारणम्
द्विज्ञानामस्त्रवणास्त्रं कन्यारूपमयस्तथा॥ १॥
देवराच्च सुतोत्पत्तिः मधुपर्के पशोर्वधः
मांसदानं तथा श्राद्धे वानप्रस्थाश्रमस्तथा॥ २॥
दीर्घकालं ब्रह्मचर्य नरमेधाश्रमेधकौ ॥ ३॥
महाप्रस्थानगमनं गोमेधश्र तथा मरवः॥
इमान धर्मान कलियुगे वर्ज्यानाहु र्मनीषिणः॥ १॥

मधुपर्के पशोर्वधः श्राद्धे मांसदानम् नरमेथाश्वमेधौ गोमेधश्व मखः इत्यादि सर्वे उपलक्षः णम् वस्तुतस्तुसर्वमिद्दापर्वस्र पशुवधं विधाय बलिदानादिकं हिंसादि कृत्यं निषिद्धं कलौ महापापरूपकं ज्ञेयम् अत एव नवरात्रौ विजयादशम्यादौ न सर्वेदृषैः पायसान्नादिभिः कत्त्रव्यम् इतिधर्मशुास्त्रसिद्धांतः इदं पत्रं प्राप्त मिति उत्तरपत्रं लेख्यम्

### पंडित गरुलालजीना शिष्य शास्त्री माधवजी गोपाळजीनो अभिपाय.

स्वस्तिश्री श्रीमत्सकलकलाकलापकुशालेषु श्रीधर्मपुरवास्तव्येषु समस्त
गुणगणस्तव्येषु भूरिभगवद्भावभव्येषु स्वधर्मसंरक्षणकरणपरायणांतःकरणेषु
श्रीदरवार श्रीमोहनदेवजी वर्मसु श्रीमोहमयीतो गोपालतनुजनुषो माधव
शास्त्रिणः शुभाशिवादः ॥ अत्रशं तत्रास्तु—अपरंच—भवत्प्रसिद्धपत्रद्धारा विदित
मस्माभिरुदन्तजातं निःशेषिहंसात्मकप्रश्लोत्तरदाने न वयं द्रव्यस्वीकारणी
भूतांतःकरणाः । किंतु यथा भवदीयं भावतकं भवेत् तदैहिकं पारलौकिकं तथैव
शास्त्रानुसारेण निष्पक्षपाततया मया प्रोच्यते " तदाचरणकरणे भवदीय मन्तः
करणं प्रमाणं ॥ किंच—भवत्प्रसिद्धिपत्रास्योत्तरं सशास्त्रं यद् परिपर्ति लौकिका
लौकिकक्षेमकरं यत्प्राचीनैर्मन्वादिभिरनुष्टितं यदनुष्टानतः सर्वे परां सिद्धिमतो
गताः तन्मार्गचरणं भवद्गि रुररीकार्यं इतिमे मनीषा—तदित्थम् ॥ सर्वत्रवेदाः
प्राथमिकं प्रमाणम् । तदनुरोधेन द्वितीयं प्रमाणं गीता ।।

ततश्च व्याससूत्राणि—तदनन्तरं महाभारतं भागवतं च इदम्प्रमाणचतुष्टयं सर्वधर्माचार्यैः स्वीकार्यम् ।। तत्रयिष्ठिष्वतं तदनुष्टयम् ।। तिहिरुदं निहकार्य—तेषु प्रमाण चतुष्टयेषु परमात्मन उपासनाएव ब्राह्मणक्षत्रियादीनां विहिता नत्व-न्यत्-सोपासना ज्ञानपूर्वकभक्तिरूपा तामत्र सिवस्तरं न ब्रूमहे—वस्तुतस्तु वक्त व्यांशस्ताविदयानेव—पूर्वसूरिभर्यत्स्वीकृतंतदेव भवदीयभावत्ककरं । तिहर्श्य देव्यादीनांपूजा वाममार्गेण न विधेया—यत्र वाममार्गे पशुहिंसा सा नोचिता यदाचरणेन नरके नराणां पातइति वेदा वदन्ति गीतादिग्रंथा अपि। किं च॥ श्लोकः ॥ अहिंसा सत्यमस्तेयमकामकोधलोभता ॥ भूतिप्रयहितेहा च धर्मोऽ यं सार्वविणिकः ॥ इति भागवतं ॥ अन्यान्यिप संति वचनानि—देविहज गुरु

प्राज्ञपूजनं शौच मार्जवम् ॥ ब्रह्मचर्य महिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥ इति गीताच-अन्यान्यपि सहस्रवचनानि हिंसानिषेधकारणभूतानि विद्यन्ते विस्त रभयान्नोलिखितानि।।अथ देवी तामसी मूर्तिः सा तामसै रेवो पारयान वयं तामसाः तामसानां तामसगतिः नास्माकं सागतिः । अस्माभिस्तु मनुप्रह्लादांबरीशपांडव श्रीरामचंद्रप्रभृतिप्रचलितमार्ग एव शुभकर उपारयः—तैःकदाचिदपि हिंसालेशोऽ पिनाकारि नाहि कार्यश्च । तस्माद् हे राजन् यदि शुभैकपरायणं भवदीयं चेतश्चेत्-अहिंसामुख्यो धर्मः ॥ सर्वत्र वेदादिषु अहिंसैव प्रतिपादिता-किंबहू-क्तेन-एतद्विषये यदि विशेषाग्रहश्चेदयं भवत्संनिधावागत्य हिंसानिषेधं सशास्त्रं सहस्रप्रमाणपुरःसरं प्रतिपाद्यिष्यामः—अपरंच अत्रत्यैर्योगानंदस्वामिशिरोम-णिभिरिपतथैवाभाणि-तदित्थम्-देव्यै पशुहिंसा कार्येत्यंधपरंपरा तदिधिर्हेमा-द्रौतंत्रोक्तः अस्माकममान्यः भूपानां क्षात्रकुलोत्पन्नानां विष्णुरुपास्यः । स विषयः सामवेदे निणीयते—सामवेदप्रतिपादनं हेमादिवचनतः प्रबलं—अंधपरंपरा कथं प्रचलति तद्विषये राज्ञः खंडेरायवर्मण इतिहासोऽवादि ''केनाप्यागत्याभाणि ना-रायणोऽस्माकं प्रसन्नो जात इति तत्कथनेन मुग्धो राजा सन्मान माचरत् इति इतिहास: ममापि पूर्वावस्थायां मदीय देशस्थराज्ञा हिंसाचरिता सा ममजनकेन निर्मूला कृता, अन्यत्र सा देवी स्थापिता

हिंसाचरणेन जायंत उपद्रवाः—आचरणाभावतो रोगादिनां शांति रुपदिष्टा शास्त्रेषु ॥ महाभारतेऽपि व्यासेनाभाणि मांसभक्षणव्यसिनना यदि मांसत्यागो विधीयते तदासहस्रराजसूययज्ञकारणं पुण्यं भवति—अंधपरंपरया यदि हिंसा के नापि क्रियते सा दैवयोगेन पुण्यवता राज्ञा निवारिता—कदाचित् किमपि कारण मुिहस्य मस्तकशूलं राज्ञो जातं तदानीं हिंसाप्रियदेवीभक्ते स्तामसे रुच्यते यत् भोराजन ! परंपरागतिहंसारूपं बलिदानं भविद्र निषिद्धं तेन भवन्मस्तके दुःखं समुत्पन्नमिति मूर्खे मूर्खो राजा बोध्यते ॥

इत्यादीनि योगानंद संन्यासिकथितानि वचनानि मयाप्यत्रलिखितानि तानि विचारणीयानि ॥

सारांशः ॥ राज्ञापरमात्मनो भक्तिः कार्या वेदगीताव्याससूत्रभागवतमहाभार-तादित्रंथप्रतिपादितस्वधर्मसंरक्षणं च विधेयं एतदिषये यद्यस्माकं कार्यं पतेत्तिर्हे तत्राप्यागत्य सशास्त्रं सविस्तरं वदिष्यामः ॥ भाद्रपद कृ० १४ सं० १९०५

पंडित गद्दलालजीनो शिष्य शास्त्री माधवजी.

### मुंबईना पचीश शास्त्रिओनो सामटो अभिप्राय.

# गोस्वामी श्री नृतिंहलालजी महाराजना अध्यक्षपणा नीचे स्थापित थएली श्री सुबोधिनी सभा तरफथी आवेलो,

"ता. २३ सप्तम्बर सने १८९४ना गुजराती वर्तमान पत्रना पृष्ठ १०५२ मां " देवदेवीने भोग आपवा निमित्ते थतो पशुवध " ए मथालानुं चर्चापत्र वांचतां तेमां बलेव अने दशरा विगेरे पर्व उपर देवी के देवने भोग आपवा निमित्तथी पशुवध थतो हतो अने थाय छे ए रूढीए 🛚 शा कारणथी प्रवेश कयों छे ? तेनी हकीकत लखी तेनी अंदर सात प्रश्नो लखेला छे. ते विषे विचार करतां (रूढी) शब्द पण तेवी बाबतने लागु पडतो नथी! केमके रूढी शब्दनो अर्थ एवो छे, एकज बाबतनी बन्ने रीति शास्त्रमां जूदी जूदी लखेली होय ( जेमके सूर्यनो उदय थया पहेलां होम करवो अने उदय थया पछी होम करवो ) एवी बन्ने हकीकतमांथी जे परंपराथी चालती होय ते प्रमाणरूप रूढी गणाय केम के ते शास्त्रसिद्ध छे. पण शास्त्रमां आधार न होय अने चालती होय ते अंधपरंपरानी रूढी छे तेवी रूढी मान्य गणाती नथी; तेम शास्त्र पण जे खरा धर्मने बतावे तेज शास्त्र गणाय छे. अने ते प्रमाणेज धर्म व्यवहार चालवो जोइए. पण जेनी अंदर श्रीमद्भागवतना सप्तमस्कंधमां बताव्या प्रमाणे विधर्म, परधर्म, आभास, उपमा, छल ए पांच प्रकारनी अधर्मनी शाखानुं प्रतिपादन होय 'ते' धर्मसंबन्धी शास्त्र गणातुं नथी. तेमज सात्विक, राजस, तामस, एवा पुराणो विगेरेमां पण भेद छे. तेमांथी तामस पुराणनी हकीकत त्याग करवा योग्य; राजस पुराणनी उपेक्षा करवा योग्य, अने सात्विक पुराणनी ग्राह्म छे. अने ते ते हकीकतो तेमज ते ते पुराणनुं—तामस, राजस, के सात्विकपणुं ए तेमां छखेला धर्मोना प्रकार अने देवोना यजन विगेरेथी स्पष्ट जाणी शकाय तेम छे तेथी ते विषेतुं विवेचन आ स्थले लखवाथी विस्तार थाय एम धारी फक्त आ चालती बाबत विषे विचार करवा सत्यधर्माग्रही विद्वान् मंडळी मेळवतां ते ते बाबतनो नीचे प्रमाणे अभिप्राय आपे हो.

? प्रश्न-एवा प्रकारनी पशुहिंसा करवानुं कया शास्त्रमां कह्युं छे ? उत्तर-बलेव के पशु हिंसा करवानुं कोइ प्रमाणभूत शास्त्रमां कहेलुं नथी.

२ प्रश्न-ने शास्त्रमां कह्युं होय ते शास्त्र आर्य छोकोमां सर्वमान्य गणाय छे के केम? अथवा बहुमान्य गणाय छे के केमं?

उत्तर-आनो खुळासो एटलोज छे के आर्य लोकोमां सर्वमान्य कोइ शास्त्रमां तेवी बाबत लखेली नथी.

प्रश्न ३—ते शास्त्र करतां पण जे शास्त्रनुं प्रमाण वधारे बलवान गणातुं होय एवा कोइ शास्त्रमां ते हिंसानो निषेध कर्यों छे के? उत्तर-श्रीमद्भगवद्गीता सर्वमान्य शास्त्र गणाय छे जेनी अंदर सोळमा अध्यायमां दैवी अने आसुरी एम बे प्रकारनी संपत्ति छखेछी छे. तेमां दैवी संपद्वाळाना धर्ममां अहिंसाधर्म मुख्य गणेछो छे. "अहिंसा सत्यमक्रोधः" इत्यादि. तेमज श्री भागवतमां तेवा हिंसकने तामस गणेछा छे, एज मोटो निषेध छे.

४ प्रश्न-राजाओने ते अवस्य कर्तन्यज छे, अने ते न करवामां आवे तो बलवान् शास्त्रनी आज्ञा तोडी गणाय एवं कोइ स्पष्ट प्रमाण छे के केम ?

उत्तर—अवश्य कर्तेव्य नथी; तेथी ते बाबत कांइ बल्डवान् शास्त्रनी आज्ञा तोडी गणाती नथी. ५ प्रश्न—ते हिंसानी प्रवृति जो न करवामां आवे तो तेथी राज्यने प्रजाने के राजाना अंगे

कोइ पण प्रकारनो आपत्ति योग आवे अथवा अकार्य कर्युं गणाय एवं कोइ बळवान् शास्त्रमां कहेलुं छे के केम?

उत्तर—जे बाबत शास्त्रमां विधि नथी, ते बाबत करवामां न आवे तो तेथी राजाने, राज्येने, के प्रजाने अंगे कोइपण प्रकारनो आपित्तयोग आववानो संबंध नथी, पण उळटुं थती जीडिंसा बंध . करवाथी धर्मनुं फळ प्राप्त थाय तेम छे.

**६ प्रश्न**—ते पशुवधने बदले बीजी कोइ हिंसा रहित क्रिया करीने ते पर्व आराधवामां आवे तो तेथी कोइ बल्लवान् शास्त्रनी आज्ञानो मंग कर्यो गणाय के केम ? अने तेवी हिंसा रहित शुं शुं क्रिया बराबर गणाय ?

उत्तर-पशुवध करवां ज्यां काम्य रीते पण छखेलुं छे त्यां पशुने बद्छे बीजी वस्तुथी आरा-धना करवानुं छखेलुं छे. जेमके:-

कालिका पुराणे

कूष्मांडिमक्षुदंडं च मांसं सारसमेवच ॥ एते बलिसमाः प्रोक्तास्तृप्तौ छागसमाःसदा ॥ १ ॥

रुद्रयामलेपि

छागाभावेतु कूष्मांडं श्रीफलं वा मनोहरम् ॥ वस्त्रसंवेष्टितं कृत्वा छेदयेच्छुरिकादिना ॥ १ ॥

इत्यादिक वाक्यर्था कोलुं, शेरडी, श्रीफल वगेरेथी पण बकराना जेवी ज तृप्ति तेवा देवने थवानुं लख्युं छे.

प्रश्न ७—पञ्चवध करवाने बदले तेनां नाककानने छेको मारीने ते प्राणीने छूटुं मेली देवामां आवे तो क्रिया पूर्ण गणाय के केम ? उत्तर ७—आ पर्वमां हिसा करवानुं लखेलुं नथी, त्यां नाककानने छेको मारवानुं तो क्यांथी होय?

उपर लखेली बाबत विशे कोइने एवी शंका थाय, के अष्ठमीना बिल्दानमां पशु हिंसा लखेली छे तेथी ते शास्त्रासिद्ध गणाय तो तेमां निर्णयिसिंधुमां लखेलुं छे के तन्नाश्वभेषछागमिहष-स्वमांसानामुत्तरोत्तरपाशस्त्यं फलविशेषश्चान्यतोऽवसेयः ॥ अर्थ-तेमां घोडो, घेटो, बकरं, पाडो अने पोतानुं मांस एम उत्तरोत्तर विशेष बखाणवा योग्य छे—अने फल पण विशेष छे, एम बीना प्रंथोथी जाणी लेबुं. एवा लखाण उपरथी साफ मालम पडे छे के फलनी इच्छावाळानेज ते कर्तव्य छे, तेथी सकाम छे. अने सकाम कर्मने शास्त्रमां निंद्य गणेलुं छे. तेम ते आवश्यक गणातुं नथी, वळी तेमां सर्व पशुना मांस करतां पोतानुं मांस विशेष फल आपनारं कहेलुं छे, त्यारे फलनी इच्छा वालाए, पोतानुं मांस शा माटे न आपबुं? अने नाहक न बोली शके तेवा पशुनो घात शामाटे करवो? तेमज ते छेख पछी कलम छठीमां लख्या प्रमाणे कूष्मांड विगेरे पण आपवानुं छखेलुं छे तेथी सिद्ध थाय छे के तेवा बलिदानमां पण पशुनो घात करवा करतां कूष्मांड विगेरेथी किया करवी तेज उत्तम छे. तेमज धर्मसिंधुमां पण लखेलुं छे के ब्राह्मणेन माषादिमिश्रान्नेन कूष्मांडेन वा कार्य यद्वा धृतमयं यविष्टादिमयं वा सिंहव्याघनरमेषादिकं कृत्वा खड्गेन घातयेत् ब्राह्मणेन पशुमांसमद्यादिबलिदाने ब्राह्मण्यभ्रष्टता ॥

अर्थ-ब्राह्मणे अडद मिश्रित अन्नथी के कोछाथी बिलदान करवें अथवा लोटनो सिंह, वाघ, मनुष्य, घेटो, वोरे करीने खड़्क वहे वात करवे. ब्राह्मणे पशुनुं मांस के मद्यादिन बिलदान आपवामां ब्राह्मण-पणार्थी श्रष्ट थवाय छे. वली लख्युं छे के सकामेन क्षत्रियादिनां सिंहच्याघनरमहिषछागस्कर मृगपिक्षमत्सनकुलगोघापिस्वगात्रकिपरादिमथोबिलदेंयः अर्थ-कामनावाछ। क्षत्रिय वेगरेए सिंह, वाघ, माणस, पाडो, बकरुं, सूवर, मृग, पिक्ष, मत्स, नोलिओ, अने घो, ए प्राणी तथा पोताना शरीरना रुधिरवाछुं बिलदान देवुं एम लख्युं छे तेमां कामनावाछाए बिलदान आपवानुं लख्युं छे, तेथी निष्कामने ते बिलदान आपवानुं सिद्ध थतुं नथी, तेम तेनी अंदर जेटलां गणावेला छे तेथी सिंह, व्याघ्र, मनुष्य, विगेरे आगलनां त्रणने अने छेछे लखेल पोताना शरीरना रुधिरने छोडी दइने वचमांथी बिचारा पाडा, अने बकराए शो गुन्हों कथों के तेनेज लेवां; ने तेवी कामनावाला अने हिंसाना आग्रहवाला होय तेणे सिंह, वाघ, के पोताना शरीरनो बिल शामाटे न आपवो! पण वाघने पकडवा जाय तो पोतेज बिलदानरूप थई पडे अने पोतानां मांस के रुधिर आपवुं विषम पडे, माटेज आ न बोले तेवा पशुने पकडावानो रिवाज कोइए पोतानी रुचि प्रमाणे चलाव्यो होय ते काई मान्य गणाय नहीं. तेम सकाम कर्म करवुं ते राज्यमां कोइने रुशवत (लांच) दइने काम कराववा जेवुं छे ते ज्यारे लोकमां सारु गणातुं नथी, त्यारे शास्त्र तो तेने सारु शी रीते कहे? ते सारु श्री भागवतमां पण लखेलं छे के: श्रीक

## ॥ मुन्यन्नैः स्याद्यथा प्रीतिस्तथा न पशुहिंसया ॥

पवित्र अन्नथी जेवी देवताओंने प्रीति थाय छे तेवी पशुहिंसाथी थती नथी. तेमज ।। अहिंसा परमो धर्मः ।। ए वाक्य सर्व सम्मत छे त्योर धर्मने बहाने प्राणीनो घात करवो ते करतां तेवा धर्मथी अलगुं रहेवुं तेज वधारे उत्तम छे.

उपरनी बाबत विषे श्री भागवत एकादशस्त्रंधमां तो सकाम कर्म करवावाळानों तो एउलो तिर-स्त्रार करेलों छे के ने सांभळवाथी साधारण लोकोने पण एमन थाय के तेवा कर्मथी अलगुंज रहे वुं जोइए. तेमन पद्मपुराण, वायुपुराण, स्कंदपुराण, विगेरे पुराणोमां पण 'आहंसा एन मुख्य धर्म छे, एम स्पष्ट लखेलुं छे. अने आ पर्वमां पशुघात करवो ए कोइ पण प्रकारनो विधि प्रयुक्त नथी; एम घणी रीते सिद्ध थाय तेम छे. पण थोडा वखतने लीधे संक्षेपमां फक्त उपरनी बाबत लखेली छे. बाकी ते विशेष विचार चलाववो होय तो मोटो विस्तारयुक्त ग्रंथ थाय एटलो विचार तेमां थई शके तेम छे.

- ९ सम्मतिरत्र स्वोपपादितेर्थे शास्त्री छगनलाल शर्मणः
- २ सम्मतिरत्र जीवरामशास्त्रिण:
- ३ सम्मातिरत्र इच्छाशङ्करशास्त्रिणः
- ४ सम्मतिरत्र नथुरामशास्त्रिणः
- ५ सम्मतिरत्र कांतात्रसादशास्त्रिणः
- ६ सम्मतिरत्र प्रभुरामात्मज भगवच्छास्त्रिणः
- सम्मतिरत्र वाघजी दार्मात्मज लाधारामदार्मणः
- ८ सम्मतिरत्र प्राणजीवनशास्त्रिणः
- ९ सम्मतिरत्र शास्त्री जयशंकरशर्मणः
- १० सम्मतिरत्र शास्त्री केशवरामात्मज बदरीनाथशर्मणः
- ११ सम्मतिरत्र गवयपुरनिवासिनः भट्टाऽवटंक रामभट्टशर्मणः
- १२ सम्मतिरत्र मूलशंकरशास्त्रिणः
- १३ सम्मतिरत्र भायावरदिनवासिनः केशवलालशास्त्रिणः
- १४ सम्मतिरत्र मथुररामशर्मणः
- १५ सम्मतिरत्र प्रमाशंकरात्मजमयाशंकरस्य

- १६ सम्मतिरत्र करुणशंकरशर्मणः
- १७ सम्मतिरत्र नरोत्तमशर्मणः
- १८ सम्मातिरत्र शंकरलालशर्मणः
- १९ सम्मतिरत्र गौरीशंकरात्मज प्रजारामशर्मणः

### (संसत्संपर्कतो द्वितीयवारं सम्मति)

- २० सम्मतिरत्र वालजितनुजस्य क्षेमजीशर्मणः
- २१ सम्मतिरत्र मुकुन्दतनुज ज्येष्ठारामशर्मणः
- २२ सम्मतिरत्र गोपाळात्मज माधवशर्मणः
- २३ सम्मतिरत्र पुरुषोत्तमात्मज कृष्णशास्त्रिणः
- २४ सम्मतिरत्र रामचन्द्र दीनानाथशास्त्रिणः
- २५ सम्मतिरत्र काशीशेष वेङ्कटाचलशास्त्रिणः

## शास्त्रि रेवाशंकर मावजी द्वेनो अभिप्राय. डाकटर-साहेब. प्राणजीवनदास जगजीवनदास महेता मु० धर्मपुर.

आप साहेब तरफथी वर्तमान पात्रिकामां सात प्रश्नो आव्यां, ते वांची जोवामां आव्यां—आधुनिक कालना राजाओमां घणुं निर्दयपणुं, अविचारीपणुं लोकोना जोवामां आवे छे. परन्तु आपित्रका वांचतां श्री धर्मपुरना महाराजा साहेबने आवी रीते दयानी प्रवृत्ति थइने हिंसानी निवृति करवानी जे जरुर थइ छे, ते घणो वखाणवा लायक छे. अने तेनी साथे धन्यवाद आपवो जोइए छीए. क्षत्रिओने प्रजानी रक्षा करवी अने सर्व प्राणिपर समभाव राखवो एज उत्कृष्ट राज्यधर्म छे. पूर्वे पण घणा क्षत्रिओ चक्रवर्ती राजाओए अनेक प्रकारे दया अने बुद्धि पूर्वक आहिंसा, क्षमा, तितिक्षा, शौर्यता तथा धेर्यताथी प्राणिओन्तं रक्षण करेलुं छे अने क्षत्रिय शब्दनो अर्थ रच्चंशमां महाकवि श्रीकालिदासे बीजा सर्गमां आ रीते करेल छे के

# क्षतात्किलत्रायत इत्युद्गः क्षत्रस्यराब्दो भुवनेषुरूढः॥ राज्येन किंतद्विपरीतवृत्तेः प्राणैरुपक्रोशमलिम्लुचैर्वा॥

उपरना श्लोकमां क्षत् ने हिंसा तथी निरापराधिनी रक्षा करवी तेन क्षत्रिओनो धर्म छे. अने ते थकी विपरीतपणे वरतवाथी राज्य होय तो पण शुं अने दुष्ट प्रवृत्तिवाळा पोताना प्राणथी पण शुं आ वचन महात्मा चक्रवर्ति राजा रघुना पिता दिलीप छं छे. श्ली भगवद्गीतामां परमात्मा श्लीकृष्ण भगवाने पण कहुं छे के ममैवांशो जीवलोंके ॥ ते वाक्यमां एवो भावार्थ छे जे आ लोकमां नेटला जीव छे ते सर्वे मारा अंश रूप छे. तो तेने हणवाथी आपणने परमात्माना अंश उपर धात करवाना दोषने पात्र थवुं पडे छे; माटे सर्व प्रकारे जे कार्यमां अहिंसारूप प्रवृत्ति होय तेज सनातन धर्म छे. बाकी जे तामस भावथी हिंसादिक कार्य करे छे ते आ लोकमां अने परलोकमां निंदित थाय छे.

ते विशे श्री गीतामां कह्युं छे के, अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम् मोहादारभते कर्म तत्तामसमुदाहृतम्॥

अर्थ-अनुबन्धने, क्षयने, हिंसाने, तथा पौरुषने विचार्या विना जे कर्म करवामां आवे छे ते तामस कर्म छे. अने तामसीनी गतिविषे पण गीतामां कहेलुं छे.

> जर्ध्व गछन्ति सत्त्वस्था, मध्ये तिष्टन्ति राजसाः ॥ जघन्यगुणवृत्तित्वा द्रश्रागछन्ति तामसाः ॥

अर्थ-सत्यगुणनी प्रवृत्तिवान्नां उर्द्ध नाम मोक्षगामी है. अने राजस प्रकृतिवान्ना मध्यमां रहे है. तेमज तामस कर्म करनार अधो एटले नर्कमां जाय है. बन्नी गीतामां क्षत्रियना धर्म कह्या है ते "क्ष्ट्रोक"

## शौर्य तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् दान मीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्

भावार्थ-शौर्य, तेज, घृति, चतुराई, युद्धमां न भागवुं, दान, ईश्वरभाव ए क्षत्रियना स्वाभाविक धर्म छे तेमां क्षत्रिये हिंसा करवी एवुं अनुमोदन नथी-अने श्रीमद्भागवतमां स्कंध ४ थाना अध्याय २५ ॥

## अहिंसया पारमहंसचेयया स्मृत्या मुकुंदारमिताग्रासिन्धुना ॥ धर्मे रकमैंनियमे रनिंदया निरीहया दन्द्रतितिक्षया च ॥

अर्थ-ए प्रकारे सनत्कुमार ऋषिए पृथुराज प्रत्ये उपदेश कर्यो छे. तेमां मोक्षगामी क्षात्रिये उपर प्रमाणे वर्तवुं तेमां मुख्य अहिंसा कही छे बाकीनां वचनो केवल सात्विक प्रवृत्तिवालाने ने निवृत्ति धर्मने अन्तरिने कहेला छे. माटे जे केवल अंध परंपराने वलगी रहे छे, ते अज्ञाननो हेतु छे. ते विषे दृष्टान्त छे के—पूर्वे वेन करीने एक राजा थया हता. तेनां कर्म घणा क्रूर हता तथी तेणे धर्मना लोपने। आग्रह करी सर्व मन्द्रप्यो तथा स्त्रीओ प्रत्ये कह्युं जे कोइए पण सत् कर्म करवुं नाह अने सर्व मने अपण करो." अने ऋषिओ द्वाराए मळेलो उपदेश न मान्यो तथी ऋषिनो श्राप थतां ते मृत्युने पाम्यो. पछी तेना शिरारमांथी राजा प्रथु थया ते महाकर्म निष्ट अने सत्य धर्म प्रवृत्त थया. पछी तेणे कुळ परंपराए लोकोने पीडा दीधी नहि. आ शैलीने अनुसरीने महाराजा साहेबने धर्म विषे जे रुचि थई छे ते घणी स्तुति पात्र छे— माटे आवेली पत्रिकाना मारी बुद्धि अनुसार प्रश्नोना उत्तर यथामती लखी जणावुं छुं ते स्वीकारी लेशो.

#### १ प्रश्ननो उत्तरः

बलेव तथा दशरा उपर हिंसा करी बिल भोग आपवानुं तंत्रो अने शाक्त शास्त्रमां प्रतिपादन करेलुं छे. अने धर्म सिंधु तथा निर्णयसिन्धु वगेरे शास्त्रना मत गौणपणे कहेल छे. ते पण नवरात्रीना संबंधमां छे. परन्तु बळेव उपर हिंसा करवानुं कोई पण शास्त्रमां आवतुं नथी.

#### २ प्रश्ननो उत्तरः

ने शास्त्रमां हिंसानुं प्रतिपादन करेल छे, ते शास्त्र घणांज तुच्छ अने गुप्त छे. धर्म सिंधु तथा निर्णयिसिन्धुमां तो सूक्ष्म रीते कहेल छे. ते पण शास्त्रमां विशेष मान्य वचन गणातुं नथी. माटे ते शास्त्रों सर्व छोकमां सर्व मान्य नथी तेम बहुमान्य पण नथी अने बळीदान विधि पण अस्त्र शस्त्र विद्यामां विशेष करीने जोवामां आवे छे. आधुनिक काळमां शस्त्रास्त्र विद्या प्रचलीत थई गएल छे, तेथी ते कर्म निदित छे. माटे कोइ पण प्रकारे जे शास्त्रमां हिंसानुं प्रतिपादन होय तो तेनो कोइ सत् शास्त्रमां कोइ वचन अर्थ फेरथी जोवामां आवतुं होय तो ते उत्तम पुरुषोने मान्य नथी.

#### ३ प्रश्ननो उत्तर.

वेदमा, श्रीमद्भागवतमां, श्रीमद्भगवद्गीतामां, शिवाय बीजा सत्शास्त्रीमां हिंसानो तिरस्कारथी निषेध अने अहिंसानो आदरथी विधि बतावेल छे. सर्व मान्य वेदनेविषे हिंसा छे एवी रीते जे लोको कहे छे, ते वेदनाज निंदक छे अने कोइ प्रकरणमां राजस तामस कार्यनी निवृत्ति माटे संकोच रूप वचन होय तेनो पण अर्थ गूढ होवाथी ते यथार्थ रीते कोइ पुरुषो जाणी शक्ता होय एवं मानी शकातुं नथी। व्याकरणथी वेदनी वाणिना अनेकार्थ थाय छे. तेथी कोइ पण रीते वेदमां हिंसानुं प्रतिपादन छेज निंह माटेज वेदनेविषे जे कोइ हिंसानुं प्रतिपादन करे छे ते वेदधर्मना द्रोही छे.

वेद हिंसामय नथी ते विषे एक महाभारतनुं आख्यान मारा सांभळवामां आब्युं छे ते जणावुं छुं. एक काळने विषे देवताना राजा इन्द्रे यज्ञ करवा माटे यज्ञशालामां पशु बांधेलां हतां ते समयमां महात्मा सप्त रुषिओ पधार्या अने कह्युं के 'हे इंद्र ! तारे आ पशुने शुं करवानुं छे ? " त्यारे इन्द्रे जवाब आप्यो के " वेदमां हिंसामय यज्ञ वर्णवेल छे; ते माटे पशु बांधेल छे." ते वाक्य सांभळी महाऋषिओए कह्युं. "आ केवी अयोग्य अने निर्द्यता भरेली वात छे. वेदमां हिंसानुं कह्युंज नथी."

ते विषे घणीक तकरार थतां छेवट बे पक्षवालाओए पंच तरी के उपरी अमरवसु नामना राजाने ते शंका निवारणने माटे प्रश्न कयों; त्यारे ते वखत राजाए इंद्रनो पक्ष राखवो उत्तम मानी वेदमां हिंसामय यज्ञ छे." एवं वचन काढतां तुरत ते महर्षि पासे उभा छतां पण ते पृथ्वी उपर पड़्यो अने तेनी पाताळमां अधोगति थइ ने अन्ते तेने नरकनो आश्रम लेवो पड़्यो.

आ द्रष्टांतथी एम सिद्ध थाय छे के वेदमां हिंसानी प्रवृत्ति छे ज नहिं; एम महात्मा वेदवक्ता भगवान वेदव्यासजी महाभारतना शांति पर्वमां २६५ अध्यायमां लखे छे.

सुरांमत्स्यान्मधुमांस मासवं कृश रोदनम् ॥ धूर्तैः प्रवर्तितं होतत् नैतद्देवेषु कल्पितम् ॥ १ ॥ महामोहाच्च लोभाच्च लौल्यमेतत् प्रकीर्तितम् ॥ विष्णुमेवा भिजानंति सर्व यज्ञेषु ब्राह्मणाः ॥ २ ॥ पायसैः सुमनोभिश्च तस्यास्ति यजनं कृतम् ॥ यज्ञियाश्चैव ये वृक्षा वेदेषु परिकाल्पिताः ॥ ३ ॥

उपरना श्लोकोनो अर्थ एवो छे के वेदमां कोइ पशुनी हिंसा कहेली नथी अने प्रकरणोमां प्रति पादननो आभास जोवामां आवे छे. ते वेदनां वचन नथी ते वचन कोइ दुःष्ट पुरुषे रसस्वादने अनुसरी वेदन दूषित करवा नाखेल छे, एम स्पष्ट थाय छे. अने वेदना अर्थनुं अत्यंत गूढपणुं छे तेथी जेने जेवी रुचि ते प्रमाणे कोइ कोइ स्थळनो अर्थ न समजवाथी हिंसाना पक्षनुं प्रश्न करे छे. माटे वेदमां

कोइ भागमां हिंसा करवानुं प्रतिपादन नथी अने जो होय तो वेदवेत्ता वेदव्यासजी उपर प्रमाणे लखी जात निह. माटे कोइ पण अधर्मने धर्म मानी हिंसा करशे तो तेने अधर्मनुं फळ मळशे तेमां संशय नथी. वेदमां कोइ हिंसाना यज्ञ अर्थे हिंसा करवी एवो अर्थ समजी पूर्वे प्राचीन बर्हिराजा अने महात्मा नारदजीनो संवाद श्री भागवतना चतुर्थ स्कंधमां २५ अध्याय २१ मां आ प्रमाणे छे.

#### राजोवाच-

नजानामि महाभाग परं कर्मापि विद्धधीः ॥ ब्रूहि मे विमलं ज्ञानं येन मुच्येत कर्मभिः ॥ ५ ॥ गृहेषु कूट धर्मेषु पुत्र दार धनार्थधीः ॥ न परं विंदते मूढो भ्राम्यन् संसारवर्त्मसु ॥ ६ ॥

श्री नारदोवाच-

संज्ञापितान जीवसंधान निघृणेन सहस्रसः ॥ भो भो प्रजापते राजन पशून पश्य त्वयाध्वरे ॥ अते वै त्वां प्रतीक्षन्ते स्मरंतो वैषसं तव ॥ संपरेतमयः कूटै छिन्दन्त्युत्थित मन्यवः ॥

अर्थ—राजाए यज्ञने विषे हिंसा करवामां केटलाक पशु मेळा करी यज्ञ करवा वखते नारद्जी पधार्या त्यां तेना दर्शनथी 'निमळ बुद्धि थतां राजाए नारद प्रत्ये प्रश्न पूछ्युं के 'हे माहाभाग अमारी कर्में करी बुद्धि हणाएली छे. माटे विमळ ज्ञान (धर्म) अमने कहो. जेथी कर्म थकी मूकाइए केम जे कपटरूप प्रहस्थाश्रमनो धर्म तो वली केवो छे ने पुत्र, स्त्री, द्रव्य ए वडे करी मूहपुरुषो संसाररुपी मार्गमां भमे छे ते प्रत्ये नादरजीनुं वचन—हे प्रजापते—तें आ यज्ञमां हजारो जीवने मेला कर्या छे. केटलाक जीवोने यज्ञमां बाल्या छे, ते तारा मृत्युने स्मरण करे छे. तेओ ज्यारे तारुं शरीर पडशे, त्यारे कूट जेवा आयुधो वडे घणा कोधधी तारुं छेदन करशे. माटे जो वेदवचनथी हिंसा करवामां आवती होय तो नारदजी आवुं शामाटे कहे. ए रीते वेदनुं अहिंसामय प्रतिपादन छे. वली भागवतना प्रथम स्कंधना ८ अध्यायमां ५० मा स्होकमां राजा युधिष्टिरे परिताप कर्यों छे के:—

यथा पंकेन पंकाम्नः सुरया वा सुराकृतम् ॥ भूतहत्यां तथैवैकां न यज्ञै मर्ष्टु मर्हसि ॥ ५ ॥

एमां एम जणावेछ छे जे जेम कादव कादवना पाणींथी घोवो अने सुरा सुरावडे करी घोवी, तेम एक प्रांणिनी हिंसा करी यज्ञ वडे शुद्ध थवुं ते योग्य नथी. राजा युधिष्टिर तो क्षात्रधर्ममां रही युद्धमां परमात्मा कृष्णना वचनथी प्रवर्ती हतो; पण तेने वणोक परिताप थयो. ने प्राणीना घातथी राज्य प्राप्त थयुं ते करवाने हुं योग्य नथी एम विचारवा लाग्यो त्यारे ते राजाने यज्ञ करवाथी तारा पापनो नारा थरो ते संबन्धमां तेणे उपलो श्लोक कह्यो छे. पण तेओए तो अपराधिनेंज मार्या हता. तो पण तेने राज्य जीवनपर्यंत सुखदाई थयुं न होतुं, तो जो कोइ निरपराधी प्राणीनो अधर्मने धर्मरूपमानी निर्द्य पणेथी घात करे छे, तो तेओ केवळ कसाईनुं कर्म—करे छे—अने अन्ते घोर नरकनी गतिने पामे छे. वली सप्तमस्कंधमां नारदजीए युधिष्टिरप्रत्ये कहेल छे के:—

नदचादामिषं श्राद्धे नाश्चियाद्धर्मतत्विति ॥ मुन्यन्नैः स्यात् परा श्रीतिने तथा पशुहिंसया ॥ १ ॥ नैतादृशो परो धर्मो नृणां सद्धर्म मिछताम् ॥ न्यासो दंडश्च भूतेषु मनोवाक्कायकर्माभेः ॥ २ ॥

अर्थ:—श्राद्धमां मांस न वापरवं. जेवी शुद्ध अन्नर्था पितृओने तृप्ति थाय छे तेवी मांसर्थी नथी. धर्मने इच्छता एवा जे मनुष्यो तेमणे भूत प्राणि मात्रने विषे मन, वचन, कायाथी दंड करवो निहं. हिंसानो निरोध अने अहिंसानुं प्रतिपादन करवा एक मोटे। प्रंथ करवा धारीए तो तेथई शके माटे आ प्रमाण शास्त्र, वेद, भागवत तथा गीता ते सर्वमान्य गणाय छे. बाकी जे शास्त्रमां हिंसा कहेल छे, ते शास्त्र शास्त्र- पंक्तिमां गणवा लायक नथी. माटे चारे वर्ण अने चारे आश्रमवाळाए सर्व प्रकारे हिंसाथी दूर रही अहिंसा धर्ममां वर्तवुं जोइए. तेमां पण राजाने विशेषे करी करवानुं छे. कारण के जे कोई हिंसा करे तेने शिक्षा करवानी तेमां शक्तिनी जरूर छे.

#### ४ प्रश्ननो उत्तरः

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, एओने यज्ञोपवीतनो संस्कार छे एटले तेमने शास्त्रमां द्विज एवी संज्ञा आपी छे. द्विजवर्ण कोइ काले हिंसा करे नहीं, करतो होय तेने अटकावे, तेमां ब्राह्मण अने वैश्य कोइ काले हिंसा करे नहीं, अने क्षत्री पोते करे निहं, ने करनारने अटकावे ने शिक्षा लायकने पण शिक्षा करे छे. अने शूद्रने विषे एम छे के केटलाक शूद्र हिंसकवृतिवाला छे, तेओ शक्ति तथा तांत्रिकोना शास्त्रमां कह्या प्रमाणे तेवा विधि प्रवर्त करे छे, ते चांडाळनी पेटे त्याग करवा योग्य छे. जेओ सदैव वैष्णवना भक्त छे तेमणे सात्विक देवनी पूजा करवी तथा सात्विक यज्ञादिक करवा. वळी तेमनुं अपराधीन दंड देवा रूप राजकमे ते मोक्षनो हेतु छे. पण तामसभावधी पोताना पाळेला निरपराधी पशुने हणवाधी कोइ रीतने। धर्मनो हेतु होय तो वेदशास्त्र प्रमाणे आहिंसा धर्म होवोज न जोइए माटे हिंसा ते पापकर्मज समजवानुं छे.

श्रीभागवतमां नारद्जी वर्ष वर्ष प्रत्ये इंद्रने अर्थे यज्ञ करता तेमां पण अन्नादिक यजन छे. तेज विधिनी गोवर्धनना मोटा उत्सवरूपे अन्नकोटना नामथी प्रवृत्ति थइ छे. नारद्जी वैष्णव हता; छतां पण ते हिंसा करता निहं, तो तथी उत्कृष्ट वर्णवाळाए ते केम मान्य करी शकाय है माटे राजाए अहिंसा धर्म प्रवर्ततां कोइ पण शास्त्रनी आज्ञा तोडी गणाय निहं. अने जो आज्ञा त्रूटती होय तो पूर्वे मोटा थइ गयेला राजाओए अहिंसा धर्म प्रवर्तावेल छे. ते सर्वे महात्मा भगवान्ना परम भक्त गणायाथी मोक्षने पाम्या छे. ते वात निहं बनते.

### ५ प्रश्ननो उत्तरः

हिंसानो त्याग करी अहिंसामांथी थता धर्मनुंज राजा आचरण करे ते राजाने, तथा तेनी प्रजाने संपत्ति मळे छे, ने कोइ जातनी आपत्ति आवती नथी. अहिंसांथी केवळ सुखनी उत्पत्ति छे.

#### ६ प्रश्ननो उत्तर.

देवीने उद्देशेन हिंसा करवामां आवे छे, ते तो घणुंज अकार्य छे कारण के देवी त्रिगुणात्मक भगवत स्वरूपनी शक्ति छे तेनुं देवोनी साथे सात्विकपणार्थी पूजन छे. मार्केड पुराणमां देवीने कोइ ठेकाणे तामसी देवतुल्य गणी नथी. माटे सात्विक देवतुं मांसादिकथी पूजन होयज निहें अने जे करे छे ते तो पोताने मांस भक्षण करवाना हेतुथी पूजनमां लावे छे. भागवतमां जडभरतना आख्यानमां म्लेखनो राजा भद्रकालीने अर्थे पशुमारवा जतो हतो तेमांथी पशु जतुं रह्यं तेने बढ़ले जंगलमांथी भरतजीने पकडी गयो अने देवी पासे जइ तेनो वध करवा मांड्यो, के तरत देवीए कोप कर्यो. माटे जो देवी प्रसन्न थती होय तो म्छेछनो नाश करत नहिं वर्छा तेमां कोइ एवं पछुटो के जे राजाओ देवीना निमित्ते हिंसा करेंछे, तेमने केम कांड थतुं नथी. ते विषे आम समज-वानुं है जे राज्य पदवी केई थोडा तप के सुकृत्यनुं फल नथी पण महा उप्र अने उत्कृष्ट धर्मनुं फल हे. तेथा पूर्वना पुन्यना जोगे करीने हाल कशुं विघ्न जोवामां आवतुं नथी तेथी करी हिंसानी प्रवृत्ति कर्या करे छे. तेथीज राजाने अन्ते केटलाक राज्यने अघो नर्क भोगवबुं पडे हे. एम अनेक शास्त्रों कहे हे. माटे देवीने सारा पदार्थ अन्नादिकथी बलिदान आपवुं कटी पोताना मनमां हिंसानो घणो आग्रह होय तो कूप्मांडादिक फलनुं नैवेद मुकनुं तेथी कोई शास्त्रनी आज्ञानो भंग कर्यों कहेवाय नहिं. वर्छा देवी जगत् जननी कहेवाय छे. जगतमां स्थावर जंगम बे जातनां प्राणी छे. ते सुवें तेना संतान छे. माटे ते पोताना निरपराधी संतानोना घातथी पाते प्रसन्न थाय ज नहीं. माटे कोई प्रकारे देवनीके शास्त्रनी आज्ञानो भंग थतो नथी.

#### ७ प्रश्ननो उत्तर.

पशु हिंसाने बदले पशुना नाक के कान छेदवामां आवे ए प्रश्ननुं काई उचित प्रयोजन नथी. कारण जे पुरुषने हिंसामांथी निवृत्ति पामवानो उद्देश छे तेने तो पशुने विरूप करवानुं कांई प्रशस्त नथी. तो पण जो मनने अस्थिरपणुं भासतुं होय अने उपरना शास्त्रोना अभिप्रायमां शंका थती होय तो नाक कान छेदवाथी किया थई कहेवाय छे, अने एवी रूढी पण केटछेक स्थले चाले छे. पण मारे धारे तो ते पण किया बंध करवा छायक छे.

जगत्मां प्राणिमात्रने त्रण वस्तुनी प्राप्ती थाय छे.

## विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय ॥ खलस्य साधोर्विपरीत मेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥ १॥

खल पुरुषो विद्यानो विवादमां उपयोग करे छे, धनथी मद करे छे अने शक्तिथी परने पीडा करे छे, पण साधुपुरुष तेथी विपरीत एटले ए त्रण वस्तुनो सदुपयोग करे छे—विद्यार्थी सर्वेने ज्ञान आपे छे, धनथी दान आपे छे अने शक्तिथी प्राणिमात्रतुं रक्षण करे छे. माटे हिंसा करवी ते तमाम खल अने नीच पुरुषतुं कृत्य छे. वास्ते कोइ प्रकारे हिंसाने धर्म मानी प्रवर्तशे तो ते अधोर एवा नरकमां पडशे एवो सर्व शास्त्रवेत्ताओनो अभिप्राय छे. अने अहिंसा एज सर्वोत्तम मत छे ने ते आश्रय करवा योग्य छे. तथास्तु"

उपरना प्रश्नोनां मारी अल्प बुद्धियी उत्तर लख्यों छे. आवा गाढ विषयमां मारे आगळ पडी लखवुं योग्य नथी तो पण धर्मनी लागणीयी सत्पुरुषना मुखारविंद आगळ मारो मत निवेदन करुं छुं ते अनुम्रह्यी स्वीकारशोः आवा सत्कर्ममां अनेक धर्मवेत्ता शास्त्रीओना अभिप्राय आवी पहोंच्या हशे. कोइ पण प्रकारे हिंसा बंध थतां अहिंसा धर्म प्रवर्तन थशे तो हिंसाथी बचनार प्राणिओना शुभ आशीर्वाद महाराजा साहेबना राज्यने, कोशने, प्रजाने अने सर्व संपत्तिने पूर्ण फलिभूत करशे अने आ काम आलोक परलोकमां शय, अने मोक्षनुं साधनरूप छे. आ कार्य अहिंसारूप प्रवर्तशे तो ते अनुसारे केटलांक राज्यमां रूढी हशे ते पण निवृत्त थशे तेमां सर्वलोकथी आपने आशीर्वाद थशे.

वैष्णव अने स्मृति धर्मवाला सर्व ' अहिंसा परमो धर्म' एवा वाक्यने सर्वोत्कृष्ट गणे छे.

वेदमूर्ति भगवान्, रांकरना अवताररूप, सन्यासीना आदिगुरु श्रीशंकराचार्य, श्रीरामानुज संप्रदाय वाला, माध्व, राधावल्लभी, श्रीवल्लभाचार्य, श्रीस्वामीनारायणवाला, आदि सर्व अहिंसानुंज प्रतिपादन करे छे. तेओए सनातन वेदमां जे धर्म कह्यो छे, तेज प्रवर्तावेल छे. माटे कोइ पण धर्माचार्य तो अहिंसानुं कार्यज प्रमाण करे छे छतां जे हिंसाना कार्यमां प्रवर्ते छे तेओ वेद, भागवत, गीता, मनुस्मृति अने उपर लख्या ते धर्माचार्योना प्रत्यक्ष रीते निंदक छे. वळी एवं कग्रुं शास्त्र छे के जेमां हिंसा करवाथी धर्म थाय एम कहेलुं होय.

महाराजनुं नाम परंपराथी धर्मपुरना महाराजा तरीके निर्माण थयेल छे तो तेओए पोताना राहेरना नामनो खरेखरो अर्थ आ पत्रिकाथी आरंभ्यो लागे छे ते परमात्मा संपूर्ण करहो, एवी अमी महात्मा-ओ पासे अभिवंदना करीए छीए अने अहिंसारूप सत्कार्य सिद्ध थवा चाहिए छीए.

वली विशेष के श्री जैनधर्ममां तो कोइ स्थले कोइ अंशे कोइ वाक्य हिंसा करवी तेवुं छेज नहि. एटले ते मत तो हिंसा न करवी एवो अति आग्रहपूर्वक बोध करे छे माटे ते मत पण मान्य करवा लायक छे, आ कार्यमां महाराजा साहेबने पुण्यनो कांइ पार रहेशे नहि. वली तेवा कार्यमां प्रवर्ति करवा एटले हिंसा न कराववा माटे जे प्रयास करवामां आवे छे, ते पण अति उत्तम धन्य-वादने पात्र छे. सुद्रोषु किंबहुना, शांतिः मुंबइथी—

लिः शास्त्री रेवाशंकर मावजी दवे मांडवीषंद्रवाळा

### मोरवीवाळा शास्त्री शंकरलाल माहेश्वरनो अभिप्राय.

( प्रथम पत्र )

# सौजन्य सुधासागर परम हितैषिवर्य रा. रा. भाईश्री प्राणजी-वन जगजीवन मेहेता.

श्री मोरबीथी ली. शंकरलाल माहेश्वरना आशीर्वाद वांचशो. तमारो ता ७-९-९४नो लखेल पत्र मने पहोंच्यो वांची वीगत जाणी जवाब नीचे मुजब.

१ देवीभागवत मार्केडेय पुराण आदि देवीना पुराणमां कोइ ठेकाणे देवीने के देवने पशुहिंसा करी भोग आपवानुं लख्युं नथी तेमज तंत्र ग्रंथमां पण पशुवध देवी के देवने भोग माटे लखेलो नथी। कदी कौलमत (शक्ति पंथ) ना पुस्तकमां पशुहिंसा करी भोग आपवानुं लख्युं होय तो ईश्वर जाणे ए पंथोना में ग्रंथ जोया नथी।

२ कोइ पण मतना ग्रंथोमां लखेलां वचनो सर्व मान्य गणायज नहीं तेम बहु मान्य पण गणाय नहीं

३ सर्वमान्य अने प्रमाणरूप शास्त्रमां हिंसानो निषेध करेल छे जे वचनो में अर्थ सहित साथेना पत्रमां लखेला छे.

४ देव देवी माटे पशुहिंसा अवस्य करवीज जोड्ए एम राजाओनां अवस्य कृत्योमां जोवामां आवतुं नथी तेम पशुहिंसा न करे तो बलवान् शास्त्रनी आज्ञा तोडी गणाय नहीं केम के बलवान् शास्त्रोए एवी आज्ञा करीज नथी.

५ हिंसामय प्रवृत्ति न करे तो तेथी राजाने कांइ आपत्तियोग आवेज नहीं पण राजा अने प्रजानुं कल्याणज थाय अने पशुहिंसा न करवाथी अकार्य कर्युं न गणाय पण उत्तम कार्य कर्युं गणाय; ते विषे वचनो पण साथे छखेछां छे.

६ पशुवधने बद्छे हिंसा वगरनी किया करीने ते पर्व आराधवामां आवे तो तेथी शास्त्रनी आज्ञानो भंग कर्यो गणाय नहीं. सप्तशतीना पाठो कराववाथी, अनेक प्रकारनां नैवेद्यो करवाथी अने ब्राह्मणोने जमाडवाथी देवीने परम प्रीति थाय छे एवां वचनो घणां छे,

७ प्राणीना नाक के कानने छेको मारवानी कांइ जरूर नथी; कारण के ज्यारे सर्व मान्य शास्त्रोमां देवीने बाले आपवा माटे पशुहिंसा करवी, एवं वचन जोवामां आवतुं नथी त्यारे निरपराधी प्राणीनां नाक के कानने छेको मारीने तेने शुं करवा पीडवुं जोइए.

धर्मशास्त्रोनां पुस्तकोमां दशरा ने बलेवनां वृत्तांतो जोतां कोइ पण पुस्तकमां नथी जोवामां आवतुं के देवी अथवा देवना भोग माटे पशुहिंसा करवी; माटे दशरा विगेरेमां पशुहिंसा करवानी रूढी अशास्त्रीय छे जूवो उपर लखेला अभिप्रायने दृढ करनारां सर्वमान्य शास्त्रोनां वचनो.

१ अहिंसा परमो धर्मः । अर्थ-अहिंसा एज उत्तम धर्म छे. २ न हिंस्यात्सवाणि भृतानि । कोइ पण प्राणिनी हिंसा करवी नहीं. ३ मनुस्मृति अध्याय ५ श्लोक ३८ मो.

यावन्ति पशुरोमाणि तावत्कृत्वोह मारणम् ॥ वृथा पशुष्तः प्राप्तोति प्रेस जन्मिन जन्मिन ॥ ३८॥

अर्थ—ने माणस वृथा पशु हिंसा करे छे; ते माणस ते पशुनां नेटलां रुंवाडां होय छे तेटली वखत जन्ममां ते पशुर्थी मरणनो अनुभव करे छे.

४ श्रीभागवतना तृतीय स्कंधना सातमा अध्यायना श्लोक सातमामां लखे छे के,

सर्वेवेदाश्च यज्ञाश्च तपोदानानि चानघ॥

जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ॥ १॥

अर्थ—सर्व वेद, सर्व यज्ञ, सर्व प्रकारनां तप अने सर्व प्रकारनां दान पण जीवने अभयदान आपवानां पुण्यनी एक कला पण करतां नथी. मतलब के ए सर्व करतां जीवने अभय करवुं ए मोटुं पुन्य छे.

५ श्रीभागवत तृतीयस्कंघ अध्याय २७ मो श्लोक २१-२२

अहं सर्वेषु भूतेषु भूतात्मावस्थितः सदा ॥ तमवज्ञाय मां मूढाः कुरुतेर्चाविडंबनम् ॥ २१ ॥

अर्थ-श्रीकिपलदेवनी कहे छे के हुं प्राणिमात्रमां आत्मरुपे रह्यो छुं, तेनी अवज्ञा करीने मूर्व-लोको मूर्तिनुं पूजन करेछे मतलब के जे पशु हिंसा करीने मूर्तिनी पूजाकरे छे ते मूढ छे.

यो मां सर्वेषु भूतेषु संतमात्मानमीश्वरम्।।

हित्वाची भजते मौढचात् भरमन्येव जुहोति सः॥ २२ ॥

अर्थ-श्रीभगवान् कहें छे हुं प्राणिमात्रमां आत्मारुप रह्यों छुं. तेनुं अपमान करीने मूर्तिनी पूजा करे छे एटले पशुमां आत्मरुप हुं रह्यों छुं तेनी हिंसा करी मारुं अपमान करे छे ते राखमां होमे छे.

६ श्रीभागवतमां एकादश स्कंघ अध्याय ५

येत्वनेवंविदो संतः स्तन्धाः सदिभमानिनः॥ पशून दुद्यांति विस्नन्धाः प्रेत्य खादंति ते च तान्॥ १॥

अर्थ—जे अज्ञानी अभिमानी असाधु छतां पोताने साधु माननारा लोको पशुने मारे छे; तेओने मूआ पछी तेज पशुओ खाय छे.

७—जुओ महाभारतमांथी नीकलेल इतिहास समुच्चयनां वचनोने के जे अहिंसानेज कल्याणनुं साधन छे एम सिद्ध करे छे.

तपः कृते प्रशंशित त्रेतायां ज्ञानसाधनं ॥

द्वापरे यज्ञ मेत्राहुद्गिनमेकं कलौ युगे ॥ १ ॥

सर्वेषामेव दानानामिदमेवैकमुत्तमम् ॥

अभयं सर्वभूतानां मनोधाक्कायकर्माभिः ॥ २ ॥

चराणामचराणां च योऽभयं वै प्रयच्छिति ॥

स सर्वभयनिर्मुक्तः परंब्रह्माधिगच्छिति ॥ ३ ॥

नास्त्यहिंसापरंपुण्यं नास्त्यहिंसापरं सुखं ॥

नास्त्यहिंसापरंज्ञानं नास्त्यहिंसापरोऽभयः ॥ ४ ॥

सत्ययुगमां तपनेज कल्याणनुं साधन कहेता. द्वापरमां यज्ञनेज कल्याणनुं साधन कहेता. त्रेतायुगमां ज्ञाननेज कल्याणनुं साधन अने कल्यिगमां दाननेज कल्याणनुं साधन गणेल छे. सर्व दानमां पण उत्तम दान तेज छे के मन, वचन, काया अने कर्मथी सर्व प्राणीमात्रने अभयदान आपनुं, अर्थात् प्राणिनी हिंसा न करवी एज अभयदान कहेवाय छे. जे स्थावर जंगम जीवने अभयदान आप छे ते परब्रह्म (मोक्ष) ने पामे छे. प्राणीनी हिंसा न करवी ए जेनुं बीजुं पुण्य नथी, प्राणीनी हिंसा न करवी ए जेनुं बीजुं ज्ञान नथी ने प्राणीनी हिंसा न करवी ए जेनुं बीजुं कल्य।ण नथी.

८ श्रीमद्भगवद्गीतामां छट्टा अध्यायना ३२ श्लोकमां कहेलुं छे.

आत्मौपम्येन सर्वेषु समं पश्याति योर्जुन ॥ सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥ ३२॥

ने प्राणिमात्रमां सुखने अने दुःखने पोतानी उपमाथी देखे छे ते माणस उत्तम योगी मानवो.

#### गीताना १२ मा अध्यायमां १३ श्लोकमां

अदेष्टा सर्वभूतानां । जे सर्व प्राणीमात्रनी हिंसा नथी करतो; ते मारो व्हालों छे एम कह्युं छे. ९ तेमज दैवी संपत्तिमां जे जीवने भगवाने गणाव्या छे तेमां हिंसा न करनार, सत्य बोलनार, कोध न करनार, उदार, शांतिवान, चाडी न करनार, प्राणीमात्र उपर दया राखनार, लोभ न राखनार, कोमल मन राखनार, शरम राखनार अने चपलता न राखनार एवा जनोने देवी संपत्तिना कह्या छे. तेम आसुरी जीवोनी गणना करतां जेओ प्राणीमात्रमां हुं रह्यों छुं तेनो द्वेष करे छे. एवा जनोने हुं आसुरीयोनिमांज नाखं छुं एम भगवाने कह्यं छे.

तेमज गीताना १८ मा अध्यायमां २५ श्लोकमां हिंसा जेमां थाय एवां कर्मोंने तमोगुणी कर्म गणेल छे, एथी पण अहिंसा केवी उत्तम छे ने हिंसा केवी निंद्य छे ते जाहेर जणाय छे.

एवी रीते हिंसानी निंदा ने अहिंसानी स्तुतिनां वचनो अनेक छे. पण ते छखवाथी विस्तार वधीं जाय, माटे टुंकामां थोडाक वाक्यो छखुं छुं.

> दीर्यमाणः कुशेनापि यः स्वांगे हंत दूयते ॥ निर्मतून् स कथं जंतून्घातये न्निशितायुधैः॥ १ ॥

जे माणस पोताना शरीरमां दर्भनो कांटो वागतां पण दुःभाय छे, ते माणस निरपराधी जीवने हथीयारथी केम मोरे?

> निर्मातुं क्षणिकां तृप्तिं क्रूरक्रूरतराशयाः ॥ समापयन्ति सकल जन्मान्यस्य शरीरिणः ॥ १ ॥

अर्थ-क्र्रमां पण क्रूर लोको पोतानी क्षणिक तृप्ती माटे बीजा प्राणीनुं सघळूं जीवित समाप्त करी दे छे ए केवी खेदनी वात छे.

> म्रियस्वेत्युच्यमानोऽपि देही भवति दुःखितः ॥ मार्यमाणः प्रहरणे दीरुणैः स कथं भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ—तुं मरीजा एटछुं कहेवाथी पण प्राणिने दुःख लागे छे त्यारे जे भयंकर हथीआरथी मराते। हरो तेने केवुं दुःख थतुं हरो.

> हिंसा विघ्नाय जायेत विघ्नशांतौ कृतापि हि ॥ कुलाचारियाप्येषा कृता कुलविनाशिनी ॥ २ ॥

अर्थ-विद्योनी शान्ति करवा माटे करेली हिंसा विद्योनेज करे छे, कुलनो आचार मानीने करेली हिंसा पण कुलनेज हानि करे छे. ए प्रमाणे प्राणिहिंसाने निंदी छे. अने नीचेना श्लोकमां अहिंसाने वखाणेल छे.

योभूतेष्वभयं दद्यात भूतेभ्यस्तस्य नोऽभयम् ॥ याद्दग्वितिर्यते दानं ताद्दगासाद्यते फलम् ॥ ३ ॥

अर्थ—जे प्राणीमात्रने अभय आपे छे तेने प्राणीमात्रथी भय नथी, कारण के जेवुं दान आपीए तेवुं फळ मळे छे.

मातेव सर्वभूताना महिंसा हितकारिणी ॥ अहिंसैव हि संसारमरावमृतसारिणी ॥ ४ ॥ अहिंसा दुःखदावामिंत्रावृषेण्यघनावालिः ॥ भवभ्रमिरुगात्तीना महिंसा परमौषधीः ॥ ५ ॥ दींघमायुः परंरूपमारोग्यं श्लाघनीयता ॥ अहिंसायाः फलं सर्व किमन्यत्कामदैव सा ॥ ६ ॥

अर्थ—अहिंसा मातानी पेठे प्राणिनुं हित करनारी छे. अहिंसाज संसाररूप मरु भूमिमां अमृतनी नदी छे. अहिंसा दुःखरूपी दावाग्निने शान्त करवामां मेचनी पंक्तिरूपे छे अने अहिंसा संसारमां जन्म मरणरूप रोगने टाळवामां महोषधी छे. दीर्घ आयुष्य, उत्तम रूप, शरीरमां निरोगीपणुं अने उत्तम कीर्ति ए सर्वे अहिंसाना फल छे, विशेष शुं कहेतुं अहिंसा तो कामदुघा धेनु छे. इत्यादि अनेक वाक्यो छे. पण लखाणमां लंबाण थवाना भयथी बंघ करुं छुं. सं १९५० ना भाद्रपद शुदी १२ रविवार.

### ( द्वितीय पत्र. )

### राः राः प्राणजीवनभाई जगजीवनभाई मेहता. धर्मपुर स्टेट.

मोरबीथी ली. रांकरलाल महेश्वरना आशिर्वाद वांचशो. विशेष लखवानुं के गइ काले में मारो अभिप्राय जणावेलो छे. तेमांथी भागवतना चोथा स्कंधनी वात लखर्वी चूकी गयो छुं. ते ए के प्राचीनबर्हि नामना राजाए अश्वमेध कर्यो हतो, तेने नारदजीए कह्युं के जे जे पशुओने यज्ञमां मारेलां छे, ते तारी वाट जोइने उभां छे, तेओ तुं मरीश त्यारे तने मुद्गलथी मारशे एम कही पुरंजनतुं आख्यान संभळाव्युं के तेणे तारी पेठे घणा यज्ञो कर्या हता तेथी तेतुं मृत्यु थया पछी तेणे जेजे जीवो यज्ञोमां मार्या हता, तेओ कुवाडा लड्डने तेंने मारवा उभा रह्या अने तेने नरकोनी पीडा भोगववी पडी हती. एथी यज्ञमां थता पशुवधर्थी पण नरकमां जबुं पडे छे; तो पछी दशरा जेवा पर्वमां तंत्रमां लखेलां वचनथी करेली हिंसा दुःखदायक केम न थाय ? कालिका पुराण—डामर तंत्र विगरे तंत्र प्रन्थोमां द्शराना दिवसे नहिं पण नवरात्रीना बलिदानमां लखेल छे के पशुहिंसा सकाम राजाए करवी. पण तेमां सिंह-वाघ-बकरो-पाडो-गाडरतुं बिलदान आपवातुं बतावी छेवट पोतानुं मांस आपनुं एम लखेल छे. त्यारे कोइ उपरना तंत्रनां वचन आपे तो आपणे पूछवानुं छे के सिंह वाघनुं बिट्यान केम नथी आपता ? तेम पोतानुं मांस सर्वधी उत्तम कह्युं छे ते केम नथी आपता ? माटे देवी तुं नाम र्ल्ड अहिंसा पोतानी इच्छाथी करवामां आवे छे तो ते वृथा हिंसा छे. तो तेवी हिंसा बन्ध थवाथी देवी कोपे नहीं पण प्रसन्नज थाय छे. तेम छतां पण देवीनी परम प्रीति माटे रातचंडी विगेरेथी उत्तम आराधना कराववी. में प्रथमना पत्रमां देवीभागवतमां पशुहिंसा नथी एम ल्रुं छे. पण आजे फरीने तेने जोतां एक ठेकाणे तेमां पण पश्चिहिंसा लखी छे. तो पण ते वाक्य सर्व-मान्य न गणाय ते वात सिद्ध छे. माटे हिंसा तो बन्धज थवी जोइए. आपणी मोरबीमांज प्रथम पाडो मच्छू माताने चडावता, ने त्यार पछी बकरो चडावता; ते राजमान्य राजेश्री पारेख मोतीचंद रतनसीए ठाकोर साहेबने अरज करी बंध करावेल छे. तेथी हवे इहां तेवुं कृत्य नथी ज थतुं. तेमज सतपर गाममां द्शाराना पर्वमां ने घेटा के त्रण घेटा मारता; ते पण पारेख मोतीचंद रतनसी त्यां जई माताना कोपतुं पोताने माथे लई ते वे घेटाने उपाडी लाव्या, ते दिवसथी, त्यां पण बंन्ध थयेल छे; ने दरबारमां तथा मोतीभाइना घरमां आनंद छे. ते माटे ए प्या हिंसानी रूढी बंध पाडवाथी राजानुं कल्याण छे; ने आपने पण मोंटो यश मळशे. तेज धर्मने उत्तेजन छे माटे ते उपर आप पण बनती महेनत छेवी. आपने वधारे छखवुं पडे तेम नथी. आ वखते पारेख—छाछाभाई मोतीचंद अहिं आव्या छे ते तमने यथायोग कहीं लखावे हैं के आपे आ धर्मनुं काम उपाडयुं ते वात सांभळी अमोने पण पूर्ण संतोष थयेलो हे. ने आपने धन्यवाद आपीए छीए; ने ईश्वर तमारो श्रम सफल करे एम मागीए छीए.

शास्त्री शंकरलाल माहेश्वर-मोरबी संस्कृत शालाना अध्यापक.

## श्रीमान् धर्मतत्पर आर्थभिमानी रा. रा. प्राणजीवन जगजीवन मेहेता.

चीफ मेडिकल आफीसर.

स्वस्थान धरमपूर.

भावनगरथी लि. शास्त्री भानुशंकर हरिशंकरना यथायोग्य आशीर्वाद स्वीकारशो. विशेष लखवानुं के अखंड प्रौढप्रतापी आर्यधर्मोत्तेजक अने परमब्रह्मण्य महाराज श्रीमोहनदेवजीनी प्रवित्र आज्ञाने अनुसारे आपना तरफथी एक प्रश्नपत्रिका मने मली छै, ते मारा वांचवामां आवतां अहिंसाप्रवर्तक वृत्ति जोइ मने घणो हर्ष प्राप्त थयो छे. आजकाल केटलाक सकामी पुरुषोना उत्कृष्ट उपदेशथी प्रवृत्ति मार्गनो प्रचंड वेग घणा राज्यस्थानोमां अंधपरंपराथी प्रवर्त्तेलो छे अने ते रूढीना प्रबल पणाथी एवो सज्जड थई गयो छे के, एकदम ते निर्मूल करवो अशक्य छे तथापि महाराजाना सुविचारथी आवी हिंसा रूढी विनाश थाशे. ए जोइ हुं संतोष पामुं छुं अने मारी स्वदेश भूमि उपर आवा दयालु महाराजा निरन्तर राज्य करे एवी इच्छा राखुं छुं.

विशेष आपने जणाववानुं के आपना तरफर्था जे सात प्रश्नना खुलाशा मागेला छे, तेओनो क्रमवार खुलाशो मने आपणा आर्य प्रन्थोमां जे जे मारा वांचवामां आव्युं ते प्रमाणे बताववाने में नीचे प्रमाणे छखेलो छे; ते आप ध्यानमां लेशो. जो के आ विषय एटलो गम्भीर अने चर्चवा युक्त छे के जो तेनुं बराबर प्रमाण साथे विवेचन कर्युं होय तो एक प्रंथ थाय; अथवा जो मारो ने तमारो प्रत्यक्ष समागम होय तो घणुं सारी रीते स्पष्टीकरण थई शके, तथापि फक्त हार्दने अनुसारे संक्षिप्त करी तेना नीचे प्रमाणे प्रमाणो आपवामां आव्यां छे ते आपने विदित थशे.

#### १ प्रश्ननो उत्तरः

पहेला प्रश्नना उत्तरमां लखवानुं के महिषादि पशुवध करवानो विधि तांत्रमत प्रमाणे देवी भागवत, कालिकापुराण, कात्यायन तंत्र विगेरेमां कहेलो छे खरो, पण ते फक्त तांत्र पक्षथी प्रमाण छे.

### २ प्रश्ननो उत्तरः

बीजा प्रश्नना उत्तरमां लख़वातुं के जे ग्रंथमां पशुवध कहेल छे ते ग्रंथो आर्यलोकोमां जे सकामी छे तेने मान्य छे तेथी तांत्रिक पक्षमांज बहु मान्य गणाय पण जेओ निष्कामी अने शुद्ध मार्गातुसारी छे तेओने ए ग्रंथो बिलकुल मान्य गणाता नथी.

#### ३ प्रश्ननो उत्तरः

त्रीजा प्रश्नना उत्तरमां ते यंथो करतां घणा बलवत्तर प्रमाणवाला अने हिंसाने निषेध करनारा घणा आर्ययंथो केदारीसिंहनी माफक गर्जना करे छे. जेनी पासे सकामीना यंथो जंबूकनी पेठे दूर नासी जाय छे तेओमां केटलाएक उपनिषद् भगवद्गीता अने महाभारतना शान्ति पर्वोत्तर्गत मोक्ष धर्ममां तेनुं घणुं सारुं विवेचन करेलुं छे. आमां उपनिषद् भगवद्गीता विगेरेना प्रमाण आपीने जो लखना बेसीए तो घणो विस्तार थइ जाय पण आ ठेकाणे तेमां घणो उपयोगी मोक्षनो एक विषय धारीने हुं नीचे प्रमाणे प्रमाणो आपुं छुं, के जे प्रमाणो आपणा माहात्मा वेदव्यासना मुख कमळथी निकळेल छे. अने जेओनी उपर भारतटीकाकार पंडित नीलकंठे श्रुतिओनां प्रमाणोथी टीकाद्वाराए आहिंसा धर्मने सिद्ध करेलो छे.

अहिंसाने ते प्रतिपादन करे छे. अने तेमां "अनागां" एटले निरपराधी एवं विशेषण आपीन यज्ञ संबन्धी हिंसाविधि करतां अहिंसा विधि श्रेष्ठ छे, एवं साबीत करे छे. कारणके जेवं मधुपर्कमां गायनुं निरपराधीपणुं छे, तेवुंज यज्ञमां पशुनुं पण निरपराधीपणुं छे. आ उपरथी श्रुतिनो तात्पर्य अहिंसा विधिमां प्रवर्त्ते छे.

आवी रीते जुदा जुदा आचारथी श्रुतिनुं तात्पर्य अहिंसा धर्ममां प्रवर्ताव्युं छे. तेवी रीते केटलां एक सकामिक कर्म के जेओ श्रुतिनुं तात्पर्य बराबर समज्या वगर पोतानी अज्ञानताना प्रौढ प्रतापमां तणाइने वेदना अथवादोनुं स्तुतिमां तात्पर्य जाण्या शिवाय हिंसाधर्मने प्रमाण करवाने मथे छ तेओनी निंदाने माटे ए पछीना अध्याय २६३—श्लोके ६ टामां आ प्रमाणे लखे छे. ॥ श्लोकः ॥ लुब्धेविंत्तपरैक्ष्म नास्तिकैः संप्रवर्तितम् ॥ वेदवादानविज्ञाय सत्याभास मिवा नृतम् ॥ अथे ॥ हे ब्रह्मन् आस्तिक एटले वेदनुं प्रमाण बोलनारा पण तेना तात्पर्यने निहं जाणनारा विषयलंपट एवा लोभी कर्म जेओए वेदमां कहेला अर्थवादोनुं स्तुति मात्रमां तात्पर्य छे एम न जाणी उपरथी सत्य जेवुं लागतुं पण अविद्यामूळक ब्राह्मणत्वादिनो अध्यास प्रबल होवाथी स्वरुपे खोटुं एवुं हिंसात्मक कर्म प्रवर्ताव्युं छे जेने माटे श्रुतिमां कहे छे के—नीहारेण पाटता जल्पाचास्रतृप उक्थशासश्चर्तित ॥ अथे:—जे कर्म जेओ अज्ञानथी छवाएला तथा अर्थवादना वचनोने सत्य मानी पोताना प्राणतुं पोषण करनारा अने कर्मनुं अनुशासन करवामां तत्पर छे. टीकाभिपायसहितं तत् ॥

आवी रीते हिंसाने प्रमाण गणनारा सकामी छोकोनी श्रुति ज पोतेज निंदा करे छे. हवे उपरनां प्रमाणोधी हिंसात्मक कर्मनी निंदा करीने ब्रह्मयज्ञनुं स्वरूप कहे छे. ॥ अ० २६३ श्रुके ८ ॥ यदेव सुकृतं हव्यं, तेन तुष्यन्तिदेवताः नमस्कारेण हविषा, स्वाध्याये रौषधेस्तथा ॥ पूजा स्यात् देवतानांहि, यथाशास्त्रनिदर्शनम् ॥ अथ—सुकृत वडे मेळवेछुं हव्य उत्तम छे अने तेमनाथी देवताओ संतोष पामे छे. ते हिव त्रण प्रकारनुं छे. एक नमस्कार हव्य, बीजुं स्वाध्याय हव्य, त्रीजुं औषघ हव्य, आ त्रण प्रकारना हव्यथी जेवा देवताओ संतोष पामे छे तेवो संतोष पशु विगेरे हिंसात्मक द्रव्यथी पामता नथी. अर्थात् नमस्कार हव्य, वेदाध्ययन रूप हव्य, अने ब्रीहियवात्मक हव्यथी यज्ञ करवो पण हिंसाथी करवो निहें.

श्रीमहाभारत ज्ञान्तिपर्व, मोक्ष धर्म, अ० २६२ श्लो. २८, २९, ३०, ३१, ३३, ३५ नो भावार्थ आ प्रमाणे छे:-तुल:धार अने जाजलानो संवाद चाले छे. तुलाधार जाजली प्रत्ये कहे छे. हे जाजली! तप करवाथी, यज्ञ करवाथी, दान आपवाथी अने ज्ञानोपदेशनां सद्वाक्यो कहेवाथी जे फछ प्राप्त थाय छे ते फल प्राणीने अभयदान करवाथी थाय छे. ॥२८॥ जे पुरुष आ लोकमां प्राणीओने अभय दक्षिणा आपे **छे ते सर्व यज्ञो** करनारो जाणवो. ने ते पण अभयपदने पामे छे. ।। २९ ॥ सर्व प्राणीओनी अहिंसाथी श्रेष्ट बीजो कोइ धर्म नथी. जेनाथी क्यारे पण कोइ प्राणी उद्वेग पामतो नथी. हे महामुनि! ते सर्व प्राणीथी अभय पामे छे ॥३०॥ घरमां रहेला सर्पथी जेम लोको उद्वेग पामे छे, तेम आ छोकमां अने परलोकमां ते धर्मने पामतो नथी ॥३१॥ हे जाजली! सर्व दानमां प्राणीओने जे अभयदान करवुं ते उत्तम कहेवाय छे. आ हुं तमने खरेखरूं कहुं छुं. माटे ते उपर तमो विश्वास राखजो ॥ ३२ ॥ हे जाजली ! अहिंसात्मक अने अभयदानरूप जे सुधर्म हे, ते निष्फल नथी. कारण के वेदमां स्वर्गनी प्राप्तीने माटे तथा ब्रह्मनी प्राप्तीने माटे यज्ञादिक अने शमादिकतुं अध्ययन करेलुं छे, पण तेनो तात्पर्य एवो छे के स्वर्गादिक अनेक फलनो आपनार यज्ञादिक स्थूल धर्म छे अने ब्रह्म प्राप्तीना नित्यरूपने आपनार शमादिक ने अहिंसात्मक धर्म छे ते सूक्ष्म छे; माटे उत्तम छे. ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ते अहिंसात्मक धर्भ सूक्ष्म होवाथी जाणवो अशक्य छे, कारण के तेने मर्दन करनारा अने सकामिक मतने पुष्ठ करनारा केटलांएक वचनो हिंसाने बोध करनारा आवे छे. सप्तदश पाजापत्यान् पशुनालभते सप्तदशप्रजापितः ।। अर्थः-प्रजापित दैवत्य एवा सत्तर पशुओने जे आलभन करे एटले हिंसा करे ते प्रजापति भावने पामे. आवी रीते केटलांक श्रुतिबोधित विधिना वचनो हिंसाने एक श्रेयनुं साधनरूप उपदेश करी अहिंसा शास्त्रनुं उपमदेन करे छे. ( निषध करे छे ).—आ ंठेकाणे रांका करेछे, जो आवा वचनो श्रुतिबोधित होय तो अहिंसा शास्त्र अप्रमाण गणाय. पण ते विधि एकान्त नथी. केम के केवल एक बीजाना आचारो तरफ ज्यारे जोइए छीए त्यारे श्रुति-बोधित अहिंसा धर्म जाणी शकाय छे. जेम के ( उक्षाणं वावेहतं वाक्षदंतं, महोक्षं वा महाजं वा श्रोत्रियायोपकलपयेत् ।। अर्थ-पहेली श्रातिमां कह्यं छे के बलिवर्ध अथवा गायने हिंसा करे ने पछी नी स्मृतीमां कहुं छे के कोइ वेदपाठी, अभिहोत्री घरे आवेल होय त्यारे तेने माटे मोटो बलद अथवा मोटो बकरो मारवो ) आ श्रुति अने स्मृति हिंसानो बोध करे छे. तेवी रीते "मधुपर्क"मां पण गायना आलंभन करवानो एक आचार बतावे छे. पण तेवी रीते बीजी श्रुति पण हिंसारूप आचारथी विरुद्ध अहिंसारूप आचार बतावे छे. जेम के ( मागा मनागां यदिति विधि ॥ अर्थ-निरपराधी अदितिरूप गायनो वध करवे। नहीं. आवी रीते हिंसाथी विरुद्ध बीजी श्रुति पोतानो सिद्धांत के जे वेदनी विधिथी करे छे खरा पण ते यज्ञो श्रद्धादिकपणाथी रहित होवाथी अयज्ञरूप कहेवाय छे तेथी तेना दांभीक अन्तर्यज्ञ अने बहिर्यज्ञने योग्य गणाता नथी, अने नेओने पुण श्रद्धा छे तेओने तो एक गायथी ज ब्रह्मण्चर्ना सिद्धि थाय छे. तेने माटे आ प्रमाणे श्रुति छे. सर्वस्मैवा एतट् यज्ञाय पृद्यन्ते यधुवायामाज्यं ऐंद्रंपयोऽमावास्यायां ऐंद्रं दध्यमावास्यायां आधान मकारेख च द्वादश्च पृद्यितेतेनस्त्रचं पुरिवित्वासप्त्रवत्या पुर्णोद्धितं जुहोति ॥ आ श्रुतिनो पण तात्पर्य एवो छे के गायना द्ध्यी अने दहीं वडे कर्राने पूर्णाहुित करी यज्ञ संपादन करवो. तेमज जे अशक्त छे तेमणे गायना शिंगाडायी अभिषेक, पुच्छ्यी तर्पण अने पगना रजयी स्पर्श करी यज्ञ संपादन करवो. पण हिंसाथी यज्ञ करवो निहं. तेमज ते अध्यायना क्ष्रोंक ४ मां कह्युं छे के—यज्ञना उपयोगी पशुओमां जे प्ररोडास छे ते पवित्र यज्ञने योग्य गणाय छे. तेने माटे त्यां आ प्रमाणे श्रुति छे. त एतउरक्रांन्तमेषा अमेध्याः पश्चः।। तस्मादाहु पुरोडाशसं सत्रंत्रोक्थमिति ॥ अर्थ—यज्ञमां विहित जे जे पशुओ छे, ते अपवित्र अने यज्ञने अयोग्य छे. अने जे प्ररोडाशने हे ते पवित्र अने यज्ञने योग्य छे. माटेज प्ररोडाशनो यज्ञ दर्शनीय अने उत्तम छे. तेमज प्ररोडाशना यज्ञ्यी पशुयज्ञनं प्रयोजन सिद्ध थाय छे. तेने माटे आप्रमाणे श्रुति छे ॥ सर्वेषां वा एष पश्चां मेधेन यजते यः पुरोडाशन यज्ञते ॥ अर्थ—जे पुरुष प्ररोडाशयी यज्ञ करे छे. ते पुरुष अश्व, अजादिक पश्चओथी थनारा यज्ञ ( अश्वमेधादिक ) ने करनारा गणाय छे. आ उपरयी कदापि कोइ शंका करशे के पशुयज्ञ पण वेदमां छे खरो, पण तेना समाधानमां एम समजवानुं छे के पशु यज्ञना विधिने कहेनारी श्रुतिओ तेना निषेधनी श्रुति आगळ गौण थइ जाय छे अने तेओना प्रबल्च प्रमाणोथी आखर हिंसा विधिनी श्रुतिओने निर्वल थावुं पडे छे छेवटे आपणा आर्थर्यमना सर्वकर्मीशिरोमणी अहिंसाधर्मनो विजय थाय छे.

वहीं अहिंसाने माटे प्रतिपादन करनारी एक कठउपनिषद्नी श्रुति आ प्रमाणे छे ॥ प्रवाहोते अदहायज्ञरूपा अष्टादशोक्त मवरं येषु कमे एतच्छ्रेयोये अभिनंदन्ति मूहाजरामृत्युंते पुनरवापी यन्ति ॥ अर्थ ॥ पशु हिंसामय यज्ञरूपी ए वहाणो दृढ नथीं जेमां सोल ऋत्विज् अने बे दंपती मली अहारनुं अवश्य कर्म छे. तेने जे श्रेय मानी वसाणे छे. ते मूढ लोको वारंवार फरीथी जरा मृत्युने पाम्या करेछे आ श्रुतिथी पण अहिंसा सिद्ध थाय छे.

आ गंभीर विषयनी चर्चाने माटे बीजा केटलाएक बलवत्तर प्रमाणो आ ठेकाणे आपवा योग्य छे. पण विस्तारना भयथी अने वखतना संकोचथी आटल्रेथीज आपना त्रीजा प्रश्ननो उत्तर समाप्त करवो पड्यो छे.

४ चोथा प्रश्नना उत्तरमां लखनानुं के कोइ पण राास्त्रमां राजाने अवस्य हिंसा कर्तन्यज छे. अने जो न करे तो अमुक प्रायिश्वत छे. तेनुं प्रमाण जोनामां आवतुं नथी ते छतां कदापि सकामी थइ तेना कर्म करना प्रवर्ते पण तेना सकामीना कर्मने माटे श्रुति, स्मृति अने पुराणोना तात्पर्यार्थ जोतां सकामी कर्मने धिकारेला छे; माटे तेम नहीं करनाथी कोइ पण बळनान् शास्त्रनी आज्ञा तोडी गणाशे नहीं. सकामीना कर्मने माटे भगवद्गीतामां बीजा अध्यायमां श्लोक ४१-४२-४३-४४ मां तेनुं विवेचन करेलुं छे. तेमज श्रीमद्भागवतमां लोक विवाया ए एकादश स्कंधमां पण बताव्यं छे.

५ पांचमा प्रश्नना उत्तरमां छखवानुं के हिंसानी प्रवृति न करवाथी राज्य तथा प्रजामां आपत्तिओ आवे अथवा अकार्य कर्युं कहेवाय तेनुं कोइ बळवान् शास्त्रमां जोवामां आन्युं नथी.

६ छट्टा प्रश्नना उत्तरमां लखनानुं के—कदापि सकामीपणाथी के रूढीना बल्लथी तेनुं हिंसा कर्म करनुं होय तो तेने बदले पिष्ठपशु अथना कूष्मांड (कोलुं)नो बल्लि निगेरे कर्याथी तेनी क्रियानो भंग थतो नथी अने ते किया संपूर्ण गणाय छे तेने माटे निर्णयसिंधुमां" आ प्रमाणे स्लोक छे.

> कूष्मांड मिक्षुदंडं च मांस सारस मेव च ॥ एते बलिसमाः प्रोक्ता स्ट्रितो छाग समाः सदा ॥ १ ॥

अर्थ-कूप्मांड (कोछुं) रोरडी, सारसपक्षीनुं मांस ए पशुबलिना जेवा गणाय छे अने तेथी बकराना जेवी देवताने तृप्ति थाय छे. रुद्रयामल नामना ग्रंथमां पण कह्युं छे के—

## छागाभावेतु कूष्मांडं श्रीफलं वा मनोहरम् ॥ वस्त्रसंवेष्टितंकृत्वा छेदयेत् च्छुरिकादिना ॥ २ ॥

अर्थ-जो पशुनो अभाव होय तो कूप्मांड अथवा सुंदर एवा श्रीफलने वस्त्रथी वींटीने छरी विगेरे रास्त्रथी छेदन करवुं. ॥ २ ॥ आवो विधि पण ते ग्रंथोमां लखेलो छे.—धर्मिसन्धुमां पशुवध करवाने माटे कह्युं छे. पण जो राजा सकाम होय तो करे पण बीजाने करवानी जरुर नथी, एवं सूचवे छे अने ते उपरथी एम सिद्धान्त थाय छे के सर्व कर्मी पशुवध विना प्ररोडाशादिकथी संपादन करवा अने तेम करवामां आपणा सर्वप्रमाण शिरोमणिरूप श्रुति ग्रन्थोनो उत्तम तात्पर्य पराकाष्टाने पहोंचे छे.

७ सातमा प्रश्नना उत्तरमां लखवानुं के पशुना कान के नाक कापीने छुटो मुकतां ते किया पूर्ण थइ कहेवाय तेवुं कोइ आर्यप्रंथमां जोवामां आव्युं नथी.

आवी रीते आपना सात प्रश्ननो खुलाशो अमारा तरफथी आपनी तरफ मोकल्यो छे. तेनी साथे एकंद्रर अमारो अभिप्राय एवो छे के आर्यशास्त्रना कोइ पण ग्रंथमां केवल निन्दितकर्म करवानो विधि लखेलोज नथी. कदापि लखेलो होय तो ते तांत्रमत प्रमाणे पूर्वापर विरोध करनारा तेनां वचनो परस्पर गौणता करवामां तत्पर थाय छे. पण छेवटे आपणा आर्यधर्मनो अहिं-सात्मक सिद्धान्त बलवत्तर थाय छे अने ते प्रवृत्ति मार्गनो शुद्ध उपदेश करी निवृत्तिमार्गमां दोरी जवाने प्रयत्न करे छे. एज आपणो सनातन मार्ग सर्वमां प्रमाणभूत छे. सर्वने मान्य छे अने अति आद्रवा योग्य छे. हुं आशा राखुं छुं के आवा हिंसात्मक मार्गनी किया दूर करी आर्योना उत्तम मार्गनुं अवलंबन करीने आपणा द्यालु महाराजा आवा उत्तम सन्मार्गनुं ग्रहण करशे एज. तथास्तु।।

शास्त्री भानुशंकर हरिशंकर सही. भावनगर दरवारी पाठशाळाना मुख्यगुरु.

## नं. १३

#### ॐपरमात्मने नमः

## श्रीयुत, स्वधर्मनिष्ठ, राज्यमान्य राजेश्री प्राणजीवनदास जगजीवनदास महेताः

चीफ मेडिकल ओफीसर.

स्वस्थान धर्मपुर.

विशेष लखवानुं के गइ ता. ११-९-९४ ने रोज आपना तरफथी मुद्रांकित करेली सात प्रश्ननी पत्रिका अमारी तरफ आवी छे. तेमां लखेली बिना अमारा जाणवामां आवी छे. आ संबन्धमां आपना महाराजा श्रीमोहनदेवजीना पवित्र अने स्तुत्य विचारने अमे धन्यवाद आपीए छीए. केटलाएक धर्मना नामथी चालता अपवित्र रीवाजो के जे आपणा प्राचीन आर्यधर्मने कलंकित करे छे. तेना संबन्धमां आपना धर्मिष्ट महाराजाए एक स्तुत्य पगलुं भर्यु छे एम निःशंक कही शकाय छे. जेवी रीते महाराजाना पवित्र विचार तेमनी धार्मिक मनोवृत्तिमां उत्पन्न थयेला छे. तेनी साथे आपना जेवा दयावान् धार्मिक पुरुषे तेमना विचारने पुष्टी करी टेको आप्यो छे ते एक आपनी पवित्र फरज पूर्ण अंशे सफल थइ एम मानीए छीए.

आपना जे सात प्रश्नो आवेला छे; तेओना खुलासा अनुऋमे जे जे आर्य प्रंथो जोवामां आव्या छे. तेमांथी वांची तपासीने अमे नीचे प्रमाणे ऋमवार आपीए छीए; ते आप ध्यानमां लेशो.

१ आपना पहेला प्रश्नना जवाबमां लखवानुं के, देवीना बलीदानने माटे पशुहिंसा करवामां आवे छे, ते बाबत भविष्यपुराण, निर्णयामृत, हेमाद्रि, विगेरेमां केटलाएक तांत्रमत प्रन्थोना प्रमाणो, आपेला छे अने ते बलिदानना अंगमां गणेला छे. ए बलिदानना दरेक उपचारना मंत्रो " विष्णु धर्मोत्तर" नामना प्रन्थमां आवेला छे. तेओने कालिकापुराण, तथा देवीभागवत, तांत्र पक्षथी पुष्टि आपे छे. पण ते एकपक्षी होवाथी सार्वजनिक प्रमाणमां गणाय नहीं.

२ बीजा प्रश्नना जबाबमां लखवानुं के जे ग्रंथोमां पशुनुं बलिदान करवाने लखुं छे. ते ग्रन्थ तांत्र पक्षनी पुष्टि करे छे अने तेना ते ग्रंथो पाछा बीजा पक्षथी तेनो निषेध करवाने पोताना प्रमाणो आपे छे. अथवा तेना बदलामां बीजो विधि बतावी ते पक्ष निर्मूल करे छे. आथी जो के ते ग्रंथो आर्य लोकोमां मान्यतो गणाय. पण हिंसाने माटे तामसी कियानुं नाम आपी तेने तिरस्कार करी वर्त्तनारा मोटा बळवत्तर ग्रंथो आगल तेओनी गौणता थइ राके खरी अने तेथी ज तेओने बहुमान्य गणवामां सारा विद्वानोने आंचको खावो पडे छे.

३ त्रीजा प्रश्नना जवाबमां लखचानुं के—ते शास्त्र करतां हिंसाने निषेध करनारा बीजा बलवान् शास्त्रना प्रन्थो घणा छे. तेमां एवीरीते हिंसानो निषेध कर्यो छे के जेथी फरीने हिंसात्मक क्रिया उज्जीवन थइ शकेज नहीं. ते प्रन्थो मांहेला जो अत्यारे प्रमाणो आपवा बेसीए तो एक मोटो प्रन्थ भराय तथापि केटलोएक संक्षिप्त सार नीचे प्रमाणे आपुं छुं.

हिंसानो निषेध करनारा यन्थोमां वेदना उपनिषदों, भगवद्गीता, श्री महाभारतनो मोक्षधर्म इत्यादि घणा ग्रन्थो मुख्य मुख्य गणाय छे.—तेमां उपनिषद् अने भगवद्गीता निवृत्तिमार्गनो आश्रय लङ्ने सकामी पुरुषोनी कर्म निमित्त हिंसानो निषेध करे छे-मोक्षधर्ममां अध्याय २६२ मां श्लोक २८, २९, ३१, ३२।३३।३५।३६---आटला श्लोकोमां तुलाधार अने जाजलिना संवादमां श्रुतिना प्रमाण माथे हिंसा कर्मनो निषेध घणी सारी युक्तिथी कहेलो छै. प्रथम अभयदाननुं महात्म्य वर्णवी हिंसा बोध करनारी श्रुतिओने तोडवाने माटे बीजी श्रुतिओ आपीने आपणा सर्व मान्य अहिंसा धर्मने प्रतिपादन करेलो है. मोक्षधर्मना अध्याय ६३ ना श्लोक ६ मां हिंसा करनारा अज्ञानी कर्म-ठीओनी निंदा करी छे. अने ते पछी श्लोक ८ आठमामां-यज्ञनुं प्रवित्र हव्य नमस्कारात्मक, स्वाध्या-यात्मक अने औषधात्मक, एवा त्रण भेदथी बतावी ते हव्यथी यज्ञ करवो पण पशुरूप हब्यथी नहीं एम साबित करेलुं छे. ते पछी श्लोक ३८ मामां श्रद्धार्थी थतो यज्ञ ते यज्ञ कहेवाय नहीं पण अयज्ञ छे, एम बतावी एक गायथीज बधी किया पूर्णताने पामे छे-तेवुं श्रुतिनुं प्रमाण आपीने ग्रन्थ-कर्ता हिंसाना यज्ञनो निषेध बतावें छे. त्यारविज्ञाना श्लोक ४० मां यज्ञना करतां पुरोडाश पवित्र छे, एम श्रतिथी सिद्ध करी पाताना अहिंसात्मक सिद्धान्तने यन्थकर्ता प्रगट करे छे. आवा हिंसाने निषेध करनारा सेंकडो यन्थो आर्य तनुजोने एवा निंदित कर्मथी वारवाने पाताना प्रमाणीयी पाकार कर्या करे छे तथापि दांभिक कर्मठीओ समजता नथी. कटापि कोइ दांका कररो के श्रुतिओमां हिंसा पण छे खरी अने निषेध पण छे. त्यारे कई वात मानवी? त्यारे तेना समाधानमां जणाववानं के जे जे वाक्यो हिंसानो निषेध करवामां घणां बळवान छे, तेओनो पक्ष ग्रहण करवो, कारण के कदापि सकामी लोकोने माटे तांत्र मतथी तेवां वाक्य होय तेथी झुं ते मुख्य गणाय ? अथवा स्वीकारवा योग्य गणाय ? अर्थात नहीं गणाय. माटे सर्वने अहिंसात्मक प्रंथोना प्रमाण एक देशी छे तेम अवस्थ मानवुं जोइए. महात्मा वेदव्यास जे आर्य पुराणोना कर्ता अने परमात्माना अंशावतारी कहेवाय छे, तेओए पोताना रचेला सेकडो ग्रन्थोमां हिंसानो निषेध कर्यो छे. आ विषय उपर जो विशेष चर्चा करवा धारीए तो एक मोटो यन्थ थाय पण आ वखते विस्तारना भयथी अने वखतना संकोचथी आ त्रीजा प्रश्नना उत्तरमां आटछेथीज विराम पामीए छीए.

४ प्रश्नना उत्तरमां लखवानुं के राजाओने ते कर्म अवश्य कर्तव्य छे अने ते न करवामां आवे तो बलवान् शास्त्रनी आज्ञा तोडी गणाय एवुं कोइ पण आर्य प्रन्थमां निकलतुं नथी. आवा हिंसात्मक कर्म करवाने कोइपण आर्यना पूज्य प्रन्थ फरज पाडे नहीं अने ने निर्णसिन्धुमां तांत्र मतथी जोवामां आवे छे ते कर्तव्य तरीके नथी, पण एक जातनी सकामी किया छे एम बतावे छे. कारण के धर्मिसिन्धुमां बलिदानना प्रकारमां तेवी किया करनारने सकाम एवं विशेषण आपीने करवाने कह्युं छे. जे सकामीनी किया छे ते आपणा श्रुति अने प्रराणोथी निंदित थएली छे.

५ पांचमा प्रश्नना उत्तरमां लखवानुं के हिंसानी प्रवृत्ति न करवामां आवे तो तेथी राज्यने के प्रजाने कांइ पण आपत्ति आवे तेवुं कोइ आर्य ग्रन्थोमां जोवामां नथी आवतुं पण उल्रटुं एम जोवामां आवे छे के जेना देशमां हिंसा थाय ते देश दुर्भिक्ष विगेरेनी पीडार्थी पीडाय छे जेनुं आ प्रमाण छे.

## यस्मिन्देशे भवेद्धिसा, या पशूनामनागसाम् ॥ स दुर्भिक्षादिभिर्नित्यं, नश्येचोपद्रवैस्तथा ॥ १ ॥

अर्थ-ने देशमां निरपराधी प्राणीओनी हिंसा थाय ते देश दुर्भिक्ष (दुकाल) विगेरे उपद्रवोधी नाश थइ जाय छे. आवा केटलाएक प्रमाणो एथी विपरीत रीते मले छे. पण जो हिंसा न करवामां आवे तो देशमां विपत्ति थाय तेवा प्रमाणो मळता नथी.

६ छट्टा प्रश्नना उत्तरमां लखवानुं के-कदापि जो ते हिंसाने बदले बीजी क्रिया करवी होय तो ते कालिकापुराणमां आ प्रमाणे लखेल छे.

## कूष्मांडिमक्षुदंडं च मांसं सारस मेव च ॥ एते बलिसमाः प्रोक्ता स्तृप्तौ छागसमाः सदा ॥ १ ॥

अर्थ-जो पशुनी हिंसा न करवी होय तो तेने बदले कुष्मांड (कोलां) रोलडी, अने सारस पक्षीनुं मांस, एटला पदार्थो बलिदान समान छे. अने तेथी देवताने बकराना बलिदान जेवी तृप्ति थाय छे. ॥ १ ॥ ए प्रमाणे " रुद्रयाम्ल " नामना ग्रन्थमां पण कह्युं छे के

## छागाभावे तु कूष्मांडं, श्रीफलं वा मनोहरम् ॥ वस्त्रसंवेष्टितं कृत्वा छेदयेच्छुरिकादिना ॥ २ ॥

अर्थ—जो पशुनो अभाव होय तो तेने बदले कुप्मांड (कोल्ल) अथवा सुंदर श्रीफल लेवुं तेने वस्त्रधी वींटालीने छरी विगेरेथी छेदन करवुं ॥ २ ॥ आ बे श्लोकमां तांत्रमत प्रमाणे तेना बदलामा विधि करवाने छे. ते शिवाय कोइ प्रन्थमां पिष्टपशु करवाने माटे पण कहेलुं नथी. एथी एम पण सिद्ध थाय छे के कदापि कोइ मतथी के कालना योगथी आर्योना पवित्र वेदादि प्रन्थोमां हिंसानो प्रचार दाखल थयेलो छे, पण पाछलथी केटलाएक कुशाप्रमतिवाला पंडितोने निंदित कर्म उपर तिरस्कार उत्पन्न थएलो अने तेथी तेओए आवा विधिने बदले बीजा विधि करवानो उपदेश करेलो जणाय छे.

७ सातमा प्रश्नना उत्तरमां छखवानुं के पशु वध करवाने बद्छे. तेना नाक कान कापवानो विधि कोइ पण ठेकाणे जोवामां आवतो नथी अने तेथी ते किया पूर्ण थइ गणाय तेनुं पण मारा वांचवामां आव्युं नथी.

#### विशेष विवेचन-

आपना सात प्रश्नोनो उत्तर अमारा जाणवा प्रमाणे आवी रीते आपेछो छे. ते उपरथी अमारो तात्पर्यार्थ एवो छे के कोइ पण कियामां हिंसात्मक कर्म करवुं नहीं—आपणा आर्य वेदो अने आर्य प्रराणो. तेने माटे पोतानां सबल प्रमाणोथी पोकार करीने कहे छे. अने आ भारती प्रजाने क्षणे क्षणे अने पदे, पदे एवो उपदेश आपेछो छे के हे आर्य पुत्रो! तमो आर्यना पवित्र मार्गे चालजो अने जैम तमारी आर्यता उज्वल रीते शोभे तेम आर्यपणाना उत्तम लक्षणो धारण करजो जे लक्षणो आपणा महात्मा मन्न पोतानी स्मृतिमां आप्रमाणे आपेछे.

## अहिंसा सत्यमस्तेयं, शौचिमिन्द्रियनिग्रहः ॥ दानं दमो दया शान्तिः, सर्वेषां धर्म साधनम् ॥

अर्थ-अहिंसा, सत्य, चोरी न करवी ते, प्रवित्रता, इंद्रिओने कबजे राखवी अने क्षमा ए सर्वे धर्मनां साधन छे. आचाराध्याय ।। श्लोक १२२ ॥

आ प्रमाणे सर्व स्मृतिकारोनो पण अहिंसाने माटे एक सिद्धान्त जोवामां आवे छे. जो के पशु हिंसानो यज्ञ एक पक्ष्यी विहित हरो, पण तेने माटे कठोपनिषद्नी श्रुतिमां आ प्रमाणे छे. प्रवाहोते अहढा अज्ञरुपा अष्टादशोद्यमवरं येषु कमें एतच्छ्रेयो येऽभिनंदंति मूढानरा मृत्युन्ते पुनरे वापियन्ति ॥ अर्थ:-पशु हिंसामय यज्ञरुपि ए वहाण मजबुत नथी जेमां सोळ ऋत्विज अने बे दर्भपति मळी अढारनुं अवस्य कर्म छे. ए कमेने जेओ श्रेयमानी वखाणे छे, ते मूढ लोको वारंवार जरामृत्युने पाम्या करे छे.

आवी रीते आ उपनिषद्नी श्रुति पण आपणा अहिंसात्मक धर्मनेज प्रतिपादन करे छे. आ विषयमां नेटलुं बोलीए तेटलुं थोडुं छे.पण हवे आपणे प्रस्तुत उपर विचार करीए. आपणा महाराजा जे प्रतिवर्ष द्शराने दिवसे पशुनुं बलिदान आपता हशे पण ते कोइ विधियी अपातुं नहीं होय कदापि आपणे तांत्रमत प्रमाणे पशुनु बिल्दान करवानो विधि स्वीकारीए पण ते हालमां कोई ठेकाणे विधियी अपातो नथी. ते तो फक्त नीच लोको मुवाना ढोंग उपरथी पशुने जेम जेम मारी नांखे छे, पण तेमां कोई जातनी मांत्रिक किया करवामां आवती नथी. माटे अविधियी हणेलो पशु यजमानने केवं नठारुं फळ आपे छे तेने माटे आचाराध्यायमां महात्मा मनु लखे छे के—

# वसेत् सनरकेघोरे दिनानि पशुरोमिः । संमितानि दुराचारोयो हन्त्य विधिना पशून् ॥

अर्थ:—जे दुराचारी—विधि विना केवल नकामो पशु मारे छे ते पशुना जेटला दिवसो सुधि घोर नरकमां पडे छे. तेम ज बीजुं पण प्रमाण छे के—

## यावन्ति पशुरोमाणि तावत् कृत्वोह मारणम् । वृथा पशुद्राः प्राप्नोति प्रेत्य जन्मनि जन्मनि ॥

आ स्पृतिनो अर्थ उपर प्रमाणे ज छे. माटे कदापि पशु वधनो विधि स्वीकार करतां पण ते काम विधि पूर्वक न थवाथी यजमानने मोटुं प्रायश्चित प्राप्त थाय छे. ते पक्षे जोतां पण बिजया दशमी उपर पशु बध करवानी जरूर नथी. आवी रीते बंने पक्षे पण हिंसानो पराभव थाय छे अने आपणा अहिं-सात्मक धर्मनो विजय थाय छे.

हुं आशा राखुं हुं के उपरना सिद्धान्तने अनुसरी धर्मपुरना धर्मिष्ट महाराजा आ अधर्मनी प्रवृ-ित्तनो अटकाव करशे अने पोताना प्रतापी सूर्यवंशनो आद्य धर्म जे अहिंसा तेने स्वीकार करशे. अने तथी आवा घोर अने भयंकर घामांथी बचेला पामर पशुओनां अन्तःकरणनी आशिषोनी वृष्टिओ महाराजानी उपर वर्ष्या करशे. ॥ तथास्तु ॥

ली. शास्त्री नर्मदाशंकर दामोदर अध्यापक मु. भावनगरः

# नं. १४

#### शास्त्री विश्वनाथ नारायणजीनो अभिप्राय.

## श्रीधर्मपुर राज्यना चीफ मेडीकळ ओफीसर साहेब. मु. धरमपुर.

मावनगरथी छी. जोशी. विश्वनाथ नारायणजीना आशीर्वाद फुरसद वखते मान्य करशो बाद लखवानुं के आपना महाराजा श्री मोहनदेवजी तरफथी जे वर्तमान पत्रमां हिंसा बाबत सात प्रश्नो पूछ्यामां आव्या छे; तेना उत्तरो हुं मारी यथा मतिथी लखुं छुं ते आप स्वीकारशो.

चालु समयमा बलेव, दशरा विगेरे तहेवारो उपर बलीदाननुं कही जीवनो भोग आपवामां आवे छे ते बाबत शोधन करतां प्राचीन वखतमां चालता आवेला एक रिवाज अनुसार थतुं देखाय छे, अने ते रिवाज केटलीएक लोक रुढीने अनुसरीने अथवा देवीमतने अनुसरीने दाख्छ थएलो छे एम लागे छे. पण ते आर्योए मंजुर राखेल शास्त्र अनुसार नथी. देवीमतना शास्त्रो शिवाय बलेव उपर जीवहिंसानो भोग आपवो एवं कोइ शास्त्रमां छे नहीं एटछुंज नहीं पण केटलेक ठेकाणे तो राजा रजवाडामां पण ए रीवाज जणातो नथी पण दरारा वेगेरे तहेवारना दिवसोमां जे भोग आपवामां आवे छे ते भोग देवीमतने अनुसरी ने आपवानो रीवाज पडेलो जणाय हे. देवीमतमां पण आ तेहेवार उपर भोग आपवेाज जोइए एवं खास करीने नथी; पण पूजानी साथे देवीमतने अनुसरतो होय तो ते शास्त्रमां बतावेछ क्रम प्रमाणेनी विधिए करवामां आवे तो मात्र एक ए देवीमतने एकदेशी मान्य छे अने जोइए छीए तो एक देशी प्रमाणे पण विधि अनुसार कशुं थतुं नथी. देवीमतना शास्त्रोमां देवी भागवत अने देवीरहस्य नामना जे पुस्तको छे ते सर्वदेशी नथी, एटछुंज नहीं पण ते शास्त्र प्रमाणे ते देशी मतवाळाए दीक्षा लईने ए काम कीधुं होय अने ते पण पूजन विगे रे कियाथी कीधुं होय तोज ते देशी प्रमाणे यथायोग्य गणाय. चालु काळमां ए देशीनुं प्रमाण निर्बळ मनायलुं छे अने जोइए छीए तो ते पण अनादिंथी निर्बल छे—एके कीधुं ते प्रमाणे बीजाए पछवाडे पगलुं भरेलुं छे पण ए वगराकियाए गाडरीया प्रवाह (बकराना टोला)नी माफक भोग आप-वानो जणाय छे. वली केटलाक शास्त्रथी एम पण जणाएलुं छे के असलना वस्त्रतमां लडाइ एकाएक उठती ते वखते लडाइमां नवा सारु मूहुर्त विगेरे जोवुं ते एकाएक उठती लडाइने लीघे जोइ नहीं सकातुं होवाथी दरारानो तेहवार जोके मुद्दूर्त तरीकेना प्रस्थाना मूकवा जेवो छे, एटले ते शुभ दिवस मूहुर्त छेवानी छे. नीचेना शास्त्रमां पण जीव हिंसाना बलीदाननुं कर्शु कहेल नथी. पण प्रस्थाना तरीके सीमांडे खीजडीपूजन करवा जवुं एवो नियम छे. जुओ रुद्रयामल, धर्मिसन्धु, निर्णयसिन्धु, महाभारत, आ शास्त्रमां उपर प्रमाणे कहेलुं छे. पण तेना वणा श्लोको होवाथी वखत दुंको होवाने छींघे अत्रे दाखल करी शक्यो नथी. सर्वे देशी शास्त्रो ए के ज़े सर्व देशीओमां मंजुर रहेल छे. ते शास्त्रोधी जीव हिंसा न करवी एम ठरावेलुं छे. वलीदेवीमत प्रमाणे पण कियावगरनुं काम हिंसारूप ठरावेलुं छे.

सर्व देशीओए मंजुर राखेळ शास्त्रो नेवाके धर्म शास्त्र (पाराशरी के जेनुं वचन कलियुगमां प्राधान्य छे ) जेमां हिंसा करवा माटे नीचे प्रमाणे दर्शावेळ छे.

> कलौ पाराशरी स्मृतिः (बृहत् पाराशरी)। यस्तु प्राणिवधं कृत्वा देवान्पितॄंश्च तर्पयेत्॥ सो विद्यांश्चंदनंदग्ध्वा कुर्या दंगारलेपनम्॥ १॥

वेद ब्राह्मण नामना शास्त्रमां जीव हिंसा नहीं करवा माटे नीचे प्रमाणे कहे छे तैतर ।। उत्क्रांन्त मेथा अमेथा पश्चव स्तस्मादेतेषां नाश्चियातमस्या मनवगछन् सोनुगतो ब्रीहि रञ्जवधप्तशौ पुरोडाश मनु निवपन्ति समेथने पशुने क्षमत देवे ।। पशुने अपवित्र गणी यज्ञकार्ये पशु मारवा हिंसा न करवी. मनुस्मृतिमां पण नीचे प्रमाणे जीव हिंसा करवानो निषेध छे. ॥ श्लोकः ।।

नाकृत्वा प्राणिनां हिसां, मांसमुत्पद्यते कचित् न च प्राणिवधरस्वर्ग्य स्तरमाद्धिसां विवर्जयेत् ॥

आ शिवाय बीजा धर्म शास्त्रोना पुस्तकोमां पण ॥ अहिंसा प्रमोधर्मः ॥ हिंसा न करवी एज मोटो धर्म छे—एम ठेकाणे ठेकाणे कहेळुं छे. बली महाभारत जेवा शास्त्रने धर्मशास्त्रनी पंक्तिमां गणेळुं छे अने तेथी ते शास्त्रने पांचमो वेद कहे छे. जेथी ते बहु बलवान् शास्त्रो छे. तेमां पण जुवो हिंसा नहिं करवानुं नीचे प्रमाणे छे

> अहिंसा लक्षणो धर्मो हिंसा चाधर्म लक्षणम् श्विव वचने-अनुदानं निषिद्धस्य त्यागो विहितकर्मणां॥ प्राणातिपातनं स्तैन्यं परदारमथापि च ।

त्रीणि पापानि कायेन सर्वतः परिवर्जयेत् ॥

स्मृत्युक्तं ।। पापस्य पुरुषे क्लृपोनु वर्तिव्यं "यथा" नाधमश्चिरितो राजन् सद्यः फलिति गौरिव, शने रावर्त्तमानस्तु कुळान्यपि निकृंतिति पापेनात्मानि मित्रेषु नचेत् पुत्रेषु भृत्येषु पापमा चरीत कर्मावर्ग मनुवर्तते कलेत्ययं घाषंमुक्तं भूत्गमी वायरो ॥ आवी रीते हिंसा न करवानं भारतमां ठेकाणे ठेकाणे कहेलुं छे. वल्ली भागवतमां कहेलुं छे के ॥ येत्वनवंबिदोऽसंतस्तव्धाः सद्धिमानिनः पश्चन् दुद्धांति विस्तव्धाः प्रत्य खादन्ति ते च तान् ॥ १ ॥ वळी कह्युं छे के "दिशंते परकायेषु स्वात्मानं इतमीश्वरं" ॥ दरेक कार्यमां आत्मरूप भगवान एक छे—एम जाणी हिंसा न करवी एवं पण वाक्य सुप्रसिद्ध छे. ए रीतेना शास्त्रो बगेरेनो विचार करतां ने रुढीए जीव हिंसा

करवामां आवे छे ते शास्त्रप्रमाण नथी. तेमज ज्ञान दृष्टीए जोतां अने तत्वज्ञाननी फिलसुफीना शास्त्रो जोतां जणाय छे के सर्व प्राणीओ साथे आत्मवध एटले जीवहिंसा निषेध छे. एवी घातकी रूढी ज्ञानना प्रसार आगळ दूर थवी हरकोइ मनुष्य प्राणी उत्तम मानशे. आ सर्वे उपरथी पूछेला प्रश्नोना टुंकामां उत्तर ए छे के:—

१—देवी मतना रुद्रयामळना उत्तर खंडमां देवीचरीत्रना विधानमां ल्र्युं छे के सर्वे ऋतुना नवरात्रीना अंगे क्रिया प्रमाणे पूजा करी बलीदान आपवुं पण उपर कह्या प्रमाणे दशराके बलेवना दिवसोनुं छे ज नहीं.

२-ए सर्वे देवी मतना ग्रन्थो आर्य लोकोमां सर्व मान्य गणाता नथी. मात्र देवीमतमान्य छे, ते प्रमाणे पूजनथी अथवा पूजन शिवाय जे हिंसा करवी ते हिंसा रूपज गणाय.

३—कारणके ते शास्त्र करतां उपर देखांडेल धर्म शास्त्रों। वधारे बलवान् छे. वली धर्मशास्त्रमां कहेलुं छे ते नीचे श्लोक छे.

## अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचिमंद्रियनिग्रहः। दानं दया दमः क्षान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम्॥

अहिंसा (प्राणीने न हणवां ते), सत्य, अस्तेय (चोरी न करवी), शौच, इंद्रियनिग्रह, दान, तथा क्षांति ए तमाम सर्व धर्मनां साधन छे. तो आ श्लोक उपरथी हिंसा न करवी तेम सिद्ध थाय छे.

४ राजाओने जीव हिंसानुं कर्तव्य अवस्य छेज एवुं कोइ पण शास्त्रमां प्रमाण नथी तेम न करवाने छीघे कोइ शास्त्रनी आज्ञा तोडी गणाय नहीं.

4—उपर प्रमाणे कोइ बलवान् शास्त्रनी आज्ञा जीव हिंसाने माटे नथी अने निषेध करेल छे. तो ते न करवाने अंगे कोइ प्रकारनो आपत्तीयोग होयज नहीं, पण जीव हिंसा न करवाथी पुण्य मनाएलुं छे जेथी पुण्यने लीधे आपत्तीयोग बीजा कोइ सबबने लीधे होय तो ते दूरज थाय.

६—कोइ बलवान् शास्त्रनी आज्ञा जीव हिंसा नहीं करवाथी तोडेली गणाती नथी, पण दशराने दिवसे जे किया करवानी छे ते पण हिंसा रहितनी छे, अने ते उपर देखाडेल देवीमतना रुद्रयाम-लना उत्तरखंडे देवी चरित्रमां बताव्युं छे.

७—जवाबमां एटलुंज लखवानुं के ते दिवसनी विधीमां भोग आपवानो नथी त्यारे ते माटे वधारे लखवानुं नथी.

अमारी पासे हिंसा न करवी एवां घणां वचनो छे, तेमां आपने केटछाक उपर छखी जणाव्या छे. तथापि कोइ प्रसंगे वैदिक तथा देव पूजनादिक कियाओमां बछीदान अर्थेज जे हिंसा करवामां आवे छे तेवा बहु वचनो बताववा करतां उभय मतथी संशय दूर करवे। ए वधारे उचित छे. एम धारी टुंकामां सशास्त्र प्रमाणे मतनो खोटो वहेम दूर करवे। उपर जणावेला कर्मग्रन्थोमां बलेव, दशरा वगेरे तेहेंवार दीवसे राजाओए केवी कियाओ करवी तेनी वीगत नीचे प्रमाणे छे.

ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्योए बलेवने दिवसे विश्तु तथा सप्तऋषीनुं पूजन विगेरे क्रियाओ करी, नूतन उपवीत धारण करी दान पूजन करवुं ए ए दिवसनुं कर्म छे.

हालना समयमां ब्राह्मण शिवाय क्षत्रिय के वैश्य जनोइ धारण करता नथी, पण कोइ देशमां तेओ पण उपवीत धारण करेछे. तो जे धारण करे तेणे बतावेल क्रियाओ करवी, पण राजाओए ते दिवसे अमुक हिंसा करवी एवं कोइ प्रन्थमां नथी, छतां राज्यमां उपर जणावेला दिवसोमां पशुवध करवामां आवे छे ते उभय शास्त्रोंना वचनथी विरुद्ध छे. माटे आविषे वधु विवेचन करवा जरुर नथी, पण दशराने दिवसे अमुक विधि करवो तेम उपर जणावेळा कर्म प्रन्थोमां छे.

अलंकृती भूषितभृत्यवर्गः वाजित्रनादप्रतिनादिताशः ॥ सुमंगलाचारपरंपराशीः, निर्गत्य राजा भवनात् स्वकीयात् ॥ १ ॥

राजा निर्गत्य भवनात, पुरोहितपुरोगमः प्रस्थानक विधिकृत्वा, प्रतस्थे पूर्वतो दिशि ॥ गत्वा नगरसीमान्तं, वास्तुपूजां समाचरेत । संपूज्य चाथ दिक्-पालान, पूजयेच्चान्यदेवताः ॥ मंत्रैवैदिकपुराणैः, पूजयेच्चशमितरं । पूज्यान दिजांश्च संपूज्य संवत्सरपुरोहितौ ॥ गजवाजिपदातीनां, प्रेक्षाकौतुक माचरेत् । जयमंगलशब्देन, ततः स्वभवनं विशेत् । यएवं कुरुते राजा वर्षे वर्षे सुमंगलं ॥ आयुरारोग्यमैश्चर्यं विजयं च दिने ॥ नाधयो व्याधयस्तस्य भवन्ति न पराजयः । श्रियं पुण्यमवाप्नोति विजयं च सदा भुवि ॥

• आ प्रमाणे राजाओए विजया दशमीने दिवसे आटलीज कियाओ करवी एम वेदना गोपथ ब्राह्मण नामना प्रन्थमां कह्युं छे एटलुंज निहं पण महाभारत, वाल्मीक रामायण, निर्णयिसिंधु, धर्मसिंधु, देवी रहस्य तथा देवपूजन पद्धित विगेरे तांत्रिक प्रन्थोमां उपर जणावेल विधि छे पण आ विजया दशमीने दिवसे पशु मारवुं एवं उभय मतना प्रन्थोमां सप्रमाण नथी. माटे आ दिवसे हिंसानुं कर्म करवुं ए उभय प्रकारे धर्म विरुद्ध करवुं एम गणाय.

कोइ माणस संपूर्ण शास्त्रीय मार्गने नहीं जाणता छतां अज्ञानताथी एवी शंका करे के राजाओए देवी तथा भैरव क्षेत्रपाछादि ग्रामदेवताओंने पशु आदिकना रुधिरमांसत्तुं बलीदान आपवुं के नेथी ते देवताओ प्रसन्न थई राजाओ वगेरेने विघ्न नाश करे आवी शंका जे छे ते अशास्त्रीय छे अने उभय मत्त्रषी निरुद्ध छै; कारण के मंत्रादिक कियाओ रहित ते दिवसे हिंसाओ थाय छे परन्तु आ शंकानुं निवारण करवाने सर्व मान्य धर्मशास्त्रनी स्पृतिमां जे वचन छैं ते नीचे मुजब छे. ॥ श्लोक ॥

> कलौ दशसहस्राणि हरिस्त्यक्ष्यति मेदिनीम् । तदर्भ जानूषीतोयं तदर्भ ग्रामदेवताः ॥ १ ॥

किन्नुगना दश हजार वर्ष जशे एटले हिर पृथ्वीने त्याग करशे अने कलिनुगनां ५००० वर्ष पुरां थशे एटले गंगाजी स्वर्गे जशे. अने ग्रामदेवताओं तो क्यारनाय स्वर्गमां गया. माटे ते देवोने वास्ते कियासहित कर्म करवामां आवे तो पण निरर्थक समजवां.

जोशी विश्वनाथ नारणजी ता. २९-९-९-भावनमर.

# नं. १५

### र्लीबडीवाला शास्त्री नागेश्वर नथुराम भटनो अभिप्राय.

राः राः गोविंददास केशवलाल, मुः धर्मपुर स्टेट. प्रश्लोत्तरः

आ नवरात्रना उत्सव संबन्धे पशुहिंसा करवानी रीत वणां वरस थयां चालेली छे; पण आपना प्रश्नपत्रना उपोद्घातमां बताववामां आव्युं छे—के"द्शरा विगरेना दिवसे भोग अपाय छे," तो ते कोइ शास्त्रमां नथी. दशरानुं कार्य जूदुं छे. आतो फक्त अष्टमी नवमीनी क्रियाना बलिदान विषे शाक्तसंबंधीनां तांत्रिक ग्रन्थोमां प्रमाण नीकले छे. ते नीचे मुजब.

#### उक्तं च निर्णयसिन्धी

एवं ऋष्टैर्निशां नीत्वा, प्रभाते अरुणोद्ये । घातयेन्महिषान्मेषा नग्रतोनत कन्धरान् ॥ श्वतमर्धशतं वापि, तद्धं वा यथेच्छया । सुरासवघृतैः कुम्भैस्तर्पयेत् परमेश्वरीम् ॥ कापालिकेम्य स्तद्देयं, दासिदासजने तथा । इति ॥

अर्थ-अष्टमी नवमीनी रात्रीए देवीना पूजननो उत्सव कर्या पछी प्रातःकालने विषे अगाडी नम्र थइ छे डोको जेमनी एवा महिष अथवा बकरा, सो, पचास, पचीस, अथवा पोतानी इच्छा प्रमाणे तेनो वध करवो. मद्य तथा घृतनां कुंभे करी देवीने तृप्त करवी अने ते पशुओना मांसने कापालिक तथा दासी दास तेओने वहेंची आपवुं.

> आश्विन पूजियत्वा तु, अर्घरात्रेऽष्टमीषु च । घातयन्ति पशून भक्त्या, ते भवन्ति महाबलाः ॥ कन्या संस्थे खावीशे शुक्काष्टम्यां प्रपूजयेत् । सोपवासो निशार्द्धेतु महाविभवविस्तरैः ॥ पशुघातश्च कर्तव्यो गवयाजवधस्तथा ॥

अर्थ-आशो मासमां कन्यानो सूर्य होय त्यारे शुक्रपक्षनी अष्टमीनी मध्य रात्रिए देवीनी पूजा करी राझ, पाडा, बकरा, तेओनो घात करवो. आम करवाथी ते उपासक बलिष्ट थाय छे.

#### उक्तं च शक्ति तंत्रे-

तत्राश्वमेषछागमहिष स्वमांसानां उत्तरोत्तरं प्राशस्त्यं अर्थ-घोडो, बकरो, पाडो अने उपासकतुं मास ए उत्तरोत्तर श्रेष्ठ गण्युं हे. उक्तं च कालिका पुराणे

> कन्यासंस्थे रवी शुक्र, शुक्काष्टम्यां प्रपूजयेत् । द्रोणपूष्पेश्च बिल्वाम्रजाति पुंनाग चंपकैः ॥ पंचाब्दं लक्षणोपेतं, गन्धपुष्पसमन्वितम् । विधिवत् कालिकालीति, जप्त्वा खड्गेन घातयेत् ॥ उत्तराभिमुखो भूत्वा, बिलं पूर्वमुखं तथा । निरीक्ष्य साधकं पश्चादिमं मंत्र मुदीरयेत् ॥ पशुस्त्वं बलिरूपेण, ममभाग्यादुपस्थितः । प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥ चंडिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् । चामुंडाबलिरूपाय, बले तुभ्यं नमोस्तु ते ॥ यज्ञार्थे बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा । अतस्त्वां घातयाम्यद्य, तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥

अर्थ-हे शुक्त ! कन्याना सूर्य थाय त्यारे शुक्त पक्षनी अष्टमीने दिवसे द्रोणपुष्प, बिल्व, आम्र जातिपुष्प, पुंनागपुष्प, चंपकपुष्प, इत्यादिवडे देवीनुं पूजन करवुं. पञ्ची सम्नला लक्षणोपेत एटले सम्नली इंदिय युक्त-पांच वर्षनो पाडो के जेनी गंध पुष्पवडे पूजा करेली होय एवी लई काली काली-आ शब्दनो उच्चार करी साधक पुरुषे उत्तर दिशानुं मुख करवुं. बलीनुं पूर्व तरफनुं मुख करवुं अने आ मंत्र भणवो के-हे पशु तुं मारा भाग्ये करी प्राप्त थयो है, वास्ते हुं तने प्रणाम करुं हुं. चंडिकानी प्रीतिने अर्थे तथा बल्दिन आपनारनी आफ्ती नाश करनारुं एवं ने बली ते ब्रह्माए यज्ञने माटे सुज्युं हे. वास्ते हुं तारो घात करुं हुं.

#### उक्तं च हेमाद्रि खंडे

आश्वयुक् शुक्कपक्षस्य, अष्टमी मूल संयुता । सा महानवमी नाम, त्रैलोक्येपि सुदुर्ल्लभा ॥ कन्यागते सवितार, शुक्कपक्षेऽष्टमीयुता ॥
मूलनक्षत्र संयुक्ता, सा महानवमी स्मृता ॥
नवम्यां पूजिता देवी, ददात्यिममतं फलम् ।
सा पुण्या सा पवित्रा च, सा धन्या सुखदायिनी ॥
तस्यां सदा पूजनीया, चामुंडा मुंडमालिनी ।
तस्यां ये ह्युपयुज्यंते, प्राणिनो महिषादयः ॥
सर्वे ते स्वर्गतिं यान्ति व्रतां पापं न विद्यते ।
यावत्प्रचालयेद्वात्र, पशुस्तावन्नहन्यते ॥
न तथा बलिदानेन, पुष्पधूपविलेपनैः ।
यथा संतुष्यते मेषैः, महिषैर्विध्यवासिनी ॥
स्नांतैः प्रमुदितै ऋष्टेः, ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्नृपैः ।
वैद्यैः शूद्वैभिक्तियुतैमर्लेच्छे रन्येश्च मानवैः ॥

अर्थ-आशो मासनी शुक्ल पक्षनी अष्टमी मूलनक्षत्र युक्त होय तो ते महानवमी जाणवी अथवा कन्याना सूर्यमां शुक्ल पक्षनी अष्टमी मूल नक्षत्र युक्त होय, तो ते महानवमी जाणवी. ए महानवमीने विषे देवीपूजा करवाथी देवी अभीष्ट फल आपे छे अने एज तिथि पवित्र अने पुण्यकारी तथा सुख दायक जाणवी, एने विषे निरंतर चामुंडी देवीनी पूजा करवी. ए तिथिने दिवसे जे महिषादि पशुनी योजना करे छे तो ते पशु स्वर्ग पामे छे अने हणनारने पाप लागतुं नथी. पशु ज्यां सुधी गात्र हलावे त्यां सुधी हणवुं नहीं. विंध्यवासिनी देवी बकरा पाडार्थी जेवी संतुष्ट थाय छे तेवी बाले, पुष्प चंदन वडे थती नथी. आ पूजनमां ब्राह्मण, क्षत्री, नृप,वैश्य, शूद्र इत्यादि सम्नली वणेनि आधिकार छे. वली—उक्तं च रुद्रयामले ।।

अष्टम्यां च महारात्री, नवम्यां वा विधायते ॥
पूजनोत्तरकाले तु महिषस्य च हिंसनम् ॥ १ ॥
खद्गेन कुर्यान्नृपति देंवीप्रियचिकीर्षया ॥
छागं वा मेढकं वापि हिंसयेत् भक्तितत्परः ॥ २ ॥
पुरुषो वा प्रतिनिधौ, दातव्यो भूतिमिच्छता ॥

अर्थ-अष्टमी अथवा नवमीनी महारात्रीने विषे देवीतुं पूजन कर्या पछी पाडानी हिंसा करवी. भक्ति तत्पर एवा राजाए देवीनी प्रीति उत्पन्न करवा सारु जाते खड़े करी पाडो अथवा बकरो के छेटो मारवो.

उक्तं च भैरव तंत्रे-

अष्टम्या मर्घरात्रेषु, शरत्काले महानिशि ॥ आराधिता चेत् काली च तत्क्षणात् सिद्धिदा भवेत् ॥ १ ॥ सर्वोपचारसंपन्नं वस्त्रालंकरणदिभिः ॥ पुष्पैस्तु कृष्णवर्णैश्च, पूजयेत् कालिकां शुभाम् ॥ २ ॥ वर्षादूर्द्धभुजं मेषं मृगं वाथ यथाविधि ॥ दद्यात् पूर्वं महेशान्ये ततश्च जप माचरेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—रारद कालनी अष्टमीनी अर्घरात्रीने विषे सघळा उपचार वहे तथा कृष्णपुष्प वहे काळिकानी पूजा करवी. तो ते तत्काळ सिद्धी आपनारी थाय छे. त्यार पछी एक वरशानी उपरनो घेटो बकरो अथवा मृग एतुं बळीदान आपी जपनो आरंभ करवो.

आम राक्ति विषयना तांत्रीक ग्रंथोमां हिंसा प्रकार अष्टमी नवमीनी तिथिने विषे बताववामां आवेलो छे. पण दशमीने दिवसे बळीदान तरीके जो अपातं होय तो तेनो निषेध छे.

#### उक्तंच कालदीपिकायां-

नंदायां ज्वलते विह्नः पूर्णायां पशुघातनम् ॥ भद्रायां गोकुळकीडा तत्र राज्यं विनश्यति ॥ १ ॥

अर्थ-फागण शुद १५ छोडी प्रतिपदमां हुताशनी सळगे अथवा अश्विन मासनी नवमी छोडी दशमीमां पशुहिंसा बळीदान थाय. तथा कारतक शुद प्रतिपद छोडी बीजमां गोवर्धन उत्सव थाय तो ते राज्य नाश पामे छे. हवे दशमीनुं कांइ जणाववानेज फक्त छखुं छुं. दशमीने दिवसे राजाए पोताना हाथी घोडा उंट छस्कर इत्यादिकने शणगारी गामर्था ईशान कोण तरफ जबुं अने शमीनी पूजा करवी. पछी पोताने घेर आवी नीराजन विधि करवो. रुद्रयामछतांत्रिक ग्रंथने विषे पूजन करती वखते पोताना शत्रुनी प्रतिकृति करी तेनो बाणवडे वध करवो, पछी राजाए सीमोहंत्रन करबुं एटखुं विशेष छे. पण हिंसा करवानी कही नथी.

#### २ प्रश्ननो उत्तरः

जे तंत्रोमां हिंसा करवानी लखी छे, ते शाक्तमतना ग्रंथो छे अने ते ग्रंथो शाक्त मतवाळानेज मान्य छे, पण सवळा आर्य लोकोने मान्य नथी. तेमज ए ग्रंथ बहु मान्य गणाय एम पण नथी. केम के ए शाक्त मतवाळानो सिद्धांत छे ते हुं दर्शीवुं छुं.

#### उक्तं च काळधर्मरहस्ये-

निर्वृत्ते भैरवीचक्रे, सर्वे वर्णाः पृथक् पृथक् ॥
मद्यं मांसं च मीनं च मुद्रा मैथुन मेवच ॥ १ ॥
एते पंच मकाराश्च मोक्षदा हि युगे युगे ॥
पीत्वापीत्वा पुनः पीत्वा, यावत् पतित भूतले ॥ २ ॥
उत्थितः सन् पुनः पीत्वा पुनर्जन्मो न विद्यते ॥
सहस्रभगदर्शनात् मुक्तिः ॥
मातृयोनि परित्यज्य, विहरेत् सर्वयोनिषु ॥

अर्थ—ज्या छगी आभैरवी चक्र प्रवृत्तमान थयुं नथी, त्यां छगी सर्व वेणीं जुदी जुदी नहीं पण एकमेक मछी मद्य, मांस मच्छ, मुद्रा, मैथुन आ पांच मकारनुं सेवन करवाथी युग युग परत्वे मोक्ष पामे छे. पीवुं ते क्यां सुधी के पृथ्वीपर पडे त्यां सुधी. पाछा उठ्याके पाछुं पीवुं. आम करवाथी फरीथी जन्म थतो नथी. हजार भग दर्शनथी मुक्त थाय छे. पोतानी मातानी योनीनो त्यागकरी सघळी योनीने विषे विहार करवो. आ शक्ति मतनां आवा प्रकारना सिद्धांतपरथी आर्यावर्त्त देशमां आर्योने ए तांत्रिक ग्रंथो मान्य नथी. तेम प्रमाणी भूत पण नथी.

#### ३ प्रश्ननो उत्तर.

उपर दर्शांवेळा शक्ति मतना प्रमाणो करतां हिंसाना निषेधने अर्थे वेदादिक सत्य ग्रिन्थोमा अनेक प्रमाणो मळी आवे छे.

#### उक्तं च मीमांसासूत्रे—

न हिंस्यात् सर्व भूतानि॥

अर्थ--कोइ पण प्राणीनी हिंसा करवी नहीं.

ऊक्तं च तैतरीय उपनिषदि

यान्यनवद्यानिकर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि ॥ अर्थः--ने स्तुत्य कर्मों छे तेनुं न सेवन करवुं. ने निंदा पात्र छे तेनुं सेवन करवुं नहीं.

#### उक्तं च पातंजल सूत्रे

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ॥ अथ-हिंसा करवी नहिं; सत्य पालवुं, चोरी करवी नहीं, ब्रह्मचर्य राखवुं, एम नियम पाळवा.

## उक्तं च शान्तिमयूरवे-पापनिवृत्तिपूर्वकं अहिंसाप्रयोजकं कर्म शांतिकं ॥

अर्थ—जेमां पापनी निवृत्ति थाय छे, अने जेमां हिंसा थती नथी तेज शान्तिक कर्म जाणवुं. शान्तिक कर्म कोने फल आपे छे?

> अहिंसकस्य दान्तस्य, धर्मार्जितधनस्य च॥ दयादाक्षिण्ययुक्तस्य, सर्वे सानुग्रहा ग्रहाः॥

अर्थ—ने अहिंसक छे, उदार छे, धर्मथी मेळवेला धनवालो छे, दया अने डाह्मणवालो छे. तेनेन शान्ति कर्म सिद्धि आपनारुं थाय छे.

> उक्तं च विष्णुस्मृतौ ग्रामारण्यपशूनां हिंसनं संकरीकरणमिति ॥

अर्थ-गामना तथा अरण्यना पशुओनी हिंसा करवी-एने संकरीकरण पाप गण्युं छे.

उक्तं च मनुस्मृतौ-खराश्वोष्ट्रमृगेभानां अजाविकवधस्तथा । संकरीकरणंज्ञेयं मीनाहिमहिषस्य च ॥

अर्थ—गधेडो, घोडो, उंट, मृग, हाथी, बकरो, घेटो, मच्छ, सर्प, पाडो, इत्यादिनी हिंसा करवी एने संकरीकरण पाप गण्युं छे. भागवतना बीजा स्कन्धमां कामनापरत्वे मनुष्यो देवीनी उपासना करे छे अने हिंसादि कार्य करे छे. ते उपर भागवतना अगीयारमा स्कन्धमां कहेल छे के:—

> भा॰ ए॰ स्कं॰ अ॰ यद्यधर्मरतः संगादसतां वा जितेंद्रियः । कामात्मा कृपणोलुब्धोः स्त्रैणो भूतविहिंसकः ॥ पत्रूनविधिनालभ्य प्रतभूतगणान् यजेत् नरकानवशोजन्तुः गत्वा यात्युल्वणं तमः॥

अर्थ— अधर्मने विषे तत्पर थयेलो अने असत् पुरुषना संगर्था कामवालो पुरुष लोभिओ, वगर विधिए पशुओने लावी हिंसा करे छे अने भूत प्रेतादि एवा देवोनुं यजन करे छे ते अन्ते नरके जाय छे अने महान् अंधकारमां पडे छे. एज हिंसा नहीं करवा नारदे कह्युं छे.

भा० च० स्कंधे अध्याय २५ भो भो प्रजापते राजन पशून पश्य त्वयाध्वरे संज्ञापितान जीवसंघान निर्घृणेन सहस्रसः॥ एते त्वां संप्रतीक्षन्ते स्मरंतो वैशसं तव। संपरेतमयःकूटै, हिच्छदंत्युत्थितमन्यवः॥

अर्थ—हे प्राचीन बर्हिष राजा, तें जेजे पशुओनी यज्ञमां हिंसा करी छे ते ते पशुओ तारी वाट जोता अने क्रोध तत्पर थइ पोतानां शींगडां उचां करी तने प्रहार करवा स्वर्गमां तैयार छे, माटे गीताना सोळमा अध्यायमां कह्यं छे के (गीता अ०॥१६॥)

> अनेकचित्तविभ्रान्ता, मोहजालसमावृताः । प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥

अर्थ-अनेक चित्तनी भ्रान्तिवडे मोहजालमां पडेलो मनुष्य, अनेक भोगनी इच्छा करतो नरकने विषे पडे छे. वास्ते गीतामां कह्युं छे—

अहिंसासत्यमस्तेय मिति॥

अर्थ-हींसा करवीनहीं-सत्य पालवुं-चोरी करवी नहीं इत्यादि.

उक्तंच भा. स. अ. १५

न दद्यादामिषं श्राद्धे, न चाद्याद्धर्मतत्ववित् । मुन्यन्नैः स्यात् पराप्रीतिर्यथा न पशुहिंसया ॥ नैतादृशः परो धर्मी नृणां सद्धर्ममिच्छताम् । न्यासो दंडस्य भूतेषु मनोवाकायजस्य यः॥

अर्थ-धर्म तत्वना जाणनाराए श्राद्धमां पित्रादि देवोने मांस आपवुं नहीं, अने खावुं नहीं. जेवी देवताने मुनि-अन्ने करी प्रीति थाय छे तेवी पशु हिंसाए करी थती नथी। सत् धर्मने इच्छनारा मनुष्योने आ अहिंसारूप श्रेष्ट धर्म छे, एटछुंज नहीं पण सघछा प्राणीओने विषे मन वाणी अने काया एणे करी उत्पन्न थनारी कोइ पण प्रकारनी पीडा, तेनो त्याग करवो ए उपर महात्मा भर्तृहरिए कह्युं छे.

प्राणाघातान्निवृत्तिः परधनहरूणे संयमः सत्यवाक्यम् काले रात्तया प्रदानं युवतिजनकथामूकभावः परेषाम् ॥

# तृष्णास्रोतो विभंगो गुरुषु च विनयः सर्वभूतानुकम्पा सामान्यः सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः श्रेयसा मेष पन्थाः ॥ ९ ॥

अर्थ--प्राणीओना घातथी निवृत्त थवुं, परधन हरणथी नियममां रहेवुं, सत्य बोछवुं, राक्तिना अनुसारे दान आपवुं, पारकी स्त्रीओनी वातथी मुंगा रहेवुं, आशा तृष्णा छोडी देवी, गुरुने विषे नम्रपणुं राखवुं; सघछा प्राणीओने विषे दया राखवी; ए सघछा शास्त्रनो सामान्य विधि छे. अने कल्याण-कारी एज मार्ग छे. आ शिवाय पशु हिंसाना निषेधार्थे सर्वमान्य अने सत्य शास्त्रमां अनेक प्रमाणो छे. पण विस्तारना भयथी विशेष प्रमाणो आप्यां नथी.

#### ४ प्रश्ननो उत्तरः

ने राजा शाक्तमतना अनुयाथी होय अने ते संप्रदायनी परनालिका प्रमाणे दीक्षा लीघी होय तो तेने हिंसादि कर्म उचित छे. अन्यथा बीजाने कांइ विधिनिषेध नथी. ए शाक्तादिक शास्त्रमां यज्ञ शिवाय हिंसानो विधि नीकलतोज नथी. तो आज्ञानुं उल्लंघन थवाने कांइ हेतु उपस्थित नथी.

#### ५ प्रश्ननो उत्तर.

आ प्रश्ननो उत्तर चोथा प्रश्नना उत्तरमां समावेश थाय छे. तथापि दर्शान्युं छे के राजा तथा प्रजाना सुखनुं कारण कांइ केवल हिंसा नथी. पण सत्य अने सर्व मान्य शास्त्रमां बतावेली विधि किया अने शुभाचरण एणे करी राजा प्रजानो अभ्युद्य थाय छे. आ सर्वोपरी सिद्धान्त छे. वास्ते मनुस्पृतिमां कहेलुं छे के,

## पाखंडिनो विकर्मस्थान्, बैडालव्रतिकान् शठान् । हैतुकान् बकवृतिश्च वाङमात्रेणापि नार्चयेत्॥

अर्थ-पालंङ धर्मी ( जेवाके-शाक्त-कापालिक इत्यादि ) नठारा कर्म करनारा; दम्भि वृत्तिवाला, लोभीआ; बकवृतिवाला; एवाओनुं वाणी मात्रे करीने पण अर्चन करवुं नहीं.

#### ६ प्रश्ननो उत्तर.

शाक्त मत शिवाय, बलवान् शास्त्रोमां राजाओने अर्थे शरदऋतुमां हिंसा रहित नीराजन विधि अवस्य करवा आज्ञा करी छे के जे विधिना योगे सेना सहित राजाप्रजादिकतुं कल्याण थाय छे. प्राचीन कालमां थइ गयेला विक्रमादित्यना वखतमां वराहमिहिर नामना पंडिते पोतानी रचेली वाराही संहितामां ए नीराजन विधि लखी छे.

बु. सं. अध्याय ४४

भगवतिजलधरपक्ष्म क्षपाकराकेक्षणेकमलनाभौ । उन्मीलयति तुरंगम करिजननीराजनं कुर्यात् ॥

## द्वादश्यामष्टम्यां कार्तिकशुक्कस्य पंचदश्यां वा । आश्वयुजे वाकुर्यान्नीराजन संज्ञितां शान्तिमिति ॥

अर्थ-मेघ छे पांपण नेर्ना अने चंद्र सूर्य छे नेत्र नेना एवा कमलनाभि भगवान् ज्यारे नाग्रत थाय छे, त्यारे अश्व-गज-मनुष्य एओनी नीरांजन विधि करवी. कार्तिक शुक्लपक्षमां द्वादर्शा-अष्टमी-पूर्णिमा ए तिथिमां अथवा आश्विन शुक्ल पक्षनी १२-८-१५ मां नीराजन संज्ञक शांती करवी. ॥ आ विधिनो एक अध्याय छे. वास्ते आ जग्याए लख्यो नथी. ॥

हवे मद्य, मांसादिना प्रतिनिधि शाक्त मतना ग्रन्थोमां शुं शुं छे ते दर्शान्युं छे. राजस तामस वृत्ति वालो ब्राह्मण राजसीक तामसीक कर्म करवा तैयार थयो होय तो तेने मांसनी जग्याए मीठाशवालो दुधपाक तथा सुरानी जग्याए मीठाशवाळुं दुध एम शान्ति मयूलमां कह्युं छे. ए शिवाय, बीजा ग्रंथोमां लीधेला प्रमाण

उक्तं च कौलधर्मरहस्ये-

लवणाद्रककल्याणि गोधूमतिलमाषकम् । लशुनं तु महादेवि मांस प्रतिनिधिः स्मृतः॥

अर्घ-मीठुं, आदु, घहु, तल, अडद, लशण, ए मांसना प्रतिनिधि गणाय छे.

उक्तं च कालिका पुराणे—

कूष्माडिमक्षुदंडं च, मांसं सारसमेव च । एते बलि समाः प्रोक्ता, स्तृप्तौछागसमाः सदा ॥

अर्थ-भूरुंको छुं, शेरडी, सारसनुं मांस, ए बालदान बकराना बरोबर गण्युं छे.

उक्तं च रुद्रयामले-

ब्राह्मणेन सदादेयं कूष्माडं बलिकर्माणि ॥ श्रीफलं वासुराधीश छेदं नैवतु कारयेत ॥

अर्थ-रुद्ध विष्णु प्रत्ये कहेछे के-ब्राह्मणे बलिदान विषयमां भूरुं की छुं लेवुं अथवा बीलु लेवुं पण तेनो छेद करवो नहीं. अथवा छेद करवो होय तो राजस तामस गुणाश्रयी क्षत्रीयादिओने प्रत्यक्ष करवुं.

७ प्रश्ननो उत्तरः

शाक्तमतना ग्रन्थने अनुप्तरी चालनार उपाप्तक जो क्षात्रिय होय तो तेने प्रत्यक्ष वध करवानो कह्यो छे. त्यां छेको मारी छोडी देवानो विधि जणातो नथी. ज्यां सुधी ने ग्रन्थने अनुप्तरी चलाय नहीं तो ते किया पूर्ण थइ एम केम गणाय ? जो ब्राह्मण रजोगुण वृत्तिमां रही देवीनी उपासना करतो होय तो तेने पशुओनी प्रतिकृति लोटनी करवी अने तेनो छेद करवो. अथवा प्रत्यक्ष पशु-ओने छेको मारी छोडी देवा एम कौलधममां कोइ कोइ जग्याए लखेलुं छे. इत्यलम्

## ॥ सर्व वेदशास्त्रनुं सारभूत अंग ॥

सर्वना नियंता परमात्माए आ त्रिगुणात्मक मृष्टी उत्पन्न करी तेनी स्थितीने अर्थे त्रिगुणात्मक वेद रच्या छे. जेमां सात्विक—राजसी—तामसी—मनुष्यप्राणीओने अनुकूल तेवाज त्रिगुणात्मक (सात्विक—राजसी--तामसी) कर्म दर्शव्या छे. माटे आ कर्ममां हिंसा करवी अधर्मरुप छे. अने हिंसा न करवी ए धर्मरुप छे. छतां परस्पर विरुद्ध मतना प्रमाणीना प्रन्थो थवानो हेतु अज्ञानछे.

शास्त्री भाइचंद्रनरोत्तमदासश्चर्ग-सुरत सगरामपुरा.

# नं. १६

## मेहेता मुरारजी वल्लभभाइनो अभिप्रायः

## रा. रा. गोविंददास केशवलाल धर्मपुर स्टेटना कारभारी.

जत—आपनी सहीनो ता. १०-९-९ १ नो पत्र मळयो छे. ते परथी जाणवामां आव्युं छे के "दराराने दिवसे ए स्टेटमां परावध थाय छे, ते रूढी शास्त्र रहित छे. एम विद्वानोना बहु मते ठरे तो ते बंध पाडवी." एम आपना नामदार—महाराणाश्री मोहनदेवजी महाराजश्रीनी इच्छा छे. महाराजानी ए इच्छा अति स्तुत्य छे. स्तुत्य एटला माटे के—पराजी हिंसा थती अटकाववी ए क्षत्रिओनो खास खरो धर्म छे. निरुक्त शास्त्र के जे वेदनां छ अंगमां एक छे. तेमां क्षत्रि शब्दनी व्युत्पत्ति ए छे के—क्षतात् महारात् किलत्रायते क्षत्रिः कोइपण प्राणीने प्रहार—मार—हिंसा थती होय, ते अटकांवे ते क्षत्रिः एज व्युत्पत्तिने प्रख्यात पंडित कालीदास पोताना रघुवंश नामे काव्यमां एकस्थले एने मलतुंज पद छखे छे के क्षतात् किल त्रायत् इत्युद्गः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः ॥ इ०हवे ज्यारे दशराने दिवसे परावध थाय छे, त्यारे क्षत्रिना धर्मथी केवल उल्लं कसहनुं कृत्य थाय छे. शास्त्रमां अभयदान सुपात्रदान—अनुकम्पादान—उचितदान—कीर्तिदान ए पांच प्रकारनुं दान कह्युं छे. तेमां सर्वथी श्रेष्टदान कोइपण प्राणीनो जीव बचाववो ते अभयदान छे. केमके इन्द्रथी कीटादि सर्व प्राणी जीवीतने इच्छे छे.

# यो दद्यात् कांचनं मेरुं, कत्स्नां, चापि वसुंधराम् ॥ एकस्य जीवितं दद्यात् नहि तुल्यं कदाचन ॥ १ ॥

अर्थ-मेरु पर्वत जेटला सोनाना ढगलानुं कोइ श्रीमन्त पुरुष दान करे, अगर चन्नवार्तराजा आखी पृथ्वीनुं दान करे. तोपण एक पुरुष एक जीवने बचावे तेनी बरोबर थतुं नथी. एम उपरना श्लोक उपरथी नक्की थाय छे. त्यारे दरवर्षे एक जीवनो वध बचरो ए शुं महाराजा मोहनदेवजी तर-फन्नुं जेवुं तेवुं दान थरो? खरुं अति मोटुं दान थरो.

पशुहिंसा करी तेन्तुं मांस भक्षण करवुं; परिश्विविद्यास करवो के सुरापान करवुं एवी प्रेरणा किंद्र कोइ सच्छास्त्रमां होयज निहें. ए श्रेष्टमत अंगिकार राखीने छूटमात्र व्यवस्था निमित्ते एटली राखवामां आवी छे के—विवाह करी परणेली पोतानी स्त्री जोडे ऋतुकाले स्त्रीसंभोग—यज्ञमांज बलीदान माटे कापेला पशुनुं मांस भक्षण अने अमुक विधाननी ईष्टीमांज सोमवल्लीपान, एटली रजा छतां दशरानी क्रियाए कांइ यज्ञकमे नथी, एटले एमां पशुवधनी रजा वेदोक्त नथीज. एम धारीए के वेदना आधारे यज्ञत्रत ए किया छे. तो तेमां पण बाध आवे छे. किलयुगमां एवी किया करवानो प्रतिबंध छे. एक दाखलो लइए के—अज ए शब्दनो अर्थ बकरा लई होमता पण अज शब्दनो अर्थ (अ=नहीं+ज =जन्म)=नहीं जन्म एटले त्रण वर्षनी जूनी थयेली डांगर के जे रोपतां उगी शकती नथी ने अजन्मयोनि

मुक्त थइ गइ है ते डांगर एटले त्रीहीनुं अजने बदले बलीदान देवुं एम प्रख्यात पंडित द्यानंदजी सरस्वित जेवा महात्माओं अर्थ करे छे—"यांकृत्वा पशुन् हत्वा कृत्वा रुधिरकर्दमम्" इ. वचनोथी समजवुं के पशुने मारे लोहीनो कादव करे तेवडे स्वर्ग मळतुं होय तो दान—पुण्य वगेरे कर्मीनी शी जरुर रहे हैं मतलबके ज्यारे यज्ञमां पशु हिंसा करवा शास्त्रों सम्मत नथी, त्यारे दशराने दिवसे पाडाना वध ए रूढि पौराणिक मार्ग प्रवेश थयेली, कदि वेदोक्त के स्मृत्युक्त शास्त्रसंपन्न होय ज नहीं. "दशिशरहरा इति दशरा"— दश शिरनो रावण रामे मार्थों ते दशरा. पाडों बिचारों क्यां रावण ठरे हैं नाहक अवाचक बिचारों प्राणीनी हिंसा छे. मान्य स्मृतिमां मनुनुं प्रबल सर्व मान्य वचन छे के:-

### अहिंसा परमोधर्मः

हिंसा न करवी ए मोटो धर्म छे ए मुजब सामान्य विवेचन करी प्रश्नना कमवार जवाब नीचे मुजब दुंकामां आप्या छे.

- (१) देवी भागवत तथा दुर्गा सप्तराती (चंडीपाठ) ए प्रन्थोमां पशु हिंसानां वचनोनो आधार छे. स्पृति—श्रुति प्रन्थोमां आधार नथीः
- (२) उपरना ग्रन्यो शक्तिपंथी (वाम मार्गी) सांप्रादायीओमां फक्त मान्य ग्रन्थो छे. एटले ते अमुक पन्थना ठर्या माटे सर्व मान्यके बहु मान्य न कहेवाय.
- (३) एकादश भागवत—मनुस्पृति—बृहदारण्यक उपनिषद् वगेरे ग्रन्थोमां हिंसा निषेधना वणांक वचनो छे.
- (४) निर्णय सिन्धु अने हेमादि ए प्रन्थोमां ए पर्वने दिवसे राजाने ए कृत्य करवा आवश्यक्ता बतावा होय त्यारे ते साचं जाणवं
- (५) आपित योग आवे एवं कोइन प्रमाण नथी. साधारण समजधी पण ए उछटी वात छे. हालमां केटलांक वर्षो थयां पशुनो वध थाय छे. छतां दुष्काल वर्गरे आपित्त योग पडे छे. भविष्य कालमां कदि न करे नारायणने आपित्तयोग आववो निर्माण हशे तो ते पाडानो वध जारी राखे कदि मटनार नथी अने तेमज होय तो शान्तिक पौष्टिक कियाओं करवी व्यर्थ छे.
- (६) बलवान् शास्त्रनी आज्ञाज नथी त्यारे बलवान् शास्त्रनी आज्ञानो भंग शी रीते थयो गणाय. " मूलं नास्ति कुतः शाखा" तेवी हिंसा रहित क्रियाओ शांति कमलाकर ग्रन्थमां जोई लेवी.
- (७) ए प्रश्न निरर्थक छे. छट्टा प्रश्नमां ए प्रश्न उडी जाय छे. माटे तेना उत्तरमां कहेर्छा क्रिया कहेला प्रथमांथी प्रतिपादन करी अनुसरवुं.

उपरना जवाब छेक टूंकामां लख्या छे. केम के आपेली मुदत घणी थोडी होवाथी अने लखेला प्रंथो पासे विद्यमान न होवाथी लाचारीथी तेनां फक्त नामज आपवां पड्यां छे. एटले चोकस छे के ने प्रन्थनां नाम आप्यां छे. ते सर्वमान्य शास्त्रोना प्रन्थो छे. अने तेमां जोइती हकीकत आपेली छे. ए निश्चय छे. माटे दरबार श्री उदार आश्रयथी ए प्रन्थो मेलवी विद्वान् शास्त्री राखी कमिटीने जोइती हकीकत मेलवरो. एटले पाडानो वध करवानी चालती रूढी बंध पडी आहिंसक किया यथा-योग्य मलरो. तेवी कडाकूटमां पडवुं वास्तविक न लागतुं होय तो आपणा पवित्र तीर्थ काशीमां त्यांनी संस्कृत कोलेजना व्याकरण विषयना अध्यापक (प्रोफेसर) नामे दामोदर शास्त्री भरद्वाज हाल छे. तेमनी जोडे पत्र व्यवहार चलावी खुलाशो मागवानी जरुर योजना मेळवशो.

आज्ञांकित-मुरारजी वल्लभभाई. मेहता नं० ३ नी म्युनिसिपालनिशाळना हेडमास्तरः

# नं० १७

## मि॰ नाथाभाइ मणीभाइनो अभिप्राय.

मेहरबान डाह्याभाइ बापालाल.

धर्मपुर लाइब्रेरीना सेकेटरी.

प्रणाम साथे लखवानुं के आजना देशी मित्रमां दशरा उपर पाडा मारवानो अने तेमां केटलीक सच्चाइ छे तेनो निर्णय करवानो माहाराजाश्रीनो विचार जाणी मने घणो संतोष थयो छे. खुलाशामां नीचेनी बे लीटी करतां वधु लखवानुं हुं दुरस्त धारतो नथी.

हिंदुस्तानना देशीओमां सर्व मान्य एक वेदज छे. ते वेद तथा तदनुकुल सकल शास्त्रनो सिद्धा-न्त छे के "अहिंसा परमो धर्मः" तेम छतां परमेश्वरने नामे जे कोइ हिंसा करे छे, तेना उपर तो कृपालु परमात्मानो अत्यन्त कोप उतरे छे. ए वातना प्रमाणनी जरुर नथी अने ए करतां वधु लखवा हुं धारतो नथी.

> ली० आपनो सुभेच्छक नाथाभाइ मणीभाइ मेनेजरः गोरक्षापसादः

# नं. १८

## लिंबडीवाला नागेश्वर नथुरामभद्दनो अभिप्राय.

श्रीप्रश्रोत्तरव्यवस्था-प्रथम प्रश्ननो उत्तर-तत्र विधिए करीने कालिका पुराणमां पशु वध कह्यो छे. तेनां प्रमाण तथा वाक्य नीचे लखेल छे.

निर्णयसिन्धौ—दुर्गापूजायां ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वा, बिलं पूर्वमुखं तथा ॥ निरीक्ष्य साधकः पश्चादिमं मंत्र मुदीरयेत् ॥ १ ॥ पशुरत्वं बिलक्ष्पेण, ममभाग्या दुपस्थितः प्रणमामिततः सर्व रूपिणं बिलक्ष्पिणम् ॥ २ ॥ चंडिका प्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनं ॥ चामुंडा बिलक्ष्पाय, बले तुभ्यं नमोनमः ॥ ३ ॥ यज्ञार्थे बलयः सृष्टाः, स्वयमेव स्वयंभुवा॥ अतस्त्वां घातयाम्यद्य तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ४

अहीं मंत्रे करीने बलीदान कर्युं छे-एम कालीकापुराण-रुद्रयामल-देवीपुराणमां कहेल छे. ते सर्वे उपर लखेला बाक्यो आज कलियुगमां मान्य नथी तो ते किया करवी एमां शुं कहेवुं ? ते प्रमाण नींचे लखेल छे.

वरातिथिपितृभ्यश्च, पशुपाकं रणिकया ॥ दत्तीरसेतरेषांतु पुत्रत्वेन परिग्रहः ॥ १ ॥ यतेश्च सर्ववर्णेषु, भिक्षाचर्या विधानतः ॥ मांसदानं तथा श्राद्धे, वान-प्रस्थाश्चमस्तथा ॥ २ ॥ दत्ताक्षतायाः कन्यायाः, पुनर्दानं परस्यच ॥ दीर्घकालं ब्रह्मचर्यं, नरमेधाश्चमेधकौ ॥ ३ ॥ सौत्रामण्यादियज्ञेऽपि, सुरापात्रग्रहस्तथा ॥ इमान्धमीन कलियुगे, वर्ज्यानाहु र्मनीषिणः ॥ ४ ॥

छागाभावे तु कूष्माडं, श्रीफलं वा मनोहरं । वस्त्र संवेष्टितं कृत्वा छेदयेत छुरिकादिना ॥

एम निर्णयसिन्ध्वादि महा निबन्धे निर्णय करेल छे के न करवुं अने करेतों ते उपर लखेल सर्वे धर्म उलडुं विपरीत फळ आपे छे अने नरक प्राप्तीना हेतु थाय छे. श्रीमद्भागवतना दशमस्कंधमां दशमों अध्याय पशूनविधिनालमा पेतसूतगणान् यजन् ॥ नरकानवशोदेही गत्वायात्यु त्वणंतमः ।। तेवा प्रमाणथी पूर्वे त्रेतायुग तथा द्वापरमां शास्त्रविधि रहित रागथी हिंसा करे तो नरकमां जाय पण आज किन्न्युगमां हिंसा विधिनां शास्त्रों मानवां नहीं मद्यभक्ष्यादिवामाद्यागमस्यतु न मान्यता ।। एवा बलवान् धर्मशास्त्रोना प्रमाणथी हिंसािकयानो संकल्प तो क्यांथीज होय ? उपर लखेलमां त्रण प्रश्नोत्तुं समाधान थाय छे.

प्रश्न ४—राजाओने आ समयमां कर्तव्य नथी. जे शास्त्र हिंसानी आज्ञा करे छे ते आज्ञा तोडवा मोट बलवान् सार्यधर्मशास्त्र हुकम करे छे.

प्रश्न ५—ते हिंसा न करवाथी देव उछटा प्रसन्न थइ राजप्रजाने सुख ओप छे. तेवा देवोने प्रसन्न करवाना सप्तशत्यादि—जप होम घणा उपाय छे. ते उपाय आ छोकमां तथा परछोकमां सुख ओप छे.

प्रश्न ६—जेने कर्मशास्त्रमां श्रद्धा छे. तेने माटे यज्ञादिमां हिंसाथी बलीदान अवस्य करवानुं लख्युं छे. तेमां बळवान र्घमशास्त्रनी मनाइथी प्रतिनिधि कह्या छे. कालिकापुराण—रुद्रयामलमां एवा प्रमाणोथी बलीदानना प्रतिनिधि थाय छे. तेम करवाथी ते बराबर गणाय.

प्रश्न ७—ते पशुनां नाक, कान जराक छेदी छोडी देवां ते कंई प्रमाण नथी तो तेनो उत्तर पृण नथी. तथास्तु.

भट्ट-नागेश्वर नधुरामनुं आशीर्वचन.

# नं. १९

#### भट बालाइांकर रूपजीनो अभिपाय.

श्रीगणेशाथ नमः प्रश्न. १

उत्तर-तंत्र शास्त्र मध्ये वाममार्ग उपासनामां उक्तंचबृहत्तंत्रराजे.

उपासना त्रिधा प्रोक्ता श्रेष्टा तत्र तु सात्विकी ॥ यस्यां च मानसी पूजा जपा मुख्यतम स्मृतः ॥ १ ॥ राजसो दक्षिणो मार्गः प्रतिमायां च पूजनम् ॥ राजोपचारैः पुष्पाद्यै स्तदाधानं विशिष्यते ॥ २ ॥ तामसोपासनं प्रोक्तं पूजादौ बलिदानतः ॥ वाममार्गेण तच्चाद्यं वर्णं हित्वा प्रकथ्यते ॥ ३ ॥ एषा व्यवस्था संप्रोक्ता वामदक्षिणयोः परा ॥ गोपिता सर्वतंत्रेषु किमन्यत् श्रोतु मिच्छिस ॥ १ ॥

इति शिववाक्यं पार्वती प्रति—विशेष काली तंत्र रुद्रयामलादिक तंत्रोमां न्यवस्था छे. तथा कौलार्णवादि तंत्रोमां कहेल छे. परन्तु ते हिंसादि बालिदान शूद्रने मुख्यत्वे वाममार्गमां कहेल छे. अने ए वामाचार पण शूद्रने कहेल छे.

> उक्तं च मेरु तंत्रे शिबेन-वामाचारो मदुक्तोयं सर्वः शूद्र परः प्रिये

इति वाक्यात् अग्रे आद्यं वर्णं हित्वा क्षत्रियस्य कथितं तत् उपलक्षणमात्रत्वेन द्विजातिभिः ताज्यः ब्राह्मण क्षत्रिय वैद्यैरित्यर्थः विष्येकवाक्यात्

> महिषोडामरे तंत्रे विनोदाय महेश्वरी क्षीराज्यमधुमांषेश्च विप्रादीनां च पूजयेत्

> > २ प्रश्ननो उत्तरः

ते आर्य छोकमां सर्व मान्य नथी तथा बहु मान्य पण नथी ते शास्त्रमांथी श्रुति स्मृति पुराणनुं कुछ जे वाक्य होय ते मानवा छायक छे. ने जे सिद्धान्त विरुद्ध होय ते त्याग करवा योग्य छे. माटे सर्वथा मान्यके प्रबल शास्त्र ते नथी कारण के ते मोहशास्त्र कहेवाय छे, ने ते भ्रष्ट मार्ग छे. एनां वाक्यो जोवां होय तो देवी भागवतमां एकादश स्कंथमां ते विशे खुलाशो छे. विस्तारना भयथी अहि ते वाक्यो लख्यां नथी माटे ते वाक्यो जोवानी मरजी होय तो तेमां जोशो एटले खुलाशो थशे.

ब्राह्मं पाशुपतं सौरं शाक्तं गाणेशवं तथा वामं तस्मात् वारेष्टं स्यात्तस्मात् कौलं विशिष्यते कौलाच दक्षिणं श्रेष्टं सर्वेभ्यो विजितेन्द्रियं जितेन्द्रियाद् वारेष्टं च नास्तिवाक्यं शिवोदितम् ॥ २ ॥

#### इति रुद्रयामलोचाक्तं

प्रश्न ३—उत्तर—ते शास्त्र करतां अति प्रबल श्रुति स्मृतिपुराण इतिहास वगेरे तमाम शास्त्रोमां तेनो निषेध लखेलो छे. तेना बाक्य केटलांक नीचे लखु छुं.

#### उक्तंच महाभारते शान्ति पर्वणि

सत्येनासाचते धर्मः दयादानेन वर्धते । क्षमया स्थाप्यते धर्मः कोध लोभात् विनश्यति ॥ १ ॥ अहिंसा सत्य मस्तेयं त्यागो मैथुनवर्जनं । पंचस्वेतेषु धर्मेषु सर्वे धर्माः प्रतिष्ठिताः ॥ २ ॥ अहिंसालक्षणो धर्मः अधर्मो प्राणिनां वधः । तस्माद् धर्मार्थिभिलोंके कर्तव्या प्राणिनां दया ॥ ३ ॥ लोभमायाभिभूतानां नराणां प्राणिनां घनतां । एषां प्राणिवधो धर्मो विपरीता भवन्ति ते ॥ ४ ॥ न शोणितकृतं वस्त्रं शोणितेनैव शुघ्यते । शोणिताईतु यद् वस्त्रं शुद्धं भवति वारिणा ॥ ५ ॥ यदि प्राणिवधे धर्मो स्वर्गश्च खलु जायते । संसारभाजकानां तु कुतः श्वश्चो विधास्यते ॥ ६ ॥ भृवं प्राणिवधो यज्ञे नास्ति यज्ञ स्विहंसकः । तातेऽहिंसात्मकः कार्यः सद्। यज्ञो युधिष्टिर ॥ ७ ॥ तातेऽहिंसात्मकः कार्यः सद्। यज्ञो युधिष्टिर ॥ ७ ॥

इन्द्रियाणि पशून कृत्वा वेदीं कृत्वा तपोमयीं अहिंसा माहुतिं कृत्वा आत्मयज्ञं यजाम्यहम् ॥ ८ ॥ ध्यानामो जीवकुंडस्थ दममारुतदीपिते । असत्कर्म समित्क्षेपे अग्निहोत्रं कुरूत्तमं ॥ ९॥ यूपं छित्वा पश्न हत्वा कृत्वा रुधिरकर्दमं । यद्येवं गम्यते सौख्यं नरकं केन गम्यते ॥ १० ॥ मातृवत् परदाराणि परद्रव्याणि लोष्टवत् । आत्मवत् सर्व भूतानि यः पश्यति सपश्यति ॥ ११ ॥ अहिंसा सर्वजीवेषु तत्वज्ञैः परिभाषितं । इदं हि मूलं धर्मस्य शेष स्तस्यैव वितरः ॥ १२ ॥ अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यं सुसंयमः मद्यमांसादि त्यागश्च तद्दे धर्मस्य लक्षणम् ॥ १३ ॥ यथा मम त्रियां त्राणास्तथान्यस्यापि देहिनः । इति मत्वा न कर्तव्यो घोरः प्राणिवघोबुधैः ॥ १४ ॥ प्राणिनां रक्षणं युक्तं मृत्यु भीताहिजंतवः । आत्मौपम्येन जानिङ्ग रिष्टं सर्वस्य जीवितं ॥ १५॥ उद्यतं शस्त्र मालोक्य विषादं यांति विह्वलाः जीवाः कंपंति संत्रस्ता नास्ति मृत्युसमंभयं ॥ १६ ॥ कंटकेनापि विद्यस्य महती वेदना भवेत् । चक्रकुंतासियष्टचाद्यैः मार्यमाणस्य किं पुनः ॥ १७ ॥ दियते मार्यमाणस्य कोटिजीवित मेवच धनकोटीः परित्यज्य जीवो जीवितु मिच्छति ॥ १८ ॥ योयत्र जायते जन्तु सतत्र रमते चिरं । अतःसर्वेषु जीवेषु दयां कुर्वति साधवः ॥ १९॥

अमेष्यमध्ये कीटस्य सुरेंद्रस्य सुरालये । समानाजीविताकांक्षातुल्यंमृत्युभयंद्वयोः ॥ २०॥ अहिंसा सर्वजीवाना माजन्मापिहिरोचते । नित्यमात्मनो विषये तथा कार्याऽपरेष्वपि ॥ २१ ॥ जीवानां रक्षणं श्रेष्टं जीवा जीवितकांक्षिणः । तस्मात् समस्त दानेभ्योऽभयदानं प्रशस्यते ॥ २२ ॥ अहिंसा प्रथमं पुष्पं पुष्पमिद्रिय निग्रहः। सर्वभूतदया पुष्पं क्षमा पुष्यं विशेषतः ॥ २३ ॥ ध्यानं पुष्पं तपः पुष्पं ज्ञानं पुष्पं सुसप्तमं । सत्य मेवाष्टमं पुष्पं तेनतुष्यन्ति देवताः॥ २४॥ पृथिव्या मप्यहं पार्थ वायावद्मौ जलेप्यहं । वनस्पतिगतश्चाहं सर्वभूते वसाम्यहं ॥ २५ ॥ जले विष्णुः स्थले विष्णुः विष्णुः पर्वतमस्तके । ज्वालामाळाकुले विष्णुः सर्वे विष्णुमयंजगत् ॥ २६॥ योमांसर्वगतं ज्ञात्वा नचाहिंसेत् कदाचन । तस्याहं न प्रणस्यामि सचमेन प्रणक्यति ॥ २७ ॥

#### विष्णुपुराणे-

योददाति सहस्राणि गवांचापि शतानिच |
अभयं सर्वसत्वेभ्यस्तद्दान मतिरिचते ॥ २८ ॥
किपलानां सहस्राणि यो द्विजेभ्यः प्रयच्छित ।
एकस्य जीवितं दचात् न च तुल्यं युधिष्ठिर ॥ २९ ॥
दत्तिमष्टं तपस्तप्तंतीर्थसेवा तथा श्रुतम् ।
सर्वेप्यभयदानस्य कलां नाहिति षोडशीं ॥ ३० ॥
नातोभूयस्तमोधर्मः कश्चिदन्योस्तिभूतले ।
प्राणिनां भयभीतानां अभयं यत् प्रदीयते ॥ ३१ ॥

वर मेकस्य सत्वस्य दत्ताह्यभयदक्षिणा।
नतु विप्रसहस्रेभ्यो गोसहस्रमलंकृतम् ॥ ३२ ॥
अभय सर्वसत्वभ्योयोददाति दयापरः।
तस्य देहेऽपि मुक्तस्य भयं नास्ति कृतश्चन ॥ ३३ ॥
हेमधेनुधरादीनां दातारः सुलभा भिव।
दुर्लभः पुरुषो लोके प्राणिनामभयप्रदः॥ ३४ ॥
महता मिप दानानां कालेन क्षीयते फलं।
भीताभयप्रदानस्य क्षय एवन बिद्यते॥ ३५ ॥

शान्ति पर्वणि—यथा मेन प्रियो मृत्युः सर्वेषां प्राणीनां तथा ।
तरमान्मृत्यु भयान्नित्यं रतातव्याः प्राणिनो बुधैः ॥ ३६ ॥
एकत कृतवः सर्वे समग्रवरदक्षिणाः ।
एकतो भवभीतस्य प्राणिनः प्राणरक्षणम् ॥ ३७ ॥
एकतो भयभीतस्य प्राणिनः प्राणरक्षणं ॥ ३८ ॥
एकतो भयभीतस्य प्राणिनः प्राणरक्षणं ॥ ३८ ॥
सप्तिद्वपंसरत्नां च द्द्यात् मेरं सकांचनं
यस्य जीवद्या नास्ति सर्व मेतत् निरर्थकं ॥ ३९ ॥
स्वल्पायु विकलो रोगी विचक्षु बीधरः खलु
वामनः पामनषंढो जायते सभवेभवे ॥ ४० ॥
अहिंसा परमो धर्म स्तथा ऽहिंसा परं तपः
अहिंसा परमं ज्ञानं अहिंसा परमं पदं ॥ ४९ ॥

इतिहासपुराणे तथा श्रीमद्भगवद्गीतायां ॥ अधोगच्छन्तितामसाः इत्यादि ॥ तथाच श्रुतिः ॥ नतं वेदा यज इमा जजा कमंतरं बभूव नीहारेण प्रावृताजल्या चासुतृप उक्थ शासश्चरन्ति ॥ तथा च भागवते एकादशस्कन्धे ॥ हिंसाविहाराह्यालन्धेः पशुाभिः स्वसुखेच्छया यजन्ते देवतायज्ञैः पितृभूतपतीन खलाः ॥ भागवते नारदवाक्यं ॥ भो भो प्रजापते राजन पशून पश्य त्वया-घ्वरे ॥ संज्ञापितान जीवसंधान निर्घृणेन सहस्रसः ॥ एते त्वां संप्रतीक्षते स्मरंतो वैशसंतव ॥ संपरेतमयःकूटै छिंदंत्युत्थितमन्यवः ॥ इत्यादि बहूनि वाक्यानि हिंसानिषेधपराणि सन्ति ग्रन्थविस्तरभया न्नात्र लिखितानि ॥ श्लोक ॥ मरुत्तंत्रे॥ न कर्तव्यं न कर्तव्यं न कर्तव्यं कदाचन ॥ इदन्तु साहस देवि न कर्तव्यं कदाचन ॥

प्रश्न ४ नो उत्तर—राजाओने ते अवस्य कर्तव्य नथी. अने ते न करवाथी को ई शास्त्रनो बाध लागतो नथी कारण के ते विषे उपर वाक्य लखेल छे के ते वामाचार शूद्रने के मूर्व—अज्ञानीने करवा लायक छे. उक्तंच वामाचारो मदुक्तोयं सर्वः शूद्रपरःप्रिये न कर्तव्यो न कर्तव्यो न कर्तव्यो न कर्तव्यो न कर्तव्यो न

प्रश्न ५ नो उत्तर-ए हिंसानी प्रवृत्ति बंघ करवाथी कोई जातनो राजाने तथा प्रजाने आपित-योग आवे एवं कोइ प्रख्यात शास्त्रमां कबुल नथी ने हिंसा बंध करवाथी सारु फल प्राप्तमान थाय छे, तेम घणे ठेकाणे कहेल छे. ते वाक्य लखुं छुं. तथा ते विशे केटलाक वाक्य उपर लखेल छे. श्लोक -२७-२८-२९-३०-३१-३२-३३-३४-३६-३६-३७-३८-३९-महाभा-रते॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यत्यागभोगी यशानिधिःभवत्यभयदानेन चिरंजीवी निरामयः॥

प्रश्न ६ नो उत्तर—पशुवधविना तेनी प्रतिनिधि किया करवाथी कोइ बलवान शास्त्रनी आज्ञानों मंग थतो नथी. कारण के अहिंसा रूढीथी प्राप्त छे, तेमां शुं शास्त्रनों मंग थाय १ कारणके एनों कोइ अंश वाममार्गने लायक पडे छे. ते शुद्रादि नीचने करवा लायक छे ते विशे आगळ लख्युं छे. अने ते हिंसानी बराबर किया नीचे प्रमाणे छे.

श्रीशक्तिसंगमतंत्रे प्रतिनिधिः ॥ पायसंतुगजत्वेन मांजारत्वेकुलुत्थकं ॥ वृन्ताकंकुक्कुटत्वेन मेषत्वेन च तुम्बिका ॥ माहिष्त्वेन मसूरान् उष्ट्रत्वेन च तुम्बिका ॥ तथाच रुद्रयामले ॥ छागाभावे च कूष्मांडं श्रीफलं वा मनोहरं ॥ वस्त्रसंवेष्टितं कृत्वा छेदयेत् छुरिकादिना ॥ श्रीमहाकालसंहितायां ॥ सात्तिको जीवहत्यादि कदाचिदिष नाचरेत् ॥ इक्षुदंडं च कूष्मांडं तथा रण्य-फलादिकम् ॥ क्षीर पिंडैः शालिचूणैंः पशुं कृत्वाचरेद्वलिं ॥ तत्तत्फलविशेषेण नान्यं पशुमुपानयेत्॥ (कूष्मांडं महिष्त्वेन छागत्वेन च कर्कटी मिति ॥

अवस्य कामना प्रयोगमां जीव हिंसाने बद्छे उपर प्रमाणे प्रतिनिधि करवानुं कह्युं छे. ते प्रमाणे करवाथी तेटलुंज फल प्राप्त थाय छे माटे अवस्य कर्तव्य होयतो प्रतिनिधिथी ते उत्सव करवो. पश्च ७ नो उत्तर-पशु वगेरे बर्छादानमां ते पशुना नाक तथा कानने छेको मारीने प्राणीने छूटुं मेर्छी देवाथी कांइ पूर्ण किया थइ न गणाय.

उक्तंच कालिका पुराणे

सुगन्धि रुधिरे दद्यात् न कदाचित् तु साधकः नोष्टस्य चिबुकस्यापि नेंद्रियाणां तथैव च ॥ इंद्रियछेदोन

मुख्यत्वे अहिंसा बंध करवा लायक छे. कारण कोइ ठेकाणे आ प्रमाणे अविधियी हिंसा करवी तेबुं कोइ ठेकाणे वाक्य नथी.

उपर लखेल के बलेव अथवा दशराने दिवसे हिंसा करवामां आवेछे. ते केवळ शास्त्रविरुद्ध छे. माटे बंध करवुं जोइए कारणके दशराने दिवसे बळीदान आपवाथी राज्यनो नाश थाय छे. एवुं धर्म शास्त्रमां लखेलछे.

> नंदायां ज्वलते वन्हिः पूर्णायां पशुघातनं भद्रायां गोकुलकीडा देशनाशायकल्पते॥

माटे मुख्यत्वे ते कर्तव्यता शास्त्र विरुद्ध छे. माटे ते रुढी बंध करवी जोइए अथवा कुष्मांड छेदन करवुं पण पशु वध न करवो, एवो मारो मत छे.

लि॰ भट्ट बालाशंकर रूपजी. लींबडी.

## नं. २०

#### अमलसाडवाला शास्त्री रामकृष्ण इच्छारामनो अभिप्राय.

श्रीमत् महाराणा राजा साहेब कमीटीना मेम्बरो—तथा. प्राणजीवन जीगजीवन महेता समीपेषु— आपनी पवित्र जाहेरखबर हाळ बे त्रण दिवसमांज मलवाथी तथा समय आवा गंभीर विषयने माटे बहु ओंछो होवाथी—स्थाली पुलाकन्यायवत् संक्षेपमांप्रश्नना उत्तरो यथामित नीचे प्रमाणे छे.

१ — वेद शास्त्र तथा पुराणादि ग्रन्थोमां ज्यां ज्यां राजप्रकरणो जोइए तो त्यां त्यां विजया दशमी विगेरे पर्वपर पाडा बकरा विगेरेनो वध राज्यश्रेयने माटे छर्वछो जोवामां आवतो नथी. बहु काल्रथी चालता ए आसुरी वाम मार्ग( जेनो बौध मतथी अगाडी अधिक जोर हतो) थी हिंसामय कूर मार्गनो प्रचार थयेछो संभवे छे. अंगोपांग शास्त्रोमां ए वात बिल्कुल नथी. वेद शास्त्रोमां प्रजापिडक व्याद्यसिंह वनस्करादिनो तथा वेदविरोधि आतत्यायीनो वध करवानो राज पुरुपोने विधि जणाय छे. यदि पुराणिक पंडितो हठथी मार्कंडेयादि पुराणोमां एवां कूर करम करवाने जणावे तो ते मृष्टिकम युक्ति तथा इश्वरनागुणकर्म अने स्वभावने अनुकूल न होवार्था सिद्धान्त पक्षे मान्य थइ शके नहीं. सांख्य दर्शनमां कापिलजीए कह्युं छे के "नायौक्तिकस्य संग्रहोन्यथा बाल्रोन्मत्तादिसमत्वं" अर्थात् ग्रन्थोमां जे अयोक्तिक संग्रह होय ते उन्मत्त बालकोना जेवो समजवोः तो दीन अनाथ तथा संसार जीवनभूत प्राणिओनी हिंसा विजयादशमी विगे रे पर्व उपर करवी कराववी ए कोइ आर्ष शास्त्रोमां विधिपूर्वक प्रयुक्त जणातुं नथी. वळी योगविसष्टना मुमुक्षु प्रकरणना अढारमा सर्गमां विसष्ट महामुनिए महाराज रामचंद्रजीने कह्युं छे के—

अपि पौरुषमादेयं शास्त्रंचेद्याक्तिबोधकं अन्यत्त्वार्षमपि त्याज्यं भाव्यं न्यायैक सेविना ॥ १॥ युक्तियुक्त मुपादेयं वचनं बालकादपि अन्यत्तृणमिव त्याज्य मप्युक्तं परमेष्टिना ॥ २॥

अर्थ-अपक्षपाती मनुष्ये युक्तिबोधक शास्त्र साधारण पुरुषे रचेछुंहोय तथापि स्वीकारवुं पण युक्ति विनानुं ऋषिए कहेछुं होय तो पण त्याग करवुं केम के युक्तियुक्त वचन बाळकथी पण गूहण करवा योग छे. ने युक्तिरहित कदी प्रजापतिए कह्युं होय तथापि घासनी पेठे हलुंकुं गणी त्याग करवुं. तो राजधममां एवी हिंसाथी श्रेय थाय एवां वचनो बतावनारां शास्त्रों कदी मोटा महर्षि ने नामे जणावी सिद्ध करता होय तथापि ईश्वरना न्यायने भणी धर्मात्मा मनुष्ये निर्भयताथी छोडी देवा जोइए. वैशेषिक शास्त्रोमां महर्षि कणादे कह्युं छे के दुष्टं हिंसायाम् अर्थात् हिंसाकमं विशे प्रवृत्ति ए दुष्ट कमें छे माटे एवा निंद्य कमेथी राज्यनुं श्रेय थतुं नथी.

#### २ बीजा पश्चनो उत्तर.

आर्य छोकोमां सर्व मान्य अथवा बहु मान्य अपौरुषय वेद (जे संहिता विभाग) तेज गणाय छे. केमके एमां इश्वरना गुणकर्म अने स्वभाव तथा सृष्टिक्रम विरुद्ध छेखज नथी. माटे सर्वमान्य एज गणाय छे. ने ब्राह्मणादि पौरुषय ग्रन्थोनो जेटछो वेदानुकूछ विभाग तेटछोज सर्व मान्य थइ राके बीजो नहीं. माटे स्वतः प्रमाण वेदरूप शास्त्रोने वेदान्त दर्शनमां व्यास महामुनिए मुख्य शास्त्र मान्युं छे. तथा शास्त्रयोनित्वात ए सूत्र उपरथी श्री शंकराचार्ये जे भाष्य कींधुं छे, तेनी मतछब ए छे के ऋग्वेदादि शास्त्रनुं योनि (कारण) ब्रह्म छे. माटे एज शास्त्र सर्व मान्य तथा बहु मान्य गणाय छे. ए वेद शास्त्रोनां राजधर्म प्रकरणमां दिन परोपकारी पशुओना विजया दशमी आदि पर्वोपर हिंसा जणाती नथी. माटे सर्वथा ताज्य छे.

#### ३-त्रीजा प्रश्ननो उत्तर

वेद्शास्त्रना प्रमाणथी (स्मृति) धर्म शास्त्रनुं प्रमाण उतरतुं गणाय, ने तेना करतां पुराण किनष्ट गणाय छे, एम शास्त्रकारोनो सिद्धान्त छे यथा

#### श्रुति स्मृतिः पुराणानां विरोधो यत्र दृश्यते तत्र श्रोतं प्रमाणंतु तयोद्वेधे स्मृतिर्वरा ॥ १ ॥

अर्थात् वेद धर्मशास्त्र तथा पुराणोमां एक ज विषय निर्णय करवामां विरोध आवी पडे तो श्रुति प्रमाण प्रवल छे अने स्मृतिप्रमाण तथा पुराण प्रमाणमां विरोध आवी पडे तो स्मृतिप्रमाण श्रेष्ठ गणाय छे. फिलितार्थ ए आवे छे के सर्व करतां वेदनुं प्रमाण श्रेष्ठ सर्व विद्वानो मानता आव्या तथा हाल माने छे. हवे वेदमां एवा विजया दशमी उपर पान्नां बक्तरादिनी हिंसानो विधि जणातो नथी. निषेध मंत्रो घणां जणाय छे. ''यथा, यजमाना पश्चनपाहि'' यजुर्वेदे अ० १ मं०१ अर्थ:—इश्वर आज्ञा करे छे के— यजमान नाम जे यज्ञ यागादि करनार विद्वानोने सत्कार करनार—संगति करनार यजमान क्षात्र धर्मी राजपुरुषतुं पशुनुं रक्षणकर. एवी ईश्वरनी हिंसा न करवा रूप आज्ञा जणाय छे. वली यजुर्वेद वृता ४० मा अध्यायमां तो मनुष्य मात्रने माटे आहिंसा लखी छे, तो राज्य पुरुषोने राज्यना कोइ पण जातना भलाने माटे श्वासवान् दीन परोपकारी प्राणीने वध करवो श्वी रीते संभवे श्वा असु-पानामते लोका अन्धन तमसा हता।।ता स्तेभेत्यापि गच्छिन्त येके चात्महनोजनाः।। अर्थात् — जे मनुष्यो श्वासवान् जीवोने एटले निरपराधी मनुष्य पश्चादि प्राणीओने ठार मारे छे तेनुं गति अर्थात् ज्ञान नहीं एवी अंधकारमय एटले अज्ञान वेष्टित् पश्चादि योनिने प्राप्त थाय छे. माटे ए अपोरुखेय वाणीने, मान्य करी क्षमा एवा हिंसादि दोषथी बची इहलोक परलोकनी हानी न करवी एवी प्रवल शास्त्रनी आज्ञा छे.

#### ४ प्रश्ननो उत्तरः

राजपुरुषोंनुं ए कर्तव्य नथी के एवां गरीब प्रजाना जीवमां सहायभूत प्राणीओनो विनाकारण दुष्ट रूढी रुप संकुलामां बद्ध थइ वध करवो. केमके एम थवाथी राजपुरुषोनुं कर्तव्य सिद्ध थयुं गणाय नहीं. मनु महाराजे तो क्षत्रीओने जे कर्तव्य कर्म लख्यां ते आ प्रमाणे छे.

#### प्रजानां रक्षणं दान मिज्याध्ययन मेवच विषयेष्व प्रसक्तिश्च क्षात्रियस्य समासतः

अर्थ-क्षत्री (राज पुरुषे) प्रजानुं सर्व रीते रक्षण करवुं अनाथ अथवा विद्वानोनो यथा योग सत्कार करवो, सर्वना सुखने माटे यज्ञ करवा, वेद शास्त्रो भणवां, विषय सुखमां अति आसक्त न थवुं, इत्यादि संक्षेपमां क्षत्रीओनां कर्तव्य कह्यां छे. एज कर्तव्य राजाओने कल्याण करनार छे. एज प्रमाणे भगवद्गीतामां पण श्रीकृष्ण भगवाने राजाओनां कर्तव्य कर्मो नीचे प्रमाणे छल्यां छे.

## शोर्यंतेजोघृतिर्दाक्ष्यंयुद्धेचाप्यपलायनम् दान मीखर भावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्

अर्थात्-राजपुरुषोए पराक्रमी थवुं, रार्रार तथा विद्या विर्यथी तेजस्वी थवुं धीरज राखवी उदार थवुं, युद्धमां कायर थइ पाछुं हठवुं नहीं. उदारता राखवी—ईश्वरने विषे आस्तिक बुद्धी राखवी एटलां क्षत्रीओनां स्वभावथी एटलां कर्मो उत्पन्न थयेलां छे राजाओनुं एज कर्तव्य छे. शुद्धक्रनीति तथा मनुस्मृत्तिमां राजधर्ममां विजया दशमी विगेरे पर्वोपर पशुवध करवो जणावेलो नथी. राजनीति राजा-ओनो प्रधान धर्म छे (स्वेस्वेकर्मण्यात्रिरतः संसिद्धिलभते नरः ॥ श्रीकृष्णजीए अर्जुनने पण एमज कह्युं छे के पोत पोताना वर्णाश्रम धर्म पालवाथीज शुभ सिद्धि छे. बलवान् शास्त्रो एवी आज्ञा करतां नथी. ने एवी किया न करवाथी शास्त्रोनी आज्ञानुं उल्लंघन गणायज नहीं.

एवा प्रसंग उपर हिंसा न थवाथी राज्यने प्रजाने तथा राजाने अंगे कोइ पण प्रकारनी आपत्ति आवर्ती नथी परन्तु ॥ अहिंसा प्रतिष्ठायांवेरत्यागः एम व्यासजीए पोताना पातंज्ञ दर्शने भाष्यमां कह्युं छे. अर्थात् हिंसा तजवाथी जे पशुओनो विना कारण वध थवाथी आवता जन्ममां वैर लेवाने माटे भय उत्पन्न थाय छे तेनो अटकाव थतां आ लोकमां वैर त्यागनो मोटो लाभ थाय छे. पशु वध करवाथी राज्यने ने प्रजाने तथा राजाने अंगे हरकत थाय ए केवल वहेम छे. एतद्थे प्रतिपादक प्रमाणो वामीओनां बीलकूल मिथ्या छे. एनी साबेती एटलीज के जेने काठियावाड विगेरे संस्थानोना राजाओए एवां पर्व पर हिंसा छोडी छे, तेओने एवीज कोइ प्रकारनी आपात्ति आवी होय एम जाण्यामां आव्युं नथी. कदापि कोइने कोइ प्रकारनुं नुकशान थयुं वा थशे तो हिंसा छोडवाथीज थयुं एम सिद्ध थइ शकतुं नथी. तेमां बीजां घणां कारणो होवां जोइए परन्तुं एवां निंच कर्मनो त्याग करवाथी प्रतिष्ठा वधे छे, माटे ए महापापनुं काम छोडवाथील कोइ

वातनुं अकार्य थवानुं नथी. एटलुंज नहीं पण परमात्मानी प्रसन्नताथी महा मुखनी प्राप्ती थरों एज प्रमाणे श्रीकृष्णे-अर्जुनने कह्युं छे—निह कल्याणतःकश्चिद्दुर्गितंतातगच्छिति ॥ अर्थात् कल्याणकारी काम करनारने कोइ प्रकारनी दुर्गित थतीनथी. एमज राका थती होयके विजयादरामी विगेरे पर्वोपर हिंसा करवाथीज राज्यादिनी आबादी छे तो इतिहासथी सिद्ध थाय छे के नागपुर, सोलापुर विगेरे राज्योमां पूर्वोक्त पर्वोपर उपर्युक्त हिंसा थती हती छतां केम राज्यनुं रक्षण नहीं थयुं? माटे देशकाल प्रजाप्रियता जोइ राज्यकान्ति पूर्वक राज्य करवाथीज राजा प्रजानी आबादानी छे. हाल युरोप अमेरिकाना राजा महाराजाओ पोताना देशनी मुखाकारीने माटे एवी कूर किया करता नथी. तेतो साम दाम दंड भेद विगेरे, कृषिव्यापार, कलाकौराल्यादि प्रजानी आबादानीना योग्य कर्तव्यो करवाथीज बुलंदीपर पहोच्यां छे. माटे राज्यनी आबादानी—राज्यनुं श्रेय ने पोतानी कुरालता इच्छनार राजा महाराजाओए योग्य युरोपनी राज्यनीतिनुं अनुकरण करवुं. एज बलनवान शास्त्रोनी सम्मति छे. विनेबहुना

#### ५ प्रश्ननो उत्तरः

घृणित पशुवधने बदले होम हवनादि षायु—जळ शुद्धि पूर्वक वैदिक अनेक क्रियाओ करवानी छे. तथा राज्य आबादानीना कार्यो करवा राज्यमांथी (महीसुरनी पेठे) प्रतिनिधिओ बोलावी सर्वा- सुमते देशकालने अनुसरी राज्य सुधाराना कामो करवानो आरंभ करवे। विगे रे घणी शुभ कियाओ करवानी छे. ए करवाथी बलवान शास्त्र वेदोनी आज्ञानो मंग थयो गणाय नहीं. एवी हिंसारहित कियामां विधिपूर्वक हवन बराबर तो शुं? पण श्रेष्ठतम श्रेयस्कर गणाय छे. एवा विषयोनां वाख्यानो वा विस्तार पूर्वक लेखो थवाथीज महत्व मालम पडे. सारांश एटलोज के एवां पर्वपर हवन विगेरे पारमार्थिक किया तथा बीजी हिंसा रहित लोकिक किया करवी एज बस छे—

#### ६ प्रश्ननो उत्तरः

विजया दशमी विगेरे पर्वापर पशुवध करवाने बदले नाक विगेरेने छेको मारवो ए पण युक्ति—
मृष्टि तथा वेदादि सच्छात्रनी विरुद्ध छे. वळी ए पण क्रूर कर्ममां गणाय छे. माटे त्याज्य छे तेथी
एकदम रसातळ पहें चिलां हिंसारूप मूलीयां न छेदातां होय तो आरंभमां छेकारूप
कियाथी वध अटके तो तेमां मोटो दोष नथी एम विवेकथी देखाय छे. परन्तु व्याजबी
जोतां छेको करी छोडवा करतां बीलकुल एवी पण किया न करीए ए धर्मात्माआनो सिद्धांत
छे. आ नियम साधारणने माटे छे. स्वतंत्र राजाओने माटे नथी. केम के मनुस्मृतिमां लख्युं छे के. राजा
कालस्यकारणं ।। अर्थात् सारो नरसो काल लाववो एनं कारण राजा छे. त्यारे दुष्ट रिवाज
धर्म रुपे प्रसरेलो काढी नांखवो ए शी विसात छे १ पण राजा धेर्यवान—धर्मात्मा—विद्वान्—शूरवीर,
सत्य निर्णयी, बुद्धिवान्, सृष्टि नियम तथा इश्वरना गुण, कर्म, स्वभावथी ज्ञानवान् होय तोज आवां
कामो करी शके. एवा प्रसंगउपर केटलाक मोटा गणाता पंडितो संस्कृमतां होय तेटलुं खरुंज

एम मानी पुष्टि आपनारा निकलहो खरा. ते उपर लोभाइ न जतां एकदम निर्णयपर न आवंबुं एने माटे शास्त्रार्थ करवो ए श्रेष्ट छे. वली कर्मकांडविषयक नवीन पुस्तकोमां हिंसा रूप किया जणा-वेळी छे. पण ते प्रेरणा वा विधिरुप नथी पण रोज हिंसा थती होय तेने नियममां: लावी ऋमे ऋमे अटकाववा रुप छे. एवो शास्त्रोनो हेतु न समजतां सर्वत्र हिंसा पंडितमन्य मूढ्यीओऐ ठोकी बेसाडी शास्त्र वचनोपर पाणी फेरवी धर्मनी आडमां एवां क्रूर कर्मनो वधारो करी मूक्यो छे. ए रीतिनुं नियम वचन भागवतमां हिंसा छोडाववाने जणाय छे. तथा पशोरालम्भनं हिंसा ॥ अर्थात् हिंस्य पशुने आछंभन, एटले स्पर्धन पूजन करी छोडी देवुं. अहिं आलंभननो अर्थ हिंसा रुपज करबो ए हिंसकनो स्वार्थ छे. बाकी प्रकरण तथा कर्ताना अभिप्राय प्रमाणे अर्थ तो शास्त्रमां स्पर्श तथा पूजन रूप थाय छे. एम मानवुं शास्त्र तथा युक्ति पूर्वक छे. ए शास्त्रीय कर्मकांडी विष-यमां पुष्कळ लखवा बोलवानुं छे परन्तु काम, समय तथा विषय वधवाना भयथी वधारे लखवानी हाळ जरूर नथी. पण आटलुं तो जणाववुं जोइएके ऋग्वेद ऐतरेय ब्राह्मण मां अलंकार रूपे पशु (वध) शब्दनो अर्थ नहीं उगे एवं त्रण त्रण वरसनुं जुनुंभात एवो करेलो छे. सारांश एके त्रण वर्षनां जूना भातनो वध एटले खांडी कुसका जूदा करी तेना पिष्टनो मोहन भोग करी हवन करवो कह्यो छे. ने एवीज अजामेध संज्ञा छे. आवातमां शंका थती होय तो तथा ए विषयमां वधु जाणवांनी इच्छा होथे तो पूर्वोक्त ब्राह्मण यंथ मंगावी वांची निर्णय करी लेवो ओ सर्वेषां वाएष यमूनो मेघो यह्नीहि यवौ अर्थात् सर्व पदार्थोमां शाली तथा यव ए पशु संज्ञक शुद्ध धान्य हवनने योग्य छे. एवो पशु क्ध करी होम करवो एज पशु वधथी. सरद् ऋतुनी शान्ति रूप क्रिया पूर्ण थई गणाय पण आवां जीवन्त पशु मारवां नहीं.

#### उपसंहार.

घीर वीर प्रतापी सूर्यवंशमुगटमणी धमीवतार महाराज महाराणाश्रीमान मोहन देवजी महाराज तथा प्रधानादि राज्यकर्मचारीओ तथा आ विषयनी समीक्षक कमीटी तथा राज्याश्रित पंडितादि सुज्ञजनो प्रति अनेक धन्यवाद पूर्वक सानुनय प्रार्थना छे के आ मारा बाल छेखनुं सारी रीते निरीक्षण करवुं. आ पत्र पहोंचवा पहेलां पत्रोनी समीक्षा थई चूकी हशे. परन्तु कृपा करी आ पत्रनुं पणसम्मेलन करवुं ने व्याजबी निर्यण आपवो एवी आशा छे. ने आशा छे के आ रिवाज हवेथी धर्मपुरीमां बन्ध थशे एज

## ली॰ कृपाकांक्षी कृष्णराम ईच्छाराम वैदिक धर्मोपदेशक

य्राम खरसाड—ता. अमळसाड तथा जलालपुर

## नं. २१

#### स्वामि आत्मानंदजीनो अभिप्राय.

#### रा. रा. प्राणजीवनदास जगजीवन धर्मपुर.

स्वामि आत्मानंद्जीना आशिर्वोद्.

बिरोष लीखवेमें आंते हे के हिंसा नहि करवी एसा सात प्रश्न तुमने पुछये हुवेथे इसका जुवाब यथामित लिखवेमें आये हे सो मान्य करेंगे, तुमेरा कागज हमने ता. ७-९-९४ का छपा हुवा मिलाथा सो उत्तर लिख्या है. "केटलाक राज्योमां दशेरा वगेरे पर्वापर देवी के देवने भोग आपवाना निमित्तथी पशुवध थतो अने थाय छे ते वात शास्त्रोक्त छे के केम " ए वगेरे ये निर्णय वास्ते कि-तनेक प्रश्नो छिखे हें. सदरहु विषमयें नीचे छिखे अनुसार उत्तर छिखताहुं विदित होके "मूलं नास्ति कुतः शाखा " इस वाक्य समान उक्तपत्रिलिवितं प्रश्न हे अतेव उनके सविस्तर उत्तर लिखनेमें समय गंवाना व्यर्थ समजता हूं अर्थात् जो राजा लोग देवि या देवके सामने पाडा बकरा विगेरे की हिंसा करते हैं वहां प्रथम यह विचारना उचित हे के वोह पथ्थर ओर मनुष्य घडत मूर्ति देवहे अथवा नहीं? अथवा बोह स्वयं देवहे? यदि वोह मूर्ति देवहे क्यों पाडाविगे रेका खून पीते हे क्यों के माडा-विगेरे निरपराधी की हिंसा उसकी तृशि अर्थ समजी गइ हैं निंदान जो वोह देव सबके समक्ष खून पी लेवे उस देवका वाहन पथ्यरका बना हुआ सिंह अपना कर्तव्य ( हरण वगेरे पशुको स्वयं मार डालना इत्यादि ) दिखाने; उस देनकी ( में-आया मनुष्या ) उंगर्छा कोंटे तो कुछ परिणाम (उंग -र्छीमेंसे खून निकले, या देव पुकारे, या देव काटनेवालैको मारे या अपनी नाराजी सिद्ध करे या अपने को देव बचावे निकले या हमारा रखाहुवा भोग खालेवे ४; वा कोइ अनुचित क्रिया उसकी सेवामें करें तब मुखसे कहे या शिक्षा दे ५. वगेरे परीक्षा हो जावें तो वोह मूर्ति या स्वयं देव किसीके मंतव्यमे देव या देवी हे" एसा मान लेंगे ( क्योंके देव नाम हे विद्वान् सद्गुणी पुरु-षका. हिंसा या मांस भक्षण तमगुणके अंतर गतहे अतेव उक्त खून पीनेवालेको सर्वके मंतव्यमें देव कहना अनुचितहे ) परंतु आर्यावर्तके चमत्कारीक कहवाने वाळे स्वत और मंदिरोमें जाजा कर परिक्षा की है; उस देव या देवीने " यह थोडाथोडा है या अधिक है यह मुझे पसंदहे यह पसंद नहीं है-एसा कबी उत्तर नहीं दिया ओर न कभी भोग खाया. अतेव उस मूर्त्ति या स्थानको देव वा स्वयं देव नहीं मान सकते ( शं ) सत्युगमें मूर्ति परचा देतीथी अब कलयुगमें बंध पडगयाहै और देवता चल्लेगये, अतेव परीक्षा उपर आधार नहीं करते ( समाधान ) जब सतयुग आवे ओर मूर्ति या देव उक्त प्रकारके परचा देवें ओर दैवत आजावे ओर कलिकाल नारा हो जावे तभी तुमभी ऐसी हिंसा करना. अभी तो इस अनुचित्त कृत्यको बंध करो जराक एकांतमां बेठकर निष्पक्ष होकर विचारोके पथ्यरों ( राथपथ ब्राह्मण कां० १४

ओर गीताका अध्याय १६ देखो. ) कीं मूर्त्तिका ने वर चोर लेगये तब उन्होंने अमने पूजारी को भी नहीं जगाया ओर अब न जगाते हैं; ओरको दूर नहीं कर सकते, भोगको नहीं खाते, उनके सेवकनको हिंदू तीनके कहे रात्रु जो मुसलमान उन मूर्त्तियोंको तोड डालते हैं ओर तोड डालीहे तनभी वे मूर्त्ति देव आप अपनेको वा अपने पुजारीको नहीं बचाते वा बचायो नहीं, उतेव ''जो जैनी पौराणी वगेरे लोक मूर्तिको देव मानते या पूजते है या एसी त्रट सढी रखते हे वे भूछपर हैं या अज्ञानमें पासे हैं या स्वार्थी हे" ऐसा स्पष्ट देख पडता हे. पुराण ग्रंथो सिवाय "मूर्त्ति पूजा या पथ्थरको चेतन मानना या जडको चेतन मानना या उसका चेतन बनजाना'' किसी भी प्राचीन आर्य शास्त्रोमें नहीं छिखाहै और मान्या हे षट् शास्त्र या चारुं बेदोमें इसका विधान नहींहे किंतु "वेदोमें जो कोइ ईश्वरो या ईश्वरकी मूर्त्ति थैं। ईश्वर पूजा या मूर्त्ति देव हे ऐसा कोइ सिद्ध कर देतो उसको रु. पांच हजारका इनाम देवें'' ऐसी जाहेर खबर कलकत्तेके प्राप्तिद्ध प्रतिष्ठित बाबूने छ वर्षमे पेपरोमें प्राप्तिद्ध कर रखी हे परंतु अभीतक कोइभी सिद्ध करने को तैयार नहीं हुवा इत्यादि अनेक युक्ति प्रमाण ए अनुभवसें ''मूर्त्तिपूजा या स्वघडत मूर्त्तिदेव वा पुज्य हे ऐसा मानना, मनाना या पथ्थर प्रतिष्ठा वगेरेसे चेतन हो जाता हे ऐसा जानना" समीर्चान नहीं हे हमेरे से पूर्वज मानते आंथे हें वे क्या अज्ञथे? (स.) झूठकी रूढी पडगइहे ओर बहोत कालमे सो क्या मान्य हे यवन लोगोंका पीछे चला जीसमें हिंदुओंसे तिगुने मनुज्य हें सो क्यो नहीं मानते वे क्या सब अज्ञहें. मूर्त्तिकी रसम तो २५०० वर्ष पूर्व नहींथी यह इतिहास ओर प्राचीन ग्रंथ देखनेसे प्रसिद्ध हे अतेव हमेरो से नहीं अतेव प्राचिनोंपर मत देना योग्य नहीं)

इतने लिखनेसें क्या सिद्ध हुना ? जीसके सामने (देवके सामने) हिंसा करतें है वोह देनी या देनताही नहीं हे तब यही स्वीकार करना पडता है के "जीसके सामने या जीस स्थलमें हिंसा करते हैं वोह मूर्त्ति या देन नहीं हे तब उसके सन्मुख हिंसा करना उचित हे या नहीं ? शास्त्रोक्त हे ना नहीं एसी हिंसा बंध करनेवालेने शास्त्र मर्यादा उल्लंघन करी या नहीं ? इत्यादि" पत्र लिखित प्रश्नहीं नहीं बनते तब उत्तरहीं क्या लिखें इसी सन्नकेस पत्र लिखित प्रश्नके उत्तरमें समय गंनाना व्यर्थ समजकर उदासीन हुं (यहि मूर्त्ति पूजा, देन ओर हिंसाके संबंधमें निशेष देखना होतो श्रम नाशक ग्रंथ धर्मपुरमें मिलता हे ) ओर पुरुषार्थ प्रकाश (यहरांथ हियासत शाठपुरा इलाके अजमेर देश मेवाडकी आर्य समाजमे मिल शकता है ) ग्रंथमे सिनस्तर शास्त्रोंके प्रमाण पूर्वक लिखा है वहां देखलो अतेन राजा या हरकोइ पत्र लिखित हिंसाजो करते ना कराते हें ना निरपराधी उपयोगी जीनोंको दुःख देते ना मारते है; ने अनीतिका है एसा में मानता हूं निरपराधी जीनको उस जड मूत्तिके सामने क्या सफल हे ? इस प्रश्नका यथार्थ ओर पूर्ण उत्तर ने हिंसक नहीं दे सकते किंतु स्वार्थ सिनाय कोइ उत्तरही नहीं दे. यही आर्योमेंसे कोइ एसे कहे के देनके सामने ना यज्ञमे

पशुको मारडाछनेसे या हवन करनेसे वोह पशु स्वर्गमें जाता हे तब ओ आर्य इस वातका उत्तर नहीं दे सकता अर्थात् उसका पुरावा क्या? वा आप या अपने पिता या पुत्रको ही क्यों न मारा भयके मुरुत में स्वर्ग मिलजाय. जो काइ ऐसा मानता होके पत्र लिखित हिंसा नहीं करोगे तो देव नाराज हो जायगा नुकसान करेगा तब हमारा इतनाही उत्तर बसहे यदि पूर्वोक्त परीक्षामें बोह देव पास होय जाय और उसकी नाराजगी सिद्ध होय जाय तो देवकारजी होनाभी मान लेगे और हिंसा करनेको अर्थ स्वीकार छेगे परंतु आज तक एसा नहीं हुवाहे जो एसा होतातो सोमनाथकी प्रतिका शिर यवन नहीं तोडते और क्षत्रियोंका राज नहीं जाता.

निदान जडके सन्मुख निरपराधी उपयोगी जीवके प्राण हनन करना अनीति हे एसे अनेक कार-णोसे सीसोटिकोके बडे उदयपुरके महाराणा ओर दूसरे राजोने बहोत जगे पत्रिखित हिंसा होना बंद करिंदयाहे.

बूरवीर धीरोंका काम हे के निर्बंच निरंपराधीपर हाथ नहीं उगना किंतु उनकी रक्षा करना, ओर दुष्ट, रात्रु, घातकी जीवा (काकू, आतयी, सिंह, रीछ, सूवर वगेरे ) को मारना ओर उनके भयसें मुसाफीर ओर प्रजाको अभयदान देना नके एसी अनुचित हिंसा करना या करनेमें सहाइ होना पत्रमें प्रमाणी आर्थ शास्त्रके संबंधसे प्रश्न लिखाहे इसका वर्तमानी निदान जरासी बातहे वाह यहयेः—तमाम दुनियामें कोनसा शास्त्र मान्यहे ? इस सवालके निर्णयका ता प्रसंग यहां नहींहे किंतु पत्रमें आर्य शास्त्रकी चर्चाहे; तहां आर्य ग्रंथोंमें कोणता शास्त्र मुख्य प्रमाणहे ? इस सवाल के उत्तरमें विचारहे? जैनी ओर पुराणियोंको दृष्टि ते शास्त्रोंकी दो शाखा है जैन शास्त्रोंके सूत्रोंमें उक्त हिंसा नहीं हे परंतु उनके धर्मके प्राचीन ग्रंथ नहीं हे किंतु २५४० ठाई हजार वर्ष पूर्वकालके जैन धर्मके ग्रंथ देखनेमें वामान्नेमे नहीं आते ( जुओ जैनी बाबु दिावप्रसाद स्टारापूर इंद्रिआ काडयाट्आ इतिहास तिमिरनाशक ग्रंथ ) अतेव पौराणियोंके शास्त्रोंपर दृष्टी डार्छे तो पुराण १८, स्मृति २०, शास्त्र ६, उपवेद ४, ब्राह्मण ग्रंथ ४, उपनिषद् १०, वेदके षट् अंग, ओर ४ वेदहे इनमेंसे पुराण तो जैन धर्मके सूत्रोंके पीछे बनेहे (यह बात पुराणोंके छेख सही सिद्ध होती है.) यदि ईन ग्रंथोंके अनेक कारणोपर जावें तो बहेति हे इसिलेये सर्व मान्य इतनाही उत्तर लिखना बसहे के आर्यों ( चोराणी विगे रे ) के सर्व ग्रंथ ( उक्त ग्रंथ शास्त्र वगे रे ) वेद ग्रंथकी साक्षी छेते हैं; वेदको स्वतः प्रमाण मानते हैं. सर्व ग्रंथ शास्त्र वेदके पीछे बने हे. (वर्तमान कालके नवीन शोधकों ( यूरोपीअने वगे र ) ने भय भीतिह निश्चय कीया हे के ईस पृथ्वीके तमाम देशके ग्रंथों सें ''वेद्'' प्राचीन ग्रंथ हे. काली पुराण देवी भागवत—पुराण नहीं हें, मार्कंडेय वर्गे रे पुराण राजा भोज के समय किसीने बनाये हे देखो संजीवनी नाम ग्रंथ जो राजा भोजके समय बना हे. ) निदान उनके तमाम ग्रंथ ओर आचार्य वेदकोटी मान्य मानते हें चतेव अन्य ग्रंथ ओर शास्त्रोंकी छोडकर ४ वेद (४संहिता) को प्रबल मुख्य प्रमाण कल्प लेवें तब सामान्य दृष्टिसे यह प्रश्न उत्पन्न होते हैं के " वैद प्रमाण है

वा अप्रमाण है? यदि प्रमाण हे तो उसमें प्रबळ हेतु क्या? इत्यादि परंतु इन झगडोंका यहां प्रसंग नहीं है किंतु पत्र लिखत आर्य प्रंथपर ध्यान रखनेंसे वेदको प्रमाण मान करही उत्तर लिखने योग्य हे. वेद ग्रंथको प्रमाण मानने वाले वेदके षष्टांगसे वेद मंत्रका जो अर्थ सिद्ध हो जावे और ईश्वरी नियमसे विरुद्ध न हो सो अर्थ मान्य मानते हें अन्यथा (अमान्य) वेदके भाष्य (वेदका अर्थ विगेरे) रावण, उवट, महीधर, सायनाचार्य, मोक्षमूलर, ओर द्यानंद सरस्वती ने किये हें इन सबके भाष्यमें पत्र लिखत हिंसाका तो कहींभी विधान नहीं हे (यह पत्रका उत्तर हे; बस) परंतु कोइ भाष्य (महीधर सायनाचार्य) विषे यज्ञमें प्रशुवध करके मांस हवन करनेका अर्थ करखालेंहें; परंतु द्यानंदादिने एसा अर्थ किया हे के वेदमें प्रशु वध विद्य नहीं किंतु निषेधहे, एसा सिद्धकर देखायाहे. इत्यादि मुख्य प्रवल प्रमाण वेदके अर्थोमें झगडे हें; वहां यह शंका उत्पन्न होती हे के इनमेंसे किसका अर्थ मान्य होगा? तब वेदके षटांगपर दृष्टि डालनी पडती हे (वेदानुयायीके मंतल्य अनुसार षटांगकी चर्चा अवस्य करनी पडी.

राब्दके अर्थ करनेमें आकांक्षादि ४ हेतुवोंमेंसे व्याकरण मुख्य हे; वास्ते वेद ग्रंथके व्याकरणको यहां तपास करनेकी जरुरतहे अतेव नीचे लिखे अनुसार तपासका विस्तार लिखते हैं:—वेद ग्रंथ तो महाभारतके समय तथा व्यास, कृष्ण, पतंजली, राम, गौतम, किपल, ऋषभदेव और मनु वगेरे पूर्वकालके क्योंके उनके ग्रंथोंमें वेदोंकी साक्षी स्पष्ट लिखीहें ओर वेद ग्रंथोंमें उक्त पुरुष या उनके ग्रंथोंकी साक्षी वा चरचा किंतु किसी मनुष्यका भी इतिहास नहीं है. अब यह विचार उचित हुवा के जीस व्याकरणसे (उवट, महीधर सायनाचार्य वगेरेने) वेदके अर्थ किये हैं वा करते हैं सो "पाणिनीऋषि" कृत "अष्टाध्यायी" ग्रंथ हे सो तो "रामचंद्रजीके पीछे बनी हे" यह बात उस अष्टाध्यायीके सूजोंसेही सिद्ध होतीहे; क्योंके उसमें 'गर्ग, 'वामदेव, इत्यादिकी संतानके वास्ते प्रत्यय लिखेहैं; ओर वामदेवता दशरथके समय हुवाह इसलिये राजा रामचंद्रके पिता राजा दशरथ ओर श्रीरामचंद्रके पीछे पाणिनीकृत व्याकरण अष्टाध्याइ ग्रंथ बनाहे ओर पतंजिल ऋषिन उसकेपर महाभाष्य रच्याहे सोभी रामचंद्रजीके हुयेहैं (इत्यादिक देखो आर्य संवत ग्रंथ) इत्यादि पुरावोंसे अष्टाध्याइ ( जोके वेद ग्रंथका व्याकरण कहाताहै) रामचंद्रके पीछे बना स्पष्ट है. तथाहि अष्टाध्याइके सूत्रोंसे यहभी सिद्ध होताहे के उसके पूर्व दूसरे व्याकरण प्रचलित थे कयोंके दूसरे व्याकरण गंकी अष्टाध्यायीमें साक्षी है.

(मतांतर भी हे) इतने लिखनेसे क्या आया के वेद काल समयका आकरण जब हो तब वेदका यथार्थ अर्थ होना संभव हे. (अष्टाध्याइ) वेद कालसें हजारो किंतु उससे भी अधिक वर्षों पीछे बनीहे अतेव फेरफार होना संभव हे. वात्ते इसी व्याकरणपर आधार नहीं हो सकता अथवा उस समयके वेदार्थहों उसपर विरोष ध्यान देना योग्यहे, परंतु दिलगीरी हे के उक्त दोनों वातें अभीतक

प्रसिद्ध देखनेमें नहीं आइ अतेव वेदार्थका केसे निश्चय हो. (यह एक अंग व्याकरणका तपासहे ) अतेव जबतक सत्यवक्ता विद्वान तथा सत्ताधारीकी मंडली होकर एक अर्थ निश्चित न होवे वहांतक हम वेदके मंत्रोंकी भी साक्षीमें देना नहीं चाह दूसरे ग्रंथोंकी तो वातही क्या ( रांका ) अष्टाध्या इमें पूर्व प्रचलित व्याकरणका अंतर तथा भिन्नत्व जनाया है. इसीसे सिद्ध होता है के संस्कृत भाषाका मूल वेद उस बेदके काल पीछे संस्कृत भाषामें फेरफार हुवात्तभी लौकिक संस्कृतका व्याकरण कित-नेक भागमें भिन्न पड गया हे, यदि एसा न होता तो दोनोंका राह्योका एकही व्याकरण होता अतेव फेरफार स्पष्ट है. ( शं. ) वेद्के पीछे वेद्से अत्यंत समीप कालमें " मनुस्मृति " ग्रंथ बना हे उसके दाखले देने योग्य हे ( उ० ) यद्यपि मनुस्मृति के अध्याय ५ श्लोक ४५ सें ५१ तकमें ऐसा स्पष्ट लिखा हे "अतुमंता विश्वसिता" इत्यादि श्लोक.५१ जीवके मारने में सलाहकारी, मारनेवाला, मांस वेचनेवाला, मांस छेनेवाला, मांस पकानेवाला, मांस खानेवाला इत्यदि घातकी पापीहें " इत्यादि प्रकारके दाख्छे है तथापि वर्तमान कालमें जो सर्वमान्य शिरोमाणि स्मृतिकी तपास हुइ तो किसी कापीमें कितनेही श्लोक अधिक पाये अर्थात् इस ग्रंथमें स्वार्थिओने मेलझोल करिद्या हे यह स्पष्ट होगया यहांतक के पूर्वापर विरोध देखवाने वाले श्लोक उसमें मिलते हें जेसे ॥ सुरावैमल्य ॥ इत्यादि अध्याय ११ के श्लोक ९३-९४-९५ में सुराका निषेध कीया है और नमांस भक्षणे दोषो न मद्ये नच मैथुने इत्यादि अध्याय ९ में एसा श्लोक लिख्याहे के मांसभक्ष,मद्य पीवन ओर मैथुन करनें में दोष नहीं हे क्योंके मनुष्यों की स्वाभाविक उसमें प्रवृत्ति होती है परंतु इनसे निवृत होनेमें बडा अछा फलहे अब बुध्धिमान विचार ठेंगे के एसा पूर्वापर विरुद्ध लेख मनु केसे लिखता अतेव मनुस्मृतिमें घालमेल होनेसे उसके दाखलेंभी हम देना नहीं चाहते तब दूसरी स्मृतियोंकी तो क्या गणनाहे. इसी प्रकार ब्राह्मणादि ग्रंथो कें दाखले से उदासी नहें. यद्यपि षटशास्त्रोंमें हिंसा मात्रका निषेत्र हे इसमे किसीका विवाद नहीं हे ओर उनमेंसे ''पूर्वमीमांसा" के कोइ सूत्रमें विवाद भीहे ओर पत्र लिखित हिंसा तो पूर्वमीमांसा में भी नहींहे. तो भी षट् शास्त्रके दाखके नहीं देना चाहते क्योंके हमतो उनके मूलपर दृष्टि डाल रहे हें. तेसेही पत्र लिखित हिंसा पूर्वोक्त कोई भी ग्रंथमें नहीं हे तो भी उनके दाखले देना नहीं चाहते क्योंके प्रंथोमें घालमेल होनेसे उनके वेद मूलपरही हमारी दृष्टि है. यद्यपि पत्रलिखित हिंसा वेदमें भी नहीं हे यदि होती तो पूर्वीक्त किसीके भाष्यमें तो चर्चा होती सो तो नहीं है इसलिये एसा कहनेमें दूषण नहीं हे किंतु यथार्थ हे के ''वेदमे पत्रिक्षित हिंसाका विधान नहीं हे" तथापि अर्थ के विवादसे सर्व हिंसा अहिंसा बाबत हम वेदके मंत्र साक्षीमें नहीं देना चाहीए. परंतु इतनी प्रतिज्ञा करसकते हें के पत्रलिखित हिंसा वेदमें जो सिद्ध करनेको तैयार होतो शास्त्रार्थ करनेको उद्यत होकर नियम बांधकर शास्त्रार्थ करे. पूर्वोक्त प्रकारसे पत्रलिखित प्रश्न ही नहीं बनते वेसेही प्रश्नोंका उत्तर ही लिखने योग्य नहीं इतना विषय यहांतक आचुका अतेव पूर्व लेखपर दृष्टि डालते द्रुए पत्र लिखित ७ प्रश्नोंके मकाबले पर यह लखना बस है:-

#### ७ प्रश्लोंका उत्तर.

१ हे प्रश्नका उत्तर .... को ई शास्त्रमें नहीं हे.

२ सरे ,, .... .... पूर्व प्रश्न अंतर्गत उत्तर छे तंत्र ग्रंथ शास्त्र नहीं कहेला छे.

३ सरे ,, .... वेदमें अनपराधी उपयोगीकी अनुचित्त रीतिसे हिंसाका निषेध होने योग्य है, परंतु प्रबल शास्त्र वेद ग्रंथके अर्थ में झगडे हानेसे साक्षीमें मंत्र लिखना नहीं चाहते शास्त्रार्थ होने तक.

४ थे .... .... आज्ञा तोडी एसा निह गिना जाता ओर इसका प्रबल प्रमाण हे.

५ .... .... नहीं कहा हे क्योंके विद्ध ही नहीं हे.

६ जनके पत्र लिखित हिंसाही नहीं तो तिसके बदले अमुक किया केंसे लिख शकते हैं ओर न होने योग्य है.

७ वे ,, ,, ,,

कुरान या बाईबलके मतका वेदमें निषेध हे ! ऐसा कोई प्रश्न करे तो ईसकी साक्षीके मंत्र वेदमें नहीं निकलेंगे कुरान या बाईबलका नाम भी वेदमें नहीं हे ईसी प्रकार पत्र लिखित हिंसाकी साक्षी वास्ते समझ लेना अतेन दाखले नहीं लिख सकते और अर्थापत्तिकी रीतिसे झगडे हैं. जन यूं होते यह सवाल पेदा होते हे के उक्त हिंसाकी रूढीने क्यों ओर कब प्रवेश किया ? ईसका संक्षेपमें यह उत्तर हे. जिस समय इसकी रसम चली तब वर्तमान कालका कोई भी मनुष्य नहीं था अतेन दृष्ठ साक्षी तो कोई भी नहीं करसक्ता तथा योगी लोग भी भूत भविष्य यथार्थ नहीं बता सक्ते इसकी सिद्धि हम कर सक्ते हें अतेन यंथोंके लेखसहित करार करनी पडती हे जब इतिहास पर बात आई तब ईतनी शंका सन्मुख आती हे:—

१ अपने अपने धर्माचार्यके अनुयाइ अपने ग्रंथमें अपना पक्ष किल्पत गाथासे छिख देता है जेसे कबीर पंथवाछे कबीरकी हयाती ओर चिरत्र सृष्टि आरंभसे मानते हैं, ओर ग्रंथोमें छिखे बताते हैं वेसेही जैनी, किरानी, कुसनी, पुराणी अपने अपने पक्षके सिद्धि वास्ते इतिहास बना बनाकर छोड गये हे जिनका मूळ माथा नहीं मिछता अतेव कोनसा इतिहास मान्य हे. पृथीराज चोहान कोनसे संबतमें हुआ इसमेंही तकरार हे कोइ संवत ११४९ कोइ १२५० छिखता हे अब विद्वान विचारेंग के एसे प्रसिद्ध राजाके समयका ८०० वर्षमें झगडा पडगया, निर्णय नहीं होता तब एसी सूक्ष्म ओर अनेकाधीन रसमका यथार्थ कारणमें विवाद हो उसमें क्या करना हे.

२—संसारमें फेरफार होता रहेता हे, नवीनखंड वस्ते हे प्राचीन समुद्रमे डूब जातें हें; इत्यादि अनेक फेरफारसे ग्रंथ या संकला मिलना असंभव हे. अतेव रूढीके निर्णयमें श्रम करना व्यर्थ हे तथापि इस रूढीका ठीक अमुक समय तो नहीं परंतु समय की लगभगता निश्चय होनेकी सामग्री मिलनेसे इतना लिखना बस हे के महाभारतसे पूर्वके ग्रंथोमें किंतु २५०० वर्षके पूर्व काल्रके ग्रंथोमें मूर्ति

पूजा नहीं हे इससे यह सिद्ध होता है के पूर्वोक्त हिंसाकी रूढी २५०० वर्षके पूर्व कालमें तो नहीं थी किंतु पीछेसे चली हे और उसका मूल कारण वाम मार्ग मतहे. जीन्हेंनि महादेव वगेरे ऋषिओंके नामसे तंत्रग्रंथ बराबर चलायो. इस मतका शंरार्चायन नारा कियाथा परंतु उसके अंग बाकी रहगयेथे तिस पीछे इस ( पत्रलिखित ) रूपमें इस हिंसाका प्रवेश हुवाहै. उदेपुरके महाराणाओंके इतिहास तवारीख मेवाड-राजप्रशस्ति प्रंथसे तो यह ज्ञात होताहै के राणा राजसिंह ( ओरंगजेब, आलमगीरका राजु ) के समय राज्योंमें यह रसम नहीं चलीथी जबसे वाममार्गने राजपुतानेमें प्रवेश किया, ओर क्षत्री राजा अपने शत्रु मुसलमानोंको अपनी हजुरीमें रखने लगे तबसे इस ह्रिटीन राज्योंमें प्रवेश किया ओर उक्त संगसे द्रढात्मक होगइ यह रूढी क्यों चली यह कोइ प्रश्न नहीं हे, इंन्द्रजाल, सिद्ध साधक, ओर चालाकी करके चुटकले दिखलाकर स्वार्थियोंने एसें स्वरूपमें इसको ढालादिया एसा ज्ञात होताहे अथवा नामरदे, कायर, आलसी क्षत्रियोंने सिंहादिके बदले पांडे बकरे मारना बहादूरी मानकर यह रसम द्रढ कर दीइ." रूढीपर चलना या नहीं चलना " इस वातका विद्वान सत्यवक्ता और उत्तम राजा स्वयं फेंसला कर सक्ते हे. अर्थात् निकृष्ट रुढीको नष्ट करना और उत्तमका प्रचार करनाही उचितहे. निकृष्ट सठीपर अंध परंपरासे चलना कोइपर फरज नहीं हे किंतु विद्वान सत्य वक्ता ओर योग्य राजपुरुष या लायक राजाको तो यह फरज हे के ऐसी निक्रष्ट रूढियोंका प्रचार ही न होने दे वे और रिवाज होगया होतो नष्ट भ्रष्ट करनेका जलदी उपाय ले, नहीं तो व्यसनी, इंद्रि आसक्त और स्वार्थी मनुष्य बल पाकर किसी रूढीको द्रढ कर<sup>े</sup> देंगे फेर उसका निकालना कठिन पड जाता है.

> दोहा-सुन देखे अनुभव करे, बुद्धि युक्ति कर पाय, जैसी जाकी बुद्धिहै, वेसी कहे सुनाय, हंस नीर और छीरमें, कर वियोग पयपीत, सत्या सत्यके शोध में, सत्य लेत मनजीत.

> > हितेच्छु— स्वा. आत्मानंदजी.

#### नं. २२

#### पंडित बाळाजी विष्ठल गावसकरनो अभिप्रायः

To,

#### HIS HIGHNESS MOHAN DEVJI,

MAHARAJA OF DHARMPUR.

MAY IT PLEASE YOUR HIGHNESS,

That there are no bounds to my joy when a circular was put unto my hands so late as this morning from Pranjivan Jagjivan Medical officer by a friend of mine calling upon those who take interest in (अहिंसा) (Ahimsa) I have been throughout my life in search of Authority on the point and met unfortunately with none that could stand genuine altogether what I collected in the range of my researches proved to be totally spurious and I stand very able to refute anything that may be brought in vindication of हिसा on an intimation being sent to me by your Highness.

In these days of Aryan degeneration it has been so dangerous by an uphill work to find the without of the obstenice and corrupted state of Aryan an Biglography. I confess it was my life long study to have ultimately to find that the Vedas prevent anything but fen and hence in these gloomy days I rejoice to see Your Highness in the place of your noble ancestors of solar race—the great Viswakarma Devjee and Ramchandra who made many sacrifices without common thing themselves to the abhorance of consumming animal life.

I beg leave to lay before Your Highness herewith two copies of a pamphlet named "Thoughts on Dasara" out of my several works bearing the subject. This pamphlet is particularly submitted to enlighten Your Highness on the absurdity and cruelty of ruthlessly killing of sheep goats and buffaloes throughout the country on the Dasara day; a high sin I implore God that personages like Your Highness may be convinced of and returned from to shed light in this land of Devas.

I further beg to call Your Highness's attention to my exhaustive work in Gujarathi with authorities and minute point and reasons named अहिंसा धर्मप्रकाश which is in the press and shortly will be out.

I beg to remain
Your Highness
Your Highness's most obedient servant
PANDIT BALAJI VITHL GAVASKAR,
Address c/o PRANJIVANDAS KANDRAM,
BOMBAY.

# पशुवध निषेध. भाग २ जो

## पशुवधनिषेध.

भाग २ जो.

नं. ३

मुंबई वासी शास्त्री कहानजी जीवणरामनो अभिपाय.

राः राः प्राणजीवन जगजीवन मेहता चीफ मेडीकल आफीसर.

मु. धमपुर.

मुंबई बंदरथी छखनार गीरनारा काहानजी जीवनराम शर्मीनी आशीश वांचशो.

ता. २३ मी सप्तेम्बर सने १८९४ ने रवीवारना गुजराती पत्रमां तमारा तरफथी जे हिंसा बाबतनुं लखाण प्रश्नरुपे छपायुं छे ते चर्चापत्र अमारा वाचवामां आवतां हवे हुं आ हिंदनी स्थिति सारी हालतमां आववी जोईए एवी आशा राखी अति हर्ष सहित यथा शक्ति तमारा प्रश्नोना उत्तर लखवा शरु करुं छुं.

तमारा तरफथी जे सात प्रश्न करवामां आव्या छे ते जीव हिंसा करवी के नकरवी ? करवीतों कोने करवी ? अने ते कया वजनदार शास्त्रमां रुखेलुं छे ? आ विषय उपर सघळुं छुखाण छे तेनो खुलासो नीचे प्रमाणे.

प्रथमतो उपरना प्रश्नोनो जिज्ञास कोणछे? अने तेनुं खरुं कर्तव्य शास्त्रोमा शुं छे? अने ते शुं कहेवायछे? तेनो खुलासो कर्याथी खरुं कर्म स्वच्छ जणाशे. तो उपरना सवालना जिश्चास महाराजा पोतेज छे. ज्यारे हिंदु राजा क्षत्रिय तरीके शास्त्रमां लेखायछे त्यारे क्षत्रिओने पण वेदमां द्विज कह्याछे. ने ब्राह्मण, क्षत्रिय अने वैश्य ए त्रण जाति द्विज कहेवायछे तेने माटे नीचे प्रमाणे मनु भगवान् कहेछे.

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः॥ चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्तितु पंचमः॥१॥

मनुस्मृति अ. १०.

अर्थ — ब्राह्मण, क्षत्रिय अने वैश्य ए त्रणने द्विज अथवा द्विजातिय वर्ण कहेछे एटले जेने वे जन्म छे एवा कहेछे, चोथी शूद्र जातिने एकजात केहे छे एटले तेने एकवार जन्म छे, पांचमावर्ण नथी.

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्चेति वर्णाश्चत्वारः ॥ १ ॥ त्रेषामाद्याद्विजातयस्त्रयः ॥

विष्णस्मृति अ. २ जो.

अर्थ—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्र एम चार वर्ण छे तेमांना पेला त्रण दिज छे. हवे द्विजना त्रण जन्म छे ते नीचे लक्षुं छुं.

#### मातुरप्रेऽधिजननं द्वितीयं मोंजिबंधने ॥ तृतीयं यज्ञदीक्षायां द्विजस्य श्रुतिचोदनात् ॥ १ ॥ मनुस्मृति अ. २ जो.

अर्थ-पोतानी माता थकी थएलो जे जन्म ते पहेलो जन्म. उपनयन [ जनोई ] संस्कारथी थएलो ते बीजो जन्म. अने यह दीक्षा लीधा पछी थएलो जे जन्म, ते त्रीजो जन्म. एवं श्रुतिनुं प्रमाण छे.—त्यारे हवे उपनयन संस्कार थया बाद द्विजने माटे श्रीवेद-मगवाने सा प्रमाणें कहां छे. ॥ अहरहःसंध्यामुपासीत ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ए त्रण वर्णीए नित्य संध्यादिक कर्म करवुं जोईए.—ए मंत्रथी एमज आज्ञा करी छे, माटे वेदोक्त नित्य कर्म करवामां त्रणे वर्णे प्रमाद करवो नहीं जोईए.

#### अकृत्वा वैदिकं नित्यं प्रत्यवायी भवेन्नरः ॥

वेदप्रतिपादित संध्यावंदनादिक नित्यकर्म नहि करवाथी द्विज पापरूप दोषने पामे छे, ए श्रुतिमां नित्यकर्म नहीं करनारने पापना भागी कह्या छे. ए सर्वदा स्मरणमां राखवुं जोईए के जे संध्यादिक कर्मी नथी करतो तेने शूद्र समान जाणवो.—भगवान मनु कहे छे.

## न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम् ॥ सशूद्रवह्रहिष्कार्यः सर्वंस्माद् द्विजकर्मणः ॥ १०३॥

मनुस्मृति अ. २.

अर्थ-जे द्विज प्रांत:कालमी संध्याने उमी रहीने करतो नथी, अहीं संध्या ए शब्दथी गायत्री जाणनी कारण के,---

## पूर्वा संध्यां न तिष्ठेत सावित्री मर्कदर्शनात्॥

इत्यादि मनुनुं वचन छे, अने बेसीने सायंकालनी संध्या करतो नथी तेने शृद्धना जेवो गणीने ब्राह्मण, क्षत्रिय ने वैश्यना सर्व कर्मथी दूर करी ज्ञाति बहार करवो, अने पशुना सरखो जाणी सत्कार न करवो.

अन्य स्मृतिओए पण ए विषेना संबंधमां एमज कहां छे के,---

श्रोतंचापितथास्मार्तं, कर्मालंड्य वसेद्द्रिजः॥ तदिहीनः पतत्येव, ह्यालंवरिहतांधवत्॥१॥ एकाहं जपहीनस्तु संध्याहीनो दिनत्रयं॥ द्वादशाहमनिमस्तु शूद्रएव न संशयः॥२॥ तस्मान्न लंघयेत् संध्यां सायं प्रातः समाहितः॥ उद्धंघयति यो मोहात् सयाति नरकं ध्रुवम्॥३॥

भावार्थ—श्रुतिए तथा स्मृतिए कहें नित्य कर्मोनो आश्रय करीने द्विजे रहेवुं अने ते नित्य कर्मी विना द्विज अवश्य अधोगामी थायछे. जेमके लाकडी विगेरेना आलंबन विनानो आंधळो पुरुष खाडामां पडेछे तेम. ॥ १ ॥ जे द्विज एक दिवस पर्यंत जपरहितछे त्रण दिवस पर्यंत संध्या रहितछे अने बार दिवसपर्यंत अग्निमां होम कर्याविनानोछे ते द्विज शृद्धज छे एमा संशय नथी ॥ २ ॥ संध्यानुं उल्लंबन करवाथी द्विज शृद्ध भावने पामछे, माटे द्विजे कदापि पण उल्लंघन न करतां सायंकाळमां तथा प्रातः काळमां सावधान थईने संध्या वंदन करवुं. जे द्विज प्रमादथी ते संध्यानो परित्याग करछे ते द्विज निश्चय नरकने पामछे ॥ ३ ॥

वळी गायत्री जपविषे श्री मनुभगवान् नीचे प्रमाणे कहेल. मनुस्मृति अध्याय बीजो.

सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य बहिरेतिश्चिकं द्विजः।
महतोऽप्येनसो मासात्वचेवाहि विमुच्यते ॥ ७९ ॥
एतदची विप्रयुक्तः कालेच क्रियया स्वया।
ब्रह्मक्षत्रियविदयोनि गर्हणां कति साधुषु ॥ ८० ॥

अर्थ — जे द्विज संघ्या वेळा सिवाय बीजा काळमा बहारजई ओंकार तथा त्रण व्याहती सहित गायत्रीनो छ हजारवार जप करे तो ते कांचळीमांथी सर्पनी पेठे महापातक-

मांथी एक मासमां छूटो थायछे. ।। ७९ ॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय अने वैश्यमांथी जे कोई गायत्रीनो जप त्याग करेछे; अने यथाकाले पोतानी क्रिया करतो नथी तेनी सारा माणसोमां निंदा थायछे माटे गायत्रीजप अने स्वकर्मनो त्याग कदापि करवो नहि ॥ ८७ ॥

प्रमादथी संघ्या वंदनादि करता नथी तेनी गति श्रीमरीचिरुषि नीचे प्रमाणे कहेके.

#### संध्या येन न विज्ञाता संध्या येनानुपासिता। जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वाचाभिजायते॥

भावार्थ—जे द्विजे संध्या जाणी नथी अने संध्यानी उपासना करी नथी ते द्विजने जीवतां शृद्ध जाणवो अने मुआपछी ते कूतरो थायछे. श्री दक्ष नीचेना श्लोकथी कहेछेके संघ्या वगरनो द्विज सर्व धार्मिक कर्ममां काम आवतो नथी.

## संध्या हीनोऽशुचिनित्य मनर्हः सर्वकर्मसु । यदन्यत्कुरुते कर्म, न तस्य फलभाग् भवेत् ॥

भावार्थ — जे द्विज संध्याहीन छे, ते नित्य अपवित्र छे. तेथी सर्व कर्ममां ते द्विज काम भावतो नथी ने ते बीजुं धर्म संबंधी काई काम करे तो तेनुं फल ते द्विजने काई मळतुं नथी.

हवे उपरना श्लोकोथी एवा भावार्थ खुलो समजारो के, सर्व द्विजने उपनयन संस्कार तो अवस्य थवो जोईए. त्यार पछी संध्यावन्दन।दिक होम अने गायत्रीनो जप यथाविधि करवो जोईए. अने जेओ प्रमादथी करी शकता नथी तेओ अशुद्धभावने पामी नरकमां पडेछे. माटे पोतणेताना अधिकार प्रमाणे दिजे कर्म अवस्य करवां ते बहुज उत्तम कहेवाय छे.

छडा श्लोकमां एवं कहेवामां आंवेल छे के, गायत्री महापातकमांथी मुक्त करे छे. त्यारे गायत्रीनो अर्थ तथा तेना मंत्रनो अर्थ जाणवा जोईए. गायत्री एटले गाय+त्री=गानार यथा-विधि जप करनार, ने त्रीनाम पापथी तारे छे माटे ते गायत्री कहेवाय छे. अने तेना मंत्रनो भावार्थ एवा छे के आ लोक तथा परलोकना जे प्रकाश करनार एवा जे ब्रह्ममयी सूर्य, ते अमारी बुद्धिने धर्म, अर्थ काम अने मोक्षमां प्रेरेछे, कारण के हे सूर्य ! अमो तमारुं निरंतर ध्यान करीए छीए. माटे अमारा आ जगतने विशे कयां कयां कर्तव्य अमारे करवानो अधिकार छे ते बतावो. त्यारे जेम सोय पासे चमकपाण धरवाथी जेम पोतानी मेलेज सोय खेंचाई चमकपाणने चोटे छे. तेमज आ गायत्री जप तथा संध्यावंदनादि कर्म करवाथी अंतःकरणनी शुद्धि थाय छे, त्यारेज धर्ममां अंतःकरण प्रवर्ते छे, अने तथा अर्थ शुं निर्यो. साधवो, तथा काम शुं करबुं तेवा सूक्ष्म विचार कर्याशिवाय सूक्षमञ्चान पण थतुं निर्यो.

भने सूक्ष्मज्ञान उपर ध्यान आप्या वगर धर्म, अर्थ, काम न जणाय तो मोक्षपद तो क्यांथीज मळे. आजकालना द्विजो पोतपोतानुं खरू कर्तव्य पण जाणता नथी, कारण के उपदेशक जे ब्राह्मण छे ते पण विद्यारहित धई गया. आम थवानुं कारण एटलुंज छे के पूर्वे ब्राह्मण छोकोनों निर्वाह राजा के पोताना यजमान चलावता हता त्यारे ब्राह्मणों एक स्थले बेसी तमाम धर्मशास्त्र भणीने जिज्ञासुओने घटतो बोध आपता. तेज प्रमाणें क्षात्रिय, वैश्य, शुद्ध पोतपोताना धर्ममां प्रवर्तता हता. अने ते दिवस केवा सुखी हता ते पुरातनी इतिहासो वांच-वार्थी मालम पडशे तेमां मुख्य करी आहारना पदार्थीमां फरक थयों ते नीचे प्रमाणे श्लोकथी कहेवामां आवे छे—गीतानो अध्याय १७ मो.

#### कच्चाम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरुक्षविदाहिनः। आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः॥९॥

शब्दार्थ-( अति ) कडवा, खारा, खाटा, उना तीखा छ्खा अने दाह करनार तथा दुःख शोक अने रोगने करनारा एवा जे आहारो ते राजस कहेवायछे. आ उपरना आहारोनुं बहुज सूक्ष्म ( घणाज थोडा ) पणे प्रहण करवुं जोइए. तेना बदलामां अतिशय हृद उपरांत खावा लाग्या, त्यारे वीर्थ अति उष्णता पामी गयुं जेथी भोग वासना वधी जेथी शरीरमांनी नांडी जड थई पडी अने स्वच्छ अन्तःकरण हतुं ते बंध थई गयुं. अने जे ज्ञानइन्द्रिय हती ते कर्मेंद्रियने ताबे थई तेथी शरीरमां कुद्रते चैतन्यनो घटाडो थयो अने उंघ आलसमां वधारों थयो जेथी स्वधर्म कर्ममां अभाव आवी पहोंच्यों ने प्रमादशी कर्मनो लोप करी नांख्यो. जेवुं धर्मरुपी तुंबडुं भवसागर तरवानुं हाथमांथी गयुं के तरत तमोगुणरुपी मोजाओए ते प्राणिने घेरी लीघो ने अहींथी तहीं अथडावा मांडयो. जेथी पोतानुं रारीर पोताना हाथमां रह्यं नहिं. एटले सात्विकवृति, संतोष पणुं, अद्रोह, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, क्षमा, दया, विगेरे जे **भा शरीरने सुख उपजावनार साधनो तेनो नाश थयो.** एटले संतोष वृत्तिथी रहित मन विषय वासनामां अनेक प्रकारे अनेक स्त्रीओ आदिमां चोटवा लाग्युं. जुठापणुं, अनहद द्रव्य मेळववानी ईच्छा, दयाथी रहितपणुं, सुस्ती, मिध्या भाषण करवामां तथा स्वार्थ साधवामां मंड्या रहेवा पणं, अने अंतःकरणमांथी ईश्वरनो अभाव आववा लाग्यो, एटले मतलब ए के वखते **ईश्वरने बीजा छोकना देखतां संभारे**; ते छोकने देखाडवा माटे. त्यारे उपरना कहेवा प्रमा**णें** आहारमांथी पायरी उतरती जावामां आवे छे केमके धर्मसंबंधी ज्ञान तेनें कांई रहेतुं नथी. ु एटले स्त्री, द्रव्य अने खास पोतानी मतलब साधवामांज तत्पर थयो. एटले ज्यारे दुःख प्राप्त थाय त्यारे तामसी देवोनुं इष्ट करवा मांडे अने मानताओ करे, के '' मने अमुक वस्तु प्राप्त थाय तो अमुक देव [ भूत, प्रेत, पिशाच, मातृकादि विगेरे ] ने अमुक जातीनो जीव बलीदानमां आपीश, " आवी रीते मोहथी अन्ध थयेलो मनुष्य स्वकर्मनो त्याग करी [ वेदिविद्ध ] दुष्ट कर्मीमां प्रवृत्त थई जीवनी हिंसा करवा तैयार थाय छे. परंतु तेने ईस्वर तरफनो त्रास पण लागतो नथी अने ईश्वर संबंधी ज्ञान पण रहेतुं नथी. त्यारे तामसीवृति-वाला मनुष्य, नीच देवोनुं आराधन करी पाते अहिंसकना हिंसक बने छे अने अखाज खावा मांडे छे. अने तेओ कई गतिने पामे छे तेने माटे श्रीभगवान नीचेना श्लोकोथी कहे छे. गीता अध्याय १७ मी. श्लोक ४.

## भजन्ते सात्विका देवान् यक्षरक्षांसि राजसाः। प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः॥ ६॥

भावार्थ—जे जनो देवोने पूजे छे ते सालिक जाणवा. जेओ यक्ष ने राक्षसोने पूजे छे तेओ राजस जाणवा अने प्रेत-भूतना समूहने एटले के पिशाच तथा मातृकादि तथा भूतोना गण, जेवा के कालभैरव तथा महिषासुर विगेरेने पूजे छे ते पुरुषोने तामस जाणवा त्यारे तामस पुरुषो जेवा जे मनुष्य होय ते आहार केवा करे छे ? गीता अध्याय १७ श्लोक १०

#### यातयामं गतरसं पृतिपर्युषितंचयत् । उच्छिष्टमपिचामेध्यं भोजनं तामसित्रयम् ॥ १०॥

क्रब्दार्थ—अर्ध पानेलुं रसविनानं दुर्गैधीवालुं [ एक रात जवार्था ] टाढुं एठुं बने बळी यज्ञने अयोग्य एवं जे मोजन ते तामसने प्रिय छे.

हवे एठुं एटले भोजन करी लीघा पर्छा ते भोजन पात्रामां शेष रहेलुं यज्ञने अयोग्य एवं डुंगली, लशन, गाजर, मांस, मत्सादि अपवित्र वस्तुओ "पर्युषितंच" एमांना चकारंथी अत्यंत दुष्टपणाथी प्रसिद्ध बीजा आहारोनुं पण प्रहण करवुं. अपिच एमांना चकारंथी वैदक-शास्त्रमां कहेला अपथ्य आहारोनुं पण प्रहण करवुं. आ तामस आहार कहेवाय छे. तेनो सालिक पुरुषोए अत्यन्त दूरथी परित्याग करवो योग्य छे.

अने नीचेना श्लोकथी तामसनां कर्म कहे छे.

गीता अध्याय १८ श्रा. २५

## अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्यं च पौरुषं । मोहादारभते कर्म यत्तत् तामसमुच्यते ॥ २५ ॥

अर्थ-अनुबंधने क्षयने हिसाने तथा पौरुषने ने विचारीने मोहथी जे कर्म आरंभाय के ते तामस कहेवाय के ॥ १६॥

हवें धर्मशास्त्रथी रहित थई जाय के तेनुं कहे छे, गीता अध्याय १६ श्लोक ७.

## प्रवृत्तिंच निवृत्तिंच जना न विदुरासुराः। न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते॥ ७॥

भावार्थ—आसुरजनो शास्त्रे कह्या मुजब धर्म तथा अधर्मने जाणता नथी तेथी तेमां शौच आचार के सत्य एमांनुं कांईपण रहेतुं नथी. हवे जेओ वेद विरुद्ध प्रवृत्ति एटले हिंसादिक कमों करे छे तेओ कई गतिने पामे छे ते कहेछे.

गीता अध्याय १६ श्लोक ९,

एतांदृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ॥ प्रभवंत्युयकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः॥ ९॥

भावार्थ-ए दृष्टिनो आश्रय करीने ते नष्टात्मा, अस्प बुद्धिवाला, उग्र कर्मवाला तथा प्राणीओना शत्रुओ, जगत्ना नाशने माटे न्याघ्र सर्पादिरुपे उत्पन्न थायछे.

टीका—तो उपर कहा प्रमाणे वेदवाक्योथी उलटा वर्ती शास्त्रनो परिस्माग करी हिंसादिक कर्मों करे छे, तो तेनो जन्म व्याघ्र सर्पादि जेवो धारण थाय छे. अने अस्प मृत्युने पामे छे.

हुने एज बीजा स्ठोकथी नीचे मुजब कहे छे.

मीता अध्याय १६. श्लोक १६.

अनेक चित्तविश्रांता मोहजालसमावृताः। प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्तिनरकेऽशुचौ ॥

भावार्थ अनेक प्रकारना चित्तना दुष्ट संकल्पथी विविध प्रकारना भ्रमने पामेला मोहरूपी जालमां अलि विंदायेला अने विषय भोगमां अत्यन्त आसक्त तेओ अपिकृत नरकमां पडे हो.

हवे दुष्ट कर्तव्योनां फलनुं एक क्षोक्या विवेचन करी भा विषय सम्पूर्ण करवामां आवे छे ।। श्लोक १९॥

> तानहं द्विषतःकर्रान् संसारेषु नराधमान् । क्षिपाम्यजस्त्रमशुभानासुरीष्वेवयोनिषु ॥ १९ ॥

अर्थ-देष करनारा, क्रूर, नरोमां अधम, निरंतर अशुभ कर्म करनारा तेओने हुं नरके जवाना मार्गमां फेंकुंद्धं. त्यार पछी अत्यंत क्रूरयोनिमां नाखुं छुं.

हवें उपर जे श्लोक लखवामां आव्या तेनुं प्रमाण एवुं छे जे वगर विचारे [एटले शास्त्रना ज्ञान वगर ] पूर्वे जे जे लोको जेवा हिंसादिक कर्मो करी गया ते जोइ कोई पण पुरुषोए शास्त्रविरुद्ध वर्तवुं ते महापाप छे वळी जो देवनिमित्ते हिंसादि कर्मो करवामां आवे छे तो देव काई हिंसक नथी कारण के ईश्वर केवो छे ते जाणवुं जोईए तो श्रीपातंजलमुनि पोताना पातंजळ योगदर्शन समाधिपादना २४ मां सूत्रमां नीचे प्रमाणे कहे छे—

## क्केशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टपुरुषविशेष ईइवरः॥

भावार्थ — क्रेश कर्म विपाक अने वासनाना संस्कारथी त्रण कालमां रहित जे पुरुष विशेष ते ईश्वर. योगी पण काळे ईश्वर थाय छे; कारण के ते पण ईश्वर जेवांज चिन्ह धारण करी वर्ते छे. वळी ईश्वर जगतमां कोनाथी अधिक छे तेनो खुलाशो नीचेना श्लोकथी याय छे. पातंजलियोगदर्शन समाधिपाद ॥ श्लोक ॥ १६॥

#### सएव पूर्वेषामपिगुरुः कालेनानवच्छेदात्॥

भावार्थ — ते ईश्वर ब्रह्मादि जे पूर्व पुरुष तेना पण गुरु छे कारण के तेनी अवस्था काल्यी परिमित नथी; त्यारे झीणो विचार करी जोईए तो आ सृष्टि ब्रह्माथी उत्पन्न थएळी बणाय छे. अने तेनी अंदर सर्व देवो प्राणी आदिओ वसे छे. तो ते बधा ईश्वर थकीज उत्पन्न थवा जोईए. त्यारे तेनो नाश पण काले ईश्वरथी थायछे. त्यारे देवो स्वतंत्र नथी अने परतंत्र छे. ज्यारे परतंत्र छे; तो उपरी [ईश्वर] नी फरजो उपाडवानी जरूर छे. अने तेम न करे तो गुनेगार तरीके गणाय. हवे देवदशा कोने प्राप्त थाय छे! ते केम आवी! तेनुं वर्णन नीचेना श्लोकथी कहेवामां आवे छे.

गीता अ. छठो. श्लोक ४१ मो.

#### प्राप्य पुण्य कृतां होकानुषित्वा शाश्वताः समाः ॥ श्रुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥ ४१ ॥

भावार्य—योगर्था चलायमान थएलो योगी, पुण्यवान लोकोने प्राप्त थवानो जे लोक ते लोकने पामीने त्यां घणा कालपर्यत वसी पर्छा पवित्र पैसादारना घरमां जन्म पामे छे.

टीका—सर्व कर्मने ईश्वरने अर्पण करी योगाभ्यासमां जोडायेला पुरुषनुं योगनी सिद्धिय पहोंच्या पहेलांज शरीर छूटी जाय तो अभ्यासनी शिथिलता के तीव्रतानुसार तेने विताले भोगनी के वैराग्यनी वासना सुरे छे. जे योगश्रष्टने मृत्युकाले भोगनी वासना

सुरे छे, ते अश्वमेधादिक यज्ञ करनाराओंने प्राप्त थनारा ब्रह्मलोकमां जाय छे. अर्थात् अभ्यासनी तारतम्यता प्रमाणे स्वर्गलोक, महलाक, जनलोकने पामी त्यां घणा समय सुधी निवास करी, शुद्ध मा-बापथी उत्पन्न थएला पवित्र आचरणवाला धनवान् गृहस्थने त्यां के राजाने त्यां जन्म पामे छे.

त्यारे योगथी शुं धायछे तेनुं वर्णन थायछे.

पातंजली योग समाधि ॥ श्लोक २८ ॥

## योगांगानुष्टानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः॥ २८॥

भावार्थ—योगनां अंगनुं अनुष्ठान करवार्था अञ्चाद्धिनो क्षय थये विवेक स्याति सुधी ज्ञाननो प्रकाश थाय छे

#### यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणा ध्यानसमाधयोऽष्टांगानि ॥

भावार्थ—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, अने समाधि ए योगनां आठ अंगो छे.

हवे एम कोने कहे छे अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः

टीका-अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अर्ने अपरिग्रह ए यम छे.

#### ३० पातंजिलयोगसमाधि ३१

#### जातिदेशकालसमयानवच्छित्राः सार्वभौमा महावतम् ॥

टीका-जाति, देश, काळ अने समयथी ते एमनो भंग न थतां जो सर्व अवस्थामां ते सुस्थिर रहे तो ते महाबत कहेवाय छे॥ ३१॥

त्यारे सर्व कोईए श्रीसद्वरु पासेथी योग जाणवानी आवश्यकता अवश्य राखवी. हवे आ उपरथी पण प्रत्यक्ष जणाय छे के देवो पण एक प्राणीतुल्य हता अने महातपथी योग करी देवनी पदवी पाम्या तो देवोने पण अहिंसक थवुं जोईए; कारण के तेमने पण तप साध-वानी जरूर पड़ी. त्यारे तपनुं अंग ते अहिंसक थवुं ते छे. ते उपर यमना प्रकरणमां कहेवायुं छे; त्यारे देवो पोतानुं महत्वपणुं छोड़ी दई हिंसामां चित्त राखी मूढ़योनि प्राप्त थवा आशा राखे नहिं. तेम देवोनुं ज्ञान कांई मनुष्यना जेवुं नथी; पण तेने त्रण काळनुं ज्ञान छे. ते आगळना जन्मने देखे छे. माटे दुष्टकर्मनी इच्छा देवता करता नथी; पण तेनुं खहं कर्तव्य छे तेज करे छे. एटले जगत्ना हितने माटे अंतरिक्ष रही उत्तम प्रकारना ज जिव मनुष्यो तेनी रक्षा करे छे. तेनुं कारण एटलुंज के मनुष्यो पोते धर्मशाख्नमां कहेणां करी करी मोक्षपदने पामशे; त्यारे तेनी गणना ईश्वरतुत्य थशे. ते उपरथी तेमनुं मछं

करवामां अमारे पण कंई श्रेय छे एम विचारी तेने अन्तारेक्षणी थता विन्नो दूर करे छे. तेना बदलामां मनुष्ये [दिजे] वेदशास्त्रना मंत्रसहित दरेक देवनुं पूजन करवुं. अने पूप-दीप अने नैवेद्य अर्पण करवां ते दरेक दिजनुं कर्तन्य छे. परन्तु अन्य देवोनुं उपासनः न करवुं. साथी के तेम करवाणी मोक्ष नथी मळतो पण वारंवार अवतार धारण करवा पडे छे. वास्ते विद्वान् पुरुषे हिंसानो अवश्य त्याग करवो, अने वगर समजे जे हिंसाथी देवनिमित्त कर्मों करे छे ते देव अने कर्म करनारा बंने पाप मागी थई नुकशानीने पामे छे. जेम के रामकथामां एक प्रत्यक्ष प्रमाण छे. जेम राम लक्ष्मणने अहिरावण तथा महिरावण पाताळमां हरी गया अने वगर समजे देवीने हिंसक बलीदान देवानुं शर्ड कर्यु हतुं तो ते महिरावणना अकृत्यनुं पाप देवीने पण सहन करवुं पड्युं. केम के हनुमानजी देवीने पातालमां दाबी तेनी जग्यापर बेठा ने महिरावण जेवा महापराक्रमी पुरुषनो पण नाश थई गयो. पण अगाउथीज विचार करी हिंसादि कर्म न कर्युं होत तो विभीषण जेवी उत्तम गतिने पामी जात. माटेज पापरूपी तलीया वगरना नावमां जे कोई बेसे तो पछी भले देव होय के दानव अथवा रंक के राजा होय तो पण अकाळ मृत्युने तरतज पामे छे. माटे पुण्यरूपी नावमां बेसी स्वकर्मरूपी हलेसाथी हंकारवा मांडो तो भवसागररूपी समुद्र सहज तराय छे.

द्विजनुं खरुं कर्म नीचे प्रमाणे जणाववामां आवे छे.

मीता अ. १७ मो.

#### तदित्यनभिसंघाय, फलं यज्ञतपःक्रियाः । दानक्रियाश्च विविधा, क्रियन्ते मोक्षकांक्षिभिः ॥ २५॥

भावार्थ—मोक्षने इच्छनाराओए तत् ए शब्दनुं उच्चारण करीने फळनी इच्छा नः राखी यञ्च अने तपरूप कियाओ तथा जूदा जूदा प्रकारनी दान कियाओ कराय छे.

हवे तप केवी रीते कर्वु.

गीता अ. १७ श्लोक १९.

## देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शोचमार्जवम् । ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते॥ १६॥

अर्थ देव, द्विज, गुरु, अने प्राज्ञनुं पूजन, शरीरनी प्रवित्रता, सरळता आर्च अर्के अहिंसा [ ए सर्व ] शरीरसंबंधी तप कहेवाय छे.

हीं वृत्ति केनी राखवी, ते विषे श्रीभगवान् कह छे.

मीता अ. १२ मो.

## यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नो द्विजते च यः। हर्पामर्पभयोद्देगे मुक्तो यः स च मे प्रियः॥ १६॥

शब्दार्थ जेनाथी कोई पण प्राणी उद्देग पामतुं नथी. तथा जे कोई प्राणीथी उद्देग पामतो नथी अने हर्ष अदेखाई भय अने उद्देमथी मुक्त ते मारो प्रिय.

अने कर्म केवा आचरवा ते विषे.

गीता अ. १६

अभयं सत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः । दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाधायस्तप आर्जवम् ॥ १ ॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शांतिरपेशुनम् । दया भूतेष्वलोल्यत्वं मार्दवं न्हीरचापलम् ॥ २ ॥ तेजः क्षमा धृतिः शोचमद्रोहो नातिमानिता। भवन्ति संपदं देवीमभिजातस्यभारत ॥ ३ ॥

भावार्थ—उपरना त्रण श्लोकथी एवो अर्थ थायछे के अभय, अन्तःकरणनी शुद्धि, ज्ञान, अने योगमां स्थिति, दान, अने इन्द्रियनो निग्रह, तथा यज्ञ, अने स्वाध्याय, तप, सरकता ॥ १ ॥ अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, अपैशुन, भूतोमां दया, छछुता न थवी, मार्दव, अकार्यमां लोक लज्जा, अचलपणुं ॥२॥ तेज, क्षमा, धीरज, पवित्रता, अद्रोह, अत्यन्त लघुपणानी भावना, सत्य गुणवाली लक्ष्मी [दैवी] ए तमाम पामीने अंते मोक्ष पामे छे ॥ ३ ॥

हवे क्षत्रियोने उपरना धार्मिक कर्मी उपरान्त लौकिक स्वकर्म नीचे प्रमाणे छे.

गीता अ. १८ मो श्लोक ४३

## शोर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् । दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥ ४३ ॥

अर्थ—शौर्य, तेज, धीरज, चतुराई, ने युद्धमां न नासनुं, दान तथा ईश्वर उपर

वीका—शौर्य-अत्यन्त बलवान पुरुषोने पण प्रहार करवामां प्रवृत्ति. परात्रम—तेज शत्रुओथी अपराभवपणुं-प्रागरूम्य. धृति—महान विपत्तिमां देह होय तो पण इन्द्रियोने अव्या-कुल राखवी. चतुराई—अचानक आवी पढेलां कार्योमां पण मोहथी रहित जे प्रवृत्ति ते अपलायन—महान्शस्त्रोनो प्रहार थया छतां पण पाछां न हठवुं ते. दान—संकोचथी रहित थई सुवर्णादिक धन ब्राह्मणादिने आपवुं ते. ईश्वरभावना—प्रजानुं पालन करवा माटे पोताना मृत्यादिक आगळ पोतानी प्रभुशक्ति प्रगट करवी ते. अथवा शास्त्रनिषिद्ध मार्गमां प्रवृत्त यनारां प्राणीओंनुं नियमन करवानी शक्ति. ए स्वभावथी रजोंगुण प्रधान तथा सत्वगुणथी गौण एवा स्वभाव तथा कर्म क्षत्रिना छे.

उपरनां स्वकर्म धारण करी हिंसादि कर्मथी रहित थवुं. एवो भगारो संपूर्ण मत छे. हालमां केटलाक विषयो बहार पाडवानी जरूर छे. पण बीजे प्रसंगे पाडीश. भावी शंकाओ इत्पन्न करी स्वकर्म जाणी लेवा विद्वान् प्रत्ये अवस्य प्रश्नो करवां.

अमो बहारगाम गया हता जेथी बहुज थोडी मुदत रही त्यारे बहारगामथी आवंडु धयुं अने छखतां दशरानो दिवस नजीक आव्यो. तेथी आ छखाणने जेम बने तेम उप-योगमां छई एक पण जीवने कशी वातनुं नुकशान न पहोंचवुं जोईए. आमां शंका थाय तो जछदी नीचेना शिरनामाथी छखी जणाववुं. बीजुं आ छखाण वांची तुरत पाछुं मोकछावछं अने तेणे हृदयने केटछीक असर करी छे, ते संतोषकारक छखशो. बीजुं आ छखाणथी प्रंथ उत्पन्न करवा छे, अने आवी नकछ बीछकुछ नथी माटे तुरत पाछुं पहोंचतुं थवुं जोइए. आनो प्रंथ तमोने वधारो करी मोकळावशुं. आ साथे प्रंथ वे मोकल्या छे. ते संभाळी छेशो. उपनयन मीमांसा तथा मानव कर्तव्य पहोंचेथी पत्र छखवो. अशुद्धने शुद्ध करीने वांचबुं. उतावळथी छखेछ छे.

ठे० गीरनारा कानजी जीवणशर्मा बारभयाना मोल्लामां नागदेवीपासे पंजाबी मोरलीधर ओधवजीना माळामां.

## नं॰ २

## [आर्यसमाजवाला मि. सेवकलाल करसनदासनो आभिप्रायः

#### रा. रा. प्राणजीवन जगजीवन महेता.

चीफ मेडीकल ओफीसर.

संस्थान धर्मपुर.

#### त्रियतम महाशय, नमस्ते ।।

भापनी तरफथी आपना राजासाहेब नामदार महाराणा श्री मोहनदेवजी महाराजनी इच्छा सम्पूर्ण करवामाटे बढेव अने दशराने दिवसे जे पशुवध थाय छे; तेनो निर्णय करवा माटे जे छपायेछा प्रश्नो बहार पड्या हता; तेनी एक नकछ अमने रा. रा. माकुभाई घेछाभाई तरफथी तेनो प्रत्युत्तर मेळववा माटे मछी हती, तेनो नीचे छखेछो जवाब आपना तरफ रवाना करवामां आवेछे अने अमने उमेद छे के तेनो घटतो उपयोग थशे. सुझने वधारे शुं छखवुं.

हुं छुं आपनो

#### कृपाकांक्षी- सेवकलाल करशनदास,

#### देवदेवीने भोग आपवा निमित्ते थता पद्मुवध संबन्धी विचार.

आर्योमां गुर्ण कर्म परत्वे चार आश्रम अने चार वर्ण बंधायेला छे. अने तेथी पण नीच स्थितिने पामेला मनुष्योने 'दस्यु ' कहेता हता तेओना पण घणा भेदो थया छे, जेनुं सविस्तर वर्णन करवानी अहिं कांई अपेक्षा नथी.

केमके सांप्रत सृष्टिनो आरंभ थयो त्यारे प्रथम सघळी ब्राह्मी सृष्टी हती; एवं आपणा पूर्व ऋषिओनुं मानवुं छे. अने ते सत्व प्रधानी ब्राह्मण वर्णमांथी जेओ राजस गुणने प्राप्त थया ते क्षित्रिय कहेवाया; तेमांथी जेओ भीरु नीकल्या ते वैश्य थया अने तेथी जे जडमित थया तेने सेवा योग्य समजी शृद्धमां गण्या अने उत्तरोत्तर छेक म्लेच्छ सुधी परिगणना करेली छे.

ते क्रमथी पुनः चढता अने क्रमथी पुनः उतरता अने ते थवाना कालनो निर्णय युगादि गोठवणथी बांधेलो जणाय छे. तेथी जदा जूदा युगोमां कोईवार सत्व प्रधान, कोई-वार राजस प्रधान अने कोईवार तामस प्रधान प्रकृतिनो मोटो भाग मनुष्योनो थतो हतो. तेओ जेम संसर्ग अने आहार विहारना दोषथी उत्तरोत्तर उत्तरता जता हता तमज संसर्ग गुणोना योगथी क्रमशः चढता पण जता हता, तेथी जुदा जुदा कालमां पोत पोतानी प्रकृ-

तिओनां अनुकूळ जुदां जुदां पुस्तको लख्नुयेलां होवाथी ते सघलां पुस्तको सामटा लई साम्प्रत कालनी स्थितिने बंधवेस्ता करवानी गोटवण करवी; ए नहिं बनी शकवा जेवुं प्रतीत थाय छे.

कमके जूदा जूदा कारुमां जूदी जूदी बाबतो उपर प्रकृति भेद थयेथी अने ते समयनी प्रकृति भेदनी ल्लामां ची खालाएं पुस्तको त्रण काळनी जूदीजूदी लागणीओने अबाध केम थई शके दे खुट कहितां एवा जूदा जूदा कालमां पुस्तको लखाई जूदा जूदा हजारो धर्ममतो आपणा देशमां उभराई गयाछे. केटलाक तो नष्ट थई गया के जेओना नामो सिद्धान्तोथीज आपणे जाणी शकीए छीए तेम केटलाक नवीन पण उत्पन्न थयाछे अने केटलाक आगला मतोनो धीरे धीरे नाश थतो जायछे.

तेवी स्थितिमां शुं धर्म? अने अधर्म? एनो निर्णय करवो, ए पठित धर्मजिज्ञासु दिजोने पण श्रमसाध्य थई पड्युं छे. तो पछी अपठित मोटा वर्ग माटे शुं कहेवुं? अने प्राचीन प्रंथोना पठितोमां पण मोटो भाग एकदेशी विद्वान होयछे अने ते वर्छी देशना प्रमाणमां धणी जुजमागज. अने तेमां वर्छी संबन्धे विचार करी निर्णय करनारा थोडाज. तेमाएछो मोटो भाग तो यजमान कहे तेम करे अने तेने राजी राखनारो अने आस्तिक बुद्धि रहित अने धनछोभी वा मिथ्यामानी तेओनो मोटो भाग गणायछे. अने केटलाक लोको तो ते माहेला तेओनी मन शक्ति खीलेकी न होवाथी पोते आडे रस्ते उतरी यजमानोमां पण पोते अधर्मने धर्म समजी जेम वर्ते छे तेमज धर्म प्रचार करवानी परवी करेछे. तो पछी यजमानो के जेओनो संस्कृत विद्यार्थी अञ्चात भाग तेओए धर्म क्रिक्य केम करवा ? ए एक मोटो सवाल उभो थायछे.

क्रेमके हाल सघला पंडितो तो कोई नहींतर कोई पण मध्य कालना नवीन मृतावलंबी होयछे. तथी जो बहुमते कोई धर्म विषय मानवामां आवे तो जे मतना घणा पंडितो होय ते मत स्वीकार थई जवानो भय रहेछे. तथी हाल जेओ घणा खरा धर्म जिज्ञासु छे; तेओने तो जो यथार्थ निर्णय करवो होय तो पोताने खुब अध्ययन करी जेजे विषय जाणी लेवानी इच्छा थाय ते पठन करी निश्चय करीलेवा जेवो समय आवी पहोंच्योछे.

ते छतां पण जो आपणे आपणने ईश्वरं बक्षेटी विचार शक्ति खीळावी जोईतो उपयोग करीए तो तेथी पण केटळेक अंशे आपणे आपणो अभीष्ट विषय जाणवाने शक्तिवान थई शकीए छीए. परन्तु तेम करवामां पांच प्रकारे परीक्षा करवानी अपेक्षा उमी थायछे.

तेमां प्रथम ईश्वर तेना गुण, कर्म, स्वभाव अने तेनी प्रेरित वेदविद्या जाणवी जोईए. केमके ईश्वर संबंधी ज्ञान थयाथी ते, तेने यथार्थ समजी तेनी उपसना करवा योग थई शक्ते तेथी दिजोने जनोई आपती वखते जे गायत्री मंत्रनो उपदेश करवामां आवेछे अने जे मंत्रनो सविस्तर अर्थ गोपथ ब्राह्मण नामना पुस्तकमां छे ते जो कोई सारा विद्वान् द्वाराए अवणकरे अने पछी उपनिषदादिमां माहितगार थाय तो शुं उपासनीयछे ? तेनो स्थाछ तुर्त

बावी शके छे. एटछंज नहीं परन्तु उत्तरीत्तर कर्म, उपासना अने ज्ञान ए त्रण कांडोनुं रहस्य समजायाथी कयां कर्मों मोक्षे प्रोचाडनार छे तेनो पण बोध थवाथी मजुष्य बन्मनी साफल्यता थायछे. वेदो तो घहुंनी कर्णांक जेवाछे. ते जेम सारा मनुष्यना हाथमां आवे तो तेनो जेम सारो पाक थायछे अने मूर्खना हाथथी बगडेछे तेम निद्धानो ते मंत्रमां समायछी प्रेरणाओ समजी तेनो सारो अर्थ उत्पन्न करेछे अने अज्ञो [ मूर्ख ] तेनो अर्थ पोतानी मतलब पार पाडवा माटे फावे तेम करेछे. तेथी वेदो एक एवी चीज ठरेछे के सारानेसारुं फल आपेछे अने माठाने माठुं फल आपेछे. समहं क्रयुं ने माठुं कर्युं फल छे! तेनो निर्णय पूर्वना मुनिओए करी मुकेलो छे. तेथी वेदार्थ करती वखते तेनां अंगो ने उपअंगोथी अविपरीत अर्थों जे निष्पन थता होय ते प्रहण करवा अने विपरीत अर्थनो त्याग करवा. एवे प्रकारे वेदार्थ जेजे आवे तेनो विचार करवाथी यथार्थ वेदार्थ छुं छे ते समजवाने पुरता साधनो छे.

तेम साथे सृष्टी क्रम पण जाणवो जोईए. केमके वेदार्थ करवामां साक्षीनी अपेक्षा उभी थायछे अने वेदोने आपणे ईश्वर प्रेरित स्वतः प्रमाण मानीए छीए. तो ईश्वरी सृष्टि विरुद्ध एमां कोई पण प्रकारनो बाध न होवो जोईए, तथी सृष्टिकमना जेजे नियमो जणायेछा छे; तथी विपरीत जो कोई वेदार्थ करवानो प्रयत्न करतो होय तो ते अमान्य थवो जोईए. केमके ईश्वरे सृष्टिकम विरुद्ध वेदोमां उपदेश कीधोछे, ए संभवतुं नथी.

तथा न्याय शास्त्र भणी वस्तु सिद्ध करवाने जे प्रमाणोनी योजनाओं तेमां समावेली छे, ते जांण्याथी कोई हेत्वाभास करी उलटानुं सुलटुं करी वेदार्थ समजाववानी प्रेरवी करे तो ते समजाई शकाय अने पोताना आत्माने सूक्ष्ममां सूक्ष्मविषय समजवाने योग करवा माटे प्रतिरोज संध्यावंदनादिक प्राणायाम कर्याथी आत्मा उन्नत पण थायछे अने शुद्धपण थायछे. त्यारे ते पोताना आत्माथी पण योग्यायोग्य समजवाने समर्थ थई शकेछे.

तथी उपला क्रमेथी जो विचार करवामां आवे तो धर्मना नामथी हाल जे गडबडा-ध्याय उभो थयो छे ते धीरे धीरे ओछो थतां आगल जतां मनुष्यमात्र पोतपोताना जन्मनु सार्थक करी राके तेवो संभव छे. बाकी पक्षपातिक वादविवादयी कंई फल उत्पन्न थई शकतुं नथी आवुं अमारुं मत छे.

ते छतां जो राजा महाराजाओ पोताना अने पोतानी रैयतना कल्याण माटे जूदा जूदा धर्म विषयो उपर " जेम हाल आपणा महाराणा साहेबे उपाड्यो छे तेम " जाहेर विचार मागवानी योजनाकरे अने सुज्ञ निरपेक्ष विद्वानोना अभिप्रायो भेला करी तेपर पोताना तरफथी उपसंहार लखावी जाहेरमां मूके अने जे निश्चय थयो होय ते आप्रह पूर्वक प्रहण करी अमलमां लावे तो तेमांथी आगल जतां सारां सुारां फलो धवाना संभवोछे.

अने एन धोरणथी आपणा महाराणा साहेन तरफथी बठेव दशरा वगैरे पर्वोपर पाडा, वकरा विगेरे प्राणीओनुं बळीदान एटळे तेओने मारी देव देवीओने ख़ुशी करवा माटे जे भोग आपवामां आवेछे; ते संबंधी रूढी अने धर्मशास्त्रनुं प्रमाण मेळववा माटे जे सात प्रश्नो वर्तमान पत्रोमां छपायेळाछे. ते प्रश्नोनी एक नकल अमने मळी छे. तेनो यथामती उत्तर आपवो योग्य समजी तेना जवानो अमो नीचे प्रमाणे ळखी आप तरफ खाना कर्या छे अने उमेद छेके आप अमारा प्रत्युत्तरो महाराणानी हजुरमां रज्ज करशो.

१ एवा प्रकारनी पशु हिंसा करवानी कोई शास्त्रमां आज्ञा नथी केमके शास्त्रशब्दपर विचार करतां आपणा पूर्व ऋषिमुनिओं वेदोनेज स्वतः प्रमाण मानता हता तथा साक्ष्यर्थ, वेदोना विज्ञानार्थ, अने आर्य इतिहासार्थ वेदना छ अंगो, चार उपवेद, षड्दर्शनो आदि आर्य प्रंथोने गौण प्रमाणमा मानता हता. जे वेदानुकूछ होय अर्थात् वेदोना प्रमाणर्थाज तेतुं प्रमाण थतुं हतुं तथी शास्त्रसंज्ञा वेदोनेज छागु पडछे अने बीजा आर्य प्रंथोनी उपशास्त्रमां गणना थायछे. तथी तेवा प्रंथोने सूत्र, दर्शन, स्मृति, आदि नामो आपेछां जोवामां आवेछे अने तथी तेओनुं एतुं मानवुं हतुं के "वेद प्रणिहित धर्म अने तथी विपरीतते अधर्म, एम मानता हता. मनुस्मृतिमां कह्युं छे के प्रत्यक्ष, अनुमान, अने शास्त्रविधि प्रकारना आगम त्रणेथी जे विदित थाय त्यारे धर्म शुद्ध कहेवाय, आर्य धर्मोपदेश वेदशास्त्रथी अविरोधि अने जेनो तर्कथी पण निर्णय थाय तेने धर्म जाणवो तथी एवा प्रकारनी पशु हिंसा ए पर्वपर करवी ते चारे वेदोना गृह्यसूत्रोमां के श्रीत्र सूत्रोमां नथी ने ब्राह्मण ग्रंथोमां 'तेनो अर्थ वाद, संज्ञा, गुण, के चिन्ह जणातां नथी.' तेम तर्कथी जोता एवा प्रकारे गरीव पशु ओने मारी कोई तुं पण अभीष्ट थवानो संभव नथी. तथी ए बलेव अने दशराने दिवशे जे पाडा अने बकरा मारवामां आवेछे ते अधर्म छे अने तेवां कर्म करतां करवार्य तेमां भाग लेनाराओने अवश्य पाप थशेज अने ए क्रिया वेदबाह्य होवाथी ते करवार्थी मनुष्य दोषी थायछे.

२ एवी एवी कियाओ संबन्धी ज्यारे ज्यारे इतिहासक दृष्टिए विचार करवामां आवेछे, त्यारे त्यारे विचार करतां वेद शास्त्रमांतो ते जणाती नथी. तथी ते क्रिया वैदिकनी नथी. परन्तु आसेरीयन, ईजीपशीयन, खाल्डीयन, आबीसीनीयन, मेजीयन, मांगोलीयन, जुलु वगैरे देशोना इतिहासोमां जोईए छीए. ते तेमज एवी एवी क्रियाओं के जे शाक्त वाम मार्गीओना प्रंथोमां तथा तंत्रमां जोवामां आवेछे, तेनी रूढी केटलाक देशोमां हज्जु सुधीमां जोवामां आवेछे अने तेनी हज्जु सुधी चीन, जापान, ब्रह्मदेश वगैरेमां आहिंसक बुद्ध धर्म मानता छतां एटली प्रवृत्ति छे के जेनी विरुद्ध कोई एक शब्द पण बोली शकतुं नथी; तेमज ए (सेमेटीक) तांत्रिक मार्ग आपणा देशमां वाम मार्गना नामथी गुप्त चालेछे. केटलीक आवी आवी कियाओ पण प्रसिद्ध थायछे. तथी एवा शास्त्रो आर्य लोकोमां मान्य कोईपण काले गणायां नथी ने गणाई शकतानां पण नथी.

रे वेद, वेदांग, उपांगोमां हिंसा करनाराओं तो कोई दिवस आ भवाव्यिमांथी छूटी मोक्ष पामी राकता नथी एवं स्पष्ट लखेलुं छे. तेथी आवे प्रकारे हिंसा करवी वा कराववी ते मनुष्य जन्मने। लाभ गमावी दीधा प्रमाणे ठेरेछ अने तेना करता करावता उत्तरात्तर नीचगतिने प्राप्त थायछे.

४ ए कियाज ज्यारे वेद शास्त्रमां गणाती नधी तो पछी राजा महाराजाने ए कर्तव्य क्यांथीज होय? अन एवी कियानी पूर्वे प्रवृतिज नहती त्यारे तेनो निषेध बल्वान् शास्त्रमां क्यांथी लखायेलो होय? एमां वंध्या प्रस्ति न्याय प्रमाण समज्ञ जोइए. जो प्रस्त थई होय तो वंध्या कहेवाय नहीं, केमके तेने वंध्या कहेवाने संभव नथी. तथी हिंसा करवामां जे सामान्य दोष वेदशास्त्रमां छ ते हिंसावालाने लागु पडेले. राजा महाराजाओने राजधर्म प्रमाणे न्यायथी जे रैयतने तेओना दोषो छाडाववा माटे शिक्षा करवी पडेले जेनी हद प्राणवध सुधी पहोंचे छे, तेवी हिंसाओ अने जंगली दुःष्ट पशुओथी पोतानी प्रजाने बचाववा माटे तेनो जे वध करवी पडेले, तेवी हिंसाओनी छूट मूकवाथी वेदोमां प्रेरेली तथी वैदिकी हिंसा हिंसा थती नथी ते वाक्योनो लाभ लई कटलेक ठेकाणे वेद मंत्रा पण वापरी वाम मार्गीओए धर्म शास्त्रथी अज्ञात मनुष्योने आडे मार्गे उतारी दीधा जणाय छे. अने तथी बलवान् शास्त्रनी आज्ञा त्रेले. माटे आवा प्रकारनी किया करवी तथी बलवान् शास्त्रनी आज्ञा त्रेले. माटे कावा प्रकारनी किया करवी तथी बलवान् शास्त्रनी आज्ञा मंगेले.

५ तेवा प्रकारनी हिंसानो जो महाराजा पोतानो धर्म समजी परित्याग करे अने पोतानी प्रज न बोध करावी ते छोडावे तो राजा अने प्रजाने कोई प्रकारनी आपित न आवतां धर्मवान् राजा कहेवाय अने प्रजानो जय थवानो संभवछे. एवी हिंसानो त्याग करवाथी अने कराववाथी बलवान् शास्त्रनी आज्ञा पालन करेली ठरेछे.

६ गृह्यसूत्रोमां बलेवने दिवसे करवाना उपाकर्मादि केटलाक कर्मी वर्णवेलां छे. ते करवाथी धर्मलाभ थायछे अने दशरानो दिवस क्षत्रिओने उत्सवनो होवाथी विशेष होमादि करी, बाह्मणनो यथाशक्ति सत्कार करी, अधारी आदि उत्साह जनक कार्यो करवामां वेद आज्ञानो कोई प्रकार भंग थतो नथी मात्र आवा प्रसंगे होमादि करी वाम मार्गीओनो विधि कर्याथी दोष प्राप्त थायछे.

७ पशु वध कर्या ने बदले तेना नाक कानने छेको मारवो ते वामी कियाने साचवी राखवानुं दोषनुं काम छे. जोके पथरा करता ईट नरम होय छे तेवुंछुं. तो पण ज्यारे बलवान् स्वतः प्रमःण वदशास्त्रमां एनो विधिज नथी तो पछी ए कर्मपण अयोग्य ठरेछे. तेथी तेवा अयोग्य कर्मनुं फल तमां थता वधता ओछा पापना प्रमाणमां भोगववुं पडशे.

हवे उपसंहारमां मारे आपने एटलीज विनंती करवी छे के अमारा उपला लखेलानो सारांश एटलोज नीकले छे के, वेदोमां एवां कर्मी करवानी विधि नथी अने वेदशास्त्र करतां हिंदुओमां कोई बलवान् शास्त्र नथी तेथी ए कर्मी करवानी जरुर नथी; एटलुंज नींह एण ते कर्याथी शास्त्र आज्ञा भंग कर्या बराबर गणायछे.

हालमां कोई पंडित वा विद्वान् आपने ए बाबत वेदमां विधिछे एवं बतावे तो आपे कृपा करी तेना प्रमाणमां बतावेला वेद मंत्रो जे होय अने ते एज विधिने लागु पडेछे, एवी साक्षी बताववा वेदोना अंगो उपांगोमांथी प्रमाण आपी ते मंत्रोनो अर्थ करी बतावे तो कृपा करी ते वर्तमान पत्रोमां आ प्रश्नो प्रमाणेज छपावी जाहेरमां विचार थवा माटे मूकवा के जेथी एमां सत्य असत्य शुं छे? ते जणाई आवे अने ते वचनो जो भूलो खवराववा माट कोईए खेंचताण करी अर्थान्तर करवाना हेतुथी वापरेलां होय तो तेनो पण रदीयो आपी शकाय.

प्रियमित्रवर! हुं क्षत्रिय जातिनो धर्मजिज्ञासु मनुष्य छुं अने ए बाबत जे मारा विचारमां सिद्ध थयेछुं ते में आ पत्रद्वाराए आपनी समक्ष रज्ञ कीधुं छे. तो पण हुं मानुष्यी धर्म एवो मानुं छुं के सत्य ग्रहण करवाने अने असत्यनो त्याग करवाने सर्व समज्ञ मनुष्ये तैयार रहेवुं जोईए. तेथी धर्म अधर्मना विचारमां हार जीतनी वात दूर मूकी सत्य ग्रहण करवानी निष्टा ज्यां सुधी प्रथम थती नथी त्यां सुधी सत्यासत्यनो निर्णय थई शकतो नथी तेथी प्रत्येक मनुष्ये खुछा दिल्थी ए बाबत लेवी जोईए अने ते लईनेज वाद विवाद कर्याथी फायदो थाय. परन्तु ए पहेलांना ने हालना पंडितोमां सर्वमान्य न होवाथी हुं आवा प्रकारना वादमांज उत्तरतो नथी; परन्तु एथी कांई फल निष्पत्र थशे एम मने जणायुं तेथी आ पत्र द्वाराए आपने परिश्रम आप्यो छे. ए क्षमा करशो अने कंई प्रमाण वेद मंत्रोनां ए क्रियानी पुष्टिमां आप तरफ आवेलां होय तो कृपा करी मने मोकलवानी कृपा करशो " सुन्नेषु किंबहुना"

क्रपाकांक्षी हुं छुं आपनो

सेवकलाल करसनदास.

## नं. ३.

श्री रेवा थियोसोफीकल सोसायटीनो अभिपाय.

में, रा. रा. प्राणजीवन जगजीवन मेहेता एम. डी. चीफ मेडीकल ओफीसर साहेब स्टेट, धर्मपुर.

सुद्ध महाश्य.

अमो अमारी सोसायटी तरफथी आपना अखंड प्रौढप्रताप करुणासागर महाराजा श्री मोहन देवजी एमने उमंगभेर उपाडी लीधेला महाकार्य माटे धन्यवाद आपतां जणावीए छीए के आपना महाराजा श्री क्षांत्रिय कुलना मुगटमणि छे. क्षांत्रिय एटले क्षत् (घा) फरणारा थकी त्राता (रक्षण करता) पण निह के क्षत् (घा) करनारा. क्षत्रियोनुं भूषण सत्त्व छे. सत्व ए सर्व गुणगणमां मस्तकमणि जयश्रीने आपनार अने सर्व पदार्थनी सिद्धि करवामां लोकोत्तर कामधेनु समान छे. महापुरुष पोतानी कार्यसिद्धि मात्र उपकरणो (साहित्यो) थी निह, पण पोताना सत्वर्थीज करी शके छे. कहेवत छे के—ज्यां साहस सत्त्व) त्यां सिद्धि. हवे जेमने सत्वर्थाज करी शके एवा क्षत्रियोने (राजाओने) सर्वमान्य आर्य वेदोमां विष्णुनी (सर्व व्यापक निर्मल परब्रह्म परमात्मानी) उपासना करवानुं कहेलुं छे; ते देवनी उपासना यावत् मोक्ष सुखने आपे छे. पण कालकमधी शत्रुने मारी नांखवानी अथवा एवी बीजी कामनाओने आधीन थई केटलाक क्षत्रियों (राजाओ) रजो अथवा तमोगुणी देव देवीनी उपासना करवा लाग्या. देवीना उपासको शाक्तिकना नामधी भोळखाय छे. अने तेमां जे वाममार्गीओ छे तेमने—

## मांसं मद्यं च मीन श्रमुद्रा मैथुनमेव च। एते पंचमकारास्तु मोक्षदा हि युगे युगे॥

अर्थ:—मांस, मद्य, मीन (मांछलां) मुद्रा अने मैथुन ए पांच मोक्ष आपनार मानेलां छे. शुं एमना मतनी बिलहारी!!! आ वाममार्गीओए जीभनी लालसाथी देवीने मांसादिनो बिल आपवानो मार्ग प्रवर्ताव्यो छे; अने ते देवीपुराण, भविष्योत्तरपुराण विगेरे रजो-गुणी पुराणोमां दुर्गादेवीना नवरात्र उत्सव विधिमां जोवामां आवे छे. आ उपरथी हेमादिए उतारो कर्यो अने ते धर्मसिन्धु तथा निर्णयसिन्धु ए बे ग्रंथना कर्ताओए सर्व पर्व तिथियो क्यारे करवी अने तेमां शुं शुं करवुं ए बाबतना निर्णयनो संग्रह करतां पोताना समयमां प्रवर्तमान नवरात्रोत्सव विधि पण ते ग्रन्थना आधारे बताव्यो छे. जुओ धर्मसिन्धु—सक्रामेन

क्षत्रियादिना सिंहव्याघनरमाहिषछागस्करमृगपितमत्स्यनकुलगोघादिपाणिस्त्रगात्ररुधिरादि-मयोबलिदेंगः ( कामन वाला क्षत्रिओए सिहादिना गात्र अन रुधिरादिमय बलिदान आपवुं! क्कं आ वाक्य प्रमाणभूत प्रन्थकारनो पोतानो मत छे ? ना तेनो खुदमत तो एक संप्रहकर्ता तरीके मांसादि बलिना विधि दाखळ कर्या छता तेनी तरफमां जणातो नथी. वांचो विचार पूर्वक धर्मसिन्धु एटले मालम पडशे. क्षत्रियवैश्ययोगीसादियुतजपहोमसहितराजसपूजायाम-प्यधिकारः स च केवलं काम्य एव न तु नित्यः। निष्कामक्षत्रियादेः सात्विकपूजाकरणे मो-क्षादिफलातिशयः ॥ क्षत्रिय अने वैश्य एमने मांसादिक युक्त जपहोमसहित राजस पूजाने विषे पण अधिकार छे. परन्तु ते मात्र कामना परन्ते छे. नित्य नथी. निष्काम क्षत्रियादिने साविक पूजा करवा मोक्षादि ( मोक्ष, स्वर्ग ) ऋदि विगेरे, सुखनो अतिशय (वृद्धि ) थाय छे वारुं पण आ बधी मांसादि बिल संबन्धी चर्चा मात्र नवरात्र संबन्धेज थई एमां तो राजा-ओने पुरुष्य करवानी आवश्यकता जणाती नथी; परन्तु प्रश्नाविष्या विषयविषे तो बलेव के दशरा हती तो ते विशे शो खुलासो छ ? ते पण जणावाय छे. हताशनी ( होटी ) नी प्रवृत्ति पद्मपुराणमां लख्याप्रमाणे विसिष्ठ ऋषिना आदेशथी धुंडा नामनी राक्षसीने चीडावी मारवा वास्ते प्रथम थई, अथवा दन्तकथा प्रमाणे प्रलहादने खोलामां लई अग्निमां बेसी बाली नांखवा जतां तेनी फोई बली मुई त्यारथी चाली आवी छे. बुलेब ( श्रावणी ) ए दिवसे क्ष-त्रियादिओए जने।ई बदली । येन बद्धो बर्जीराजा दानेंद्रो महाबलः ॥ तेनत्वामपि वन्धामि रक्ष माचल माचल ॥ ए मंत्र वडे रक्षावन्वन करवानु छे. दशरा (विजयादशर्मा) ए दिवसे कि कि विकास कि कि रामे रावण साथे युद्ध करी जय मेळव्यो हतो, अने पांड गेए वैराट नगरीमां शमी ऊपरथी शस्त्र पाछां लई जय मेळव्यो हतो. ते बे रामायण अने महाभारतना मोटा ऐतिहासिक महत्वना दिवसोना स्मरणार्थे ॥ अमंगलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च ॥ दु:स्वप्रणाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं श्रमीं शुभां ॥ ए मंत्र वडे क्षत्रिओए ( राजाओए ) शमीनुं पूजन करवानुं छे. ए पर्वोना दिवसामां अपमंगलहारी दुष्कृत अने पापने वधारनारी धिकारवा योग्य पशुहिंसा करवानुं आर्योने मान्य कोई पण शास्त्रमां नथी. त्यारे एवी पाया-वगरनो कुळाचार क्षत्रियोमा ( राजाओमां ) शा हेतुया पेसी गयो हरो ? ए दुष्ट रूढी हजु शास्त्राधार न छता केम पग घाली रही शकी हशे ? विव्रनी शांति माटे नहीं करता होय ? ना तेम करता होय तो भ्रम छे.-

> हिंसा विद्याय जायेत विद्यशांत्ये कृतापि हि ॥ कुलाचारिषयाच्येषा कता कुलविनाशिनी ॥ १ ॥ देवोग्हारव्याजेन यज्ञव्याजेन येऽथवा ॥ द्यानित जंतून्गतपृणा घोरां ते यान्ति दुर्गतिं ॥ २ ॥

हिंसा, विम्ननी शांति माटे करीए तोपण विम्नकारीज थाय. तेमज कुळाचार बुद्धिथी करीए तो पण कुछनो विनाश कर्या वगर रहेज नहीं. जे निर्दय पुरुषो देवताना बढी अथवा यज्ञना मिषे प्राणीओने मारे छे. ते घोरान्त दुर्गतिने पामे छे.

आर्योने सर्वमान्य वेदोमां "मा हिंस्यात् सर्व भूतानि" (सर्वजीयोने नमारो) एवी श्रुति छे. उपनिषदोना सारभूत श्रीमद्भगवद्गीतामां अर्जुन प्रते श्रीकृष्णे कह्युं छे.

> पृथिव्यामप्यहं पार्थ वायावग्नीजलेप्यहं। वनस्पतिगतश्चाहं सर्वभूतगतोप्यहं॥ यो मां सर्वगतं ज्ञात्म न हिंसति कदाचन। तस्याहं न प्रणद्यामि, स च मां न प्रणद्यति॥

हे अर्जुन ! हुं पृथ्वीमां, वायुमां, अग्निमां, जलमां, दनस्पतिमां अने यावत् सर्वे भूतोमां व्यात द्धं. जे मने सर्व व्यात जाणिने कदापि हिंसा करता नथी तेनो हुं नाश करती नथी अने ते मारी नाश करती नथीं.

व्यासक्रत प्रसिद्ध महाभारतमां श्रीकृष्ण कहे छे के-

सत्येनोत्पद्यते धर्मोदया दानेन वर्धते । क्षमया स्थाप्यते धर्मः कोषलोभाद्विनइयति ॥

अर्थ: -- सत्य थकी धर्मनी उत्पत्ति थाय छे, दया दानथी वृद्धि थाय छे. क्षमाक्दे धर्म स्थिर थाय छे. क्रोध-छोमधी विनाश पान छे.

विष्णुपुराणनी साक्षी छे के--

अहिंसा सर्वजीवेषु, तत्वज्ञैः परिभाषिता । इदं हि मूळं धर्मस्य, शेषस्तस्यैव विस्तरः ॥ प्राणिनां रक्षणं युक्तं, मृत्युभीता हि जन्तवः । आत्मोपम्येन जानीहि इष्टं सर्वस्य जीवितं ॥

अर्थ:—तत्वज्ञानी पुरुषोए सर्व जीवोने विषे अहिंसा करवी एज धर्मतुं मूछ कहुं छे. बाकी सत्यदिने तेनी (दयाभतधर्मनो ) विस्तार मानेको छे. प्राणीओतुं रक्षण करतुं हुक छे. कारण जीवो मरण थकी भय पामेला होय छे. सर्वे प्राणीओने पोताना जेवा जाणवा, सर्वने जीवित वाहलुं होय छे.

यमिंक्तर संवादने विषे यमनुं वचन आप्रमाणे छे.

नं चलति निजवर्णधर्मतो यः, सममतिरात्मसुहृद्विपक्षपक्षे । न हरति न च हन्ति किंचिदुचैःस्थिरमनसं तमवेहि विष्णुभक्तम् ॥ विमलमतिरमत्सरः प्रशान्तः, शुचिचरितोऽखिलसत्विमत्रभूतः । प्रियहितवचनोऽस्तमानमायो वसति सदा हृदि तस्य वासुदेवः ॥

अर्थ--जे पोताना आत्माना धर्मथी चलायमान थतो नथी जे पोताना मित्रोपर अने शत्रुओपर समभाव राखे छे, अने जे कोइनुं कई हरतो नथी अथवा कोइने हणतो नथी तेने स्थिरमनवालो अत्मन्त विष्णुभक्त जाणवो. जेनी बुद्धि निर्मल छे, जेमां मत्सरनो अभाव छे, जेनो स्वभाव शान्त अने चरित्र पवित्र छे, जे सर्व भूतोपर मित्रभाव राखे छे, जेनुं वचन प्रियकर अने हितकारी छे अने जेनामां मान तथा मायानो लेश नथी, तेनां; हृदयमांज विष्णु निरंतर वसे छे.

हवे विशेष प्रमाणोथी जणाववानुं के--

प्राणिनः सुखमीहन्ते विना धर्मं कुतः सुखम् । दयां विना कुतो धर्मः तस्मात् तत्र रतो भव ॥ कृपानदीमहातीरे सर्वे धर्मास्तृणांकुराः । तस्यां शोषमुपेतायां कियन्नंदन्ति ते चिरम् ॥

प्राणीमात्र सुखनी इच्छा राखे छे. परन्तु धर्म विना सुख क्यांथी. अने दयाविना धर्म क्यांथी! माटे ते दयामांज छीन था. क्रपारूपी महानदीने कांठे सर्वे धर्मी तृणांकुर रूप छे. जो ते महानदी सूकाई जाय तो ते तृणांकुर केटछीवार टके है मतलब के दया पई तो धर्म गयो.

हे सन्मित्र.—अमे उपर दिग्दर्शन करेला वास्तविक आधार साथे निवेदन करेली हक्तीकतनुं यथार्थ अवलोकन करी, आर्यशास्त्रोने मान आपी स्वतंत्र विचारने अमलमां लावी अपना महाराजाए आत्मानुं कल्याण करवा अने विद्वानोनो प्रयास सफल करवा—कत्तर्य कूपोयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिवन्ति, कुपुरुषो आ अमारा बापनो

कुवो छे एम कही खार पाणी पीए छे, तेमनी पेठे कुछाचारमां जे अवछो छे, अने जेने शास्त्राधार बिछकुछ नथी तेने न वछगतां कोई पण जातनी शंका राख्या वगर पशुवधनो खाग करवो उचित छे. एम करवाथी अन्य आर्य राजाओ तेमना शुभ पगछानुं अनुकरण करशे अने तेमनी निर्मछ कीर्ति दिगन्तमां विस्तरी अमर थतां, जेमनामां स्वभावतः आपणा जेटछी बल्के तेथी परमात्मा जेटछी अनन्त शक्ति विद्यमान छतां राखोडी देवताथी ठकाई जाय छे तेम पूर्वभवना कर्मभारादिथी हाल गुप्त थई गई छे ते अवाचक शरण वगरनां मूगां महिषादि प्राणीओना अन्तरनी शीतल आशिषथी, तेमनुं उत्तरोत्तर कल्याण थशे, सर्व प्रकारनी सुखमां वृद्धि थशे अने परमात्मा शान्ति आपशे. एवी अमारी उमेद छे. परमकारल परमेश्वर आपना महाराजाने तेवी सद्बुद्धि आपो.

शिवं भवतु.

सेक्रेटरी, रेवा थी ओसोफिकल् सोसायटी वडोदराः वडोदरावाळा शास्त्री राजाराम काशीनाथनो अभिप्रायः

नवरात्रायुत्सवसंबन्धेन देवीपूजायां बाह्यणेतरेषां महिषमेषा-जादयो येबलयःपुराणादिवचनैर्निर्णयितम्धुप्रभृतिधर्मग्रन्थेषु वि-हिताः ते मुरूपकल्पेन प्रत्यक्षतया अवश्यं कर्तव्या किं वा सौत्राम-ण्यादीपयोग्रहवदनु इत्पेन विधातव्या इति प्रश्ने उत्तरम् यद्यपि-निर्णयसिष्वाद्यनुसारेण प्रायेण भारतवर्षे सर्वत्रमहाराजादिगृहेषु श्रीविंध्यवासिनीप्रभृतिमहास्थानेषुच मुख्यकल्प एव प्रचारितः परंपरागतो दृश्यते "प्रभुः प्रथमऋल्पस्य योनुकल्पेन वर्तते निष्फलं तस्य तत्कर्मेति स्मृतेः, न तथा बलिदानेन पुष्पधूपविलेपनैः॥यथा-संतुष्यतेमेषैर्भिहिषैर्विध्यवासिनीति" हेमाद्रिनिर्णयामृतासिन्ध्वादिभू तभविष्यवचनाचशाक्ते बुख्यकल्परशनुष्टेयइतिप्राप्तम् ॥अशक्ते ब्रा-ह्मणेनच कृष्माण्डादिभिबर्छिदानंकार्यमितिनिर्णयसिधूकेश्च तथापि-त्तरसकामानुष्टानपरम् ॥ घातयन्तिपशून्भक्यातेभवन्तिमहाबलाइ-तिफलविशेषश्रवणात् निष्कामैरहिंसादियमनियमादिपूर्वकोपास-नाज्ञानपरैः कृष्मांडादिभिरनुकल्पो विधातव्यः ॥ न चशक्तिसत्वे मुख्यकल्पाननुष्ठाने पूर्वोक्तवचनाभ्यां निष्फलतरानुष्ठानस्यभग-वत्या असंतोषो वा भवेदिति वाच्यम् ॥ महिषादीनां किंचिन्ना-साकर्णादि छित्वा भगवसे समर्पणेनापि उक्तदोषस्य सुपरिहर-त्वात् । अश्वमेधादौ पर्याप्रकृतारण्यपश्रृत्सर्गवत् ॥ अतएवमधुपर्के गोवधोनकर्तव्यः । किंतु पूजाये निवेदनमात्रंकर्तव्यामाते विज्ञान योगिना मिताक्षरायामाभिहितम् । दृश्यते काश्यां संकटादेव्यादिषु तथैवाचारः ॥

#### उत्तरे अभिप्रायः

बलेव दशरा अने होली ए पर्व दिवसोमां पशुवध करवानी जे अंध परंपरा चाले छे. तेने माटे आर्थीने मान्य कोइ शास्त्रमां आधार नथी. ता.-२९-९-९४.

राजाराम काश्चिनाय शासी

मु. वडोदरा राज्य.

## नं. ५

शास्त्री बद्दीनाथ त्र्यंबकनाथनो अभिप्राय.

मेहेरबान साहेब, प्राणजीवन मेहता.

चीफ मेडीकल ओफिसर साहेब एम. डी. धर्मपूर स्टेट.

वडोदराथी छी. शास्त्री. बद्रीनाथ त्र्यबकनाथना आशिर्वाद वांचशो. विशेष आपनाः महाराजा तरफथी जे सात प्रश्नना उत्तर माग्या छे, तेने माटे यथा बुद्धि नीचे छखुं छुं.

विजयादशमीने दिवसे महिषादि पशुत्रध करवाने शास्त्रोक्त विधि कांइपण नथी. कुळाचार होय तोपण शास्त्रविरुद्ध कुळाचार होवाथी कहींपण पशुत्रध करवो नहीं.

केवल ऐहिक मुखभोगार्थे शास्त्रमां कोई दिवसे पशुवध करवाने कही होय तोपण ते परिणामे अत्यन्त दु:खदायक छे, एम शास्त्रमां बहु ठेकाणे कहां छे.

भागवतर्माः च. स्कं. अ. २५ श्लो. ७ नारद उवाच।

भो भो प्रजापते राजन् , पशून् पश्य त्वयाध्वरे ॥ संज्ञापितान् जीवसंघान् , निर्घृणेन सहस्रशः ॥ १ ॥ एते त्वां संप्रतीक्षन्ते स्मरन्तो वैशसं तव ॥ संपरेतमयःकूटैस्छिन्दंत्युत्थितमन्यवः ॥ २ ॥

अस्यार्थः एते मारिताः पशवः संपरेतं मृतं त्वां संप्रतिक्षन्ते ततश्चायः कृटेः लोहकर्त्रमयेः गृंगेशिछन्दन्ति छेत्स्यंति तत्रैवापे अत्रेममर्थमितिहासेन बोधियष्य इत्याशयक अत्र ते कथियष्येऽमु-मितिहासं पुरातन मित्युपक्रम्य अ०११ श्लोक ११ ईजेच क्रतुभि-मिरिहासं पशुमारकेः ॥ देवान् पितृन्भूतपतीन्, नानाकामो यथान्नवान् ॥ युक्तेष्वेवं प्रमत्तस्य कुटुंबासक्तचेतसः । आससाद स वे काले इति अत्र टीका युक्तेष्वारमहितेषु कर्मस्वनवहितस्येति उत्का अ०१९ श्लोक ४९ आस्तीर्थ दर्भेः प्रागमेः कात्स्न्येनिक्षिन

तिमंगुरुं ॥ स्तब्धोब्रुहद्वधात्मानी कर्मनावैषियत् परम् ॥ अत्र टीका त्वं महामूर्खोऽसीत्याह ॥ आस्तीर्येतिबृहद्वधात् बहुपशुवधात् मानी यज्वाहमित्यहंकारी अतस्तब्धो अविनीतः सन् कर्मनावैषी-स्युपसंहतम् ॥ पश्चम स्कन्धे अथकदाचित् वृषलपतिः चंद्रकाल्ये **बुरुष**पशुमालभता अपत्यकाम इत्युपक्रम्याथ वृषलराजपतिः पुरुष-पशोरस्रगासवेन देवींभद्रकालीं यक्ष्यमाणस्तदात्रिमात्रितमसि-मतिकरालं निशितमुपाददे इति मध्ये उक्त्वा सहसोचचाल सैवदेवी भद्रकाली तेनैवासिना छिन्नमस्तकानामस्रगासवं निपीय मद्विव्हलोचेस्तरांखपाषदैः सह जगौ ननर्त विजहार च शिरः कन्दुकलीलया एवमेव खलु अत्रिचारक्रमः कारस्येनारमानि फल-तीत्युपसंहारेण भद्रकाल्याऽद्युपदेशेनापि अन्यहिंसाप्रवृत्तिमात्रमपि स्वस्यप्राणनाशाद्यपकाराय भवतीति स्पष्टमुक्तम् । एकादशस्कंधे लोके व्यवायामिषमयसेवेत्यादिना न हिंस्वात् सर्वाणि भूता-नीति श्रुत्यर्थाभिप्रायसहरूतं हिंसायाः अत्यन्तनरकदायक खेनाकर्तव्यत्वमेव प्रतिपादितम् तन्नैव, नहितत्रचोदनेखनेन वा-क्येन धर्मरवलक्षणानाकान्तत्वबोधेन इयेनेनात्रिचरन् यज्ञंसेवेत अनर्थकारित्व मेवेत्युक्त प्रायं भवति॥

भमवद्गीतामां अ० १८ श्लोक २५ ॥ श्लोक ॥

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनपेक्षं च पौरुषम् ॥ मोहादारभ्यते कर्म तत्तामसमुदाह्यतम्

इति । टीका—हिंसां परपीडामनवेक्ष्य यत् कर्म आरभ्यते त-चामसं दुःखदायकिमितियावत् ॥ अत्र किचत् पूर्वोक्तस्थलेषुत्वया घ्वरेत्यादिविशेषणादीनि अविविक्षितानि इति गृहं संमाष्टीतिवत् इत्यवधेयम् ॥ हिंसारहितयोग्यापोक्षितफलदानृणां वेदस्मृतिपुराणायुक्तकर्मणां बहुनां सत्वेन तत्करणेन सर्वफलसिद्धौ हिंसायुक्तकर्मकथनं केवलमसुरजनमोहनायैवेतिबोध्यमितिदिक् ॥

बडोदा आषिन शुक्रपक्ष पंश्वमी बुधबार संवत १९५०

भीखाचार्य बालाचार्य शास्त्री. बाद्रिनाथ त्र्यम्बकनाथ शास्त्री. क्टोदरा

# नं. ६.

#### सुरतवाला वैद्य धीरजराम दलपतरामनी अभिपाय.

#### महेरबानसाहेब पाणजीवन जगजीवन एम. ही,

मु. धरमपुर स्टेट.

महेरबानसाहेब आपना तरफथी सुरतमां प्रगट थतां देशीमित्र नामना पत्रमां वि-जयादशमीने दिवसे केटलांश्क राज्योमां पाडा विगरे प्राणीओनां बलीदान करवामां आवे छे. तेनो विधि शास्त्रमां छे के केम ? ते उपर आपना तरफथी सात प्रश्लो करवामां आवेला छे तेनो जवाब हुं मारी मित प्रमाणें आपवानी रजा लक्कं छुं.

१ जेने आर्यलोको धर्मपुस्तक तरीके माने छे अने जे सर्व मान्य छे एवा पुस्तकोमां तो कोई पण जातनी हिंसाना विधि जावामां आवतो नथी. पण वाममार्गाओना तंत्र प्रंथोमां एवोज विधि केटलेक ठेकाणे जोवामां आवे छ. पण तेने आर्यलोको सर्वमान्य के बहु-मान्य गणता नथी जेथी तेवां पुस्तकोनो प्रमाण तरीके उपयोग थई शके नहीं.

२ आर्थलोकोना परम-धर्म तरिके वेद मनातो आवे छो छे. अने ते वेदधर्म अहिंसा-मार्ग फेलावनारो छे अने तेने सघळी आर्थ प्रजा सर्वमान्य तरीके गणे छे. तेमज ते महिला प्रमाणो उपर पुरतो विश्वास राखी ते प्रमाण वर्तन करे छे. अने केटलाक धर्म प्रचारको वेदना नामधीज धर्मनो प्रचार करे छे अने तेओ सघळा कहेता आव्या छे के " अहिंसा प्रमो धर्मः" आ वाक्य उपर लखवा बेसीए तो घणुं लंबाण थाय माटे टुंकमां एटलुंज के आर्थना कोई पण शास्त्रमां हिंसा ए शब्द पण जोवामां आवतो नथी.

३ मनुष्यमात्रनुं कर्तव्य छे के प्राणीमात्र उपर दया राखवी ने तेथीज ईश्वर राजी थाय छे तो हिंसासिवाय बीजा एवा घणा धर्मी छे के ईश्वर राजी थायछे. ने सघली प्रजा तथा राजा हमेशां सुखचेनमां दिवसो गाले छे.

8 दशराना तहेवार प्रसंगे जो पाडा विगेरेनी हिंसा नहीं करवामां आवे तो तेथी राज्यने तेमज राजाने कोईपण प्रकारनुं कभवन्धन थतुं नथी पण उल्टुं पुण्य थाय छे अने तेनी कीर्ति आ पवित्र आर्यावर्त्तनी भूमि उपर दिशोदिश प्रसरी रहे छे.

५ ज्यारे आवी हिंसानो विधि कोई पण ठेकाणे जोवामां आवतो नथी त्यारे सहज शंका उत्पन्न थाय छे के ए धारो केवी रीते थयो अने ते पडवानुं कारण शुं ? अने ते धाराने राजा लोकोज केम वधारे माने छे ? अने बीजा कोई मानता नथी ? तेनो जवाब आप निचली कलम वांचवाथी ध्यानमां लावी शकशो. ६ आगला वखतमा राजा महाराजाओ दशराने दिवसे स्वारीओ काढी, अन्य देशोपर चर्डाई करीने देशने पोताना कबजामां लई विजय करता एथीज ए तहेवारने विजयादशमी एवं नाम आपवामां आव्युं छे. पोताना राज्यमांथी निकलती वखते केटलाक श्रूर सरदारो, राजा, महाराजाओ, पोतानी तलवारनुं पूजन करी परीक्षा करता के हे समसेर ! हुं तने मारा शत्रुओनुं रुधिर पाईश, त्यारेज पाछो गाममां पग मूकीश. एवी प्रतीज्ञा लई विजय करी पाछा फरता. ते वधारों काळपरत्वे घसाई जतां आजकाळ मात्र गाममांथी स्वारी काढी गाम बहार शमडीना झाडनुं पूजन करी बीजा गामनी सीममांथी पाछा फरे छे. आवा कारणोने लीधेज 'कोई माणसे राजाओनी पूर्वनी प्रतिज्ञा ध्यानमां लई पाडा के बकरा मारवानो रिवाज दाखल करेलो जणाय छे. बाकी ए कियामां धर्मसंबंधी जरापण रहस्य जोवामां आवतुं नथी। माटे हवे हमेशां राजा, महाराजाओए न्याय अने युक्तिओनो विचार करी आवा अघटीत रिवाजो अटकाववा जोईए.

७. छेवटे मारे एटलुंज जणाववुं जोईए के जो कोई माणस एम कहे के ए विधि सशास्त्र छे. तो ते शास्त्रमां बकरां पाडा मारवानुं केम छह्युं. अने वाघ जेवां भयंकर प्राणीने माटे केम न छह्युं ? तेनो पुरावो शुं कोई आपी शकशे ? कोई पण कही शकशे नहीं माटे मारी छेल्छी एटलीज प्रार्थना छ के ईश्वर सघला प्राणीमात्रनो कर्ता छे अने तेना

ली० वैद्य धीरजराम दलपतराम.

गुजरफलीया सुरत-बंदर.

## नं. ७.

## सुरतवाळा वैद्य तळकचंद ताराचंद्नो अभिप्रायः

#### श्रीयुत महाशय.

आपना तरफर्थी महाराजा धर्मपुराधीशनी आज्ञानुसार सुरतथी प्रगट थतां देशीमित्र पत्रमां दशराना उत्सवमांज पशु वधने माटे चर्चा पत्र छपायेल्छे तेना जवाबमां जणाववानुं के आ नीचे तेना नंबरवार खुडासावार रूख्युं छे. ते आपने योग्य लागे तो हज्जरमां रज्ज करशो.

आपणा देशमां वेद ए समस्त शिखा धारीओनो मुख्य धर्म छे अने हालमां जे जे धर्मी पन्थो तथा रिवाजो आपणा देशमां चालेछे तेने माननारा तथा तेने चलावनार आगे-वानोने कबुल करवुं पडे छे, के अमो जे करीए छीए तथा करावीए छीए ते सघलुं वेदने अनुसरीनेज छे. त्यारे एटलुं तो सिध्द थयुं के सर्वमां मान्य शास्त्रतो वेदज छे.

१ ए प्रमाणेनुं वर्तन करी पशु हिंसा करवानुं तंत्रग्रन्थोमां एटले शाक्त लोकोए प्रमाण मानेलां तंत्र ग्रन्थोमां छखवामां आवेल छे.

२ ए (शाक्तो) ना प्रन्थो घणां छूप अने गुप्त छे. तथी ते सर्वे मान्य गणायज निहं अने गणतापण नथी.

३ वेदमां अहिंसा धर्मनुंज प्रतिपादन करेलु छे, अने वेद अहिंसानेज; मानेछे. तेम वेदनुं प्रमाण सर्व शास्त्रोमां बलवान् गणाय छे. माटे वाममार्गनां शास्त्रो प्रणामभूत मानी शकातां नथी.

४ राजा महाराजाओने ए वात एक रूढीरूप थई पडी छे. बाकी ए काम कांई अवस्य कर्तव्यनुं नथी. तेम ए कार्य नहीं करे तो तेथी कोई शास्त्रनी आज्ञानी भंग थती नथी अने एवुं कांईपण प्रमाण आर्यशास्त्रमां छेज नहीं.

4 ते हिंसानी ' प्रवृत्ति ' न करवामां आवे तो तेथी राज्यने प्रजाने के तेना कोईपण भागने कोईपण जातनो आपित्त योग आवतो नथी. तेम आपित्त आववा माटे कांई पण सत्यशास्त्रमां छखवामां आव्युं नथी. मात्र रूढीने माननारा आजे थोडा दिवस ते कार्यने अकार्य गणशे. पण सत्यनो जय थशे. जेम हाछमां घणां राज्योमांथी; ते हिंसा दूर करवामां आवी छे. तेथी ते राज्यने के तेनी प्रजाने कोई पण जातनुं नुकसान पहोंच्युं नथी.

६ पशुवधने बदले पर्वनो उत्सव जणाववा अने प्राणीनुं कल्याण करवा इष्टि करवी जोईए. जेमां बिलकुल हिंसानी जरूर पडती नंथी अने ते किया सर्वमान्य वेदशास्त्रने अनुसरी थई शके छे अने ते सत्य छे.

७ पशुवधने बदले तेनां नाक कान छेदवां अथवा आकार करवाथी ते किया पूर्ण थाय ए मानवुं असंभवित छे. कारण के हिंसानो प्रसार पण एवी रीतेज दाखल थयेल छे, जैम थोडुं पाखंड पूर्वीपर जतां मेंहुं रूप पकडे छे, ते प्रमाणे आ रहेली रीत पण पाछलना कोकमां हिंसानी प्रवृत्ति करनारुं नीवडेज.

आ प्रश्नोनो दुंक खुठाशो उतावलने लीघे दुंकामां ल्ल्यो छे. पण जो कोई शास्त्री के पंडित वेदने नामें आवुं हिंसा कर्म साबीत करवा इच्छा राखतो हशे अने महाराजाश्रीनी सत्यशास्त्रनो शोध करवानी तथा सत्यनुं प्रहण करवानी इच्छा होय तो अमारी अथवा मुम्बईनी आर्यसमाजनी साथे सत्यताथी शास्त्रार्थ अथवा लेखीशास्त्रार्थ अथवा जो कोई पेपर ए वात अयानमां लई पोताना पत्रमां रजा आपे तो अमारा पंडितो तेम करवाने शिक्तमान थशे. माटे उपर उपरमा खोटा इंभाणथी नहीं मुंझातां सत्यनुं प्रहण अने असत्यनो त्याग करवा तथा प्रयत्नो करवा चुकशो नहीं. अने तेम करी आपना महाराजाश्रीने अधेर पापथी दूर राखवा प्रयत्न करशो. जेथी आपनुं तथा आपना महाराजाश्रीनुं ईश्वर सदा कल्याण करशे.

#### तथास्तु.

छि. आपनो क्रपाकांक्षी, सा. तिस्रकचंद ताराचंद वैद्य, आर्यसमाजना तंत्री सुरत.

## नं ८

#### लींबडीवाळा भट महादांकर गोविंदजीनो अभिप्राय.

## रा. रा. श्री सदाहितकारी—प्राणजीवन जगजीवन मेहता चीफ मेडीकल ओफीसर साहेबनी हज़रमां मु. धर्मपुर स्टेट.

र्लीबडीथी ली. भट्ट-महाशंकर गोविंदजीना आशीर्वाद. बाद आपना तरफथी भर्म उत्तेजननुं पत्र आन्युं ते वांची अत्यन्त आनंद थयो छे. अने तेमां सात प्रश्नना मागेळ खुळाशा हुं मारी यथामित प्रमाणे शास्त्रना वाक्यना प्रमाणोथी नीचे मुजब लखुं खुं.

#### पश्नः

# १ वेदप्रणिहितो धर्मः अधर्म स्तद्विपर्ययः॥

अर्थ:—वेदमां कहेलुं ते धर्म कहेवाय छे. अने वेद वाक्यथी उलटुं ते अधर्म कहेवाय छे. तो वेदमां कोई ठेकाणे देवने के देवीने पाडा के बकरा विगेरे पशुवध करी चडाववानुं आवतुं नथी. तो वेद शास्त्रनो आधार पशुवधमां बिलकुल नथी.

## २ मकाराः पंचदुलभाः॥

अर्थ:—मदिरा-मांस-मधुणन ए आदि पांच मकार दुर्लभ छे. इसादि वाक्यो तंत्र. शास्त्रमां छे. ते आर्थलोकोमां सर्वमान्य नथी.

३—ते तंत्रशास्त्र करतां बलवान् सर्व आर्य लोकोमां प्रमाण अग्निहोत्रं—गवालंभं संन्यासं पलपैत्रकं । देवराच सुतोत्पत्तिः कलौ पंच विवर्जयेत् ॥

अर्थः—१ अग्निहोत्र. २ देवपूजा विगेरे ओच्छवमां, पर्वमां गायो विगेरेनी हिंसा. ३ संन्यास. ४ पित्रिना कार्योमां मांसना पिंड. दीयेर पासेथी पुत्रोनी उत्पत्ति आ पाचवानां कल्युगमां न करवां एम छे.—तेमां यावत् वर्णविभागःस्यात् यावत् वेदाः प्रवर्तते ॥

अर्थ:—ज्यां ब्राह्मणादि चार वर्ण छे, ज्यां सुधी वेदना धर्म छे, त्यां सुधी किलियु-गमां अग्निहोत्र अने संन्यास ए बे वानां थाय तेम नीकले छे. पण त्रण वांना नीकलता नथी. देवने अर्थ गौआदिनी हिंसा-पितृने अर्थ मांसना पिंड—दीयरथकी पुत्रनी उत्पत्ति आ त्रणः वांनांनी कलीयुगमां चोएखी मनाई छे एम सिद्ध थाय छे.

8—उपलां वाक्योपरथी धर्मवान् निष्कामी पोतानुं तथा प्रजाओनुं भलुं इच्छनार सात्विक धर्मवान् राजाओने देवीने माटे पशुवधनुं अवश्य कर्तव्य नथी. तेम आगळ सात्विक जनक राजा विगेरेए कोई ठेकाणे पशुवध कर्यो एम नीकळतुं नथी. अने पोतानुं तथा प्रजानुं सार्रः थयुं छे तो शास्त्रना आधारथी तथा आवा राजाओना दृष्टान्तथी पशुवध न करवो मिद्धान्त छे.

# ५ अहिंसा परमो धर्मः ॥

अर्थ: — जेमां पशुवध विगेरे हिंसा न धाय ते सर्वोत्तम धर्म छे. आ वाक्योपरधी पगुवध नहीं करवाथी राजाओने तथा प्रजाओने आपत्ति आवे नहीं. तेम अकार्य कर्युं एम गगाय नहिं एम ऊपर लखेल वाक्यनुं शास्त्र प्रमाण छे.

# ६ छागाभावेतु कूष्माडं ॥

अर्थ:—देवी तथा देवने माटे पशुवधमां बकरां तथा पाडानी हिंसाने बदले साकर कोलं वधेरी तेनुं बलीदान आपवुं. आवी रीते साकर कोलानुं बलीदान आपवुं ते बलवान् शास्त्रनी आज्ञा तोडी गणाय नहीं.

७ वक्तरां तथा पाडाओनी हिंसानी जरूर रहेती नथी. कारण के साकरकोछ वधे र गांधी काम चाले छे. तथा पशुनां कान विगेरे कापवा कांइपण जरूर रहेती नथी. क्षत्री शब्दनो अर्थ एवे। छे के प्राणीओने भयथी बचाववुं.

उत्तर मुजब सात प्रश्नना खुलासा छे आ प्रसंगमां मारे आटलुं विशेष निवेदन करवानुं के आनो जवाव लखवाने घणी लांबी मुदत जोइये के जेथी घणा शास्त्रनो आधार जो शक्ताय. आतो गई काले मने पत्र मळ्यो छे तो आज तावनी विमारी छतां जवाब लख्यो छे. आमांतो स्वार्थ बताव्यो छे. पण आवा काममांतो बिन स्वार्थ श्रम करवा खंती छुं म टे आटलुं विवेचन वधरे निवंदन करेल छे. एज

दा. भट्ट. महाशंकर गोविंदजी शास्त्रीः छींवडी.

# नं० ९.

## लींबडीवाला शास्त्री करुणाशंकर गौरीशंकरनो अभिप्राय.

#### राः राः प्राणजीवन जगजीवननी पवित्र सेवामां

मु. धरमपुर स्टेट.

लींबडी थी ली. आपना सदा शुभेच्छक करुणाशंकर गौरीशंकरना आशीर्वाद वांचशी. बाद लखवानुं के आपना महाराणा तरफथी वर्तमान पत्रमां अहिंसा बाबत सात प्रश्नो वांच-वामां आव्या छे. तेना जबाब मारी यथामित नीचे लखुं छुं.

सवाल १ लानो जबाब—आवुं लखवुं कदापि होय तो केाई मतप्रबंधवाळा ग्रंथमां हरो.

सवाल र जानो जबाब-समस्त आर्थ धर्ममां धर्मशास्त्रज मान्य गणाय.

सवाल ३ जानो जबाब—धर्मशास्त्रमां कालियुगापवादादिक विचारतां निषेध कर्यो छे एम नीकली आवशे.

सवाल ४ थानो जबाब — त्रीजा सवालनो जबाब नक्की ठरे तो पांचमा सवालना अनुसंधाने आनो जबाब बाकीमां रहेतो नथी.

पांचमा सवालनो जवाब—चोथाने त्रीजामां अनुसंधान रहे छे.

छट्टा सवालनो जवाब—काले अपवादे धर्मशास्त्रना घणा प्रंथोमां प्रतिनिधि लखावेला छे.

सातमां सवालनो जवाव— शुद्ध प्रतिनिधि तेमज कोई पशुना नाक, कठ, छेदवां के काई रुधिर लेवुं एनो पण प्रतिनिधिमां भावेश थाय छे पण ते शुद्ध प्रतिनिधि अमने मान्य छे -

प्रमाण वाक्योनो सारभूत यथार्थ गुजरातिमां छढ्यो छे तेनां आधार वाक्यो छे

करुणाशंकर गौरीशंकर रावल सही

लींबडी.

## नं. १०.

#### लींबडीबाळा द्वे नीलकंठ मकनजीनो अभिप्राय. रा. रा. प्राणजीवनदास जगजीवन चिफमेडिकल ऑफिसर मु. धरमपुर.

लींबडीधी ली. दवे नीलकंठ मकनजीना प्रणाम. बाद लखवानुं के आपना महाराणा तरफथी महिंसा बाबत काठीयावाड टाईम्समां सात प्रश्नोना उत्तर बाबत खबर आपेली छे तो ते टाईम्स धाज मने मळेलुं छे. अने तेमानां सात प्रश्नो वांची अत्यंत धानंद पाम्यो छुं. के जेथी करी धर्मपुर आज दिवसथी पोतानुं खरुं नाम धारण करशे, माटे ते सवालोना उत्तरों संक्षेपमां मारी यथाबुद्धिथी ळखुंछुं.

## अथ कलियुगे वर्ज्यपदार्थानाह ॥

समुद्रयात्रास्वीकारः कमंडलुविधारणं द्विजानामसवर्णासु कः न्यासूपयमस्तथा देवराच्च सुतोत्पत्ति मेधुपर्के पशोविधः मांसदानं तथा श्राद्धे वानप्रस्थाश्रमस्तथा दत्ताक्षतायाः कन्यायाः पुनर्दानं वरस्यच दीर्घकालं ब्रह्मचर्यं नरमेधाश्वमेधको महाप्रस्थानगमनं गोमेधश्च तथा मत्तः इमान्धर्मान्कलियुगे वर्ज्यानाहुर्मनीषिणः ॥ इत्युक्तं धर्मिसंधे शारदनवरात्रादौ होमप्रसंगेन क्षत्रियादीनां निष्कामनाप्रसंगेन व्याप्रमहिषमेषमस्तादिवध श्च तद्दिनांगि-कृतःइलप्युक्तंधर्माद्रौ॥१॥

ळींबडी,

द. दवे नीलकंठ मकनजी.

# नं. ११.

#### खंबातवाळा शास्त्री छगनलाल केशवलालनो अभिपाय.

ता. २८-९-९४ भादरवा वदी १४.

#### प्रश्न १ नो उत्तर.

एवा प्रकारनी पशुहिंसा करवानुं चंडीपाठ तथा देवीपुराण विगेरेमा कहां छे ते विषे स्थल चंडीपाठनो अध्याय बारमां स्लोक १९ मां तथा कवच १८ ने अध्याय १५ विगेरेमां जुओ.

#### प्रश्न २ नो उत्तर.

जे शास्त्रमां पशुवध विगेरे अयोग्य करवानुं कहां होय ते शास्त्र आर्यछोकमां सर्वमान्य गणाय नहीं, तेम बहुमान्य पण गणाय नहीं. कारण के तेवा दुष्ट छोकोए ते मान्य गणेछां छे. एटछंज नहीं पण एवां शास्त्र जाणे तेवाज पुरुषोए तेवा रागथी बनावेछ छे. एम नीचेना वचनो स्पष्ट करे छे. माटे तेने सर्वमान्य अथवा बहुमान्य केम गणाय.

सर्वमान्य बहुमान्य न गणाय ते विषे आधार नीचे.

धर्मसिन्धु परिच्छेदक पत्र ११९ पृष्ठ १ पंक्ति २ मां मद्यभक्षादिप्रतिपादकवामाद्यानमस्यतुनमान्यता ए वचन मद्य भक्षादिक केनार शास्त्रने तथा वाममार्गना शास्त्रने प्रमाणता कबुळ करतुं नथी तो चंडिपाठना १८ मां कवचमां श्लोक २८ मामां रुधिरा ए वचन मार्किडेयपुराणनुं नथी कारण के रहस्य मार्किडेयपुराणमां छे नहीं, मार्किडेयपुराणमां तो फक्त १३ अध्याय छे. माटे ते रहस्य तांत्रिक छे ते बळिष्ट गणाय नहीं अ. १२ श्लो. १९ मां पश्चपुष्पार्ध ए वचन पण पश्चवध करवानुं कहेतुं नथी. ए तो एम बतावे छे के एवा उपचारथी एक वरस दिवस सुधी पूजन करे ने देवी प्रसन्न थाय ते प्रसन्नता चंडिपाठ एक-वार सांभछे तथी थाय ते भागळ खुल्छं छस्युं छे के सकृदुचरितेश्चते भने ते श्लोकनो संबंध पण त्यां सुधीज छे. माटे ते वचननो तात्पर्य स्तुति श्रवण करवामां छे. वकी आग्रह्शी तेवां वचनोने न स्वीकार करवा सारू प्रमाणो—

मोक्षधर्मे भारते अ. २६५ प. १३१.

अव्यवस्थितमर्यादेविर्मृहेर्नास्तिकेर्नरेः ॥ संशयास्माभिरव्यके हिंसासमनुवर्णिता ॥ सर्वकर्मस्वहिंसां हि धर्मात्मामनुरव्यवित् ॥ कामकाराद्विहिंसंति बहिर्वेद्यां पशून् नराः ॥ टीका ॥ बहिर्वेद्या- मिव सवकमसु ज्योतिष्टोमादिष्विप नराः कामकारादेव पशून् हिंसंति न तु शास्त्रात् ॥ अ० २६५ श्लोक ८ प० १३१ यदि यज्ञांश्च वृक्षांश्च यूपांश्चोद्दिय मानवाः ॥ वृथा मांसानि खादन्ति नेष धर्मः प्रशस्यते ॥ सुरांमत्स्यान्मधुमांसमासवं क्रशरोद्दनं धूर्तैः प्रवर्तितं होतत् नेतद्देदेषु कल्पितं ॥ मानान्मोहाच लोभाच लोल्यमेतत्प्रकल्पितम् भागवते ॥ हिंसाविहारात्यालब्धः पशुभिः स्वसुनेषेच्छया ॥ यजन्ते देवता यज्ञैः पितृन्भूतपतीन् खलाः स्कं० ११ अ० ५ श्लोक ८ यजंत्यस्रष्टाञ्चविधानदक्षिणं वृत्ये परं प्रति पश्चनतद्दिदः ॥ श्लोक० १४ ॥ पश्चनद्वह्रंति विस्तब्धाः प्रत्य खादन्ति ते च तान् स्कन्ध ॥ ५॥ ये तिवह वै दांभिका यज्ञेषु पश्चन्विशंसंति तान् ॥

अगर हिंसा मान्य होततो विशेष वचन बतावत चंडीपाठना अध्याय १३ ना स्रोक ९ मामां चन्द्रवृत्ति टीकामां छल्युं छे के तपश्चरण कालमां परनी हिंसाथी दोष मानी सुरथ राजा ए पोताना गात्रथी रुधिर काढी बिल प्रोक्षण करी अर्पण कर्युं तथी एम जणाय छे के तेणे ज्यारे परनी हिंसाथी तपनुं फल नहीं थाय एम जाणी परहिंसा न करी तो नवरात्रीवत तें द्युं तपश्या नहीं अने ते तपश्चर्या पर हिंसाथी न करवी अने कलीयुगमां एवां कर्मथी दुर रहेवुं एम धर्मिन सिंधुमां तथा निर्णयसिन्धुमां किलवर्ज्य प्रकरणमां चोख्लो निषेध बतावे छे. अने युगना भेदे धर्मिनो भेद स्वीकारवो ते मोक्ष धर्ममां कह्युं छे. युगभेदेन धर्म भेद इति वली नीचेनां वचनो अवो के अवश्यतानो आप्रहजाय.

देवी भागवत टीकायां काळिकापुर।णवाक्यं

सिंहव्याघादिकं दत्वा चात्महत्या मवाप्नुयात्॥
मयं दत्वा बाह्मणस्तु ब्राह्मण्यादेव हीयते॥१॥
अवश्यं विहितो यत्र बालिस्तत्र द्विजः पुनः॥
पिष्ठेनापि घृतेनापि निर्मितस्तु समर्पयेत्॥२॥
धर्मसिंधौ परिच्छेदबीजो पत्र ३१ ष्टष्ट २ पंक्ति २

# तत्र विश्रेण जपहोमान्नबिलनेवेद्यः सात्विकी पूजा कार्या नैवे चैश्र निराभिषेः मद्यं दत्वा ब्राह्मणश्च ब्राह्मण्यादेव हीयते मद्यमपे-यमदेयमित्यादि निषेधान्मांसमद्यादियुतराजसपूजायामनिधकारः

ए वचनो जोतां सालिक पूजामां निषेध बतान्यों छे ते जरूर होय तो न बताने. केहेशों हे ब्राह्मणने ते निषेध हो परंतु क्षत्रीने तेनो निषेध नथी, तेथी ते करे तेम केहेशों तो उपर छखेछुं बचन अवश्य निह ठरे केम के एमां द्विज पद पड्युं छे, तेथी क्षत्रिने वैश्य छेनाय छे त्यारे क्षित्रिने पण अवश्य न ठर्युं ने अवश्य मानवों होय तो पिष्टादिकथीं करे तेम जणाने छे बळी धर्मांसंधुनी उपरनी छखेछी पंक्तिओंनी नीचे जणान्युं छे के सर्वे प्राचीन तथा नवीन निबंधकारों निबंधमां पशु हिंसानी मनाई छखे छे बळी हाछ नवीन भासुराय वीगरे पण चंडीपाठनी टीका नगरेमां प्राचीन ग्रंथने मळता थई पशुवध निषेध करे छे अने सभामां पण ते मत श्रेष्ट गणायों छे तेम छतां पशुवधक्तपी अन्यथा कर्मना करनार दुई ज्यधी पतित थया छे के शुं ते निगेरे बतान्यु छे ते जओ. माटे अवश्य नथी.

#### प्रश्न ५ मानो उत्तर.

प्रजा के राजाने अंगे कोई पण प्रकारनो योग आवे नहीं अने अकार्य कर्युं एम गणाय नहीं. कारण के तेना प्रतिनिधियों ते करवायी सामी आपत्ति नाश थाय छे. तो स्थापत्ति आवशे नहीं. आधार

धर्मसिन्धु परि. २ प्रत ३३ पृष्ट १ पं०

# कृष्माडो बलिरूपेण मम भाग्यादवस्थितः प्रणमामि ततः सर्वरूपिणीं चंडिकांप्रति ॥ दानेन दातुरापद्विनाशनं—

ए वचनमां छेलुं आपर्विनाशनं एम लख्युं छे. तेथी एम खुब्लुं जणाय छे के पशु बली आपवा करतां कूष्मांड (कोलुं) बली आपे तेनी आपित दूर थाय अने देवी प्रसन्न थाय एवुं करवाथी अकार्य कर्युं एम केम कहेवाय किंतु शास्त्रनी आज्ञा पाली एम कहेवाय.

#### प्रश्न ६ नो उत्तरः

पशु वधने बदले बीजी कोई हिंसा रहित क्रिया करी ते आराधवामां आवेछे तथी शास्त्र आज्ञा भंग थई एम कहेवाय नहीं. शास्त्रकारे पशुवध न करवो ने ते जग्याए तेने बदले बीजुं बलीदान आपवानुं बताव्युं छे. नाधार—निर्णयसिन्धु परि २ पत्र ९० ए० १ पंक्ति ९ तदुक्तं कालिका पुराणे कृष्माडमिक्षुदंडं च मांसं सारसमेव च एते बलिसमाः प्रोक्तास्तृष्ठौ छागसमाः सदा

रुद्रयामलेऽपि । छागाभावे तु कूष्माडं श्रीफलं वा मनोहरं वस्रसंवेष्टितं कृत्वा छेदयेत् छुरिकादिना अवस्यंविहितो यत्र बलिस्तत्र दिजः पुनः

मोक्षर्घम अ० २७२

टीकाशयः गुद्धे च--अथश्वोभूतेष्टकाः पशुना स्थालिपाके क्षोक १३-२०

न वेति पशुस्थाने विधानमवगंतत्वं तस्मान्न हिंसायज्ञः श्रेयान्।। धर्म० कृष्मांडो विल० ।।

ए वचनो जोतां पशु वधनी जग्याए कुष्मांड वच श्रीफल वध विगेरे करवाशी तेने तुल्यज थयुं एम कहेवामां कांई वांधो नथी केमके छागसमाः एम खुल्लुं लख्युं छे. उपर पण अवस्य बलिनी जग्याए अवस्यं विहितोयत्र ए स्रोकमां पिष्ट-धृत-इक्षुदंड वीगेरे बताव्यां छे ते तेनी तुल्य जाणवां अने कष्माडो बलिस्हपेण एमां बलिस्पे मारा भाग्यथी मने कुष्माड मल्यो अने ते कुष्माड सर्वेरुपछे. एम खुल्लुं बताव्युं छे.

#### पश्च ७ नो उत्तर.

पशुवध करवाने बदले ते पशुने ते देवनी आगल लांबी प्रदक्षणा करावी पूजा करी रमतो कोईबी जग्याएं मुकी देवो पण मारवो नहीं. अने ते करवाथी ते क्रिया परिपूर्ण थई इतु गणवामां कांई पण वांधोज नधीं ते विषे आधार.

मोक्षधर्म अ० २७२ श्लो० १३

सत्येन स परिष्वज्य संदिष्टो गम्यतामिति ॥ टीकायां सत्यसंज्ञ अयाचत माग्नौ प्रक्षिपेति प्रार्थितवान् ततो हिंसाया दोषपर्यग्नि-कृतानारण्यानुन्सजन्ति इति शास्त्रद्रष्ट्या सत्येन स मृगान्परि-ष्वज्य एतेन आलंभाधि पर्यग्निकरणान्तं लक्ष्यते—भागवते स्कन्ध ११ अ० ५ श्लो० १३—तथापशोरालभनं न हिंसा—

ए वचनमां कहुं छे के सत्यनामे यज्ञ करनाराने पशुए पोते कहुं के तुं मने अग्निमां होम तो पण ते करवं अयोग्य मानी हिंसा करवी ते दोष छे, एम शास्त्रदृष्टिए तपासी पशुने अग्नि उपर फेरवी स्पर्श करी मुकी दीघुं पण मार्चु नहीं. तेथी ते यज्ञनुं फल पाम्यो. माटे पश्च मारवानुं ज्यां कहुं होय त्यां पण तेने स्पर्श करी छोडी देवुं तेज योग्य छे. किंवा ते पशुनी जग्या बदल उपर बतावेलां कूष्मांड विगरे बलिदान आपवां. वली नाक, कान छेदवां ते पण योग्य नथी कारणके तेवुं करवुं कांई कहुं नथी अने द्यया स्वभूतेषु तथा परेष्ट्रत्रास जननी ए विगरे भागवतादिकनां वचनो जोतां दया छोडी ते पशुने त्रास आपवा ए योग्य नथी. छूटां मुकी देवां ते उत्तम छे. वधारे शास्त्रार्थ मोक्षधर्ममांथी जाजली—तुलाधार—विचल्यु विगरे प्रसंगमां जुओ तथा मीमांसामां—शेनयागनुं फल नरक कहुं छे ते जुओ.

उपर लखेलां प्रश्नोना उत्तरी घणा सिवस्तर लखी जणावत परन्तु वखत नथी जिथी वे पहोरमां केटलंक लखी शकाय माटे संक्षेपमां प्रमाण साथे लख्यां छे. ते योग्य जणाय तो लखेलुं इनाम आपवा महरबानी करशो वली एवा सवालो नीकले तो अमारा तरफ मुदत पहेलां जलदी मोकलवा जेथी उत्साह पुरो थाय. मुदत पूरी थई गयेली तो पण सद्गृह-स्थोधी इनाम मलवाना लोभथी एकदम श्रमथी एक दिवसमां शास्त्रार्थ खडोकरी माकेल्यो छे. माटे मुदतनो वांधोलेवो योग्य नथी ते नहीं लो एवी आशा छे.

लि॰ शास्त्री—छगनलाळ केशवलाल— खंबात.

# नं. १२.

## जुनागढवाळा शास्त्री गोराभाई रामजी पाठकनो अभिप्रायः

# मंगलाचरणम् शिखिरिणीवृत्तम

परप्राणत्राणप्रणिहितधियां धर्मजननी दयैवैका लोके सकलजननी जीवितसुधा असामान्यं पुण्यं मुनिभिरुदितं ज्ञानजवनै रहिंसा संसारे खपरकुशलश्लाध्यसरणिः ॥ १॥

श्री धरमपुरना राज्यमां बलेव तथा दशरा विगेरेमां देवी-देवने माटे थती हिंसा कर-बामां आवे छे. ते शास्त्रमां कोई खुलासो हशे तो धर्मपुरना राजा नामदार महाराणा साहे-बनी एवी इच्छा छे के बलेव दशराने दिवसे थित हिंसा बंध करवी ते विचारना आधारथी— धर्मपुरना चीफ मेडीकल ऑफीसर— रा. रा. प्राणजीवन जगजीवनदासे सरक्युलर काढी केटलाक विद्वानोथी खुलासो लेवा सात सवालो काढेला छे. इत्यादि लखाणनी साथे ते सवालो काठीयावाड टाईम्समां ता. १६ सप्टेंबरमां बहार पडतां ता. १८ मीए मारी दिधिगोचर थया तेज डा॰ साहेब त्रिभोवनदास तरफथी पण तेज तारीखे तेवा मतलबनुं बीजं छापुं अमारा तरफ आवेलं हतुं. तेना अमारा तरफथी ते सवालोना प्रत्युत्तर प्रमाण-वचनो साथ कमवार लखवामां आवे छे.

#### मश्र १ लो.

उत्तर—बलेव दिवसे राजाए पशुहिंसा कोई देवार्थ करवा कोई शास्त्रमां रुखेर्छ नथी.
एटले मूलशाखा न्यायथी ते बिल विगेरे करवा कोई पण शास्त्रविधि नथी एटले ते संबंधी शास्त्रमां वचनो नथी. हवे दशराने दिवसे पण ते दशराना तहेवार निमित्त काई पण हिंसा करवा रुखेलुं नथी. पण राजाए पोताना हाथी, घोडा तथा खड्ग विगेरे हथियारोनी मंत्रथी पूजा करवी. अने विजय मुहूर्ते घणाज उत्साहथी गाम बहार अपराजितादि अष्ट देवीनुं पूजन करी शमीना वृक्षनुं पूजन करवुं. विल कोई जगोए पिष्टनी शत्रुनी प्रतिमा करी तेने मारी बिलेदेवा छखेलुं छे. एवी रीते जय माटे दिशा पूजन साथे विजय करवा विषे छखेल छे.

हवे दशराने दिवसे पशुहिंसा करवानी केटलाक राज्यमां जे रीत चाले छे ते महान् नवमीना देवीना बलिदान लेवा माटेनी छे. दशराने दिवसे थोडो भाग नवमीनो होबा संभ-वथी दशरानो दिवस ते पशुवध करवा समाचार थयो हशे एम जणाय छे. ते हिंसा करवा देवीपुराणमां तथा रहस्यमां कहेलुं छे. ते पण आसुरी-काम्य-तामस कर्ताने माटे तामस काम्यकर्म लखेलुं छे.

# रुधिराक्तेन बार्छना मांसेन सुरया नृप।

एवा तांत्र शास्त्रोमां वामवार्गना आगममां ते विधि कहेलो छे. तेम निर्णयसिन्धुमां देवीपुराणनुं प्रमाण आप्युं छे. तो ते खुलासा निचेळा प्रश्लोना उत्तरथी थई जहा एटले वधारे विवेचन करवानी जरूर नथी.

#### मश्र २

उत्तर—शास्त्र प्रमाणमां सर्वमान्यमां मुख्य श्रुति एटछे वेद अने ते पछी स्मृति एटछे मन्वादि धर्मशास्त्र—ते पछी सूत्रो ते पछी पुराण ने वाराहि वगेरे तंत्रना प्रन्था तेमां उत्तरोत्तर प्रशस्त गणाय छे. ज्यां श्रुति प्रमाण होय त्यां स्मृति वचनो सामान्य गणाय छे. अने जे जगो श्रुति—स्मृतिकारना वचनोंना परस्पर विरोध आवे त्यां श्रुति बळवान् गणाय छे.

## स्मृति:

# श्रुतिस्मृतिविरोधे तु श्रुतिरेव बालियसी

श्रुति वचनो जे कम कस्वा वारतां होय तो स्मृतिपुराण वचनो निर्बळ गणाय छे. श्रुति प्रबळ अने सामान्य मान्य गणाय छे.

# न हिंस्यात्सर्वभूतानि मा हिंषि परमे व्योमन्। मागामनागामदितिं विधिष्ट--

अर्थ—सर्व प्राणीनी हिंसा न करवी. पशुनो वध करवो नहीं—अनपराधे पशुने। मास्वुं नहीं. एम श्रुति वचनना प्राबल्यथी देविपुराण वाममार्गना आगमनुं सामान्य पण गणाय नहि तो बहुमान्यतो शेनुंज मणाय एटछं नहि पण धर्मसिन्धुमां कालवर्ज प्रकर-णमां एवा मद्य मांसादि आगम वाममार्गना शास्त्रो मान्य करवा नहीं एम चोखुं छखेछं छे.

# मद्यभक्ष्यादिवामाद्यागमस्य तु न मान्यता मीमांसा द्वितीय सर्वशिष्टेश्च तदनादरात्॥

अर्थ--विदानमां पशुहिंसादि तथा मद्य आपवुं ते वाममार्गमा शास्त्रमां छे ने ते शास्त्रमां मान्य नथी. मीमांसामां तथा इष्टऋषि, आचार्योए तेनो अनादर करेलो तो साविक

पूजा करनारा—क्षत्रिय—विगेरे तेवां पशु हिंसाना वगर वेदना प्रमाणनां वचनने मानता नथी तम गणता पण नथी. कदि श्रुति उदित हिंसा कोई सोमादिकमां कहेछे, पण श्रुतिमां नथी कहेता. बीजा शास्त्रोक्त हिंसामां दोषछे. तेथी ते शास्त्र सामान्य पण न गणाय तो बहु मान्यतो शेतुंज गणाय.

#### मश्र ३

उत्तर—-जे उपर बतावेला देवीपुराणादि रहस्य जेमांके पशु हिंसादि बलिदाननो विधि बतावेलो छे. ते शास्त्रो वामी मार्गनां होवाथी तेथी श्रुति, स्मृति तथा इतिहास पुराणनां वचन बलवान् गणाय ते वळवान् शास्त्रमां घणी जगोए हिंसाना निषेध करेलो छे.

## प्रथमं श्रुतिवाक्यानि.

न हिंस्यात् सर्व भूतानि मागामनागामिदितिं विधिष्ठ, नमांसं भक्षयेत् ॥ इममूर्णायुं वरुणस्य नाभित्वचं पशूनां द्विपदां चतु-ष्पदंगात्वष्टुः प्रजानां प्रथमं जनित्रमग्नेमाहिंषि परमे व्योमन् ॥ शतपथश्चातिः । पशूनां नाशितव्यं द्यपकामंतमेधा एते पशवः

अर्थ — सर्व एटले देवतार्थे अथवा अग्निमां होमवाने माटे कदी पशुहिंसा करवी नहीं. ने ते पशु अनपराध छे. माटे अनपराधि प्राणीने मारवां ए केवल मूर्बाइ छे.— यजुर्वेदना १३ मां अध्यायमां अजमेष (बकरूं) ते वरुणनी नाभी छे. माणस तथा जानवरने तेना उनना धाबला विगरे थवाथी एक जातनी तेनी बीजी चामडी छे. ते त्वष्टा विश्वकर्माए ए पशुने प्रथम कल्पेलुं छे. माटे तेवा पशुने मारीश मां. पशुनुं मांस खावुं नहीं. केमके तेमांथी हाळ सार नीकली गयेलो छे. अने अंगिकार करवानो यज्ञसार निकली गयो छे.

## स्मृतिवाक्यानि

मनुभगवान् कहे छे.

# यावन्ति पशुरोमाणि तावत्कृत्वेह मारणं ॥ वृथा पशुघ्नः प्राप्तोति प्रेत्य जन्मनि जन्मनि ॥

अर्थ—सोमादिक यज्ञमां—वेदमां कहेल्छे. ते सिवाय एटले यज्ञसिवाय बलिदान विगेरेमां जे पशु मारेछे ते पशुहत्या करनारो जेटलां स्वाडां पशुनां होयछे तेटला जन्म सुधि ते मारणानी क्रिया करनारो थायछे. मेधातिथिव्याख्या-तावती जन्मना मावृत्तिर्मारणं प्राप्तोति वृथा पशुप्तः श्रुतिस्मृत्योरचोदितं पशुवधं यः करोति तच प्रकरणान्म-हानवम्यादिषु ठौकिकैर्यत् कियतेपशुप्त इति कप्रत्यये छांदसरूपम्

अर्थ—मेघातिथी एवीरीते उपल्या अर्थनी व्याख्या कहेछे. स्मृति श्रुतिमां कहेळ नहीं एवे। पशुवध करे छे एटळे ते नवमी दशराने दिवसे बळिना प्रसंगे वेदमां नहीं कहेळी हिंसा करनार अंधपरंपराथी वाममार्गथी चाळती आवेळी छैकिक हिंसा करनारा पशुन्न कहेवाय छे.

ते माटे मनु कहेछे के वेदमां नहीं कहेली हिंसा आफ्दू कालमां पण करवी नहि.

## यहे गुरावरण्ये वा निवसन्नात्मवान्द्रिजः नावेदविहितां हिंसामापद्यपि समाचरेत्॥

अर्थ--गृहस्थाश्रममां बह्मचर्य भाश्रममां-तथा वानप्रस्थाश्रममां न कहेली हिंसा आपद् कालमां पण करवी नहीं.

# यो बंधनवधक्केशान् प्राणिनां न चिकीर्षति स सर्वस्य हितप्रेप्सुः सुखमस्यन्तमश्रुते ॥

जे प्राणिने बंधन तथा वध विगेरे क्वेश नथी करता ते सर्व हित ईच्छनार अत्यन्त सुख पामे छे.

# नाकृत्वा प्राणिनां हिंसां मांसमुत्पद्यते कचित् न च प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसं विवर्जयेत्

प्राणीनी हिंसा करीने ज मांसने पामेछे ने हरेक प्राणी वध छे ते नरकप्राप्त करनारो छे. माटे मांसज त्याग करतुं.

## अनुमन्ता विशसिता निहंता क्रयविकयी संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः

हिंसा करनारने टेको आपे ते तेनां अंग नोखां करनार, हणनार, वेचनार तथा वेचातुं हेनार, पकावनार, इरण करनार, खानार ए दोषभागीछे. निवृत्तिस्तु महाफला वेदमां कहेली अथवा बीजी सघली हिंसामां दोष रहेली हे, तो तेथी निवृत्ति पामवी एज मोटुं पुण्यनुं फल हे. इतिहासवाक्यानि महाभारते अव्यवस्थितमयादैर्विमृढेर्नास्तिकेर्नरैः॥ संशयात्मिभरव्यकेर्हिसा समनुवर्णिता॥१॥ सर्वकर्मस्वहिंसां हि धर्मात्मा मनुरब्रवीत्॥ कामकाराद्विहिंसंतिबहिर्वेद्यां पशुक्रराः॥२॥ तस्मात्त्रमाणतः कार्यो धर्मः सूक्ष्मो विजानता॥ अहिंसा सर्वभृतेभ्यो धर्मभ्यो ज्यायसी मता॥३॥

अर्थ — वेदनी मर्यादा न जाणता एवा नास्तिक मूढ पुरुष जेने आत्मा अनात्मानुं ज्ञान नथी, तेणे हिंसादि शास्त्र प्रवर्त्तमान कर्यु छे. पण धर्मात्मा मनुए सर्व कर्ममां अहिंसाज करवीं एम कहेलुं छे. ते निहं मानी कामनापरत्व मनुष्य हिंसा करे छे. माटे धर्म पण सूक्ष्म छे. न्यायान्याय विचारी धर्म कार्य करबुं. सघला धर्ममां प्रांणिनी हिंसा न करवी ए वधारे मोटो धर्म कहेवाय छे.

छेला श्लोकनी टीकाकार आ रीते व्याख्या करेछे.

सर्वकर्मसु ज्योतिष्टोमादिषु अपि नराः कामकारादेव पशुं हिंसति न तु शास्त्रात् यतः धर्मात्मा मनुः सर्ववेदार्थतत्ववित् अहिंसा-मेवानवीत् शशंस सर्वथाप्यज्ञानानां कामकारकृता हिंसाकरणे प्रवृत्तिः इति सिद्धम

अर्थ — जे कोई कर्म एटले सोमादियागमां पण तथा बलिदानमां पण पुरुषो पोताना कामना परत्व पशुने मारेछे. कोई शास्त्राधारथी मारता नथी. केमके मनु चोखुं कहेछे के निदृ-ितिस्तु महाफला एवी रीते अहिंसाज वखाणे छे माटे सर्वथा मनुष्या अञ्चानथीज हिंसा कर्ममां प्रवृत्ति करे छे ए सिद्धान्त छे.

अहिंसा सकलो धर्मो हिंसाधर्मस्तथाहितः सत्यं तेऽहं प्रवक्ष्यामि न धर्मः सत्यवादिनाम् ॥

च्यास-अहिंसाज सकल धर्म छे-हिंसा अधर्म छे. तेमां धर्मज नथी तेथी सत्य कहुं छुं के हिंसायुक्त, धर्म, कर्म, सत्यवादि (सारा माणस) नुं नथी.

दानधर्में

इज्यायज्ञश्रुतिकृतैयों मार्गेरबुधो जनः॥ हन्यात् जंतून् मांसगृश्री स वै नरकभाक् भवेत्। बाले विगेरे नैवेद्यादि द्वारा अज्ञानि जन मांससारं पशुने मारी नांखे छे. ते नरक भागी थायछे.

# पुराणवचनानि श्रीमद्भागवते हिंसा विहाराह्यालुब्धाः पशुभिः स्वसुखेच्छया यजंते देवतायज्ञैः पितृभूतपतीन् खलाः

अर्थ — हिंसा करवामां जेने प्रीति छे अने मांस खावामां घणा लोलुब्ध छे तेओ यज्ञ नैवेदादिके करीने यज्ञमां होमे छे अने देवता अने पितृ भूतनुं बानुं काढी पशुनी हिंसा करेछे.

# वृत्ये परं घ्रंति पशूनतद्विदः

पशु मारवांमां मोटो दोष छे एम विचार न करनारा पोतानी द्यति चलाववा पशुने मारेछे.

## नारदपंचरात्रे

श्रुतिर्वदित विश्वस्य जननी व हितं रुषा ॥ कस्यापि द्रोहजनकं न वक्ति प्रभुतत्परा ॥ हिंसाविधिस्तु हिंसाया निवृत्त्यार्थोस्ति सर्वदा ॥ आत्मवत् सर्वभूतानि तेन पर्येच्च नान्यथा ॥

अर्थ- श्रुतिछे ते जगनी माता छे ने ते सौनुं हीत करनारी छे. ने कोईने पण द्रोह करती नथी जे हिंसाना विधिनी श्रुति आपणने हिंसा नहीं करवानो अर्थ बतावे छे. जेमके जेवो पोतानो आत्मा वहालो छे, तेवी सघला प्राणी उपर दृष्टी करवी आ विगेरे निषेधोनां घणां वचनो छे. पण प्रंथनुं महत्व थवाथी लख्यां नथी.

#### मश्र ४ थो.

उत्तर—राजाए देवीने महानवमीने दिवसे हिंसा करी बिलदान देवुं ए वेदोक्त अवश्य कर्म नथी. कर्म त्रण प्रकारनां छे. निस्य-नैमित्तिक अने काम्य ते न करे तो शास्त्रनीं आज्ञा तोडी गणाय ने तेमां दोष पण छे माटे जरुर निस्य करवां. तेम नैमित्तिक कर्म पण अवश्य करवां पण स्मृति श्रुति विहित करवां, पण वाममार्ग शास्त्रनां प्रमाणवालां तथा पुराणमां कहेलां हिंसावालां काम्यकर्म महानवमीने दिवसे बिलदान निमित्त पशुवध विगेरे

न करे तो ते बळवान् शास्त्रनी आज्ञा तोडी एम गणाय नहीं केमके ते शास्त्रथी न हिंस्यात् सर्व भूतानि ।। ए श्रुतिथी पण प्राणीने न मारवुं एम सिद्ध थाय छे. वाळे उपर कही गयेळा मनुवाक्यथी तथा मेधातिथिनी व्याख्याप्रमाणे महानवमी बळिदानने शास्त्रमां छौकिक क्रिया गणी छे. तेथी शास्त्र भंगनो दोष भावतो नथी. आ क्रिया कहेवी छे के चाळती आवेळी विरुद्ध कुळाचार क्रिया छे ने ते शास्त्राचार नथी एम व्यासे भारतमहात्म्यमां कहेळ छे. अंधपरंपराथी चाळती आवेळी रीत अद्यापि चाळती आवे छे. तो हिंसा न करवी ते उत्तम छे.

महाभारतमां कह्युं छे के

महाकुलेषु ये जाता वृद्धा पूर्वतराश्च ये
तेषामप्यसुरोभावो हृदयान्नापसपिति ॥ १ ॥
तस्मात्तेनानुभावेन सानुषंगेण पार्थिवाः
आसुराण्येवकर्माणि न्यसेवन् भीमविक्रमाः ॥ २ ॥
प्रत्यजिष्टश्च तेष्वेव तान्येव स्थापयंत्यपि
भजंते तानि चाद्यापि ये बालिशतरा नराः ॥ ३ ॥
तस्मादहं ब्रवीमि त्वां राजन्संचित्य शास्त्रतः
संसिद्धादिगमं कुर्यात् कर्म हिंसात्मकं त्यजेत् ॥ ४ ॥
धर्मशीलो नरो विद्वा नीहको नीहकोपि वा
आत्मभूतं सदा लोके चरेजूतान्यहिंसया ॥ ५ ॥

अर्थ:—मोटा कुलविशे उत्पन्न थयेला महाराजाओ, वृद्धो, पूर्वजो ते सघला आसुरि भावना थयेला छे कुलवाला होवाथी तेमना हृदयमांथी आसुरिभाव खसतो नथी. ते माटे तेना चालता आवेला जेम तेना सखाओ पण विचार कर्या शिवाय ते पण आसुरि कर्म करे छे, एटलुंज नहि पण तेने मजबुत करे छे. ते परंपरा स्थापना माटे पोते आसुरि कर्म करे छे. ने अज्ञानथी आज पण तेनो कोई तपास कर्या विना अन्धपरंपरा करे जाय छे. माटे व्यास देव नामना राजाने कहे छे. के हे राजन्! हुं शास्त्रथी विचार करी कहुं छुं के पोताना मनमां न्याय अन्याय विचारी सिधान्त करी हिंसात्मक कर्मी त्याज्य करवां. धर्मशील विद्वाने आत्मानी पेठे सौनी उपर दृष्टी करी प्राणीनी हिंसा न थाय तेम करवुं.

वळी आ महानवमी बिट्दान छ ते तामस वा राजस कर्म छ एटछुंज नहीं पण ते काम्य कर्म छे.

गीतायां त्रिविधं कर्मास्ति नियतं संगरिहतमर।गद्देषतः कृतम् अफलप्रेष्सुना कर्म यत्तरसात्विकमुच्यते यत्तु कामेष्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् अनुबंधं क्षयं हिंसामनपेक्षयं च पौरुषम् मोहादारभ्यते कर्म तत्तामसमुदाहृतम्

अर्थ--जे नित्य संध्यावंदनादि जेमां कामनानो संग नथी. जेने कांई पण जातनी इच्छा नथी तेनुं नाम साविक कर्म कहेवाय.

जेमां कामना रही छे, तथा अहंकार अभिमान साथे जेमां घणि महेनत रहि छे ते राजस कर्म कहेवाय.

जे कर्मनो नाश थयो छे, जे कर्ममां पशुहिंसा थाय छे, अने जे पोतानुं बलतपाश्या वगर अभिमान धरीने मानथी आसुरि संपत्ना मोह माटे इदं मद्यमयालब्धं इत्यादिवालु ते तामस कर्म कहेवाय.

ते कर्म महानवमीमां तथा दशराने दिवस पशुवध ए तामस कर्म छे अने काम्यकर्म छे तो ते न करवाथी शास्त्राज्ञा भंग थती नथी. केमके धर्मिसन्धुमां छाट्युं छे के जे महानवमी ए पशुवध बिट्टदाननो राजाने अधिकार छे ते केवळ काम्यज छे.

धर्मसिन्धुः । पत्र ३१॥

केवलं काम्य एव नतु नित्यः निष्कामक्षत्रियादेः सात्विकपूजाकरणे मोक्षादिफलातिशय इति

अर्थ — वामागमना प्रमाण क्षित्रवैश्यने मांससिहत देवीने बिटिदान पूजानो अधिकार हो. पण ते केवल काम्य छे, नित्य नथी. तो निष्काम क्षित्रिये सात्विक पूजा एटले पशुहिंसा-विना पण पूजा करवाथी उलटुं मोक्षादि मोटुं फल मन्ने छे. माटे हिंसा नित्यकर्म नहीं होवाथी ते न करे तो शास्त्रनी आज्ञा तोड्यानो दोष प्राप्त थतो नथी पण सात्विक पूजाथी हिंसारहित कर्म करवाथी मोक्ष मळे छे.

मनु कहे छेः— इन्द्रियाणां निरोधेन रागद्वेषक्षयेण च अहिंसत्वं च भृतानाममृतत्वाय कल्पते ॥ अधे — इन्द्रियनो जय करी राग देष क्षये करीने कोई प्राणीनी हिंसा न करे तो मोक्ष पामे छे. माटे श्रुति प्रतिपादित होवाधी ते हिंसावाला पुराणागमना वचनो प्रबल नथी माटे ते न करे तो शास्त्राज्ञानो भंग थतो नथी.

#### मश्र ५ मो.

उत्तर—आ उपस्या वचनोथी हिंसात्मक कर्म तामसिक ने काम्य ए वेदोदित छे.
ए तो प्रत्यक्ष जणावेलुं छे. तो ते महा नवमीनुं बिलदान पशु मारी न करे तो अमुक प्रत्यवाय लागे—एम कोई स्मृति वा पुराणनुं वचन नथी. एटलुंज नहीं पण होलिका पूजन विगरेमां
राष्ट्र दहन विगरे काल भेदे प्रगट वामोए निषेध करेलो छे. तथी आमां काई बिलदान न करे तो अमुक दोष कोई शास्त्रमां नथी. केमके आ काम्य कर्म छे. कारण के वाराही तंत्रमां
नवरात्रना विषयमां मांसादि होम, बिल, मारणक, उच्चाटन कामना भेदे होम करवो तेम वाराही तंत्रमां कह्युं छे.

# धर्मार्थकामसंवृद्धो मोक्षार्थी पायसं हुवेत् मारणे मोहने चैव तथोच्चाटनकर्मणि ॥ हुवेत् प्रदीपने वन्हो तिलधानादितंदुलान्

अर्थ—धर्म अर्थ कामना वालाए तिल्ल—यव—ने चोखा विगेरेनो होम करत्नो, मोक्षने माटे दूचपाक, मारण मोहन उच्चाटनमां मांस होम बलि करतां तो महानवमी बलि पशुवध अवेदोदित तथा काम्य छे. तेम कोई जगोए न करतां अमुक राजा प्रजा उपर भार एम लखेलुं नथी.

#### मक्ष ६ छे।

उत्तर—पशु हिंसाने बदले यज्ञमां तथा बिल्दानमां बीजी क्रिया शास्त्रमां लखेली छे ते पशुजगोए पिष्टनी प्रतिमा वा कूष्मांड ने श्रीफळ लई ते पशुने ठेकाणे कल्पी तरवारथी कापि बलि देवा कहेलुं छे.

#### श्रीनिर्णयसिन्धौ

दुगें देवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय बार्ले पूजां गृहाणत्वमष्टभिः सह शक्तिभिः सहेत्यावाह्यपूर्वोक्तमंत्रेण षोडषोपचारैः संपूज्य माषभक्तबर्लि क्ष्मांडादिबर्लि द्यादः तमज तेज प्रन्थोमां कार्छिकापुराणमां तेज जग्गे मांस प्रमाणे कूष्मांड अने शेरडीथी मांस प्रमाणे आपे.

# क्ष्माडमिक्षुदंढं च मांसं सारसमेव च एते बलिसमाः प्रोक्तास्तृतौ छागसमाः सदा

अर्थ — कोछं - रोरडी —सारसनुं मांस ए तमाम बिलनी बरोबर छे ने तथी देवी तृत थायछे एटछंज नहीं पण ते पशु मारवाना विधिप्रमाणे पशुवत् कोलाने तथा श्रीफलने बस्त्रथी विंटी छरीथी कापी बलिदान देवा पशु स्थाने योजना करी छै.

# छागाभावे तु कूष्मांडं श्रीफलं वा मनोहरं वस्नसंवेष्टितं कत्वा छेदयेच्छुरिकादिभिः॥

आ स्टोकनो भाव उपर आवी गयो छे. तथापि अहीं लखुंछुं.

अर्थ — बकराने ठेकाणे कोलां तथा श्रीफल ए वस्तुओने वस्त्रथी वीटी छरीथी कापी ने तेने बलिदानने ठेकाणे आपवां, आ उपरथी तंत्रने। विधि पण सात्विक कर्ताए पशुविना कोला विगेरेथी कहेला छे. एटले इद्रयामल—कालिका पुराण कहेतुं होय तो तेवी किया करवाथी पशु नहीं मारी ते जगीए कोला विगेरेथी विधि करे तो आज्ञा भंग शास्त्रनो गणाय नहीं.

तेमज महाभारतमां यज्ञादिमां, बिटदानमां पशुवध निहं करतां बीजो विधि करवे। एम कहेल छे.

## महाभारते

लोको यः सर्वभूतेभ्यो ददालभयदक्षिणां ॥१॥ समर्वभयोवजानः प्राप्नोत्यभयदक्षिणां ॥१॥ मृतानामहिंसाया ज्यायान्धनीऽस्ति कश्च न ॥ यस्मान्नोद्विजते भूतं जातु किंचित्कथंच न ॥१॥ सोभयं सर्वभूतेभ्यः संप्राप्नोति महामुने ॥ यस्मादुद्विजते लोको रूपादिदमगतादिव ॥३॥ न स धर्ममवामोति इइलोके परत्र च अकारणो हि नैवास्ति धर्मः सूक्ष्मोहि जाजले ॥ ४॥

# भूतरक्षार्थमेवेह धर्मप्रवचनं कृतं सूक्ष्मत्वान्नतु विज्ञातुं शक्यते बहु विन्नतः उपलभ्यांतराचाराचारीनवबुध्यत इति ॥ गद्यं

अर्थ — लोकने निशे अभय-दक्षिणा देनार अभय पामे छे. अने अहिंसा यजन कर-नार पण अभय पामे छे. प्राणीनी हिंसा समान निधि धर्मने माटे नथी. जेथी कोई पण प्राणी उद्देग पामे नहीं ते अभय थाय छे. जेथी प्राणी त्रास पामे छे ते आ लोकमां ने पर-लोकमां सारी गति पामतो नथी. हे मुने! सघला संप्रदाय मतनुं नाम धर्म पाडेलुं छे. पण ते धर्म सूक्ष्म छे. ते खरेखरो कोई जाणी शकतुं नथी. केमके तेमां घणां निशो आने छे तथी कोई जाणी शकतुं नथी.

## ॥ अत्र नीलकंठ व्याख्या ॥

उपलभ्येति उक्षाणं वा वेह तं वीक्षदन्ते महोक्षं वा महाजं वा श्रोत्रियाय निवेदयेत् इति स्मृतिश्रुतिविहितो गवालंभ एकाचारः मागामनागामदितिं विधिष्ठ इत्यत्र लिंगाय गतो गवोत्सर्जविधि तिद्धिरुधोऽन्य आचारस्तत्र अनागामिति विशेषणात् कृत्वा हिंसा विधेरहिंसाविधिर्ज्यायान् इति गम्यते । प्रजापत्यादिपशुष्विप तुल्य-स्वादित्यास्तां तावदिति

भावार्थ — मधुपर्कमां श्रुतिस्मृतिमां कहेलो एक आचार छे. बीजी तरफथी तेनी विरुद्ध ऋग्वेदमां अनपराधि बलद तथा गाया मारवी नहीं. एवा विधि बतान्यो, बीजुं गायोने छोडी देवी ए आचार छे. ते बावतमां विचार न करतां अनपराधि पशु यज्ञमां तथा बिलमां सरखां छे. माटे हिंसा न करतां यज्ञ करवा ने आहिस्त बिल आपवां ए विधि श्रेय छे. एम नीलकंठना अभिप्राय छे.

तेमज श्रुतिओमां तथा वेदमां सोमयागादि प्रयोगमां पण जे पशुहोम कहेला छे. ते जगो पाकसंस्थामां श्रौतस्मार्तकर्ममां पण ते पशुस्थाने पुरोडाश तथा चरु—आमिष विगेरे कहेला छे. तो आ लौकिक तांत्रिक्रयामां प्रतिनिधि कूष्मांडादि करवामां कोई शास्त्र बाध करतुं नथी, पण विशेष अभ्युदय छे.

#### महाभारते

तस्य तेनानुभावेन मृगहिंसात्मनस्तदा तपोमहत्समुच्छिन्नं तस्माद्धिस्या न यज्ञिया अहिंसा सकलो धर्मो हिंसाधर्मस्तथाहितः॥ इत्यादि

अत्राख्यायिकातात्पर्यं पशुकार्येश्यामाकादिविकारांश्वरुपुरो-डाशादीनकुर्यात् इति गम्यते तथा च ग्रहे अथश्वोभूतेष्टकाः पशुना स्थालिपाकेनवेति । पशुस्थाने स्थालिपाको विधीयते एवमन्यत्रपुरो-डाशामिक्षानां पशुस्थाने विधानमवगंतव्यं—तस्माद्हिंसानयज्ञिया॥

भावार्थ — पशुनी जगोमां ते कार्यमां सामो — दूधपाक विगेरे अन्न विकार सपुरोडाशा-दिक करवा कहेलुं छे. माटे पशुस्थाने दूधनो पदार्थ वा माषानादि करवा लखे छे. माटे हिंसायज्ञ करवा तथी अहिंसायज्ञ करवा ते वधारे सारू. एटलुंज नहिं, [ विल भारतादिकमां कहेलुं छे के, ] धूतारा वामी छोकोए, मांस, मदिरा पूजाने बांने पोताने खावा माटे कहेलुं छे.

#### महाभारते

यदि यज्ञांश्च वृक्षांश्च यूपांश्चे द्विष्य मानवाः वृथा मांसं न भक्षंति नेष धर्मः प्रशस्यते ॥ १ ॥ सुरा मत्स्या मधुमांसमासवं कृशरीदनम् धूर्तैः प्रवर्तितं ह्येतत् न वै वेदेषु कल्पितं ॥ २ ॥ मानानमोहाच लोभाच लौल्यमेव प्रकीर्तितम् विष्णुमेवाभिजानंति सर्वयज्ञेषु ब्राह्मणाः ॥ ३ ॥ पायसैः सुमनोभिश्च तस्यापि यजनं स्मृतं

अर्थ—यज्ञीय वृक्ष गोयूपादि करी पशुने बांधी यज्ञद्वारा मांस थवाथी वृथा नथी खाता ए कोई धर्म नथी. तेमज सुरा, मत्त्य, मधु, मांस, आसव, लीमडी विगेरे पदार्थी वेदमां नथी ए सवलुं धूताराओए पोताना मोह, लोभथी प्रवर्तमान करेलुं छे. जे विष्णुने जाणे छे ते सचला ब्राह्मण पुष्पादिकथीज देवनुं पूजन करे छे.

भा हिंसाचाल पशुहिंसाना त्रेतायुगथी व गरे बलवान थयो छे. एम महाभारतमां तथा इतिहासमां छे. ते नीचे —

इत्यर्थं निर्मिता वेदा यज्ञाश्चोषिभिः सह एभिः सम्पक्षयुः क्तिश्च प्रीयन्ते देवताक्षितौ । इदं कृतयुगं नामकाळश्रेष्टःप्रविर्ततः । आहिंसा यज्ञपशवो युगेऽस्मिन्नतदन्यथा तत् त्रैतायुगं नाम त्रयी यत्र भविष्यति ॥ प्रोक्षिता यज्ञपशवो वधं प्राप्स्यंति वै मखे । तत्तस्तिष्ये चहं प्राप्ते युगे कळिपुरस्कृते ॥

> षकपादस्थितोधमों यत्र तत्र भविष्यति यत्र यज्ञाश्च वेदाश्च तपः सत्यं दमस्तथा

अहिंसाधर्मसंयुक्ताः श्रचरेयुः सुरोत्तमाः । रुचोदेशः सेवितव्यो मावोधर्मः पदास्यशेत् ॥

मार्वार्थ — वेद साथ बाषि बई छे माटे बाषिथी बिछ विगरेथी देवी प्रसन्न थाय छे. — भगवान कहे छे — हाल सत्वयुगमी पशुवध नथी. त्रेतायुगमा तेनुं प्रबल थारो. ज्यारे किल आवरो त्यारे बंध थरो तो तमारे जे जगो आहसा विधि थाय ते जगोए रहेवा जर्जु.

वर्छा कर्छ।युगमां धर्मीसधुमां हिंसाविधि मधुपर्कादिकमां मने करी छे. मधुपर्केपशी-विधः श्राद्धेमांसपदानंच वर्ज्य ।। इत्यादि श्रुतिस्मृतिमां हिंसाविधि पण निषेध करेलो छे. तो तांत्रोनो विधि पशुवध वर्ज्य होय तेमां शुं आश्चर्य.

विक्ठ केटलीक जगी वास्तु नैवेदमां बिल्दानमांपण अडदनो लोट लई तेनो पशु

## शांतिसारे.

# जयंताय ध्वजं पीतं पैष्टं कर्मे च संत्यजेत्

एम वास्तु बिंगां पण पिष्टनां पशु कहेळ छे. तेमज चातुर्मास्यादिकमां पण हाळ पिष्टनाज थाय छे. तेमज श्रुतिमां जे जगो वसानुंछंभन कहेलुं छे. ते जगोए कात्यायने पोताना सुत्रोमां ( प्यस्यावा ) एम पशुस्थाने पयस्या करवा छखेलुं छे.

# स्मृत्यंतरे.

पशुस्थाने पुरोडाशं निर्वपेत् पशुदैवतं आमिषामथवा कुर्यात् पूर्णाहुतिमथापि वा

٠,

पशुस्थाने पुरोडाश ते देवतानो करवो वा दूधनी भामिष दहिं नांखी करवी वा पूर्णोहुति करवी,

ते. मनुए पण पशुस्थाने पिष्टपशु कहेल छे.

# यज्ञे पिष्टपशुं कुर्यात् संगे घृतपशुं तथा

यज्ञमां बिलमां पिष्टनो वा घृतना पशु करवा वृथा पशु करी बंध विधि करवा तेमां कोई शास्त्रना बाध नथी.

#### पश्च ७ मो.

पशुवध करवाने बदले तेना नाक काननो छेकोकरी ते प्राणीने छुटुं मेली देवामां आवे तो क्रिया करी धई गणाय के केम ?

#### उत्तर ७ मो.

पशुवध करवाने बदले तेना अंगने छदन करी प्राणीने छूटो मूकवानो लेख कांई लखेलो नथी. परन्तु ॥ रुधिराक्तेन बिलना मांसेन सुरया नृप ॥ एवा वचनथी ते पशु माहेना एक देशना रुधिर सहित अन्नथी बिलदेवाय तेमां प्रत्यवाय नथी केमके बिलना विकल्पमां पोताना अंगनुं रुधिर मात्र लखेलुं छे. अने वधना रुधिरथी पण तृती थाय छे. माटे पोतानो निष्क्रय पशु साथे करी तेना अंगनुं रुधिर अने ओदन धरी तेने छुटुं मुकवा हरकत नथी. सोमादि यज्ञमां लख्या नामना पशुने यज्ञस्तंबे बांधी पर्याग्निकृत पशुने प्रदिश्वणा करावी नहीं मारी छूटी देवा लेख छे. तेमज अश्वमेधादिकमां आरण्य पशुनुं आलंभन करीं छोडी देवा लेख छे. तेमज आम चालतो रीवाज मधुपर्कमां गृह्यप्रमाणे चाले छे.

यजमान कहे छे गौ: गौ: एम कही बिलेने प्रहण करे छे. ते माता रुद्राणा इत्यादि मंत्र भणीने कहे छे के—उत्मृजत नृण्यायतु—एम कही ते पशुनुं उत्सर्जन करवा कहे छे. तो पशुनो उदेश देवीतरफ करे तेना अंगभंगथी रुधिर—ओदनथी बिले देवामां कांई हरकत नथी. तथापि कूष्मांडादिनी पूजा करी धर्मसिन्धुमां कहेलो विधि वधारे प्रशस्त छे.

ते रुद्रयामल प्रमाणे कूष्मांड तथा नालीयरने वस्त्र बिंटि तेनी पूजा करी धर्मसिन्धुमां कहेला विधिप्रमाणे बलि आपवो.

# कूष्मांडो बलिरूपेण ममभाग्यादित्यादि

इत्यादि विधिधी कूष्मांडधी बिल पशु स्थाने देवुं. आ विधि यज्ञमां घणी जगाये छे. तेम आ पशुबंलि वेदोदित नथी एटले प्रत्यवाय न करे.

### उपसंहार तात्पर्यार्थ.

दशराने दिवसे महानवमी निमित्त देवता बिल वेदोदित नथी.—न हिंस्यात् सर्वभृतानि एवी श्रुतिथी हिंसा करवा सौ प्राणीने मनाई करी छे. कदापि देवीपुराणमां तथा चंडिपाठ विगरेमां विल्दानमां पशु छखेलो छे. परन्तु ।। नावेदविहितां हिंसामापद्यपि समाचरेत् ।। एम मनुए कहेलुं छे. हिंसा आपद् कालमां पण न करवी एम कहेलुं छे ।। सर्वथानं यदा न स्यात् तदेवामिष माश्रये ।। आवी रीते कहेलुं छे. ।। कलौ मनुपराशरौ ।। एवा छेखथी किल्युगमां मनु तथा पराशर बेए मान्य गणाय छे. वळी अनपराधि प्राणीनी हिंसा न करवी एम वेद कहे छे. ।। अस्वर्ग्य लोकविद्विष्टं धर्ममप्याचरेत् न तु ।। मनुए पशुवध अस्वर्ग्य कहेलो छे. लोकविद्विष्टं पण छे. माटे पशुनी जग्याए कूष्मांडादि बिल आपतु ए श्रेष्ठ छे. तथास्तु.

आपनुं लखाण अमारी पासे घणुं मोडुं आववाधी घणो शोध थई शक्यो नथी तेथी संपूर्ण खुलाशा नथी.

ता० २०--- ९४.

पाठक. गोराभाई रामजी,

जुनागढ कन्याशाळापासे.

# न. १३.

#### शास्त्री हरिद्त करुणाशंकरनो अभिप्राय.

# आस्तिकवर्ग विभूषण रा. रा. माणजीवन, चीफ मेडिकल ऑफिसर

धर्मपुर स्टेट.

भापनुं छापेछुं पत्र ता. १४-९-९४ ने रोज रवाना करेछुं मने ता. १७-९-९४ ने रोज रवाना करेछुं मने ता. १७-९-९४ ने रोज सायंकाले मळ्युं छे. आपनी अहिंसा धर्ममां सारी रुचि जाणी चित्त प्रसन्न थयुं छे. आपना उखेला प्रश्नोनुं उत्तर सविस्तर आपवा अधिक कालनी अपेक्षा छे. तथापि आपे सत्वर उत्तर आपवा जणावेछुं छे. माटे टुंकी मुदतना प्रमाणमां टुंकामां पण खुलासावार आपना प्रश्नोनो अनुक्रमे उत्तर आपुं छुं. ते उपर लक्ष आपशो.

१—आ प्रकारनी हिंसानुं प्रतिपादन देवीभागवत, कालिकापुराण, रुद्रयामल तथा डामरतंत्र आदि तंत्रग्रन्थो तथा दुर्गाभक्तितरंगीणीआदि शास्त्रग्रंथोमां छे.

२—आ जातिना प्रन्थो दुर्गाना उपासनाओमां मान्य गणाय छे. सर्व आर्य प्रजामां मान्य गणाता नथी. कारण के आ एक पोतपोतानो कुलाचार छे. माटे जेश्नोना
कुलमां उपास्य स्वदेव दुर्गा छे, ते कुलना पुरुषोने उपरना प्रंथो प्रमाणभूत छे. देवीना
भक्तो पण वे प्रकारना छे. एक वाममार्गी तथा बीजा दक्षिणमार्गी; तेमां वाममार्गी लोको
महानवमीनी समाप्तीमां साक्षात् पशु महिषादिनो देवीनी सन्मुख वध करे छे. तेमज मद्यपान पण करे छे. परंतु जे दक्षिणमार्गी छे, तेओ कूष्मांड [कोलुं] वा श्रीफल आदिनो
पश्चने स्थले उपयोग करे छे. माटे शक्ति भक्तीमां पण केवल वाममागाओनेज हिंसाप्रति—
पादक क्रियाप्रधानप्रन्थो मान्य छे. सकल आर्यजनोने ए प्रन्थ सर्वथा मान्य नथी.

३—धर्मसिन्धु, निर्णयसिन्धु आदि सर्वमान्य प्रंथोमां उपरनी क्रियाना संबंधमां आ-

विश्रेण यवहोमान्नबिलनेवेद्येः सात्विकीपूजा कार्या नैवेद्येश्च निरामिषेः ॥ मद्यं दत्वाब्राह्मणस्तु ब्राह्म-ण्यादेव हीयते ॥ मद्यमपेयमदेयमित्यादिनिषेधानां मांसमद्ययुत पूजायां ब्राह्मणस्य नाधिकारः स व केवलं काम्य एव न नित्यः ॥ निष्कामक्षत्रियादेः सात्विंकपूजाकरणे मोक्षादिफलातिशयः॥ ( ध० सिं० द्वि० प० पत्र ६६ ),

अर्थ:—जव होम, अन बिल तथा नैवेद्य वहें साविक पूजा करवी, मांसरिहत नै-वेद्य समर्पवुं. मद्य अर्पण करवाथी ब्राह्मण ब्राह्मत्वथी श्रष्ट थायछे, मद्य पीवुं नहीं तेम आपवुं पण नहीं इत्यादि निषेध वाक्यों छे. माटे मांस, मद्य सहित पूजानो ब्राह्मणने अधिकार नथीं. क्षत्रियने मांस मद्यपुक्त जप होमादि साहित राजसपूजामां पण अधिकार छे. आ स्थले अपि राब्दनुं ग्रहण करेलुं छे. ते उपरथी तेनो साविकपूजामां पण अधिकार छे. आ काम्य-कर्म छे. नित्यकर्म नथीं माटे काम्यकर्म न आचरवाथीं कोई प्रकारनी हानिनो संभव नथीं. मुमुक्षु पुरुषने तो काम्य निषेधनुं वर्णन योग्य छे. निष्काम क्षत्रिय आदिने सर्वोत्तम फळनीं प्राप्ति थाय छे.

निर्णयसिन्धुना दितीय परिच्छेदमां लस्युं छे के,-

अशक्तो ब्राह्मणेन च कूष्मांडादिभिर्बेलिदानं कार्यं। उक्तं च कालिकापुराणे

कृष्मांडिमिश्चदंडं च मांसं सारसमेव च एते बिलसमाः प्रोक्ता स्तृसो छागसमास्तथा छागाभावे तु कृष्मांडं श्रीफलं वा मनोहरं वस्त्रसंवेष्टितं कृत्वा छेदयेच्छुरिकादिना

अर्थ:—क्षत्रिय तथा वैश्ये तथा ब्राह्मणे कूष्मांड विगेरेथी बलिदान आपवुं. कालिका-पुराणमां कहुं छे के—कूष्मांड, शेरडी सांठो, सारसनुं मांस ए बलितुस्य समजवां, तेथी देवीने बकरा बरोबर तित थाय छे. रुद्रयामलमां पण कहुं छे के,—

छागने अभावे कोछुं अथवा संदर श्रीफडने वस्त्र वंडिने छरी विगरेणी तेने कापवां—

उपरना वाक्यमां पुन छर्युं छे के अशक्त क्षत्रियादिये क्ष्मांडादिनो बार्ड आपवो तो द्यावान् राजर्षिनी आवां ऋरकर्ममां अप्रवृत्तिने अशक्तिरूपे गणवामां कशो बाध नर्था,

धर्मसिन्धुमां बलिदान प्रकरणमां लख्युं छे के,——

# सकामेन क्षत्रियादिना सिंहव्याघनरमहिषच्छागसुकरमृगः पक्षिमरस्यनकुलगोधादिप्राणिस्वगात्ररुधिरादिमयो बलिदेंगः

अर्थ:—क्षत्रि जो कामना विशेष युक्त होय तो तेणे सिंह, व्याघ्न, नर, महिष, छाग, सुकर, मृगपाक्षि, मत्स्य, नोलियुं, घो विगेरे प्राणीनो तथा पोताना रुधिर विगेरेनो पण कामनानुसार बलि आपवो. आधी तुच्छ कामनारहित क्षत्रियने आ हिंसा प्रधानकर्म आदरवा योग्य नथी एज स्पष्ट समजाय छे. वली मद्यमांसादि वडे आराधन वामाचार गणाय छे, अने वाममार्गने अनुकूछ शास्त्रो कल्यियुगमां प्रमाणभूत नथी. एम धर्मसिधुकार कल्यिकं प्रकरणमां कहे छे.

# मद्यभक्षादि वामाद्यागमस्य तु न मान्यता

मद्य मांसादि भक्षणनुं प्रतिपादनकरनारा वाममार्गना शास्त्रो कलिमां प्रमाणभूत नधी.

मा हिंस्यात्सर्वभूतानि कोई पण प्राणिनी हिंसा करवी नहीं. अहिंसा परमो धर्मः को धर्मोभूतद्या इत्यादि श्रुतिसमृति तथा आतपुरुषना वाक्यो अहिंसा प्रतिपादक अनेक छे. परंतु वखते तेमां जगाना संकोचने छींचे आ स्थले सर्व लख्यां नथी.

- ४—सर्व राजाओने ते अवस्य कर्तव्य नथी. तेम न करवामां आवे तो कोई प्रबलशास्त्रनी आज्ञानो भंग थतो नथी. वली सात्विकी क्रिया करवाथी ए एकदेशीशास्त्रनुं मान पण रहे छे.
- ५——जो देवी पोताना प्रधान उपास्य देव होय तो तेनी योग्य समये आराधना न थवाथी हानिनो संभव खरो परन्तु सात्विकी पूजावडे श्रीजगदंबानुं श्रद्धा भक्तिपूर्वक रूडे प्रकारे आराधन थई शके छे. माटे हिंसा प्रधानित्रया न करवामां कशो पण बाध नथी.
- ६—आ प्रश्ननुं समाधान उपरना प्रश्नोना उत्तरथी थई गयेलुं आपने जणाहो माटे ति विशे अधिक कलवा प्रयोजन जणातुं नथी.
  - ७--एवी रीते छेकी देवा करता ए तामसिकया नज करवी ए अतिउत्तम मार्ग छे.

#### चपसंहार.

आपना महाराजाश्रीने आ प्रकारनी वृत्ति थई छे, तथी तेमने धन्यवाद घटे छे. आप छखोछो तेवी वृत्ति एमनी होय तो खरेखर राजर्षिपदने योग्य छे. ज्यारे आ प्रकारे तेनी वृत्तिनुं वलण आहसा तरफ छे. तो तेओ शिकारने बदले पण बिचारां निरपराधि मृगादि पशुक्रोनो पण वध नहींज करता होय, जे सर्व प्रकारनी हिंसाथी निवृत्त छे. तेणे बिकिनिमित्त पण हिंसा करवी उचित नथी. सघला भरतखंडना राजाओनी श्रीधर्मपुरना राजाना सरखी वृत्ति थाओ. एम अमे श्रीपरमात्मपासे याचना करिए छीए.

> योधर्मपुरभूपालः सद्धर्मनिरतः शुचिः हिंसाप्रधानं स कथं धर्माभासं समाचरेत्

> > लि॰ हरिद्त्त कडणाशंकर.

जुनागढ सं० पाठशालाना शास्त्रीना आद्मीर्वाद्

# नं. १४.

#### वैच रघुनाथ इंद्रजीनो अभिप्रायः

हिंसा न करवाथी सारुं छे, एवां वाक्य श्रीमद्भगवद्गीता तथा श्रीमागवतमां छे. जेने मोटा मोटा भाचार्यो प्रमाण माने छे. अने जेनी उपर टीकाकारे गीताजीमां अहिंसासत्यमस्ते-यिम्त्यादि वाक्यो छखलां छे, ने श्रीमद्भागवतमां पण एकादश स्कंधमां विभूति अध्यायमां छखे छे जे द्वताना मिविहिंसनं ने जे उपर आज कायदा चाले छे, ते स्मृतिमां पण अहिंसा परमोधर्मः छखे छे माटे हिंसा न करवाथी श्रेय छे. ने हिंसा करवानुं देवीपुराण अथवा कालिकापुराण एमां छख्युं हशे, ते काई सदाचार के आर्यधर्ममां मानवा लायक छे नहीं. तेना उपासक तेने माने छे. ने जे पाडा, बकरानो वध करे छे, ते रूढिथी करता हशे. कारणके कोई सारा प्रन्थमां एवं छख्युं नथी. जे हिंसा न करवाथी नुकसान थाय पण हिंसा जेने वालि छ तेवां केटलांक मनुष्य वहेम नांखे छे. जे दरसाल करता होय ते न करवाथी नुकसान थाय ए बहेमथी मनुष्य डरतां हशे. पण कोई सारा प्रन्थमां हिंसा न करवाथी नुकसान थाय ए बहेमथी मनुष्य डरतां हशे. पण कोई सारा प्रन्थमां हिंसा न करवाथी नुकसान थाय ए बहेमथी मनुष्य डरतां हशे. पण कोई सारा प्रन्थमां हिंसा न करवाथी नुकसान थाय ए बहेमथी जाणवामां आव्युं नथी.

लिं• जुनाग**ए**नाः

वैद्य, रघुनाथ इंद्रजी प्रश्नोरानागरः

# नं. १५.

#### घोराजीवास्ता पारेख वनेचंद पोपटनो अभिप्राय.

रा. रा. प्राणजीवन जगजीवन, चीफ मेडीकल ऑफिसर.

मु. धर्मपुर.

घोराजीथी छि. पारेख, वनेचंद पोपटना जुहार वांचशो. बाद आज रोज आपना महाराणा तरफथी सात प्रश्न पूछवामां आव्या छे. तो तेनो जवाब हुं यथामति आपुं छुं ते स्वीकारशो.

# अहिंसानिषेधप्रकरणम्

प्राणिमात्रहिंसानिषेधनामिषाशननिषेधः ॥
तत्र महाभारते देवान् प्राति महर्षिवचनम्॥
बीजैर्यज्ञेषु यष्टव्यमिति वै वैदिकी श्रुतिः॥
अजसंज्ञानि बीजानि छागं नो हन्तुमर्हथ॥

अर्थ:—कोई जीव प्राणीमात्रनी हिंसा न करवी तथा मांस भक्षण न करवुं. तेना प्रतिपादन करनारा छोकनो अर्थ—महाभारतने विशे देवताओप्रत्ये महार्षनुं वचन क, हे देवो ! यज्ञमां धान्यना बीजे करीने होम करवो ए वेदनी श्रुति कहे छे. ने अजे क्र्रीने होम करवो एम पण वेदनी श्रुति छे. तो अज एटले न उगे एवां धान्यनां बीज समजवां पण अज एटले वकरों न समजवां. माटे बकरांने मारवा तमो योग्य नथी.

श्रीमद्भागवते चतुर्थस्कंधे, प्राचीनमर्हिषिप्राति नारदवाक्यं.

वायुमत्स्यपुराणयोर्देवेंद्रं प्रति महर्षिवाक्यम् तथा च । यज्ञो बीजैः सुरश्रेष्ठ येषु हिंसा न विद्यते ॥ त्रिवर्षपरमं काल मुपैतै रप्ररोहिभिः ॥

अर्थ:—वायुपुराण तथा मत्स्यपुराणमां देवेंद्रप्रत्ये मुनिये कह्युं छे. हे देवेंद्र ! त्रण वर्ष सुधी पढतर रहेरु ने वावत उमे एवा धान्यनां बीजथी यह करवो [ कारण के आवां धान्यने विशे हिंसा नथी अने उमे एवा धान्यथी यह करवानी शास्त्रमां मनाई छे. तो देवने केम राजी कराय ! नज कराय. ] माटे हिंसारहित काम करवां एज वेदनुं मत छे.

# भो भो प्रजापते राजन् पशून्वश्य त्वयाध्वरे संज्ञापितान् जीवसंघान् निर्घृणेन सहस्रशः

अर्थ:—हे प्रजापित राजन् ! दयारहित एवं तुं तेणे यह्मां मार्या जे हजारी पृष्ध तथा ते यज्ञमां मार्या जे बीजी जातना केटलाक जीवसमूह तेने मारा बताववाथी नजरे जो.

# एते त्वां संप्रतीक्ष्यन्ते समरंतो वैशसं तव संपरेतमयःकूटैशिछदंत्युत्थितमन्यवः

अर्थ:—यज्ञमां मार्यो जे पशुओ तथा बीजा जीवना समृहो ते सघलां तारा वैरने सं-भारता तारी वाट जोईने उभा छे. आ देहनो त्याग करीने परलोकमां गयो जे तुं तेने देखीने जेओने घणो क्रोध थयो छे. एवां सर्व पशुओ तथा बीजा जीवना समृहो लोढाने जुवाडे करीने तने छेदशे (कापशे).

नारद्पंचरात्रवचनस्

# श्रुतिर्वदाति विश्वस्य जननीव हितं सदा कस्यापि द्रोहजनकं न वक्ति प्रभुतत्परा

अर्थ:—समर्थ परम दयालु मूर्ति ईश्वरने प्रतिपादन करनारी जे श्रुति ते मातानी पेठे निरंतर जगतना हीतनेज कहे छे. पण कोई जीवनो द्रोह थाय तेवुं वचन नथी बोलती. माटे वेदमां हिंसा करवानुं कोई जगाए कह्युं नथी.

# न तच्छास्त्रं तु यच्छास्त्रं वक्ति हिंसा मनर्थदाम् यतो भवाति संसारः सर्वानर्थपरंपरः

अर्थ:—अनर्थने आपनारी हिंसानुं जे शास्त्र प्रतिपादन करतुं होय. तो ते शास्त्र मान्य गणातुं नधी. समग्र दुःखनी परंपरावालो जे संसार तेमां वारंवारज मृत्युरूपी प्रवाह जीवनी हिंसाथी थाय छे. जे शास्त्र हिंसानुं प्रतिपादन करतुं होय तेने तो शास्त्रज मानवुं नथी.

भारते भीष्मवचनम्,

# सर्वकर्मस्वऽहिंसां वे धर्मात्मा मनुरव्रवीत् कामकाराद्विहिंसांति बहिर्वेद्यां पश्काराः

अर्थ:— धर्मात्मा मनु ते सर्व कर्ममां कोई प्राणिनी हिंसा करवी नहीं, एम कहेता आव्या छे. मांसना खानारा मांस खावानी इच्छाथी यज्ञशालानी बहार पशुकोने मारे छे, ते केवळ रसास्त्राद मांटेज छे. पण शास्त्र प्रतिपाध नथी.

# तस्मात् प्रमाणतः कार्यो धमः सृक्ष्मो विजानता । आहिंसा सर्वभूतेभ्यो धर्मेभ्यो ज्यायसी मता

अर्थ:—माटे विशेषे करीने सर्व शास्त्रना सिद्धान्तने जाणनारो जे पुरुष तेणे सर्व शास्त्रना प्रमाणथी अहिंसारूप जे सूक्ष्मधर्म तेज करवो केम जे सर्व भूतनी जे अहिंसा ते अर्व धर्मथी श्रेष्ट मानी छे.

**वृद्धपराशरेणोक्तम्** 

# यस्तु प्राणिवधं कृत्वा देवान् मांसेन तर्पयेत् सोऽविद्रांश्चंदनं दग्ध्वा कुर्यादंगारलेपनम्

अर्थ:—जे पुरुष प्राणीनी हिंसा करीने देवताओंने मांस वडे तृप्त करे छे. ते मर्ख पुरुष सार्ध सुगंधिवाछुं चंदन बालीने तेनी राखनुं पोताने शरीरे लेपन करे छ. माटे कोई काममां प्राणीनी हिंसा करवी नहीं.

महाभारते युधिष्ठिरं मति भीष्मवचनम्

# प्रोक्षिताभ्युक्षितं मांसं तथा ब्राह्मणकाम्यया निर्दोषं सर्वथा मांसं विचते नैवभूतछे

अथे—हवे मांस भक्षणना निषिद्ध वाक्यो कहेवामां आवे छे. महाभारतमां युधिष्ठिर-प्रत्ये भिष्मपिताए कहां छे, कोई कपुरुषे देवताने निवेदन कर्युं तथा पित्रियोने निवेदन कर्युं एयुं जे मांस तेना भक्षण विशे मोटो दोष छे, ब्राह्मणनी आज्ञाए करीने मांस भक्षण करतुं तेन विशे पण दोष छे. माटे कोई प्रकारे मांस निर्दोषवाञ्चं नथी. तेथी तेनुं भक्षण क्यारेच न कर्तुं.

# सप्तर्षयो वालखिक्यास्तथैव च मरीचयः॥ अमांसभक्षणान् राजन् प्रशसांति मनीषिणः॥ १९॥

अर्थ:—शहंसा धर्मयुक्त छे. इडीबुदिवाला एवा जे बिसाहादि सात ऋषिको तथा सूर्यना किरण ने सूर्यना मंडलने विशे रहेनारा जे सात हजार वाल्यखील्य नामे ऋषिको मांस अक्षण नथी करता. तेना वखाण करे छे. ने मांस अक्षण करे छे. तेनी सौ माणस निंदा करे छे. माटे मांस अक्षण न करवं.

पूर्व तु मनसा त्यक्त्वा तथा बाचा च कर्मणा न भक्षयति यो मांसं क्रिकिप सो विमुख्यते अर्थ:—हे राजन् ! जे पुरुष प्रथम तो मने करीने पछी वाणीथी पछी देहे करीने पछी कर्में करीने जे मांसने नथी खातो ते अनेक प्रकारना संसारना दुःखथी मूकाय छे. ने सुख पामे छे. तथी मांस भक्षण न करवुं.

# न हि मांस तृणात्काष्टादुत्पलाद्वापि जायते जंतुघाताऋवेन्मांसं तस्माद्दोषोपि भक्षणे

अर्थ:— हे राजन्! मांस खडथी उत्पन्न नयी थतुं तथा काष्ट्रथी उत्पन्न थतुं नथी तथा पाषाणथी थतुं नथी. मांस तो जंतुओना घातथी थाय छे. माटे मांस भक्षण विषे मोटो दोष छे.

ऋषिभिः संशय पूष्ठो वसुश्चेदिपातिः पुरा अभक्ष्यमिप मांसं सप्राह भक्ष्यमिति प्रभो ॥ १४ ॥ आकाशात पतितः सद्यो भूमौ स नृपातस्तदा पतदेव पुनश्चोक्ता विशेषे धरणीतलम् ॥ १५ ॥

भावार्थः — हे समर्थ युधिष्ठिर राजा—पूर्वे विश्वतनामे इंद्र थयो तेणे पञ्चभोनी हिसायुक्त यह करवा प्रारंभ करों हतो. ते यहास्थानमां महात्मा सनकादिको आवी चड्या. ते महात्मा-भोए इंन्द्रादि देवगणोने कह्युं के हिंसायुक्त यह करवानी वेदमां मनाई छे. अने तमो देवता थईने हिंसामय यह करीन मांस भक्षण करोछो. ते तमोने घटतुं नथी एवी रीते ऋषिनों ने देवगणोनो विवाद चास्यो ते वखतमां चेदी नगरीनो राजा चरववसु महा धर्मवान् मां आवी पहोच्यो. त्यां ऋषिमहात्माभोए कह्युं के हे राजन्—अमारो ने आ देवताओं नो संवाद तेमां तमे। मध्यस्थ थाओं अने यथार्थ कहो. त्यारे वसुराजाए इंद्रने पक्षपाते करीने कह्युं के वेदमां हिंसामय यह्नकरीने मांस भक्षण करवातुं कह्युं छे. एवं असत्य वचन बोळतां तत्काळ आकाश थकी पृथ्वीमां पडयो त्यारेवली वसुराजाने माहात्माए कह्युं के साचुं तुं बोळ. त्यारे ते राजा प्रथमनी पेठे बोल्पो. एटले तुरत पृथ्वी फाटी एटले ते वसुराजा पाताळमां पत्नों ने महद् दुःखने पाम्यो. एवी रीते पशुने मारीने मांस खावुं आटलुं बोल्यो तेथी पाताळमां पडयो. माटे जे पशुनो बध करे ने मांस खाय तेने पाप लागेछे माटें पश्चो मारवां महीं ने मांस खावुं नहीं. ए श्चितमां तथा स्वृतिमां सिद्धांतछे.

पारेक, बनेचंद पोपट सोतिचंद, यु॰ धोराजा.

# न. १६.

#### घोराजीबाळा पारेख, पोपट मोतिचंदनो अभिप्राय.

#### धोराजी तारीख १८ सप्तेम्बर १८९४.

सदा महेरबान राजमान्य राजश्री प्राणजीवनदास वि० जगजीवनदास महेता. धर्म-पुरना चीफ मेडीकल ऑफीसर साहेब मु० धर्मपुर धोराजीथी ली. शा. पोपट मोतीचंद तथा वकील जगन्नाथ वाशणजीना यथायोग्य घणा मान्यनी साथे कबुल करशो.

ळख्वाने घणी खुशी उपजे छे के ता. १८ सप्टेम्बर १८९४ ना मुंबई समाचारमां आपनी आगेवानी निचेनो एक आर्टिकळ अमारा वाचवामां आव्यो तेमां दशरा बळेव विगेरे तहेवारने दिवसे धर्मपुरमां देवीने के देवने मोग आपवा माटे पाडा बकरा ने बीजा प्राणीओनो वध करवामां आवे छे. ते शास्त्रविहीत छे के निषेध छे. ते बाबत सात सवालों काढी तेनो विद्वानो पासेथी खुलासो मेळववानी इन्तेजारी राखेळी होय एम जणाय छे. अमो आशा राखीए छीए के, आवा साहसीक काममां आपने पूरता खूलासा मळी जशे. वखत घणो थोडो होवाथी अमे अमारी उमेदमां संकोचाईने पण जणाववानी रजा लईए छीए. आपना तरफथी थएला सवालोमांथी ३ त्रीजा सवालनो खुलासो आपवानी अमो अमारी अल्पबुद्धि प्रमाणे घणी अगत्यता जोईए छीए. देवी देवने नामे हिंसा करवानी रूढी जुनी बुद्धिना ओछी समजणवालाए चलावी होय एवा वामीमार्गीओए अर्थनो अनर्थ करी आ रस्तो चलाव्यो छे. आपना सवालमांनो त्रीजो सवाल नांचेप्रमाणे छे.

ते शास्त्र करतां पण जे शास्त्रनुं प्रमाण वधारे बलवान् गणातुं होय एवां कोई शा-स्त्रमां ते हिंसानो निषेध कर्यो छे के केम ?

आतो जगत् प्रसिद्ध छे के, भागवत ए प्रमाण करवा योग्य शास्त्र छे. तेथी बीजा क्ष्योछकल्पित पुस्तकोना मुकाबलामां प्रमाण करवा योग्य गणाय नहीं. वळी वेदनुं प्रमाण सर्वोपरी गणाय छे. विष्णुवावा ब्रह्मचारी नामना महान् विद्वान् अनुभवी मुक्त पुरुषे वेदिक्त धर्मप्रकाश नामनो एक प्रन्थ लोकहिताथे बाहार पाड्यो छे. जेनां १८६ मे पाने नवमी कलममां दर्शान्युं छे के:—

# पुरुषं वै देवाः पशु मालभंत तस्मादालब्धान्मेध उदकामत् ॥ सोऽश्वं प्राविशत् तस्मादश्वोभवद्यैनमुरकांत स किं पुरुषोन्नवत्

हग्वेदनी आध्रलायन शाखाना बीजी पांचिका माहेला आठमा खंडमां लह्युं के के— खपरना क्षोकनो भावार्थ—कोडा, उंट, गाय, बोकडो, सरभ, भर्ग इसादि सर्व पश्चनो भमेध्य छे. कारण तेमांथी मेध नीकली गयो छे ए विचार कर्यो तेथीज रहेलो जे पशुदेह ते अमेध्य छे.

" तस्मादेतेषां नाश्नीयात् न यजेत् " वास्ते सर्व पद्मुओ जे तेओने खावा नहीं तथा जेओने खावा नहीं तेओनो होम पण करवो नहीं एवं—

न अश्रीयात् न यजेत् एटले खावा नहीं तथा तेनो होम पण करवो नहीं एटले अमेध्य पशुओ जे सर्वचरप्राणीओ तेओने खावां नहीं, अने तेनो होम पण करवो नहीं, एम सूचन्युं छे.

एज पुस्तकना पाने १९१ मे प्राचीन बर्हिराजा क्षत्रिय छतां यज्ञना निमित्तथी पशु मारी खावानुं तेने हींसाकर्म थयुं ए नारद्ना वाक्यथी सिद्ध छे तथा यजुर्वेदमां हिरण्यकशा-खाना ब्राह्मणप्रन्थ माहेला त्रीजा अष्टकना छडा अध्यायमां त्रीजा अनुवाक् मध्ये—

# प्राचिनं बर्हिःप्रदिशा पृथिव्याः वस्तोरस्यावृज्जाते अग्रे अन्हां ॥

ए विवादरूपी कथा छे, तो न्यायथी सिद्ध थाय छे के पशु मारी खावामां क्षत्रियों ने पण पाप छे. पछी हालमां जे क्षत्रियों छे, ने कुलधर्मीना ढोंगथी अथवा जीभनी लाल चंधी मांस खाय छे. ते प्राचीन बहिराजानी रीतने मळता क्षत्रियों हरो. ता तेओने मांस खावानी लज्याथी पाप-भीती नारदे प्राचीन बहिने बतावी छे. तेनुं स्मरण कर्युं छतां पाप लागरोज लागरो. अने ते मांस खावुं जरूर छोडीदेरो.

वली एजप्रमाणे के:-श्रीमद्भागवतना चतुर्थ स्कंधमां २५ मा अध्यायमां सातमा आठमा स्ठोकमां नारदजीए प्राचीन बहिने हिंसा करवानी ना पाडी छे. ने हिंसानो भय देख्याडो छे. ते विशे निचेना बे स्ठोको

#### नारद उवाच

भो भो प्रजापते राजन् पशून् पश्य त्वयाऽध्वरे ॥ संज्ञापितान् जीवसंघान् निर्धुणेन सहस्रशः ॥ ७ ॥ एते त्वां संप्रतीक्षंते स्मरन्तो वैशसं तव ॥ संपरेतमयःकूटैश्छिन्दंखुत्थितमन्यवः ॥ ८ ॥

पशुवध करनानो रिवाज कपोळकस्पित घणे ठेकाणे चालतो हतो पण अत्यारे आ-पना तरफथी आजना सुधरेला जमानाने मा आपवा माटे जे समयसूच नो प्रसंग लीधो छे. ते प्रमाणे मोरबी तळपदमां तथा मोरबी ताबाना गाम सापरमां दशराने दिवसे मारबानां माताने निमित्त घेटानो बली भोग आपता, अने सापरमां देवीने पाढा तथा घेटानो बाढ़ भोग देता, अने तेनी हिंसा करता ए अमारा वकील मोतीचंद रतनसी पारेखे मोरबीना महाराजा सर वाघजी बाहादुरनी हजुर आवी आवा जंगली रीवाजने काढी नांखवा, अने तेनी बधी जवाबदारी पोताने शिर राखी ते बोकडा तथा पाडाने मातानां मंदिर पासे बांध-वामां आवेतो अमे तेने छोडी जावा तैयार छीए. एम विनंति करतां महाराजाए ते प्रमाणे करवा कडुल कर्यु. अने वचन आप्युं के तेम करवामां आवशे तो कोई दिवस ए हिंसाना पगला पछीथी मरवामां आवशे नहीं. ते प्रमाणे फरमानथतां माताना मंदिर पासेथी एवा जानवरो अमरा तरफथी छोडी लई जावामां आव्यां छे. अने सं. १९३४ नी सालमां आ इन्तेबाब बन्यो त्यारथी ए हिंसानो चाल बंध पडी गयो छे. अने आ प्रसंगमां केटलाएक लागता वळगता जुनी बुद्धिना अज्ञान अने वहेमी माणसोए घणी तरेहथी महाराजा साहेबचे अम नांखवा मांडयो. पण तेओ नामदार आपेलुं वचन नहीं फेरववानो निश्चय करी त्यारथी एवं अघोर अने कमकमाट उपजावनांक कृत्य बंध के छे. त्यारथी तेओ नामदार साहेबची राजनाति आबादी अने चढती कला दिन परिद्रन वधारो थतो आवे छे. ए सर्वे आपणे जाणीए छीए.

भावोज एक बीजो दाखळो वढवाण शहरमां मोगावाने कांटे माताना मंदिरपासे पाडाने वध करवामां आवतो ते पण त्यांना महाराजा साहेबे वर्ष पांच थयां ए चाळ बंध कर्यों छे। तेओ नामदार साहेबनी कीर्ति चढती स्थीति धराबे छे. तेने मळतापणुं करवा आपना नामदार महाराजा साहेब सघळा वहेमोने दूर करवानी इन्तेजारी धरवता होय एम जणाय छे. तेथी भागों तेमना प्रत्ये तेओ नामदार साहेबनी चढती कळामां उमेरो थवा आशिर्वाद छे। अने आशा छे के तेओ नामदार साहेब ए चाळ हरहमेशने माटे रिवाज पाडशे.

आ अमारो पत्र त्यां आ संबंधी निमायेकी कमीटीमां महेरबानी करी वंचाववा तस्दी किसी तथी अमो आपना आभारी थई हुं.

नामदार महाराजा साहेबनी अने कमीटीनी मरजी एम थती होय के माता पासे एवा जानवरों भोग दाखल बांधवामां आवे अने तेने छोड़ी लई जाय अने माताजिनों कोप थाय तो तेनुं जोखम पण अमे लेवा तैयार छीये. के ते माटे खास अमारा घरनुं मामस ते पाडा— बेटा विगेरे छोडी जाय तेम करवा मरजी होय तो अमने तार मारफत खबर मलनी जोइए के ते दिवस अमारा तरफनी हाजरी थाय. ने ते जनावरों छोडी लेवामां आवे पण अमने खाळी मेरो न थाय. एवी खात्री प्रथमधी मलनी जोईए तो आ कागळनो जवान दुरत लखशो.

दाः पोपड भोतीर्चंदना जुहार यु० भोराजीः

# नं. १७.

### वेरावलवाला मि. मह्नजी जुठानो अभिप्राय.

महेरबान रा. रा. प्राणजीवन जगजीवन चीफ मेडीकल ऑफिसर.

मु. धर्मपुर.

वेरावलथी लि॰ मदनजी जुठाना प्रणाम. बाद अत्र आपना तरफथी सात प्रश्नो अ-हिंसा बाबत बहार पाडवामां आव्या छे. तो तेनो खुलासो ए छे जे, आपणा शास्त्रोमां छे तेनी विगत नीचे मुजब—

विपाक नामे सूत्रमां बीजा भागमां दुःखविपाक नामना दश अधिन छे. तेमां पांच-मां अधिनमां जीतशत्रुराजानी पासे माहेश्वरदत्त नामनो ब्राह्मण हतो तेणे राजानी शांति माटे पंचेंद्रीवध बनावी प्राणीनो वध कर्यो तो अंते नरकमां गयो.

जीवोपंगसूत्रमां वसुराजानुं सिंहासन उंचुं देवताओ धारण करता हता तो ते राजानुं सिंहासन एक पर्वत नारदजीना संवादमां अज शब्दनो अर्ध बोकडो कहाो ने ते असत्य बोल्यो तेथी देवोए ते सिंहासन पडतुं मूक्युं के तरत नरकमां गयो.

वली प्रमाण जुओ.

#### श्लोक.

ध्रुवंत्राणिवधो यज्ञे नास्ति यज्ञस्त्वहिंसकः तताऽहिसात्मकःकार्यः सदा यज्ञो युधिष्टिर ॥

अर्थ:—यज्ञने विशे प्राणाने। वध करवो, ते अहिंसा यज्ञ न कहेवाय. माटे हें यिष्ठिर अहिंसा यज्ञ करवो तेज श्रेष्ट छे.

# श्लोक.

महतामपि दानानां कालेन क्षीयते फलम् भीताभयप्रदानस्य क्षयएव न विद्यते ॥ अथः मोटामां मोटुं दानोनुं फल काले करीने नाश थई जाय छे. पण अभयदा-नना फलनो नाश क्योरे नथी थतो.

## श्लोक.

# पशूनां ये तु हिंसन्ति ये ग्रधा इव मानवाः ते मृता नरकं यान्ति नृशंसाः पापपोषकाः

अर्थ: —गृधना जेवा जे मनुष्यो पशुनी हिंसा करे छे. ते नठारा ने पापी पुरुषो मरीने नर्कने विशे जाय छ.

श्रीरस्तु.

# नं. १८.

प्रयागवाळा शास्त्री भीमसेनशर्मानो अभिप्राय.

कोविधः पशुहिंसाविधिः इस्मिन् शास्त्रे उक्तः

सिंहादयो निर्बलप्राणिघातकाः प्रजापिडकाः पद्दवादया प्रजा-रक्षाये क्षित्रये राजपुरुषेईन्तव्या इति वेदादि सर्वशिष्टानुमतद्द्रा-स्रेषु विहितम् । यश्च मधुपर्केच यज्ञेच पितृदेवतकर्मणि ॥ अत्रैव पद्दावो हिंस्या नान्यत्रेत्यव्रवन्मिनुः इत्यादिना शिष्टानुमतमन्दादि प्रणीतधर्मशास्त्रेषु पशुवधो विहित इव लक्ष्यते स च नायं पशुवधः विधिरपि तु विध्याभास एव । न हीदृशानि वचांसि मन्वादि महर्षिप्रणीतान्यपि तु पश्चारकेश्चिरस्वार्थिभिःप्रक्षिप्तानीत्यनुमीयते॥

तथाचोक्तं ॥ महाभारते मोक्षधर्मपर्वणि

अव्यवस्थितमर्थादेविमूढेर्नास्तिकेर्नरेः संश्यात्मिभरव्यकेः हिंसा समनुवर्णिता ॥ १ ॥ सर्वकर्मस्विहंसां हि धर्मात्मा मनुरव्रवीत् अहिंसा सर्वभूतेभ्यो धर्मेभ्यो जायसी मता ॥ २ ॥ सुरामत्स्याः पशोर्मासमासवं क्रसरोदनं धूर्तैः प्रवर्तितं होतक्रेतद्वेदेषु किल्पतं ॥ ३ ॥ मानान्मोहाच लोभाच लोंल्यमेतत्प्रकीर्तितम् विष्णुमेवाभिजानन्ति सर्वयज्ञेषु ब्राह्मणाः ॥ ४ ॥ तस्यतेनानुभावेन सृगहिंसात्मनः सदा तपोमहत्समुच्छिन्नं तस्मात् हिंस्या न यिन्नयाः ॥ ५ ॥ पतेन सप्टमेंच निस्तरित—यज्ञेष्विप पशुवधो वेदादिसच्छा-ब्रानुकूळी नास्तीति देविदेवतोहेशेन च शिष्टसम्मतवेदादि शास्त्रेषु पशुवधः काथ कर्तव्यत्वेन विहितो नैव दृश्यते प्रस्तुत निषे-धस्तु निस्तरित । तद्यथा यक्षरक्षःपिशाचान्नं मद्यं मांसं सरा-सवम् । इति ब्रुवता मनुना मद्यमांसादिकं देवान्नं नास्तीति स्पष्टमेव विज्ञाप्यते । पुनर्देवतोहेशेन क्रियमाणः पशुवधः शास्त्रविरुद्ध एवेति निश्चितम् नहि हविर्भुजो देवा मद्यमांसादक खादन्ति नते देवाः किन्तु मद्यमांसभुजो राक्षसादयो हविर्भुजो देवाः ।

- (२)—येषु मार्कण्डेयपुराणादिषु देवतोद्देशेन पशुवधः प्रति-पाचाते न ते प्रन्थाः शिष्टायसम्मताः । शिष्टार्थ्याश्च वेदानेव सर्वथा प्रमाणीकुर्वन्ति न तु वेदविरुद्धान् । अतः सर्वशिष्टार्थत्याज्या हिंसास्तीति मन्तव्यम् ।।
- (३) मनुस्मृत्यादिषु सर्वसम्मतशास्त्रेषु जीवहिंसानिषेधो बहु-प्रकारेण दृश्यते । हिंसा सर्वपातकानां मलमहिंसा च सर्वधर्माणां प्रधानो धर्म इति मानवधर्मशास्त्रसिद्धान्तः । सजीवश्च मृतश्चेव नकचित्सुखमेधते ॥ अतो महिषवर्करादिहिंसकानां प्राणिनां इन्तारोऽपि न कदाचित्सुखमाप्स्यन्तीति स्पष्टमायाति ॥
- (४) विजयादशम्यायुत्सवेषु राज्ञां पशुविधानं कापि सच्छा-स्रेषु नास्ति ।
- (५) अरिष्टत्यागाद्विमं किमिप न भवति । मंगलं तु सर्वद्य भविष्यति इत्यनुमीयते ।
- (६) यदा च पापजनकः पशुवधः पुनस्तस्प्रतिनिधिकार्येऽप्य निष्ट मेवास्ति ।

(७) महिषवर्करादीनां कर्णनासायंगच्छेदोऽपि नैव कर्तव्यः न च स कापि विधीयते दुःखजनकत्वात्तदपि कर्म कथमप्यधर्मन् जनकमेवास्ति ।

अतो मदनुमती महाराज धर्मपुराधीशेन विजयादशम्याद्युन्त्सवेषु महिषादीनां वधोऽवश्यं त्याज्यो महिषादिभ्योऽप्यभयदानं दातव्यम् ॥ धर्मपुरे महिषादिहिंसनेन येषां मनुष्याणां मांसा-दिना कथमपि किमपि भक्ष्यमुपलब्धं भवति तत्प्रतिदाने पका-न्नादिकं भोज्यं विभागेन ततोऽप्यधिकं महाराजेन प्रदातव्यं । एवं सत्यमेव धर्म रं नामान्वर्थं भविष्यति । यदि कश्चिच्छास्त्रार्थं कर्ज्तुमिच्छे-तदाहं तत्परोस्मि । किंबहुना—राज्ञोऽमात्यवर्गस्य चेष्टचिन्तको भीमसेनशर्मा——

#### उत्तर १.

भावार्थः — निर्बल प्राणीयों मारनेवाले प्रजाक पीडक सिंहादि महान् अनुपकारी पशु प्रजाकी रक्षाके लिये क्षत्रिय और राजपुरुषको मारने योग्य है. यह वेदादि और सब शिष्टों से अनुमत शास्त्रोका सिद्धान्त है. और जो "मधुपके यज्ञ" और पितृदैवत कर्ममें ही पशु मारने चाहिये ऐसा मनुजीने कहा है. इत्यादि वचनों से शिष्टानुमत मन्वादिप्रणित धर्मशास्त्रोमें पशुवध विहितसे लक्षित होता है. सो यज्ञ पशुवध विधि नहीं है. किन्तु विध्यामास है. ऐसे वचन मन्वादि महर्षिप्रणित नहीं. किन्तु पीछेसे किन्ही स्वार्थियोंने धर्मशास्त्रादिमें मिला दिये हैं. ऐसा अनुमान होता है, मर्यादाका उल्लंघन करनेवाले संशयात्मक मूर्व नास्तिक पुरुषोंने लिपकर ऋषिप्रणीत धर्मशास्त्रादिमें हिंसाविधायक वचन मिला दिये हैं. साधारण विशेष सब कार्योंमें पश्चादिका न मारना है, धर्मात्मा मनुजीने कहा है, अहिंसाध्मी सब धर्मसे बढा है. मय, मतस्य, पशुमांस, आसव और खीचडी, भात आदिमें मांस्य मिलाकर खाना-पिना वा यज्ञमें चढाना धूर्तोंने प्रवर्तित कीया है, वेदादि सच्छास्त्रोमें इनके यज्ञमें चढाने पीनकी कहींभी आज्ञा नहीं. मान, मोह और लोभादिसे अधर्मात्मा-भोने यज्ञादिमें पशु हिंस्य तथा मांस भक्ष्य है ऐसी कत्पना करलीइ है, वेदादिक शाश गोंको

जाननेवाले धर्माता तो यञ्चादि सर्वोत्तम कार्योमें विष्णुके आराधनकोही कर्तव्य समझते हैं. नयी तमी वर्दनी सर्व सच्छाद्ध प्रतिषिद्धा हिंसाको किसी ऋषिने किसी यञ्चमें मृगहिंसा की थी, उस हिंसाको करनेंसे उस ऋषिका महातप नष्ट होगया, इसलिये हिंसा यञ्चमें करने योग्य नहीं. इ० वचनोंसे स्पष्ट सिद्ध होता है. यञ्चादिमेंभी पशुका मारना. वेदादि सच्छालों के अनुकूल नहीं और देवी देवताके उद्देशसे पशुवध शिष्ट सम्मत वेदादि शाल्लोंमें कहींभी कर्तव्यतासे विहित नहीं है. प्रत्युत निषेध तो निकलता है जैसा कि मद्य, मांस, सुरा और आसव ये यक्ष राक्षस और पिशाचोंका खाना है. इस वचनको कहते हुये मनुजिने स्पष्ट बतलाया है कि मद्यमांसादि देवताओंका खाना नहीं किर देवताके उद्देशसे किया हुया पशुवध सर्वथा शास्त्र विरद्ध है. ऐसा जानना चाहिये. हविका भोजन करनेवाले देवता मद्यमांसादि नहीं खाते. और जो खातें हैं वे देवता नहीं क्यों कि मद्यमांसादि खानेवाले राक्षस और हवी खानेवाले देवता होते हैं.

- (२) मार्कण्डेय पुराणादिमें देवताके उद्देशसे जो पश्चवध प्रतिपादित किया है सो ठींक नहीं. क्योंकि मार्कण्डेय पुराणादि प्रन्थ शिष्टार्य सम्मत नहीं है शिष्टार्य्य छोग वेद और वेदानुकूछ प्रन्थोंहीका प्रमाण करतें हैं वेद विरुद्धोंका नहीं. इससे सिद्ध हुआ हिंसा सब शिष्टार्योंको त्याग करने योग्य है.
- (३) मनुस्मृत्यादि सर्व सम्मत शास्त्रोंमें जीविहंसा निषेध बहुत प्रकारसे किया है. मानवधर्म शास्त्रका सिद्धान्त है कि हिंसा सब पापोंका मूल और अहिंसा सब धर्मोंमें प्रधान धर्म है जो अहिंसक प्राणीकों अपने सुखकी इच्छासे मारता है. वह जुवताहुआ तथा मरकरभी कभी कहीं सुख नहीं पाता इसलिये अहिंसक महिष—बकरादि प्राणीयोंको मारनेवालेभी कभी सुखको प्राप्त न होवेंगे यह स्पष्ट शास्त्रोंमे लिखाहै.
- (४) दशरानां उत्सवमें राजाओंको पशु मारनेंका विधान कहींभी सच्छास्त्रोमें नहीं छिखा.
- (५) शास्त्रनिषेध अनिष्ट कार्यके त्यागसे कोई विन्न नहीं होता, पश्चवध न होनेसे सर्वदा मंगठ होगा ऐसा अनुमान कया जाता है.
- (६) जब पशुवध पापमाक् है तब उसके प्रतिनिधि कर्मसें कार्य निकालनाभी ---
- (७) महिप-बकरा भादिको कान नासिकादि भंगका छेदन न करना चाहिये. को के कर्ण नासिकादि भंगका काटना शास्त्रविहित नहीं; और कर्णादि छेदन दुःखजनक होनेंसे बडा पाप नहीं तो छोटा पाप अवस्य है. इस छिये मेरी सम्मतिमें महाराज धर्म-

:::....

पुराधीशको विजयदशमी आदि उत्सवोमें महिष, बकरूं आदि दीनपशु न मारने वा मरवाने चाहिये. महाराजाको चाहिये कि महिषादि गरीब पशुकों अभयदान देवे, और धर्मपुरमें महिषादिके मारनेसे जीव मनुष्योको मांसादिसे किसी प्रकार, दूध भक्ष्य उपलब्ध होता है तो महाराजको चाहिये कि उन मनुष्योको उसके बदलेमें उससे अधिक मोदकादि उत्तम भोज्य विजयादशमी आदि उत्सवोंमे देवें. अभयदान देनेसें महाराज इहलोकमें पुण्यात्मा कहाकर उस लोकमें अवश्यमेव सुखके भागी हो बेठो—जब धर्मपुरमें पशुवध बन्ध होजायगा तब धर्मपुर नाम यथा नाम तथा गुणबाला होगा. यदि कोई पंडित इस विषयमें शास्त्रार्थ करना चाहेतो हम शास्त्रार्थ करनेको बद्धपरिकर है कि बहुना.

# राज्ञोडमात्यवर्गस्यचेष्टचिन्तको-भीमसेनशर्मा,

मु. प्रयागः

# नं॰ २०.

#### गोंडलवाला शास्त्री केवलराम लीसाघरनो अभिप्रायः

सौजन्य सुधासागर रा. रा. भाई श्री.-प्राणजीवन जगजीवन महेता, मु. धर्मपुर.

महाराजा साहेब नामदार महाराणा श्री मोहनदेवजी महाराजनी हजुरमां शास्त्री—केवल-राम लीलाधरना आशिर्वाद मान्य करशो.

#### १ मक्षनो उत्तर---

तंत्रमां वाम दीक्षावालाने मद्य-मांसनुं बलिदान विहित छे.

#### २ प्रश्ननो उत्तर--

न हिंस्यात्सवेभृतानि-अहिंसा परमो धर्मः ॥ इत्यादि वाक्यो वेदमां तथा शास्त्रमः अनेक छे. ते वाक्य हिंसानो निषेध करे छे.

#### ४ मक्षनो उत्तर--

ंतंत्र शास्त्रनी दीक्षावाला राजाने ते शास्त्रना विधिप्रमाणें वर्तवुं.

#### ५ प्रश्ननो उत्तर--

एवी हिंसा न करवाथी अकार्य कर्युं गणाय नहीं. तेम राजाने अथवा तेनी प्रजाने आपित योग आवे एवं अहीं के बीजे उपलब्ध नथी.

#### ६ प्रश्ननो उत्तर —

पंसुवधने बदले सहस्रचंडी इत्यादि अनेक प्रकारे देवीनुं भाराधन छे. ते सौ विद्वानी-ना जाणवामां छे.

#### ७ प्रश्ननो उत्तर—

पशुनां नाक कान कापत्राथी ते विधि पुरी थाय एम अमारा वांचवामां आव्युं नथी.

धर्मशास्त्रनी—भागवतादिक पुराणनी स्मृतिओमां घणां वाक्यो हिंसानी निंदा करनारां छे. तेम करवाधी प्रत्यवायथी तेमना प्रायिश्वतो पण छखे छे. माटे अशास्त्र हिंसा न करवी ए उत्तम पक्ष छे. वास्तविक विचार करतां जे जे किया रागथी प्राप्त छे. ते निवृत्ति माटे कोई कोई स्थल ते कियानां विधिवाक्य उपलब्ध छे. पण ते कियामां प्रशृत्ति माटे नथी ए तात्पर्य भागवतना एकादश स्कंधना ५ मा अध्यायमां.

# लोके व्यवायामिषमयसेवा नित्यास्तु जंतोर्न हि तत्र नोदना

एना अर्थथी तथा तेनी बेचार टीका छे. ते जीवाथी वधारे खुळासी मळशे जे हिंसा न करवी एज.

भापनुं पत्र मने भाद्रपदमासनी त्रीजने दिवस मल्युं. तेथी ते ते स्थलमां जोई वाक्यो-सहित सविस्तर उत्तर लखवानो वखत मळ्यो नथी. शुभं भवतु ॥ मादरवा वदि ५ बुधवार.

चास्त्री केवलराम लीलाधर, गोंडल सं. पा. अ.

# न० २१.

# गुसाई दैंगंकरगरजी भैरवगरजीनो अभिप्राय.

स्वस्ति श्री धरमपुर महाशुभस्थाने पूज्याराधे सर्वोपमालायक राजमान्य राजश्री महाराणा श्री मोहनदेवजी नारणदेवजीनी चिरंजीवी घणी हजो. एतान् श्री जलालपुरथी लि॰ गुसाई शंकरगरजी मैरवगरजीना जय स्वामीनारायण वांचशो. अत्र सौ आनंदमां छे. ने आपना राजनी चढती कला थाओ तेम ईश्वरपासे मागीए छीए. बीजुं श्री धरमपुरना महाजने श्रीजलालपुर गुरु उपर कागळ मोकल्यो ते वांची समाचार जाण्या, ते माटे दशरा उपर हवनमां पशुवध न करवो. तेम गुरुजीनी आज्ञा छे. हवेथी माफ राखवुं जोईए तेम गुरुजी छखे छे. बीजुं गुरुना शिष्य भवानीगरजी धरमपुर थोड़ा दिवसमां आववाना छे. थोडुं लख्युं ते विशेष करी मानजो.

बीज़ुं कपुरचंद भाईने जय नारायण कहेवा. अमारी उपर हेत राखो छो तेथी विशेष राखशो. संवत् १९५० ना आशो शुद १ वार रवी.

दा॰ रतीगर भवानीशंकरना जय नारायण.

# नं. २२.

# बारडोलीवाळा जोशी मयाशंकर फिकर शर्मानो अभिपाय.

अखंड राज्यश्रीया विराजित् राजासाहेब नामदार महाराजाश्री ६ महाराज मोहन देवजी महाराजनी पवित्र सेवामां निर्णय पत्र पहोंचे

जोतिर्विद् मयाशंकर फिकर शर्मा सम्मतम्

# विराजराजपुत्रारेर्यन्नामचतुरक्षरं पूर्वार्द्धं तव शत्रूणां पराद्ध तव वेश्मानि॥

इत्यादि आशिषस्तु ॥

#### काम्यकर्भ.

१ -- शास्त्रमां कोई पण कामना वगर पशुहिंसा करवानुं नथी.

२—कामनायुक्त पूर्वाचार्य करता हता. पण आर्यलोकोमां ए बलवान् पक्ष गणातो नथी.

३——निषेध माटे ब्रह्मोत्तरखंडमां पशुवधनुं वचन बलवान् निचे दर्शान्युं छे.

४—ए कार्य माटे पशुवधनी अवश्यकता नथी. अनित्य छे, माटे उपवीतवालाने ए योग्य नथी. ए घणे मते छे. तेमज आज्ञा तोडी छे, एम गणातुं नथी यज्ञोपवितना अ-धिकारे बलवान् नित्य छे.

4—ए पशुहिंसा न करवाथी राज्यने तथा प्रजाने अडचण नथी पण तेने बदले बीजां बलिदान करवानां कह्यां छे. ते न करीए तो पर्छ। हिंसकपणुं राजसपूजा प्रमाणे करवा केचित् मत छे.

६—पशुवधने बदले बीजी किया करवाने निचे शास्त्रनां वचनो छे.

७—नाक, कानने छेको मारवाथी उलटुं विशेष बंधन थाय छे. एम प्रायिश्वतः मयूलादिमां निषेध प्रत्यक्ष लख्यो छे.

#### श्रीगणेश्वाय नमः

उपर डबेडी प्राकृत डिपिकाना प्रमाण निचेप्रमाणे छे.

उक्तंच रुद्रयामळे—कालिकापुराणे डामरतंत्रेऽपि ॥
कूष्माहिमिश्चदंढं च मांसं सारसमेव च
एते बलिसमाः प्रोक्तास्तृष्ती छागसमाः सदा
रुद्रयामलेपि—छागामावे तु कूष्मांडं श्रीफलं वा मनोहरं
वस्त्रसंबेष्टितं कत्वा छेद्रयेच्छुरिकादिना॥
श्रीफलं वा सुराधीश छेदं नेव तु कारयेत्

अर्थः--सुराधीशः चंद्रगुप्तः

छेदेविकल्पः ब्रह्मोत्तरसंडे—

रथमितलघुजीववधे अजवधतच्छतसमानवृषहननं ॥ शतवृषवधसम गोवध तच्छतिते द्विजवधे हि अघजननेति कीर्तनमालायामपि एवमस्ति ॥ ३॥

# निर्<del>णवसिन्धुयर्निल</del>न्धावपि

क्षत्रियवैद्ययोमीसादियुतजपहोमसहितराजसपूजायामप्यिक्षितः स च केवलं काम्यएव न तु नित्यः निष्कामक्षत्रियादेः सात्विकपूजाकरणे मोक्षादि फलातिद्ययः ॥ नित्यनेमित्ययोमेघ्ये नित्यं बलवान् ॥ इति न्यायेपि ॥ राजसपूजायामपि छेदेविकस्पः पशुवधः वधाभावे कूष्माडं दद्यात् इति ॥ इत्यलं ॥

लिः जोदी मयादांकर फिकरकार्माः नारदोलीः ٠

# नं. २३.

#### एक गामडीआ पारसीनो अभिपाय.

## मेहरबान धरमपुरना चीफ मेडिकल ऑफीसर साहेब.

मु० धरमपुर.

जत विनंतिके गई कालना मुंबई समाचारपत्रमां आपणा तरफर्थी बलेव दशराना तहरबार पर पाडाना वध करवा बाबदना विचारो जाणी सामान्य प्रजासाथ हुं संतोष पाम्यो छुं.

मारी खुशाली जणावतां भा पत्र मार्फत महाराजा साहेबने तथा आपणे आखा राज्य तरफथी मुबारकवादी आपुं छुं. साहेबजी हुं धरमपुरनो एक खेडुत रु. ४०० चारसोनो सरकारी मेहसुल भरनारो छुं. तथी आपणी प्रजानी तेमज ए रिवाजनी बाबतमां एक अभण माणस शुं विचारे छे. ते आप मारो साधारण अनुभव ध्यानमां छेशो.

आपणी प्रजा हालमां अनाचारने लीधे भूखे मरती स्थितिमां आवी पडी छे. तो तमारा गई कालना प्रश्नोथी तेओने पण लाभ थाय एम होवाथी हुं पोते वे शब्द कहेवाने ललचाऊं छु.

ए सवालनी चारवणी हुं घणा वर्ष थयां करतो आव्योछुं ने केटलाक वरसनी वातपर (गुजरात मित्र) ए बाबत विशे में घणां वर्षो सुधी चर्चापत्रो छपावेलां छे. तेना उत्तरमां छखुं छुं के, पाडानो वध करवानुं कर्तव्य धर्मीरवाज नीतिने अनुसरतुं नथी. तेनुं कारण हालमां छखवानी जरूर मथी. तमो साहेंबे हिन्दु विद्वानोनां विचार मागवाधी बद्ध खुल्छुं जणासे. ने हुं तो एक जंगली गामडीयो पारसी छुं. मारा चर्चापत्र उपरथी मारा महेरवान शेठ मंछाराम घलाभाई मारी सलाहथी ए बाबतपर दरवर्ष आर्टीकलो लखता आव्यां हता. ते टीकाओथी केटलाक राजाओए खोटो रिवाज कहाडी नांख्यो छे. छतां आपणा राज्यमां हजुसुधी महापापी रिवाज चालु रहेवा पाम्यो तेना अंगनां कारण केई गमे एवां मजबुत हशे पण दीलगीरी थवा योग्य छे. हमणा महाराजा साहेब ए घातकी रिवाज तदन काढी नांखवो जोईए. जुवो साहेब ! हालनी प्रजाने ए रिवाज साधारण जेवो लागे छे. पण आपणी भविष्यनी प्रजा हवे पर्छा ए रिवाजनी हसती समजीने आपणा विशे उंचा अभिप्रायनी नोंध तो नहींज लेशे. पण आपणे केटला बधा जंगली हता ते विशे पण तेवो विचार करशे. कारण के हालमां आपणे अने मुसलमान कोमने साथ काम लेखें छे. ने ए लोको पोतानी कुरबानी करवाना हक विशे कुहरान अने सरीफमांथी धर्मनां फरामाने टांकी पोताना हकमां दाखला बतावे छे. ने तेनी विरुद्धमां तेओनां पुस्तकोमां परामाने टांकी पोताना हकमां दाखला बतावे छे. ने तेनी विरुद्धमां तेओनां पुस्तकोमां परामाने टांकी पोताना हकमां दाखला बतावे छे. ने तेनी विरुद्धमां तेओनां पुस्तकोमां परामाने टांकी पोताना हकमां दाखला बतावे छे. ने तेनी विरुद्धमां तेओनां पुस्तकोमां परामाने टांकी पोताना हकमां दाखला बतावे छे. ने तेनी विरुद्धमां तेओनां पुस्तकोमां परामाने टांकी पोताना हकमां दाखला बतावे छे. ने तेनी विरुद्धमां तेओनां पुस्तकोमां रास्तकोमां परामाने हाला वतावे छे.

आपणा हिंदु पंडितो तेमना हक्क विरुद्ध विद्वत्ता भरेला दाखला बतावे छे. एवा वखतमां मारा मानीता तथा मानपामेला पारसी विगेरे सर्व कोमना माबाप जेवा राज्यमां ए रिवाज हसती भोगवे ए मुसलमान कोमने आंगळी देखाड्या जेवुं छे. एटलुंज नहीं पण गौरक्षक मंडलीना आपणा मेंबरोने आ रिवाज कहाडी नांखवानी बहु होंस छे. ए मंडळीमां मोटा मोटा महा-राजाओं ने मोटा मोटा शेठीया सामेल छे. ए मंडळीने हालमां सारी रीते मान आपे छे. ते सारी पेठे जाणो छो, के शींगडावाटां पशुनुं रक्षण कर्ता सुधारक शेठ टक्ष्मीदास खीमजी केटलुं बधुं दुःख खमे छे. ने सरकारनी इतराजीमां तेओ पण आव्या छे. तेनुं कारण के मात्र परमेश्वरने पोतानां कर्तव्यनो जवाब आपवा माटेज. तेओ लक्षपति रोठीया होवाथी तेमणे नाम कहाडवानी के पैसा कमाववानी भूख नथी. वर्छी ए पाडानी संख्या १३ नी दशरापर थवा जाय छे. ने बलेवना जूदा छे हवे विचारो साहेब के दरसाल आटली मोटी संख्या विना कारणे मारी नांखवामां आवे तथी राज्यनी आबादी केटली बधी ओछी थाय? खेती माटे आपणें त्यां बलद-पाडा-नी बहु खोटी थई छे. पांच दश वर्षपर बलद पाडानी एटली बधी अछत नहोती, हालमां खेडूओने भाडुं आपतां बलद पाडा मलता नथी. ने हाल वगर हाथे करीने बराबर खेती थई शकती न होवाथी सेंकडो गरीबी भूख वेठे छे. ते आप जाणता हशो. वली आ मोटी संख्याना पाडानो बचाव करवामां आवे तो राज्य प्रजानी आबादी वधरो. कारण के ए पाडानी किम्मतना रुपैया धर्मपुर रईयतपर फालो नांखवामा आवे छे. तेओना मुखीयो गरीत्र लोको पासे पाडानी कींमतथी वधु रूपैयानो फालो नांखी बाकीना रूपैयानो पोते उपयोग करे छे. ने एकाद नानुं पाईं ठावे छे. मतलब के एमांथी गरीबोर्नु मरण थाय छे. ते दाखलो हुं जाते जाणुं छुं. तेथी लख्यो छे.

अमारा नामदार गरीबनी उपर दया ठावनारा महाराणाश्रीनो आ पशुहिंसा बंध कर-वानो विचार बहुज मान भरेलो छे. आप साहेबनी आखी दिनयामां आ रिवाज बंध कर-बाधी कीर्ति वधशो. धरमपुरना ठवाणा विगेरे वेपारीओ ए रिवाजधी बहु कंटाळेल छे; दरेक समज् माणस ए रिवाजधी विरुद्ध छे. आपणो सातमे। प्रश्न बहु वांधा भरेलो छे. तेम करवाथी आपणी अधी कीर्ति अधें रस्ते अटकी पडशे, ने जे नियम राखवामां आवे छे, ते उंधो वलशे. एटले के सातमां सवालमां वर्तवाथी राजाने के प्रजाने लाभ शुं ? प्रजाने माथे तो तेनो तेज भार रह्यो. जानवरोपर घातकीपणुं गुजरनारी मंडली जे गुन्हा माटे माजी-स्नेट आगल उभो करीने शीक्षा करावे छे. तेज गुन्हाना करवा जेवुं आप विचार करो ए नीतिथी उलदुं थशे. ने तमाम हिन्दु प्रजा राजी थशे नहीं, माटे हुं घणाज मान साथे ब्रिनित करं छुं के सातमा प्रश्न प्रमाणे वर्तवानो विचार कदी पण करशो नहीं. अमारा पारसी-ओनां धर्मपुस्तक, तमारा वेद एकज छे. पारसीधर्म ने हिन्दुधर्म बहारथी जुदां रूपमा देखाव दे छे. पण बारीकाइथी जोशो तो एकज छे. अवस्ता ने वेद भाई-बेन जेवां छे. जे धर्म- क्रिया पारसीओ करे छे, तेज धर्म वेद छे. ते माटे विद्वानीए चोकस नकी कर्युं छे, ते परथी हुं खात्री साथ कहुं छुं के वेदमां पशुहिंसा करवानुं कांई फरमान नथी. ए रिवाज धर्मनीति माणसाई समजथी उलटो छे.

असलना राजाओ लढाई करवा जता त्यारे देवने भोग आपवानो रिवाज पाडेलो जणाय छे. अथना बीजां घणां कारणो छे. पण ते लखवानी जहर जोतो नथी. जे काम करवाथी राजा, प्रजा ख़ुशी थाय ते कर्तव्य करनारने आ दुनियामां ने स्वर्गमां सुख मले छे एथी सरस बीजुं कर्तव्य ते शुं होय ?

> एटली दीलगिरी छे के, मारु खरुं नाम आपवानी मारी हिंमत चालती नधी. छि॰ राज्यनो विश्वासु ने आपणो तथा राज्यनो ताबेदार वेय हाथ जोडी नमुं छुं.

> > लि॰ गरीव गामडीओ पारसी.

# नं. २४.

# एवलावासी रजपूत शंकरसिंह छद्दुसिंहनो अभिपायः

श्रीमत् सकलगुणालंकृत असंदितराज्यलक्ष्मी विराजमान् महाराजश्री १०८ महा-राजा मोहन देवजी संस्थान धर्मपुर

भापके प्रश्नोंके उत्तर और सारासार विचार सारांश कहा है सो छपाकटाक्षसें निष्पक्ष-पातसे निरीक्षण करीए.

#### प्रश्न ? का उत्तर—

पशुर्हिसा करनेका कोई बेदमें वा शास्त्रमें कहा नही है, जो विद्यापदाते, छीछापदाते, श्रीपदति, आदी शास्त्रोमेंकी साकही है. छेकीन, पशुर्हिसा सत्यशास्त्र और उक्त नहीं है.

#### प्रश्न २ का उत्तर---

जो सास्त्रमें हिंसा कही है, जो मतबादी वो शास्त्रके अनुयायी है उनीकुं मान्य है और किसीकुं मान्य नहीं है.

#### क्श्न है का उत्तर--

सर्व प्रकार में शास्त्र, और नीश्वःस, बेद, इनसबसे श्रेष्ठशास्त्र, जो श्वासत्पद रूण परमात्मांके वाक्य, अर्थात् भगवद्रीता है उसमे हिंसाका निषेध करके स्वधर्म प्रतिपादन किया है. गीताध्याय ३ श्लोक ३५.

# श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मीत्स्वनुष्टितात् । स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

अर्थात् जो आपना स्वधर्म है. और उसमें गुणहीन कर्म है, तोभि कत्याणकारक होता है. और परधर्म गुणयुक्त है, तोभी करना नही. भयका कारण है. ये रीतीसे हिंसा और अहिंसा प्रतिपादन कहा। है. और देखो जो भगनानने कहा। है की, ईश्वर निमित्त हिंसा घडती है. उसके बास्ते वैश्वदेव करनेका कहा। है; तो हिंसा करने कैसे कहेंगे. ईश्वर निमित्त पंचसूना दोषकी स्पृति.

कंडनी पेषणी चुल्ली उदकुंभी च मार्जनीः पंच सूना यहस्यस्य ताभिः स्वर्गं न विंदति ॥ इस रातिसि स्वधर्म प्रतिपादन करके हिंसाका अत्यन्त निषेध श्रीकृष्णपरमात्मा कहेता है ॥ ३ ॥

#### मश्र ४ का उत्तर—

राजाका खरा कर्तन्य ये है के आपणे रात्रकुं जितणंका उद्यम करना, और खर्धम युक्त कर्म करके सर्वकर्म करके ईश्वरार्पण करना, कर्म फल्टमं आसक्त न होना, साक्षीभूत रहेके और अद्देत जानके, सर्वदा, सर्व प्रकार, सर्वकाल, सरस्वरूपमें स्थात रहना और प्रजाके न्यवहारका गुणदोष आपणे सीर नहीं मानलेना. सर्यवत् अलिप्त रहना और यथाप्राप्त जो स्वधर्माचार है सो ऐसा कर्तन्य जो करे उसने श्रेष्ठशास्त्र और सर्व शास्त्रोंकी आहा पाली ऐसा सिद्धान्त है. प्रमाण गीता अ ३ श्लोक १७.

# तसादसकः सततं कार्यं कर्म समाचर असको ह्याचरन्कर्म परमामोति पुरूषः

#### प्रश्न ५ का उत्तर--

ये हिंसा न करनेसे राजाकुं या प्रजाकुं कोई तरेहकी उपाधी उत्पन्न न होवेंगी. क्यों की ये हिंसा बेद उक्त नहीं है करीक तुमने प्रजाके नैमिक्तिक व्यवहार के गुण दोष आपने माथे मार छे के भय रखना नहीं. और हिंसा न होनेसे शास्त्रबाह्य आचरण हुवा एसा त्रिकाल होनेका नहीं ये सिद्धान्त है.

#### पश्च ६ का उत्तर-

दशराकें निमित्तसें जो हिंसा करते है वो, महामूर्ख है. क्योंकी आधिन शुद १० मीतुं दशरथका पितामह जो रघुराजा सो ब्राह्मणकी दाक्षणा दिने निमित्स अमरावती जीतनेको नीकला. तो इन्द्रने घवराके कुबेरकुं कहकर आयुध्यामे सुवर्णका वर्षाव कीया तब युद्ध न होके रघुराजा जय लेके आया. उस दिनसे विजयादशमी चली है. ये आपकु संक्षित्पका संक्षित एसा दशरेका महिमा सुनाया है. और दुसरा कारण विजयादशमीका नही है. एसा होकर इस रोज जो हिंसा करते है सो मूर्ख है. ओर जो फलाचारके निमित्तसे, और न-क्सके निमित्तसे, और सप्तस्मार्त यह निमित्त्यसे चो हिंसा न करे भातके कणका पशु बनोवे; और इसका शेष प्रसाद खावे और सच्चे पशुका आलभ न करे अर्थात् हृदयका स्पर्शमात्र करे तो ऐसी किया करनेसे सब किया बरोबर होती है और बेदकी आहा पाली जाती है.

प्रमाण—ऋग्वेदमें आश्वलायन शालांक दुसरे पंचकके आठमे खंडमे मेध्यअमेध्यका-विकार करके शाल्योदनका यज्ञके उसका पुरोडाश (शेष प्रसाद) छेना ऐसा कहा है।।

# श्रुतिः

स वा एष पशुरेवालभ्यते यत्पुरोडाशस्तस्य यानि किं-शारूणि तानि रोमाणि ये तुषा सा त्वग्ये फलिकरणाः तदः सृग्तित्पष्टं किन्कसास्तनमांसं यित्कंचित्कं सारं तदस्थी स वेषां वा एष पशुनां मेधेन यजते यः पुरोडाशेन यजते तस्मादाहुः पुरोडाशसत्रं लोकथिमिति॥

टीका—इसका विचार एसाकी पशु संज्ञासे मनुष्यादिक सब प्राणीमात्र है. लेकीन इनकें शरीरभाग अमध्य अधीत अपवित्र है. इसके वास्ते यज्ञ निमित्तसे उसपर वाद लिखके मुख्य पुरोडाश प्रहण करनेकुं मेध्य होना सो, सींलमे सपडा करके, श्रुतिमें कहा है की भात कणके उपरके कुसल ओई रोम है. और तुष अर्थात् जो छोछपट सोई चमे है. इस तरहसे जो मध्य अर्थात् पवित्र पशु तो भातकण है. करके उस भातका पशु बनाके उसे यज्ञ करना, और यज्ञका शेष भाग खाना, इसतन्हेंसे बेदमें पशुहिंसा करनेका कहा नहीं है. मांस खानेका कहा। नहीं है.

दुसरा प्रमाण—ऋग्वेदमें आश्वलायन शाखाके दुसरे पचकके आठमें खंडमें मेच्य और अमेच्य इसका बिचार करके आरुंभनका विचार कहा है.

श्रति:—पुरुषं वे देवाः पश्रमालभंत तस्मादालन्धाम् मेघ उदकामत तस्मात् एतेषां नाक्ष्मीयात् इसका विचार ऐसा की, जहां अभेध्यका और यज्ञोका विचार दीखाया है, उस िकाने सर्व जीवोंका आलंभन करनेका कहाा है तो, कोई ही तिवारकुं जो पशुहिंसा करते है. और यज्ञों निमित्त जो हिंसा सो न करके लिखी हुई माफक किया करे तो सब किया बरोबर होती है अन्यथा नहीं होती ये सिद्धान्त है. ॥ ६ ॥

#### मञ्ज ७ का उत्तरः

पशुका आलमन करनेसे अर्थोत् इदयका स्पर्शमात्र करनेसे सबक्रीया बरोबर होती. है: अन्यथा नहीं होती ये सिद्धांत है. प्रश्नके उत्तर खलास हुवें है.

सारासार विचारका सारांश देखीये — आपके प्रश्न देखकर बहोत आनंद हुवा, क्यों की जो पुरुष वेद और शास्त्रोंकी मर्यादा त्यागनेका भय मानता है, सो पुरुष श्रेष्ट है. छेकिन जो दुसरेके दोष आपणे सीर मानके उससे भयदायक होता. अर्थात राज्यके व्यवहार, या प्रजाके व्यवहार या मंत्रीआदि छोकोके व्यवहारका ग्रुप्ण देश आपणे सीस्त्रानके भयदायक रहना. सो अर्थ प्रबुद्धपणा है. तो आपने आपके कर्तव्यकर्मके ग्रुप्णदोषका विचार

करके सत्यस्वरूप जो परम उदारपद, ऐसा जो ब्रह्मपद उसमें स्थित होना. ये प्रबुद्धपणा है ऐसा रहनेसें सर्व कर्मपर मेख मारी जाती है. अर्थात् उस पुरुषके सर्वकर्म सहेज ई-श्वरार्पण होते. ये विष्णु होकर विष्णुकी आराधना करे तब पूजा सफल होती है. और आपण आपका विचार करके ब्रह्मपद जाना नहीं और विष्णुकी पूजा करता है. और फल ईश्वरार्पण करता है. तो उसके कर्मपर मेख नहीं मारे जाती है. उसकुं पितृलोक प्राप्त होता ये वेदकी श्रुति कहेती है.

कर्मणा पितृलोक: -अर्थात् ईश्वरकुं ना जानके, जो कर्म ईश्वरार्पण करता है. उसकुं पितृकोक प्राप्त होता है. कित्येक काल पीछे फेर गिरते हैं. और जन्मसे जन्मांतर भटके रहते हैं. कभी राजा बनता है. कभी रंक बनता है कबी पशु बनता है. ऐसा घटीयंत्रकी नाई भ्रमता है. और जो आपणे आपका विचार करके, सत्यस्वरूप आत्माकं जानके उस आत्माके अनुसंधानसे कर्म करता है. तो उस पुरुषकु कर्म बंधायमान नहीं होते. उसकु परमपद जो अविनाशी पद है सो प्राप्त होता है. जन्ममरण ऋषियंत्रमें आता नहीं. ये सिद्धान्त है. तो ईश्वरकुं जानना कैसे होता है सो कहते है. की आपना आप विचार करनेसें. ईश्वर जाना जाता है. और न तप करी, न दान करी, न यज्ञ करी, न पुत्र धन करी, न होमादि क्रिया करी, न वर करी, न शाप करी आत्मा जाननेमें आता है. केवल आपना आप विचाररूपी पुरुषार्थ करके आत्मा जाननेमें आवता है. अर्थात् मे देहे हुंकी मनरूप हुंकी बुद्धिरूप हुं कीचित् अहंकार रूप हूं के और कोई हुं ऐसा विचार करनेसें ये सब असय और जड दिखते है. और एक चैतन्य-स्वरूप सत्य है ऐसा सिद्धान्त होता है. जब ऐसे सत्यस्वरूप आत्माकुं जानके जो पुरुष उसमे स्थित हुवा है तो उस पुरुषके स्विक्रया कर्म, स्वधर्म, परधर्म, सत्य, असत्य, आस्ति, नास्ति, शुभ, अञ्चभ, सुख, दुःख, हर्ष, शोक, भला, बुरा, पाप, पुण्यादि सर्व कर्म मिथ्या असत्य हो जाते है. क्यों की दर्य, अदर्य रूपीजगत, है नहीं. तो जगतके कर्म कांह. सत्यस्वरूप अवात्माके ठीकाने जग है नहीं. ए असत्य भांतिरूप है तो है राजा, तम भी आपने स्वरूपक् जानके सब पदार्थ ते नीराग हो जो वस्तुहीन होवे तिसकी आस्था करनी क्या है यह प्रपंच जो दृष्ट आता है. इसके भासने और न भासनेमें तुमकुं क्या खेद है. तुम निर्विष्ठ होकर भारमतत्वमें स्थित रहा. ऐसा जानो की जगत है भी और नहीं भी, यह निश्चय करी तुम असंग रहा. यह चळ अचळ दृष्टि आनेमे तुमकु क्या खेद है. तुम तो सत्य-स्त्रूप चेतन तत्वही है. राजा, यह जगत न आदि है, न अनादि है. केवल चेतनका जो चित संचित मनरूप है तिसके कूरेण करीके भासता है. वास्तवमें कल्लु नहीं यह जगत किसी कर्तान कीया नहीं न कीसी अकर्ताने कीया नहीं. केवल आभासक्य है. आभासमें कर्ती अक्ती पर्क प्राप्त भया है. ए क्रत्रिमरूप है कीसीका कीया तो नहीं. इस साथ

तुमकु संबन्ध मत होवे. यह भावना इदयमें धारो जो है कछु नहीं. काहे तेजो कीसी कर्ती करी हुवा नहीं. आत्मा सर्व इन्द्रियांते अतीत है. जडकी नाई अकर्ता रूप है ातिसकु कर्ता कैसे कहीये. यह कहेना नहीं बनता. ये जगत जाल कुर आई है. सो आभासरूप है. जो अकस्मात उपजाती सवीषे आसक्त होना क्या है. यह असत् भ्रांति-रूप है. इसमे आस्था मृढबालक करते हैं. बुद्धिमानतो नहीं करते. खरूप ते कछु जगत उपजा नहीं और नासभी कछ होता नहीं निरंतर दृष्टिमें आता है. अज्ञान करके बारंबार भावना होतीहै. तोभी जगत कछु होवा नहीं, न पाछे होवेगा, न आगल होवेगा. तुम बिचार करके देखों जो अवस्थास्थान कहां जाते है, और कहां जाते है और कहां गये है तो तुम सब इंद्रियोंसे अतीत जो आत्मतत्त्व अकर्ता रूप है, तीसीमें स्थित होना. वास्तव ते जगत कल्लु बन्या नहीं आभास सत्तामे बन्या भासता है. तुमने आभास सत्तामें निसदृष्ट होना. जगत जैसे हुवा है तैसेई है. विपर्यय नही होता. जो जो तम जगतंक असत्य जान्या और आपकं सत्य जान्या तोभी जगतके पदार्थकी बांछा 🗻 नहीं संभक्ती. और असत्यकुं असत्य जो, भावना करनीका है. और जो आपकुं और जगतकं सत्य जानतेहो तोभी वांछना नहीं संभवती. क्यों कीं, जो असत्य अद्वेत आत्मा है तिसके समीप कच्छ द्वेतवस्त नहीं है. तुमतो एक अद्वेतहो. वांछा कीसकी करते होतो तुम कीसी पदार्थकी इच्छा अनीच्छा नहीं बनती है. हेयोपादेयेतर रहित केवल स्वस्थ होकर आपने स्थित होना. अर्थात् आप करी आपनी आराधना करो. आप करी आपणी अर्चना करो भाप करी भापकुं देखो. आपर्से विचारसे आपमें स्थित रहा. कैसा है आत्मतत्व जो सबका कर्ता है और सर्वदा अकर्ता है. कदाचित कब्रु किया नहीं, उदासीन कोई नाई स्थित है. जैसे दीपक सर्व पदार्थींकूं प्रकाश कर्ता है, और कीसीकी इच्छाद्वारा अर्थ सिद्ध करने निमित्त नहीं प्रवर्तता. स्वाभाविकही प्रकाशरूप है तैसे आत्मतत्व सबका कर्ता है. तिसका कर्ता कोई नहीं. जैसे सूर्य सबकी क्रियाकूं सिद्ध करता है. और आप किसी क्रियांके आश्रय नहीं, क्यों कि जो आपही प्रकाशरूप है चलता है, और कदाचित् चलाय-मान नहीं भया. और जो सूर्यका प्रतिबिंब चलता भासता है. सो प्रतिबिंबका चलना सूर्यमें नहीं, तैसे तुमारा स्वरूप आत्मा सदा अकर्ता अचल है, तिसमें स्थित होना. जे ना कळू जगत भासता है, तिसमे बिचारना परन्तु भावना करके इसमें बंधायमान नहीं होना. अर्थात् बोळीये, चाळीये, खात्रे, पीत्रे, दान देईये ळईए. युद्ध करना होते तो करीए. शन्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध यह जो पांच विषय इंदियो कही सो सब अंगिकार करीए. ठेकीन इनके जाननेवाळा जो अनुभव आकाश है, तिसमें स्थित होना. तेरा स्वरूप बोही चिदाकार है, तिसमे स्थित होना. तेरा हे राजा, यदापि प्रसक्ष आदि प्रमाण करके जगत् सत् भासता है तोमीही नहीं. खस्य चित्त होकर आपकं विचार, और आपने आपमे स्थित

हा तब जगत कछु नहीं भासेगा. यह जगतके गुणदोष आपने शिर क्यों मानता है.
सूर्यवत अलित रहो. हे राजा, अंतरते भाव पदार्थकी आस्था लक्ष्मीकुं लागकर, और
बाह्य लीलाकर ते विचारना अन्तरके अकर्ता पदमें स्थित होना. ये राजादि सर्व मनुष्य वा
िक्रयादिकोंका मुख्य कर्तन्यकर्म है. इस कर्तन्यकर्मसे जो आत्मतत्वमें स्थित हुवा है
उसने वेद वा भगवद्गीतादि सत्य शास्त्रोंकी आज्ञा उल्लंघन करी ऐसा नहीं बनता. तिस
आत्मामें जो स्थित हुवा है अर्थात् सत्यस्वरूपकुं जो पाया है और जो ऐसे लक्ष्पकुं नहीं
पाया, सो कल्लु नहीं पाया. हमकुं ज्ञानकी बार्ता करते ज्ञानवानकुं देखी करी लज्जा कल्लु
नहीं आती. हे राजा, जो तीस ज्ञानकी वार्ता तेभी मुख्य है और यद्यपि महाबाहो।
होवे तोभी गर्दवत् है. और जो बड़े ऐश्वर्य करी संपन्न होवे और आत्मपदते विमुख हैं
तिनकुं विष्टाके कीटसेभी नीच जाण ये सिद्धान्त है. हे राजा हमने ईतनी समज दीहै.
सो कल्लु अर्थकी उपेक्षा करी नहीं दीहै कवल तेरेपर कृपा करके दीहे सो दत्तचित्तसे अर्थ
ग्रहण करना. और जो यथार्थ न जाननेमें आव तो सन्तजनकुं शरण जाकर समझ लेका.

उपरके सात प्रश्नोंके उत्तर सिद्धान्त ठैरे तो इसका इनाम जो आपके नगरमें ब्रह्मनिष्ठ अद्वैतज्ञानीका मठ होने. उसकुं हैंमारे तरफसे देना और हमकुं उत्तर भेजना. और जो उत्तर सिद्धान्त न ठरे तो नीचे छखेछा हुवा सारासार विचारके अर्थका ग्रहण करना- हिंसाके वादमे हमारा जो सिद्धान्त है, सो प्रश्नोंके उत्तरे यथार्थ कहा है येही सत्य है. अब विश्राम छेताहुं.

हमारा ठेकाणा ब्रह्मांडरूपी खपर है सो अनंत है. लेकीन उसमें जो जंबूद्वीप है, उसमें कोई अंशमें मुंबई इलाखा होई, उस इलाखेक अंकअंशमें नाशिक जिल्हा है, उस जिल्हेक अंकअंशमें येवला तालुका है, उस येवलेमें एक तरफकी गलीमें रहेते है. नाम गुरु धनानंद इनके शिष्य रजपूत शंकरासिंग छहुसिंग ऐसा देहका नाम है.

शंकरसिंग छद्दसिंग.

#### र्लीवडीवाला शास्त्री कानजी पुरुषोत्तम भट्टनो अभिप्राय.

### अथ सप्तप्रश्नोत्तराणि तथा

 तस्मायज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृखदाज्यं पशुस्तां चक्रे वाय-व्यानारण्यान्याभ्याश्चये इत्यादि वेदवाक्यानि ॥ सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पूरोवाच प्रजापतिः॥अनेन प्राविष्यध्वमेषवोस्त्वष्टकामधुक्॥ देवान् भावयतानेन ते देवा भावयंतु वः ॥ परस्परं भावयंतः श्रेयः परमवाप्स्यथेति गीतोक्तेश्च ॥ तथा च मैमांसकानां सत्रं ॥ आम्नायस्य क्रियार्थत्वात् आनर्थक्यमसदर्थानां तस्मादनित्यमु-च्यते सूत्रं १ तत् भूतानां कियार्थे न समाम्नाऽयोऽर्थस्य तिन्न-मित्तत्वात् सूत्रं २ तत्र तत्र जैमिनिना वेदस्य क्रियापरत्वाभिधा-नादुपानेषद्दामपि तदेव युक्तमित्यादि ॥ कालिकापुराणे च ॥ उत्तराभिमुखो भूत्वा बिलं पूर्वमुखं तथेत्यादि ॥ भविष्यपूराणे च ॥ तस्यां ये ह्युपयुज्यंते प्राणिनो महिषादयः ॥ सर्वे ते खर्गितं यान्ति व्रतां पापं न विद्यते इत्यादि ॥ दशमे उत्तरार्धे च ॥ एकदा रथमारुद्य विजयो वानरध्वजमित्याचंते ॥ तत्राविध्यच्छरे-र्व्याघान् सुकरान्माहेषान् रुक्रन् इत्यादीनि बहुशः संतीति संक्षेपः ॥ १ ॥

२ जे शास्त्रमां कहुं होय ते शास्त्र भार्यलोकोमां सर्वमान्य गणाय छे के केम वा बहुमान्य गणाय छे के केम !

२. पशुहिंसादिकर्मफलस्य सांतत्वसातिशयत्वनिश्चयात् ॥ य-दुक्तं तसादित्यादिवाक्यानां चार्यलोके सर्वमान्यं घटते विकल्पा-सहत्वात् प्रवृत्तिधर्मपरत्वाच तत्कर्मफलस्य सांतत्वसातिशयत्व-

निश्चयात् ॥ तथा हि ॥ ननु अक्षय्यं ह वै चातुर्मास्ययाजीनः सुकृतं भवति अपाम सोमममृता अभूम यत्र चोक्तं न च शीतं स्यात् न प्रानिनाप्नएतय इत्यादीनि तद्यथेह कर्मचितो लोकः क्षीयते एवमेवामुत्र पुण्यजितो लोकः क्षीयते अंतवदेवास्य तद्भ-वति ॥ न ह्यध्रुवैः प्राप्यते ध्रुवं नास्त्यकृतः कृते न प्रवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा इत्यादीनि च परस्परविरुद्धप्रकारेण वाक्यानि सामान्यतो दृष्ट्वा जातसंशयो विशेष्यो निर्णेतुं मुनीश्वरस्तन्नि-वृत्तये धर्मजिज्ञासायां प्रवृत्तस्तया सम्यक् निर्णीतकर्मखरूपतदनु ष्टानप्रकारतत्फलकश्चोत्ति संक्षेपः क्षीणे पुण्ये मृत्युलोके वसंति ॥ आब्रह्मलोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुनेतिस्मृतेश्च ॥ अहिंसकधर्मज्ञानस्य च निरतिशयानंतफलकत्वनिश्चयात् यद्येवं तर्हि किमेत्येके पशु-हिंसां कुर्वंति इत्यत्र भागवतवाक्यं च एकादशे वदंति तेऽन्यो-न्यमुपाश्रिताः स्रियो गृहेषु मैथुन्यसुखेषु चाषिशः ॥ यजंत्यसृष्टान्न-विधानदक्षिणं वृतौ परं घ्रति पश्चनतद्विदः ॥ न सृष्टा न संपादिता अन्नविधानदक्षिणा यथा तथा यजांति तदा च वस्यै जीविकार्थं परं पशून् वंति अतद्विदः हिंसादोषानिभज्ञाः इति श्रीधरटीकायां ्चोक्तं ॥ सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा इत्यादिवाक्यानामेवमाशयः याः मिमां पुष्पितां वाचिमत्यादिना श्रेयो गीतोक्तं ज्ञेयःयचोक्तं भैमांस-कसूत्रे तस्यायमाद्यायः एतेन विधिना खेकवाक्यत्वात् स्तुत्यर्थेन विधिना स्यु रिति द्वितीयपादोक्तसूत्रसिद्धांतेन तत्वमस्यादिवाक्या-नां यजमानस्तुतिद्वारा क्रियापरत्वं न संगच्छेत् अष्टांगमयो योगो यथा ब्रह्म एकं स्वजातीयभेदशून्यं यजमानस्य हि सजातीया बहवो यजमानास्तिष्ठंति अद्वितीयं विजातीयभेदगृन्यं यजमानस्य हि विजातीयाः शुद्राद्यो बह्रवस्तिष्ठांते ब्रह्म व्यापकं यजमानो हि परिक्रितः ब्रह्म विज्ञानं चिन्मात्रं यजमानो हि चिञ्जहयंथहंकार- वत्वेन ज्ञानाज्ञानभात्रः ब्रह्म हि आनंदमात्रं यजमानो हि दुःखारमकपशुह्दननादिकर्मकरणादिहान्यत्रातिदुःखी ब्रह्म हि चक्षुः
श्रोत्रादिशून्यं तस्य हि तत् शून्यत्वे अंधवधिरत्वादिदोषोपपत्या
यज्ञानधिकारात् यजमानत्वमेव हीयते तस्मात् क्षुद्रफळकं हि न
कर्म त्यक्त्वा भगवत्तोषणं औवोक्तं चोच्यते ॥ वर्णाश्रमाचारवता
पुरुषेण परः पुमान् विष्णुराराध्यते पंथा नान्यत्तोषकारणम् परपत्निपरद्रव्यपरहिंसासु यो मितं न कुरुते पुमान् भूयः तुष्यते तेन
केशवः ॥ न ताडयति नो हंति प्राणिनोन्यांश्चदेहिनः यो मनुष्यो
मनुष्यद्र तोष्यते तेन केशव श्चेतिसंक्षेपः यचोक्तंस्फुटतया पशुः
हननं कालिषुराणे भविष्येच तदादिपुराणस्मृतिनां च राजसताः
मसत्वनिरूपणात्रसर्वमान्यं न बहुमान्यं चोति यचोक्तं दशमे
उत्तरार्धे एकदा रथमारुह्णैतस्यायमभिप्रायः छोकेव्यवायामिषमयः
सेवा नित्यास्तु जंतोर्न हि तत्र नोदनेत्यादिना तेजीयसां न
दोषोस्तीति संक्षेपः ॥ २ ॥

३. शास्त्रयोनित्वादिति सिद्धांतसूत्रं शास्त्रलक्षणं छांदोगो तत्र नारदवाक्यं यथा इतिहासपुराणपंचमिनित तत्रेव सनत्कुमारवाक्यं इतिहासपुराणपंचमिनित ऋग्यजुःसामाथर्ववाक्यं भारतपंचरात्रकं मूलरामायणं चैव शास्त्रमित्यभिधीयते यच्चानुकुलमेतस्य तच्च शास्त्रमतं परं अतोऽन्योग्रंथविस्तारो नैवशास्त्रं कुर्वत्येतत् इत्यादि पाद्मे वैष्णवं नारदीयं च तथा भागवतं शुभं गारुडं च तथा पाद्मे वाराहं शुभदर्शने षडेतानि पुराणानि सात्विकानिमित्तानि मे पाद्मोत्तरखंडे ब्रह्मांडं बह्मवैवर्तं मार्क्डयं तथेव च भविष्यं च तथा ब्राह्मं राजसानि निबोध मे मात्स्यं कोम्य तथा लिंगं शैवं स्कादं तथेव च आग्नेयं च षडेतानि तामसानि निबोध मे ॥ तथेवस्मृतयः प्रोक्ता ऋषिभिस्तिग्रुणान्विताः सात्विका राजसा

श्चेव तामसा शुभदर्शने वाशिष्टं चैव हारीतं व्यासं पारशरं तथा भारद्वाजं काश्यपं च सात्विका मोक्षदाः शुभाः वामनं याज्ञवल्क्यं च आत्रेयं दाक्ष्यमेव च कात्यायनं वैभवश्च राजसाः खर्गदाः शुभाः गौतमं बाईस्पत्यं च सांवर्तं च यमस्मृतं सांख्यं चोशनसं देवी तामसा निरयप्रदाः सात्विका मोक्षदाः प्रोक्ता राजसाः स्वर्गदाः शुभाः तथैव तामसा देवी निरयस्यातिहेतवः तथाह मनुः या वेदबाह्याः स्मृतयो याश्च काश्च कुदृष्टयःताः सर्वो निःफलः प्रेत्य तमोनिष्टाहि ताः स्मृताः शांतिपर्वणि मोक्षधर्मे मरीचिरंगिरात्रिश्च पुलस्त्यः पुलहः कतुः विशष्ट इति सप्तेते मनसा निर्मिता हि ते एते वेदविदो मुख्या लोकाचार्याः प्रकीर्त्तिताः प्रवृत्तिधर्मिणश्चेव प्राजापत्ये प्रकल्पितः सनकसनत्सुजातश्च सनकश्च **सनं**दनः सनत्कुमारः कपिलः सप्तमश्च सनातनः सप्तेते मानसाः प्रोक्ता ऋषयो ब्रह्मणः सुताः स्वयमागतविज्ञाना निवृत्तिधर्ममास्थिताः एते योगविदो मुख्या लोकाचार्याः प्रकीर्त्तिताः तथैव विष्णुपुराणे-पीति संक्षेपः ॥ प्रजाश्चतेवमेव तदुक्तं गीतायां महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा मद्भावा मानसा जाता येषां लोके इमाः प्रजाः प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च द्विविधं कर्म वैदिकं आवर्तते प्रवृत्तेन निवृत्तेनाश्चतेमृतं ॥ प्रवृत्तमेव निर्दिशति हि स्तं इव मयं काम्य मग्निहोत्राद्यशांतिदंदर्शश्च पौर्णमासश्च चातुर्मास्यं रातदिष्टं प्रवृत्ताख्यं हुत प्रहुत मेव च॥ पूर्तं सुरालयारामकुपाजी-ठयादिलक्षणं द्रव्यसूक्ष्मविपाकश्च धर्मोरात्रिरपक्षयः अयनं दक्षिणं सोमो दर्शऔषधि वीरुधः अन्नं रेत इति त्वेश पितृयान् पुनर्भवः ाकैकत्येनानुपूर्वे भूत्वेह जायते ॥ यां वै साधनसंपत्तीति निवृत्ति-कर्मपुनर्भवः ॥ ३ ॥

४ राजाओने अवस्य कर्तव्यज छे अने ते न करवामां आवे तो बलवान् शास्त्रनी आज्ञा तोडी गणाय एवं कोई स्पष्टप्रमाण छे के केम ?

प्रथमस्कंधे ॥ त्यक्त्वा स्वधर्मचरणांबुज हरेर्भजं न पकोऽथपते-त्ततो यदि यत्र क या भद्रमभूदमुष्य किं को वाथ आहो भजतां खधर्मतः निगमकल्पतरोर्गछितं फलमित्युक्तवास्य च फलत्वे-नातिश्रेष्ठतमत्वात् निवृत्तिधर्मपरत्वाच मोक्षस्य तु भक्तयैकसाः ध्यत्वमितिश्रुतेश्च ॥ महाभारतस्यापि तथात्वं भागवते भारत-व्यपदेशेन ह्याम्नायार्थश्च दार्शित इति वचनात्तु शांतिपर्वोक्तं प्रदृश्यते भीष्म उ० श्रृयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवा वधार्यतां आत्मनः प्रतिकूलानि न परेषां न समाचरेत् आहिंसा सत्यमस्त्येयं त्यागो मैथुनवर्जनं पंचखेतेषु धर्मेषु सर्वे धर्माः प्रतिष्ठिताः अहिंसालक्षणो धर्मः अधर्मः प्राणिनां वधः तस्माद्धर्मार्थिर्मिलोंके कर्तव्या प्राणिनां दया लोभमायाभिभृतानां नराणां प्राणिनां व्रतां येषां प्राणिवधे धर्मों विपरीता भवंति ते यदि प्राणिवधे धर्मः स्वर्गश्च खलु जायते संसारमुंचकानां तु कुतः स्वर्गोभि-धास्यते ध्रुवं प्राणिवधो यज्ञे नास्ति यज्ञस्तु हिंसकः ततोऽहिंसा-त्मकः कार्यः सदा यज्ञो युष्टिधिर इंद्रियाणि पशून् कृत्वा वेदीं कृत्वा तपोमयीं अहिंसा माह्नुतिं कृत्वा आत्मयज्ञं यजाम्यहं ध्यानाग्नीजीवकुंडस्थे दममारुतदीपिते असत्कर्मसमित्क्षेपे अग्नि-होत्रं कुरूत्तमं यूपं कृत्वा पशून् हत्वा कृत्वा रुधिरकर्दमं यद्यवं गम्यते स्वर्गे नरकं केन गम्यते ॥ ४ ॥

4 ते हिंसानि प्रवृत्ति जो न करवामां आवे तो तथी राजाने प्रजाने के राजना अंगे कोई पण प्रकारनो आपित्तयोग आवे अथवा अकार्य कर्युं गणाय एवं कोई बळवान शास्त्रमां कह्युं छे के केम ?

तथा चोक्तं ॥ वशिष्टपंचरात्रकुंडमालमववाणवंशकथाप्रसंगे

यस्तु संसारकूपे हि पतंतं प्राणधारिणं धारयत्यतिवेगेन तस्माद्धमीं निगद्यते आत्मवत् सर्वभूतानि परद्रव्याणि लोष्टवत् मातृवत् परदारांश्च यः पश्यति स धर्मभाक् धर्मः कल्पद्वमो लोके धर्म-श्चितामणिर्नृणां धर्मः कामदुघाधेनुः धर्मश्चितितवस्तुदः धर्मपा-थेयवान् पांथो न यतो भयसीदति संसारे भूः प्रमाणोयं सर्वत्रापि सुखी भवेत् ॥ प्रह्मूतिपशाचाश्च शाकिन्यः पन्नगादयः पराभवंति यं दृष्ट्वा धर्मसंसक्तमानसं सुषुत्रं चक्रवर्त्तित्वं बल्लं बल्लवतां तथा तेजः कांतिरक्षयायुष्यं धर्मात्सर्वं समाप्यते अनेकभूमिसंपन्नाः प्रसादाः सुमनोहराः धनधान्यादिकं चापि लभ्यते धर्मसेवनात् कामिन्यः सुंदराकाराः सत्पुत्राः सत्सहोदराः गजाश्वस्यंदनाः श्चव धर्मान्नाक्ति लभंति हि सागरस्यांतरस्थं यत् यच देशातरे स्थितं तत्तद्धर्मप्रभावेण निजगेहे समाप्यते तेनधर्मप्रभावेण राजः राजस्य धीमते श्रीपतेस्तनयो राजन् एथियत् इति श्रुत्वा इत्यादि अधर्मफलं चतुर्थस्कंधे प्राचीनबर्हिषं नृपं प्रति नारदवाक्यं भो भो प्रजापते राजन् पशून् पश्य त्वयाध्वरे संज्ञापितान् जीव संघान्निर्घुणेन सहस्रशः एते त्वां संप्रतीक्षंते स्मरंतो वैशसं तव संपरेतमयःकृटैश्चिंछदंरयुत्थित मन्यवः इत्यादि ॥ शांतिपर्वणि च न प्राह्याणि न देयानि षद्वस्तूनि च पंडितैः अग्निं मधुं विषं शस्त्रं मद्यं मांसं तथैव च घातकश्चानुमंता च भक्षकः क्रयविकयी लिप्यंते प्राणिघातेन पंचाप्येते युधिष्ठिर ॥ विष्णुपुराणे यो ददाति सहस्राणि गवामश्व शतानिच अभयं सर्वसत्वेभ्यस्तहानामिति चोच्यते कपिलानां सहस्राणि यो दिजेभ्यः प्रयच्छति एकस्य जीवितं दद्यात् न च तुल्यं युधिष्टिर दत्तिमष्टं तपस्तप्तं तीर्थसेवा तथा श्रुतं सर्वेप्यभयदानस्य कला नाहिति घोडशीं हेमधेनुधरां दानं दातारः सुलभा भुवि दुर्लभाः पुरुषाः प्रदानस्य क्षय एव न

विद्यते ॥ महाभारते च ॥ यो दद्यात्कांचनं मेहं क्रत्स्नां चैव वसुंधरां एकस्य जीवितं दद्यात् न च तुल्यं युधिष्ठिर ॥ यादृशी वेदना तिन्ना खशरीरे युधिष्ठिर तादृशी सर्वभूतानामात्मनः शुभ मिच्छतां ॥ आहिंसा परमो धर्मस्तथाहिंसा परं तपः ॥ आहिंसा परमं ज्ञानमिविसापरमं पदं आहिंसा परमं दानं आहिंसा परमोदमः अहिंसा परमो यज्ञस्तथा हिंसा परं पदं ॥ ५॥

ते पशुवधने बदले बीजुं कोई हिंसारहित किया करीने पर्व आराधवामां आवे तो तेथी कांई बलवान् शास्त्रनी आज्ञानो भंग कर्यो गणाय के केम ? तेवी हिंसारहित कई कई क्रिया कराबर गणाय. ॥ ९ ॥

एकादशे वदंति तेन्योन्यमुपाश्रितस्त्रियो ग्रहेषु मैथुनसुखेषु चाशिवः ॥ यजंत्यसृष्टान्नाविधानदक्षिणं वृत्ये परं ग्नंति पश्चनतद्विदः॥ न सृष्टा न संपादिता अन्नविधानदक्षिणा यथा तथा यजंति तदा च वृत्ये जीविकार्थं परं पश्चन् ग्नंति अतद्विदः हिंसादोषानभिज्ञा इति श्रीधरटीकायामुक्तं ॥ तथा च श्रुतयः॥
एषद्येव साधु कर्म कारयति तं यमेभ्यो लोकेभ्यउन्नीय लोकेभ्य
नीयंते एव एवासाधुकर्म कारयति तं यमेभ्यो लोकेभ्योऽधो
निनीयते इत्यादि॥ ६॥ ७॥

त्तीयप्रश्ने सर्वशास्त्रेषूपनिषत् शिरोभागस्तद्वाक्यप्रमाणतमं यथा ॥

तत्र तत्र जैमिनिना वेदस्य क्रियापरत्वाभिधानादुपनिषदामपि तदेव युक्तं तत्रतत्र यत्रयत्र वेदस्य क्रियापरत्वं न दृश्येत तत्रतत्र उपनिषदामपि तत्वमस्यादिवाक्यानामपि तदेविक्रियाप-रत्वमेव ॥ एतेन विधिना त्वेकवाक्यत्वात् स्तुत्यर्थे विधिना स्युरिति द्वितीयपादोक्तसूत्रसिद्धांतेन उपनिषदां तत्वमस्यादिवान् क्यानानैराक्काः नृणं वयं कर्मकराः कथं स्याम इत्याकांक्षाराहि-त्यकेन प्रकारेण व्याख्यातिमाति अपेक्षायां प्रकारमाह कृत्वथप्रति-

पादनेन क्रुत्वर्थो यज्ञांगरूपो यः कत्ती यजमानस्तस्य यत्प्राति-पादनं इश्वराभेदेन स्तुत्या वर्णनं तेन प्रकारेण यथादित्योयूपः प्रस्तरोयं यजमान इत्यादौ यूपः स्तुत्या पशुनियोजनादि क्रियाः यामन्वेति तथा उपनिषद्वाक्येरीश्वरभेदेन स्तुत्या पशुनिक्रिया-यामन्वेति यजमानोपि कर्नुस्वेन क्रियामन्वेति इति भावः ॥ एतेन विधिना त्वेक्कवाक्यत्वादित्यादिपूर्वोक्तसूत्रस्यायमथः तत्र शब्दः पूर्व-पक्षव्यावृत्यर्थः ॥ आम्नायस्य क्रियार्थत्वात् आनर्थक्यं असदर्थानां तसादिनत्यमुच्यत इति मैमांसकानां सूत्रे यदुक्तं आनर्थक्यं अतदर्थानां तन्न विधिना स्वस्य प्रयोजनवदर्थपर्यवसायित्वं गमिय-तामह ॥ एकवाक्यत्वात् वाक्यानि स्त्युत्यर्थेन स्तुत्यंगत्वेन विधीनां स्यः विधिशेषाणि भवंतीतिसंक्षेपः ॥ तत्वमस्यादिवाक्यानां यजमा-नस्तुतिद्वारा कियापरत्वं न संगच्छेत् ॥ एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म ं विज्ञानमानंदं ब्रह्म अचक्षुरश्रोत्रमित्येतद्विपरीतात्मप्रतिपादनात् ॥ अस्यायमथः ॥ एकमेवेत्यादिश्चत्यैवं तद्विपरीतात्मप्रतिपादनात् ॥ तसात् त्वदिभमतात् यजमानः सकाशात् विपरीतस्य श्रुद्धात्मन-प्रतिपादना देतोः अवैपरीत्यमेव स्फुटीकरोति ब्रह्म एकं सजातीय भेद्शून्यं यजमानस्य हि सजातीया बहवो यजमानास्तिष्ठंति अहितीयं विजातीयभेदशून्यं यजमानस्य हि विजातीयाः शूद्रादयो बह्वस्तिष्ठंति बह्य व्यापकमित्यादिप्रथमपत्रे उक्तमितिसंक्षेपः॥

> ली. भट कानजी पुरुषोत्तम मुकाम लीवडी द. पोताना.

# नं. २७.

#### जीवहिंसा हिंदुशास्त्र आधारे करवा विषे मनाईना जवाब.

१ एवां अथवा कोई कार्य करवामां जीविहसा सर्वे हिंदु तथा मुसलमानीना धर्म- शास्त्रोमां पण बिलकुल मनाई करेली छे.

२ हुं तथा सर्वे आर्य हिंदुशास्त्र माननारा आर्यजन विद्वानाना सर्वमान्य तथा बहु-मान्य शास्त्रमां जीवहिंसा पशुवध करवा सखत मनाई प्राचीन महाने पूर्वे करेली छे.

३ चालतां कियाणशास्त्र तथा चालतां हिंदुपुराणो एवां सर्वे शास्त्रोमां मुख्यत्वपणुं धरावनारा चारे वेदमंत्रमां तथा श्रुतिमां तथा जैन शास्त्रोमां सर्वोपारे सिद्धांत श्री भगवतीजि तथा पनवणाजि तथा आचारंगिज तथा उपांशंगदसाजि विगेरे जैनधर्म बत्रीश सिद्धांत कहेल छे. तेमां सर्वथा प्रकारे एकेंद्रिथी पंचेंद्रि जीवोनी हिंसा तथा वध करवानी मना करी छे ते तमाम सिद्धांतना सर्वे अध्ययन तथा अध्यायमां प्राणातिपात एटले प्राणिना घात करवा सर्वथा निषेध छे. उपरनां सर्वे शास्त्रो बलवान् गणाय छे. तथा प्रमाणिक पण छे तेम आर्यजनो सर्वे माने छे.

४. नीतिधर्म पालनारं तथा प्रतापी राजाओ पुरेपुरा न्यायवंत राजा तथापि अकृत्य कर्म प्राणियोने वध करे तो बलवान् शास्त्र, वेद, श्रुति, स्मृति, सूत्रनी आज्ञा तीडी तेम गणाय तेनुं स्पष्ट कारण आ प्रमाणे नीचेना श्लोकथी जाणवुं.

## सूत्र ३ भेलांछे

आहेंसा सत्यमस्तेयं त्यागो मैथुनवर्जनं पंचस्वेतेषु धम्मेषु सर्वे धर्माः प्रतिष्ठिताः॥ १॥ यो दद्यात् कांचनं मेहं क्रत्झां चैव वसुंधरां एकस्य जीवितं दद्यात् न च तुल्यं कदाचन॥ २॥ मनमल छांडे सोइ स्नान जीव रक्षे सोई दान॥ ज्ञानतत्व अभ्यंतरधरना निर्मल एहीज ध्याना ॥ ३॥

अर्थ नीचेप्रमाणें छे.

हिंसा करवी नहीं. सत्य तजवुं नहीं असत्य आचरवुं नहीं, परिप्रहनो त्याग करवो एटल उपर मायानो त्याग, परस्त्री तथा नीतिविरुद्ध मैथुननो त्याग करवो. १ कंचन कहेतां सोनानो मेरुपर्वत जेवडो ढगलो करी दररोज अखंड दान आपे तोपण एक जीवने हणता मुकाववो ते अभयदान कहेवाय, तो ते उपरना सोनानुं दान अभयदाननी लेश पण गणत्रीमां आवतुं नथी. २ मननो मेल मूके तेनेज स्नान करवुं कहेवाय. प्राणिजीवोनी रक्षा करवी तेनेज दान कहेवुं, ज्ञानरूपी तत्व अंतरआत्मामां धारण करवुं, निर्मळ एटले चोख्युं एनेज धर्म तथा ध्यान कहेवाय छे ३॥

५—तेवी हिंसानीं जो प्रश्नित करवामां न आवे तो राजाने के प्रजाने अथवा तो राजाने अंगे कांईपण पराभव न थतां घणोज लाभ तथा राजनी वृद्धि तथा लक्ष्मीनी वृद्धि पुत्र पौत्रादि वृद्धि तथा ते राजा घणाज प्रतापी तथा नीतिवंत गणायाछे. तेम राजा अंगे आरोग्यता रहे आफत न आवे एवं बलवान् शास्त्रोमां कहेलुं छे तेविषे आधार कृष्ण यज्जेंदना तेतिरियारण्यकना दशमा प्रपाठकना ६३ मां अनुवाकमां कहयुं छे के.

#### सूत्र ४

# धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा छोके धर्मिष्ठं प्रजानुपसपैति धर्मेण पापमनुविंदंति धर्मे सर्वे प्रतिष्ठितं तस्माद्धमें परमं वदन्ति ॥ १५॥

धर्म सर्व प्राणिन आश्रय छे. जगतमां धर्माधर्म जाणवा माटे लोको धर्मिष्ठनी पासे जायछे धर्मे करी पापने टालेछे ने धर्ममां सर्व रह्युं छे. माटे धर्मने श्रेष्ठ कहेलछे पण ए धर्म श्रुं छे. ते सर्व मनुष्ये जाणवुं अवश्य छे. माटे आपस्तंब धर्मसूत्रना प्रथमप्रश्नना सातमा पटलमां कह्युं छे के—

#### सूत्र ५

#### यं त्वार्याः क्रियमाणं प्रशसन्ति स धर्मो यं गईते सोऽधर्मः ॥ १६॥

अर्थ—जे आचरणने आर्यपुरुषो बखाणे ते धर्म अने जेने निंदे ते अधर्म कहेवाय छे. ने बली वैरोषिक दर्शनना पेहेला अध्यायना प्रथम आन्हिकमां कहेल छे के.

#### सूत्र ६

# यतोभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः ॥ १७ ॥

अर्थ---जेनाथी उदय तथा कल्याण थाय तेज धर्म.

६—आपणा आर्य हिंदुशास्त्रने विषे जे पर्वो आवेलां छे ते सर्वे घणाज उत्तम दिवस छे माटे ते पर्व आराधवाने दिवसे त्रण शब्द कह्या छे ते आराधवां (दया, दान अने दमन) ए त्रण शब्द मूळधर्म शास्त्रथी उत्पन्न थया छे. तेनो अर्थ एवो छे के, सर्व जीवो उपरें दया करवी, सुपात्र जनोने दान आपवं, तथा अभयदानने कोईपण प्राणीने सहाय धई रक्षा करवी तथा कराववी. ते तथा आ देहनी इंद्रियो कुकर्म करवा उन्मत थई देहने डोला-वती होय तो इंद्रियवडे मन दृढ रहेवा साठं तपश्चर्या करी देहदमन करवं तेथी देहनी शुद्धि थाय छे. तथा मुसलमान एटले यवन लोकोना मूळ प्रमाणिक शास्त्रोमां पण धर्म विषे मूळ शब्द त्रण छे. (खेंर, महेर ने बंदगी) एवा त्रण शब्द छे तो तेनो पण भावार्थ एवो छे के खेर एटले अन विगेरे सुपात्रे दान देवं. महेर एटले सर्वे प्राणियो उपर दया राखी महेर करवी रक्षा करवी. बंदगी ते खुदानी भक्ति करवी एवो अर्थ छे पण प्राणियोनी हिंसा करवी ए अशक्य छे.

७. कोई पण निमित्त दिवसे प्राणिन वध करवा ठावेठा अबोध मनुज होय ते पासेथी ठई कोई पण निर्भय स्थळे ते पशुनुं कोई पण अंगने खंडन कर्या सिवाय मुकवुं ने ते पूर्ण सुखवृत्तिमां रहे तेवा ठेकाणे मुकवाथी सर्वोत्तम क्रिया संपूर्ण थाय छे एम धर्मशास्त्रोमां मानेछुं छे.

#### सूत्र ७

विषय हिंसा न करवी ते माटे विशेष आधारो ॥

अथ ॥ पातंजलयोगदर्शनश्राद्धनपादश्रुतिसूत्रं ३० मुं ॥ आहंसा सत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरित्रहा यमाः ३० आहंसा १ सत्य २ अस्तेय ३ ब्रह्मचर्य ४-अपरित्रह ५ एते यमाः-

हिंसा एटले कोईपण प्राणिनो द्रोह करवी तथा वध करवी ताडतर्जना करवी ते द्रोह तथी विमुक्त एटले निषेध ते अहिंसा तेना ९ प्रकार छे. तो तेमां पण प्रथम शब्दनो अर्थ प्राणिनो द्रोह तथा वध करवुं ते महाज मोटुं प्रायश्चित्त कह्युं छे. ते हिंसानां ८१ मेद कह्यां छे. (हिंसा) इत, कारित, अनुमोदित ए त्रण भेद छे ते शब्दनो अर्थ, करवुं कराववुं करतांने भछं जाणवुं एवां त्रण भेद थयां. लोभ १ कोधे २ मोहे ३ थी करवुं कराववुं करतांने भछं जाणवुं एम एक एकना त्रण त्रण भेद एटले थायछे. वळी तेमां पण ३ त्रण भेद कहेल्छे ते मृदु, मध्य, अतिमांत. अर्थ मृदु एटले थोडुं मध्य ते साधारण अतिमात ते घणुंज दरएकना ३ भेद मळी २७ थायछे. तेना पण ३ त्रण भेद ते मृदु मृदु मृदु मृद्य मृदु तीव अर्थ थोडामां थोडुं थोडामां मध्यभाग थोडाथी घणुं एटले २७ ने त्रण त्रण करतां ८१ भेद थायछे. तेमांनो सूक्ष्म भेदरूप पण जो कोई प्राणिनी हिंसा तथा वध तथा काईपण दुःखरूप कार्य पोताना साधनने अर्थ करीये तो महिधिक प्रायश्चित बंधाय छे. माटे सर्वथा प्रकारे आर्य जनोनां

मूळ प्रमाणिक शास्त्र जोवाथी प्रणातिपात एटले प्राणिनो वध करवो एरूपी हिंसानो सर्व कार्योमां निषेध करेलले.

#### सूत्र ८

याज्ञवल्क्य स्मृतिना आचाराध्यायमां कह्युं छे के.

#### आहिंसा सत्यमस्तेयं शौचिमद्रियनिग्रहः॥ दानं दया दमः क्षान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम्॥ १२८॥

अर्थ:—अहिंसा, सत्य, चोरी न करवी, पवित्रता, इंद्रियनिग्रह, परोपकार, दया, मननुं दमन तथा क्षमा ए नव सर्वे धर्मनां साधन छे:—१२८ वळी श्री महाभारतांतर्गत शांतिपर्वना १६२ मा अध्यायमां कह्युं छे के:—

#### सूत्र ९

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा अनुग्रहश्च दानंच सतां धर्मः सनातनः १२९

अर्थ:—मन, वाणि तथा कर्में करी प्राणिमात्रनो द्रोह न करवो दया राखवी तथा उपकार करवो ए सत्पुरुषोनो सनातन धर्म छे. ॥ १२९ ॥ तेमज वळी पण श्रीमदम् भागवतना प्रथम स्कंधमां कहयुं छे के जीवो जीवस्य जीवनम् ॥ १३० ॥ अर्थ:—जीव जीवनुं जीवन छे. ॥ १३० ॥ चाणाक्य नीतिमां कहयुं छे के:—

#### सूत्र १०

# आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् ॥ एको विवेको ह्याधिको मनुष्ये विवेकहीनाः पशुभिः समानाः ॥ १३१ ॥

अर्थ — आहार, निद्रा, भय तथा मैथुन ए चारे पशु तथा मनुष्योमां सामान्य छे. पण एक विवेकज मनुष्यमां अधिक छे माटे कृत्य अकृत्य न जाणे ते अविवेक तेवा अविवेकी मनुष्यो होय ते पशुसमान जाणवां. १३१ तो तथी विवेक विचारी प्राणियोना शरीरनो घात कयी वगर अनादि वनस्पतिथी मनुष्ये पोताना जीवनो निर्वाह करवो योग्य छे ए विषे विष्णुशर्मीए कह्युं छे के—

#### सूत्र ११

योत्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पर्यतान्तरम् ॥ एकस्य क्षणिका त्रीतिरन्यः त्राणैर्विमुच्यते ॥ १३२ ॥ अर्थ — ज्यारे जे कोई जेनुं मांस खाय छे त्यारे ते बंनेनो अंतर जुवो, तो खानारने पेट भरवा जेटलो क्षणिक हर्ष थाय छे ने बीजाना प्राण जाय छे। । १३२ ॥

#### सूत्र १२

#### मर्तव्यमिति यहुःखं पुरुषस्य प्रजायते शक्यस्तेनानुमानेन परोऽपि परिरक्षितुम्॥ १३३॥

अर्थ — पुरुषने मरणसंबंधी जे दुःख थाय छे ते अनुमानथी अन्य प्राणी तारण करवा योग्य छे ॥ १३३ ॥ आ उपरना बे स्लोक विष्णुशर्मा ए कहेल छे — बळी पण श्रीमहाभा-रतांतर्गत अनुशासन पर्वना ११५ तथा ११६ मां कहेल छे के —

#### सूत्र १३

#### प्राणा यथात्मनोऽभीष्टा भूतानामि वे तथा आत्मीपम्येन मंतव्यं बुद्धिः कतात्मिभः॥ १३५॥

अर्थ जेम पोतानां प्राण पोताने प्रिय छे तेम प्राणियोने पण हरो एम पोतानी उपमा बडे बुद्धिमान् ज्ञानिओए विचारवुं ॥ १३५॥

#### सूत्र १४

#### स्वमांसं परमांसेन यो वर्धयितुामिच्छाति ॥ नास्ति क्षुद्रतरस्तरमात् स नृशंसतरो नरः ॥ १३६॥

अर्थ — जे पारका मांसे करी पोताना मांसने वधारवा इच्छे छे तेनाथी वधारे कोई अधम नथी ने जे अतिकर छे. ॥ १३६॥

#### सूत्र १५

# न हि प्राणात्प्रियतरं छोके किंचन विद्यते तस्माइयां नरः कुर्याद्यथात्मनि तथा परे ॥ १३७ ॥

अर्थ—जगतमां प्राणथी अधिक प्रिय बीजुं कंई नथी माटे मनुष्ये पोतानी पेठे बीजानी उपर दया राखवी. ॥ १३७॥

#### सूत्र १६

प्राणदानात्परं दानं न भूतं न भविष्यति न ह्यात्मनः प्रियतरं किंचिदस्तीह निश्चितम् ॥ १३८॥ अर्थ—प्राणदानयी बीजुं श्रेष्ठ दान थयुं नथी तेम थशे पण नहीं. केमके छोकमां आत्माथी अधिक प्रिय बीजुं कांई नथी ए निश्चय छे. ॥ १३८ ॥

#### सूत्र १७

# अनिष्टं सर्वभूतानां मरणं नाम भारत ॥ मृत्युः काले हि भूतानां सद्यो जायति वेपथुः ॥ १३९॥

अर्थ--प्राणिमात्रने मरण अप्रिय छे कारण मरण समय तेमने तत्काल कंप थाय छे. उपरना १३५ थी ते १३९ सुधीना श्लोक महाभारतमां छे. हवेथी चाणाक्यनीति लघुचाणा-कयना लघु अध्यायनो श्लोक ९ मो.

#### ूत्र १८

# धर्मस्य मूलं राजानस्तपोमूलं ऋषीश्वराः॥ ऋषीशा यत्र पूज्यंते तत्र धर्मः सनातनः॥ ५॥

अर्थ —धर्मनुं मूळ बीज राजाओ छे, तपनुं मूळ ऋषिओ छे; जहां ऋषीश्वरनी साधुनी नता होय ते स्थळ सनातन धर्मनुं स्थान समजवुं.

#### सूत्र १९

# राज्ञे धर्मिणि धर्मिष्टाः पापे पापा समे समाः ॥ लोकास्तदनुवर्त्तते यथा राजा तथा प्रजाः ॥ ६ ॥

अर्थ—राजा धर्मी होय त्यां प्रजा पण धर्मिष्ट होय. राजा पापिष्ट होय छे ते प्रजा पण पापी थवाना संभव थाय छे तुल्योतुल्य होय छे. सेवक राजाना वर्तणुक प्रमाणेज चाले एवो सदैव नियम छे जेवो राजा तेवीज प्रजा थाय छे. ॥ ६ ॥ हवे श्री महाभारतना अनुशासन पर्वना ११६ मा अध्यायमां कहुं छे के—

#### सूत्र २०

# अहिंसा परमो धर्मस्तथाहिंसा परो दमः॥ अहिंसा परमं दानमहिंसा परमं तपः॥ १४४॥

अर्थ — महिसा ए उत्तमधर्म, उत्तमदान, उत्तमदम, तथा उत्तमतप छे. ॥ १४४ ॥ बळी विष्णुशर्माए कहुँ छे के —

#### सृत्र २१

# मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत् ॥ आत्मवत् सवभृतेषु वीक्षंते धर्मबुद्धयः॥ १४६॥

अर्थ—धर्मबुद्धिवाला मनुष्य पारकी स्त्रीन मातासमान, पारका कांचनने माटीसमान अने सर्व प्राणिने पोताना समान जुए छे. ॥ १४६॥ वळी शुक्रनीतिना त्रीजा अध्यायमां कह्युं छे के—

#### सूत्र २२

# एणो गजः पतंगश्च भृंगो मीनस्तु पंचमः॥ शब्दस्परीरूपगंधरसेरेते हताः खळु॥ १४८॥

अर्थ—हरण, हस्ति, पतंग, स्नमर तथा पांचमुं मत्स्य ए क्रमथी शब्द, स्पर्श, रूप, गंघ अने रसें करी नाश पामे छे. एक इंद्रिनो विषय बेकाववाथी तो मनुष्य पांचे इंद्रि मोकली राखी विसर्प बेकावेतो तथा हिंसारूप अकार्य करे तो नाश पामी तेने नर्क प्राप्त केम न थाय. ते ज्ञानी पुरुषोए विचारवुं जरूर छे ॥ १४८॥ वळी विष्णु शर्मीए कह्युं छे के—

#### सूत्र २३

#### न गोप्रदानं न महीप्रदानं न वान्नदानं हि तथा प्रधानम् ॥ यथा वदंतीह बुधाः प्रधानं सर्वप्रदानैरभयप्रदानम् ॥ १५६ ॥

अर्थ — आ लोकमां पंडितो सर्व दानमां जे रीते अभयदानने मुख्य गणे छे ते रीते गोदान, भूमिदान तथा अन्नदानने मुख्य गणता नथी. ते कयुं दानके प्राणिनी रक्षा करवी कराववी तथा प्राणिने भय थकी मुकाववो एज अभयदान कहेवाय छे. ॥ १५६॥ आ प्रमाणे मुदित करी हवे निचे भाषणरूप भाषण करी व्याख्या करवामां आवे छे. तथा ए कथा के नारदऋषि तथा वसुराज तथा पर्वत ब्राह्मणनी आपवामां आवे छे ते कया ग्रंथनी छे, एम हालमां घणो श्रम लेतां सिद्ध थयुं नथी पण अनुमानथी तथा एकथी वे ब्राह्मणोने पुछवाथी एम मानवामां आव्युं छे के ते कथा महाभारत धर्मशास्त्र अथवा रामकथानी छे पण ते तो अमारी जैन रामायणमां आवेली छे. पाने ६८ थी ते ४८ पाना सुधीमां तेनो संक्षेप मात्र जाणवारूप योग्य लई अत्रे दाखला कहेल छे. ते पण आपने ध्यानमां लीधा जेवुं मालम पडशे एम जणाय छे. तथी नीचेप्रमाणे दाखल करेली छे तथा हवे आपेलां भाषांतर जवाबमां आवेला सूत्र श्लोक २४ ते एक १ सत्रने अंते जे आवेल आंक छे तेटलामो ते प्रंथमां

बतावेलां प्रकरण तथा अध्यायनो स्रोक छे एम जाणवुं तेनी हक्कीकत विस्तारी कहुं छु. ते ध्यान आपी सौथी प्रथमना जे भेळा ३ श्लोक छे ते प्रस्ताविक छे, एम हालमां मानवामां आवेलुं छे, पण ते कोईक प्रंथना होवाज जोइए एम अनुमान पण थाय छे. कारण के तेनो पण अर्थ आ आपेला शास्त्रोना भावार्थमां मळे छे, जेथी हवे ते ३ प्रस्ताविक छे एम मान्युं छे. तथा त्यारपछीना आंक ४–५–६ एम ७ श्लोक प्रमाणसहस्रीनां आचार प्रकरणना पाना ९ मांथी लीधेला छे. त्यार पछी आंक 🕓 मानो श्लोक १ पातंजल योगदर्शन साधन पाद श्रुति सूत्र ३० मुं छे ते ते प्रथमा जीवाथी खात्री थरो. तथा आंक ७ मां बीजानी तथा आंक ८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१-२२-२ एम १५ प्रमाणसहस्त्री नामना प्रथना आचार प्रकरणना पाना ३२ थी ४१ थ लीधेलां छे. ते प्रंथ जोवाथी तथा आपेला जुदा प्रंथोना प्रमाण छे तेने सूत्रोना मथाला उपर ते प्रमाणे ते प्रंथो जोवाथी खात्री थहो. तथा आंक १८ थी १९ ना श्लोक बे लघु चाणाक्य राजनीतिना बीजा अध्यायना छे ते प्रंथ जोवाथी खात्री थरो. सर्वे ऐक्य म सूत्र २४ थाय छे. तेमां सात सात आंकना बे सूत्र छे. तेम प्रथमनां ३ आंक तो सूत्र पातंजल योग दर्शन साधन पाद प्रंथनु सूत्र ३० मुंछे, त्यार पछी बीजा ७ माना आंकनुं सूत्र छ, तेम प्रमाण सहस्रीनुं छे; हवे प्रमाण सहस्री ए एक छापेलो ग्रंथ छे जेमां बधा प्रकरणमां आवेला एक हजार प्रमाण छे. ते प्रंथ रची छपावनार यजुवंशी ठाकरशी सुत प्रागजीन नामथी मुंबई निर्णयसागर छापखानामां छाप्यो छे.

## नं॰ २८.

#### रामानुजिसदांतमताचार्यनो अभिपाय.

# श्रीमते रामानुजाय नमः

उपवीतनम् ऊर्ध्वपुंड्रवतम् त्रिजगत्पूर्णफलं त्रिदंडहस्तं शरणा-गतसार्थवाहमीडे शिखया शेखरीणाम् पतिम् यतीनाम् यस्मिन् जगात जगदुपादानकारणभृतम् श्रियः पतिम् परं परमपुरुषा उपासंते ॥ तदुपासनयैवापवर्गश्रेणीमहमाहामित्याब्रह्मस्तम् भो आं-तर्गता अधिरो हन्ति ब्रह्माद्यः ॥ कारणाद्यंतरा कार्याद्यनुपपत्ते-रितिन्यायस्य प्रत्यक्षानुभवरवेनैककायत्वाविञ्जन्नं प्रत्यनेकपदार्थ-स्वाविच्छन्नत्वस्य प्राग्भावापित्तयोगित्वात् न केषामपि तत्र प्र-वृत्तिः । प्रवृतेऽपि फलाभाव इति चेन्न प्रकतिवषयेकार्यकारणभा-वस्यासंगतत्वेऽपि प्रयोज्याप्रयोजनभावेनोपपत्ते ॥ सर्वप्रसमंजसं तथा च मोक्षप्रयोजकीभूतमपंक्तिप्रपत्यादीनामधिकारिणः एतत् प्रमाणं वोधयामि॥ १॥ श्रीरंगलक्ष्मणमुनी३वरकतप्रबंधगृढार्थ बो-धनकृतसमभूद्यदातमा ॥ श्रीरंगराजगुरुवर्यकृपात्तबोधम् गोपालव-र्यगुरुशेखरमाश्रयध्वम् ॥ २॥ त्रेगुण्यविषया वेदा निस्त्रेगुण्यो भवार्जुन ॥ मात्स्यं कौर्मं तथा छिंगं हौवं स्कांदं तथैव च ॥ आग्नेयं च षडेतानि तामसानि निबोध मे ॥ ब्रह्मांडं ब्रह्मवैवर्तं मार्कडेयं तथैव च ॥ भविष्यं वामनं ब्राह्मं राजसानि निबोध मे ॥ वैष्णवं नारदीयं च तथा भागवतं शुभम्॥ गारुडं च तथा पाद्मं वाराहे शुभदर्शने ॥ सात्विकानि पुराणानि विज्ञेयानि शुभानि वै ॥ सात्विका मोक्षदाः प्रोक्ता राजसाः खर्गदाः शुभाः ॥ तथैव तामसा दोवि निरयप्राप्तिहेतवः ॥ तथैव ऋषिंभिः प्रोक्ताः स्वतप- स्वगुणान्विताः ॥ सात्विका राजसाश्चैव तामसाः शुभदर्शने ॥ वासिष्ठं चैव हारीतं व्यतिं पाराशरं तथा ॥ भारद्वाजं काञ्चपं च सात्विका मोक्षदाः शुभाः ॥ मानवं याज्ञवल्क्यं च आग्नेयं दाक्षमेव च ॥ कात्यायनं वैष्णवं च राजसाः स्वर्गदाः शुभाः ॥ गौतमं बाईस्पत्यं च सांवर्जं च यमः स्मृतम् ॥ सांख्यं चोशनसं देवि तामसा निरयप्रदाः

अर्थ:—मत्स्यपुराण, कूर्मपुराण, छिंगपुराण, शिवपुराण, स्कंदपुराण अने अग्निपुराण, आ छ पुराणो तमोगुणी छे. ब्रह्मांड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कडेय, भविष्य, ब्रह्म अने वामन
पुराण ए रजागुणी छे. अने विष्णु, नारद, भागवत, गरुड, पद्म अने वराह ए छ पुराणो
सात्विक छे; विसष्ट, हरित, व्यास, पराशर, भरद्वाज अने काश्यप ए छ स्मृतियो सत्वगुणी छे.
मनु, याज्ञवल्क्य, अत्रि, दक्ष, कात्यायन अने विष्णुस्मृति ए रजोगुणी छे. अने गौतम,
बृहस्पति, संवर्त, यम, शंख अने उशनसस्मृति ए छ तमोगुणी छे. सत्वगुणी मोक्ष आपेछे.
रजोगुणी स्वर्ग आपेछे. अने तमोगुणी नर्क आपेछे. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वेश्य अने शद्ध ए चार
वर्णीना नाम छे. जे देवीना उपासको भक्तो छे तेमना बे प्रकार छे (बे प्रकारना मत छे) हैं
एक वाममार्गी अने बीजो दक्षणायन मार्गी छे. ए पैकी वाम मार्गीओना प्रमाण कहुंछुं.

# निर्णयसिंधुमां बलि ॥ तस्यां ये ह्युपयुज्यंते प्राणिनो महिषादयः ॥ सर्वे ते स्वर्गतिं यांति घ्रतां पापं न विद्यते ॥ १ ॥

अर्थ:—निर्णयसिंघु नामना धर्मशास्त्रविषे बलिदान प्रकरणमां कह्युं छे. अर्थ— नवरात्रीना उपवास करनार जे वाममार्गी तेओए तेना पुराणहुती दशराने दहाडे महिष पाडो अथवा अज बोकडो तेनुं पूजन करवुं. अने पूजन करीने देवीनुं आवाहन करवुं. आवाहन करतां पाडादिकनुं शरीर कांपे तो खड़े करीने तेने मारवो न कांपे तो तेने खड़ा अडकाडीने छोडी मूकवो.

> यावन्नचालयेखत्रं पशुस्तावन्न हन्यते ॥ न तथा बलिदानेन पुष्पधूपविलेपनैः ॥ यथा संतुष्यते मेषेमीहिषीविंध्यवासिनी॥ एवं च विंध्यवासिन्या नवरात्रोपवासतः॥ ३॥

ए मरनार पुरुषने दोष लागतो नथी ने पशु स्वर्गमां जायछे. जेम पशुवध करीने विध्यवासिनी देवी प्रसन्न थायछे तेम धूपदीप विगेरे बीजां नैवेच करीने प्रसन्न थती नथी. ए वचन वाममार्गीओने लागु छे ए गौण वचन छे.

मिताक्षरना टीकानेविषे मनुस्मृतिनुं वचन छे ते नीचे प्रमाणें:—

#### मिताक्षरा—यज्ञाथ ब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्ता मृगपक्षिणः ॥ भृत्यानां चैव वृत्यर्थमगस्त्यो ह्याचरेत्पुरोति मनुस्मरणात् ॥ ३ ॥

अर्थ:—यज्ञना अर्थे त्रणे वर्णने पण पशुनो वध करवो. शामाटे के पोताना घरनाविष शूद्ध चाकर होय तेने माटे आ त्रणे वर्णे परंतु मांस भक्षण न करवुं. एनुं पण तात्पर्व ए छे के ते पाप छे. माटे पशुने खड़ अडकाडीने छोडी देवुं.

मिताक्षरानेविषे बीजुं वचन याज्ञवल्क्य महाराजे कहरा छे ते नीचे:—

# वसेत्स नरके घोरे दिनानि पशुरोमाभेः ॥ संमित्तापि दुराचारो यो हंत्यविधिना पशून्॥ ४॥

अर्थ:—अविधि पूर्वक जे कोई पशुनी हिंसा करेछे ते मनुष्यने जेटलां रुवाडां पशुने विषे रहेलांछे तेटलां वर्ष हजार पर्यंत नर्क मोगवीने एटलां वर्ष हजार पर्यंत पशुनो अवतार थायछे.

मिताक्षरानी टीकाने विषे मनुस्मृतिमां स्वयंभुमनुनुं वाक्य छे—

# मनु || हंतीत्यष्टविधो विघातको गृह्यते अनुमंता विश्विता निहंता क्रयविक्रयी संस्कर्ता चोपहर्ता च स्वाद्क श्रेति घातकाः || ५ ॥

अर्थ — घातक शब्दनो अर्थ आठ प्रकारनो छ अनुमंता कहेतां जे अनुमान करीने मार्यु ते जेमके भूरूं कोळुं तेने कोई पण पशु किल्पने मार्यु तथा काई पण अडदनुं पुतळुं अगर मनुष्य कल्पीने मार्यु. ते अनुमंता, विश्वासिता एटळे विश्वास करीने कोई देवीने त्यां मोकल्युं अथवा पोताने घरेज कंई पशु होय ते कोई खाटकी इत्यादिकने वेचीने आपवुं ते पण वेचनार पुरुष मारनार बरोबर छे. अनिहंता जे जाते मारे छे ते, क्रयविक्रय जे केवळ पोते पशुळावीने खाटकीओने आपे छे ते पुरुष पण मारनार बरोबर छे. अने बीजो जे पशु छे एम देवीने अर्पण करवाने वास्ते अर्बार गुळाळ विगेरे करीने पूजन (पशु) नुं करे छे, ते पण पूजन करनार अने पूजन करावनार ए पण मारनार बरोबर छे. अने उपकर्ता कहेतां

के जे पशुने लावीने मारनारना हाथमां आपे छे, जने खड़ मंत्रीने मारनारना हाथमां आपे छे अने खड़ानो स्पर्श करीने जे छोडी दे छे ए पण मारनार बरोबर छे. अने ए पशुना मांसने जे खाय छे ए पण मारनार छे, एवा आठ प्रकारना हंता पुरुष जाणवा. हवे दाक्षायन मार्गना देविभक्तो छे तेमनां प्रमाण.

अथ बलिदानं ब्राह्मणेन माषादिमिश्रान्नेन कूष्मां-डेन वा कार्यं॥ यद्वा॥ घृतमयं यविष्टादिमयं वा सिंहच्याघनरमेषादिकं॥ ६॥

धर्मासंधुना बीजा परिच्छेदमां कौस्तुभ ग्रंथना वाक्यो छे.

कृत्वा खड्गेन घातयेत् ॥ ब्राह्मणेन पशुमांसमद्यादि-बिलदानात् ब्राह्मण्यतो भ्रष्टता॥ सकामेन क्षत्रिया-दिना सिंहव्याघनरमहिषछागसूकरमृगपक्षिमत्स्यन-कुलगोधादिप्राणिखगात्ररुधिरादिमयो बलिर्देयः॥ ७॥

अर्थ— ब्राह्मणे देवीने बिलदान आपवुं होय तो तेने भूरूं कोळुं अथवा अडद बाफीन अथवा अडद वुं पूतळुं करीने अथवा घी खांड मेळवीने लोटनो अथवा दूधपाकनो महिष, अज बनावीने तेनुं बालदान आपवुं. परंतु जीवता पशुनो ब्राह्मणे वध न करवो, करे तो अष्ट थायछे. क्षत्रीयोमां जे सकामीक क्षत्री छे अने वाममार्गमां रहेलाछे एने जीवता पशुनुं बलीदान आपवुं ए वाक्य वैष्णव धर्ममां नथी. ते जे देवनो भक्त छे तेने लागुछे. परंतु मुख्यवाक्य तो क्षत्रीए कान नाक छेदीने पशुने छोडी देवो ए छे. हिंसा करबी ए नथी. ए वाक्यो देवीना उपासकना छे ने ते मुख्यवाक्य नथी.

वेदना ज मुख्यवाक्य एटले तात्पर्य छे ते कहुं छुं. ए उपरना जे वाक्यों छे ते शामाटे कहेलां छ के मांसमक्षण करवाने जीवनी जे आसिक छे ते छोडाववाने वास्ते छे. तनो दृष्टांत जेम कोई पोताना दीकराने करमीनो व्याधि थयो होय तो बाप पोताना दीकरानो रोग महाडवा सार एम करे छे के हे पुत्र ए लीमडाना रसनो वाडको तुं पीइश तो हुं तने खांडे छोडा आपीश. त्यारे दीकरो रसनो वाडको पी जायछे तो कहे छे के लाडु तो हाउ छेई गयो ने लाडु दीकराने आपतो नथी. एज प्रमाणे वेद कहे छे के पशुनुं बिट्टिंग आपनारने पाप नथी ए वचन खांडना लाडु जेवुं छे. अने पशिहंसा न करवी ए लीमडाना रस जेवुं छे. एटलें गुणकारी छे माटे पशुहिंसा न करवी.

याद्वास्त्य स्मृतिमां तेना राजनीतिना प्रकरण विषे जे प्रमाणे छे ते प्रमाणे कहुं छुं.

#### अस्कन्नमव्यथं चैव प्रायश्चिते रदृषितं । अग्नेः सकाशाद्विप्राग्नी हुतं भ्रष्टमिहोच्यते ॥ ८॥

अर्थ:— ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्य जे यज्ञ करेछे अने ए यज्ञ थकी जे फळ थायछे तेनां लक्षण कहुं छुं. अग्निने विषे ए प्रकारनी आहुती आपी होय तो श्रेष्ठफळ थाय छे. केवो हुत पदार्थ जोईए आस्कंदनाम रुधिरनी धारारहित होय अने कोई जीवनी हिंसा थई न होय अने प्रायश्चित करीने अदुषित होय तो ए फळ प्राप्त थायछे. एटले ए श्लोकनो ताल्पर्य ए छेके दुधपाक, तल, जव, धी एनी आहुती आपी होय तो फळ थायछे. पशुनी आहुती आपी होय तो फळ थतुं नथी.

याज्ञवल्क्यस्मृतिनुं वाक्य छे ते नीचे प्रमाणे.

#### सर्वान्कामानवानोति हयमेधफलं तथा ॥ यहेपि निवसन्वित्रो मुनिर्मासविवर्जनात्॥ ९॥

अर्थ:—विप्रनाम ब्राह्मण, मुनिनाम क्षत्रि, वैश्य, शृद्ध ए चार वर्णोमां जे कोई मांस पशुहिंसा करीने अथवा बिट्टान आपीने (मांस) खाता नथी. अथवा बिट्टान आपतो नथी एवा पुरुष जे कामना मनमां धारेछे ते बधी सिद्ध थायछे. तेने कोई विघ्न थतुं नथी अने ह्यमैधयज्ञ करवानुं फळ थायछे. एटले ए ठेकाणे वेदनो कहेवानो तात्पर्य ए छे के पशु-हिंसा रहित यञ्च करवो.

याज्ञवल्क्यनी टीकानेविषे स्वयंभु महाराजनुं वाक्यछे.

#### मनु ॥ यद्ध्यायते यत्कुरुते रतिं बध्नाति यत्र च तद्वामोस्यविन्धेन यो हिनस्ति न किंचन ॥ १०॥

अर्थ — जे कोईपण प्रकारनी हिंसा करतो नथी अथवा कोईपण प्रकारने बिटान आपतो नथी. तो ते पुरुषो मनमां जे ध्यान करे छे, अने कांई कर्म करे छे, अने जे कर्मने किये रित प्रीति करे छे नाम यज्ञाज्ञिक करे छे तो ते पुरूषने यज्ञ विष्नरहित थाय छे. एटले ए ठेकाणे वेदनो कहेवाना तात्पर्य ए छे के यज्ञ करवो तो ते यज्ञने विषे पशुर्हिसा न करवी. दुधपाक आपवो एटले कोईपण प्रकारनी बलिदानमां हिंसा न करवी ए तात्पर्य छे.

बीजुंपण मनुमहाराजनुं वाक्य मिताक्षरा मध्येनुं छे ते नीचेप्रमाणे—

वर्षे वर्षेश्वमेधेन यो यजेत शतं समाः ॥ मांसानि च न खादेच्छास्तयोः पुण्यफळं सममिति मनुस्मरणात् ॥११॥ अर्थ—एटले जे कोई पुरुषोए एवे। नियम कर्यो होय छे के ज्यां पर्यंत जीवनु स्वा सूधी दरवर्षे अश्वमेध यज्ञ करवो परंतु मांस न खावु एटले अश्वमुं बिलिदान न आपनुं दूध-पाकनुं बिलदान आपनुं. जे पुरुषो अश्वनुं बिलदान आपे छे तेना करतां जे नथी आपता तेने अधिक फळ थाय छे. एटले, ए ठेकाणे वेदनुं तात्पर्य शुं छे के जे अश्वमेध यज्ञ करवे। ते अश्वने खद्गस्पर्श करीने छोडी देवो दूधपाक विगेरेनुं बिळदान आपनुं.

श्रीमद् भागवत एकादश स्कंधने विषे कहेलुं छे के---

# लोके व्यवायामिषमद्यसेवा नित्यास्तु जंतोर्न हि तत्र चोदना ॥ व्यवस्थितिस्तेषु विवाहयज्ञसुराघ्रहेरासु निवृत्तिरिष्टा ॥ १२॥

अर्थ—एटले वेद शुं कहे छ लोकोने विभे विवाहने विशेष मुख छे आमिष जेमां भक्षण करे छे अने मद्यसेवा अने मदिरा पीवी एज प्रकारना जे जीवो छे ते थकी नित्यमुक्त कहेतां जे भगवानना पार्षद अने जिवनमुक्त कहेतां जे जडभरत, मुकदेवळ शनकादिक ते अने मुमुक्षु कहेतां जगत्मां रहीने जे इच्छा करे के मारो मोक्ष थाय ए मुमुक्षु जाणवो. अधमनां लक्षण इंद्रिमुख भोगववुं हिंसा करवी अने भूतप्रेतनी उपासना करवी. पामरना लक्षण ज मनुष्यदेह परमात्माए केवल मजन स्मरण करवा आपेल ते परमात्माने छोडीने भरव ने चंडीनी उपासना करे छे. अने नाना प्रकारनां बलिदान आपे छे ए पाछला बेउ जीवो अधम अने पामर तेमने ए प्रकारे वेद कहे छे. शुं कहे छे? लग्न कर्या वगर जे विषयमुख भोगवशे तेने दोष लागशे. यज्ञ कर्या वगर जे पश्चामणियज्ञ वगर जे मदिरा पांशे तेने दोष लागशे. ए शामाटे वेद कहे छे के अधम पामर जीवोनी विषयमुख थकी, मांसभक्षण थकी, मदिरापान थकी नित्यनी रुचि छोडववा साख्त कहां छे.

श्रीमद् भागवतना एकादश स्कंधमां बीजुं वाक्य छे ते---

# धनं च धर्मैकफलं यतोज्ञानं सिवज्ञानमनुप्रशांति ग्रहेषु युंजंति फलो वरस्य मृत्युं न पश्यंति दुरंतवीर्यम्॥ १३॥

अर्थ—धनरक्षा करवानुं सुफळ ए छे के धर्म करवो. विज्ञानसह वर्तमान ज्ञाननुं फळ शुं छे के सर्व जीववध थकी निवृत्ति पामो. भगवत भक्ती करो ए करता नथी केवळ संसारने विषे शरीरने लगाडे छे. ते दुरंत वीर्यरूपी एवा संवत्सररूपी काळरूपी परमात्मा जे भक्षणकरी रह्या छे तेने जोता नथी. एवा भावार्थनु वेदनुं वाक्य शुकदेव महाराज परीक्षिति प्रत्ये अने श्रीकृष्ण उद्भवजी प्रत्ये अने नवयोगेश्वर नीमीराजा प्रत्ये कहे छे. के ए जीव समान बीजो अधम नथी.

श्रीमद् भागवत विषे श्लोक छे ते नीचे प्रमाणे---

# यत् घोणभक्षोविहितः सुरायास्तथा पशोरालभनं न हिंसा एवं व्यवायः प्रजया न रत्याएवं विशुद्धं न विदुः स्वधर्म ॥१४॥

अर्थ — ग्रुकदेवजी परीक्षिति राजा प्रत्ये कहे छे के हे राजन् वेदनों कहेवानों तात्पर्य प्रवा छे के ते सुत्रामणि यज्ञने विषे मिदराने सुंधी छेवी. पण पीवी नहीं. यज्ञने विषे पशुने खड़ अडकाडीने छोडी देवुं मारवुं नहीं. 'ऋतु समयना अंतने विषे मार्याना (स्त्री) अंगिकार करती. बीजा दिवसे जाय तो ईश्वर समरण करवुं एटले संतान थया पछी ईश्वर मजन करवुं. एवी उत्तम मनुष्यदेह पामीने ग्रुद्ध धर्मवेद कहे छे तेने छोडीने विपरीत चाले छे ए वास्ते नरकमां जावुं पडे छे. अने जे मनुष्य जीवनी हिंसा करे छे ते पशु अवतारने पामे छे.

श्रीमद् भागवतनो स्रोक नीचे प्रमाणे—

## द्विषंतः परकायेषु स्वात्मानं हरिमीश्वरं ॥ मृतके सानुबंधेऽस्निन्बद्धस्नेहाः पतंत्यधः ॥ १५ ॥

अथ—शुकदेव परीक्षिति राजा प्रत्ये कहे छे के सर्व जीवोने विषे साक्षात् परमात्मा बास करीन रह्या छे. जड पदार्थी जे देवी भैरवादिकने बळिदान आपे छे ने मांसाहार करीने पोते रहे छे ते ज्यारे मरे छे त्यारे तेना कुटुंब सहित नरकमां पडे छे.

श्रीमद्भागवतमां कहयुं छे.

# येत्वनेवं विदोऽसंतः स्तब्धाः सद्भिमानिनः पशून्दुद्धंति विस्रब्धाः प्रेत्य खादंति ते च तान्

अर्थ:—ए प्रकारना जे पामर जीवो छे. अने वेदना अभिप्राय ने जाणता न्यूथी. ते आ प्रमाणे भाषण करेछे. आपणे स्वर्गमां जई यज्ञकरीने त्यां अप्सरा जोडे विहार करीछुं. तेओ आ प्रमाणे परस्पर वातो करेछे. अने पर्शिहसाना यज्ञो करेछे. अयोरे ते यज्ञ करनारा मरेछे त्यारे तेने पशुरूप धारण करवुं पडे छे. ते वखते ते पशु जमराज पुरीने विशे तेनुं वेर छे छे.

श्रीमद् भागवतना चतुर्थस्कन्धमां पचीसमा अध्यायमां प्राचीनबर्हिराजा प्रत्ये नारद मुनीनुं वाक्य छे.

## भा भो प्रजापते राजन् पशून्पश्य त्वयाऽध्वरे ॥ संज्ञापितान् जीवसंघान् निर्घृणेन सहस्रशः

नारद मुनि कहें छे के हे राजन् राज्य कर्ता जे जे देवने पशुनुं बलिदान आपे छे अने यज्ञ करतां जे जे पशुयज्ञ करें छे दयारहित जे हजारो जीवनी हिंसा करे छे. इत्यादि.

हारीत स्मृतिने विशे हारीत ऋषि अमरीश राजा प्रत्ये कहेंछे.

# तस्मातु वैष्णवो भूत्वा वैदिकं वृत्तिमाश्रितः कुवाति भगवन्त्रात्ये कुर्यादादिकर्म यत्

अर्थ:—हे अमरीश राजा तमो वैष्णदीक्षा धारण करीने वैदिकहात्ते तेने करो अने पशुहिंसा रहित यज्ञ करो. भगवाननी प्रीतिने माटे एवं करशो तो तमारा कुटुम्ब सहवर्तमान तमो मोक्ष पामशो.

वृद्ध पाराशरीने विशे पाराशर ऋषि प्रत्ये कहेंछे.

# वृद्धान्साधून् द्विजान्मौलान्यानालं मानयेत्रृपः पीडां करोति चाभीष्टा राजा क्षिप्रं क्षयं व्रजेत्

अर्थ:—पाराशर कहेंछे. जे राजा थईने वृद्धने महा पुरुषोने ने ब्राह्मणने मानता नथी. ने आमिष ( मांस ) ने यांटे पशुने पीडा करछे. एटले पशुने मारीने जे बलिदान आपेछे ए राजा तत्काल नाश पामे छे.

#### एते त्वां संप्रतीक्षन्ते स्मरंतो वैशसं तव संपरेतमयः कूटैश्विछंदत्युत्थितमन्यवः॥

अर्थ:—नारद कहेंछे. हे राजन् दृष्टिए करीने तुं उपर आकाश मार्गमां जो. तारी बाट पशु जुए छे के क्योर ए राजा मृत्युने पामे तो अमारुं वेर लोढाना शींगडा वडे करीने र्र्ड्रिए. ए प्रकारे नारद मुनिए ब्रह्स्पति राजा प्रती कहेंछुं छे. हे राजा, कोई यज्ञ जीविहिंसा रहित करवो एथी बीजुं श्रेष्ठ शुं छे. के ते पोताना हृदयरूपी कुंड निर्माण करीने भिक्त ज्ञानरूपी अग्नि प्रगट करीने काम त्रोध, लोभ, मोह, मद मत्सररूपी ज्वलन अने इंद्रियरूपी जे घोडा अने वृत्तिरूपी जे अज (बोकडा) ए सर्वनी आहुति हृदयरूपी कुंडमां साक्षात चतुर्भुजरूपी जे भगवान रह्याछे तेने ए इंद्रियरूपी पशु बलिदान आप. एटले सर्व इंद्रिओ परमात्मान विशे लगाडो ए यज्ञ समान बीजो यज्ञ नथी. तेम इंद्रियरूपी पशुना बलिदान शिवाय बीजुं बलिदान नथी. अने बुद्धिरूपी बीजी कोई देवी नथी. ए देवीन प्रसन्न करिने परमात्मानेविशे लगाडवी ए समान बीजुं देवीनुं पूजन पण नथी.

श्रीमद् भागवतमां चतुर्थ स्कन्धनेविशे कहयुं छे.

# थया तरोर्मूलभिषेचनेन तृप्यंति तत्स्कंधभुजोपशाखाः। प्राणोपहाराच यथेंद्रियाणां तथेव सर्वाहणमच्युतेज्या

अर्थ:—हे ब्रहस्पति राजन् जेम झाडना मूळीनेविशे पाणी रेडे तो बधी शाखा तृप्त थायछे. जेम प्राण वायुने आहार आपे बद्धीईदिओ तृप्त थायछे. एज प्रमाणे भगवानन् पूजन ( भिक्त ) करे तो सर्व देवना पूजननुं फल मळेछे. बीजा देवने पूजवानुं कांई प्रयोजन नथी. आ वचनथी जे ठेकाणे भैरवने बलिदान आपेछे. ते ठकाणे राजाने श्रं करवं के पोताना रोहेर बहार दराराने दिवसे जईने चारे दिशाओं छे ते दिशाओना जे सोळ भगवानना पार्श्वद छे तेसहित भगवाननुं मंत्रैवाहन करीने, अने भगवानना जे आयुध इंख-चक्र-गदा-पद्म-ए नामवंडे करी आवाहन करवुं. अने षोडशोपचारे करीने पूजन करवुं. प्रकारनो दूधपाक तथा घहुनो पदार्थ विगेरेनुं भगवानना पार्श्वदने नैवेद्य परावी वैष्णव बाह्मण होय तेने मोजन करावबुं. ने भोजन करव्यापछी सुदर्शन महाराजाना मंत्रवडे करीने रोहेरनी चारे दिशाओमां हवन होम करवो. न पछी गाजते वाजते रामी (खीजडी ) तुं पूजन करवुं. समडी पूजनने ठेकाणे ते देवनिमित्त पूजनकरवुं. अने गाजते वाजते शेहेरमां आववुं. अने दान दक्षिणा पण आपवी. आ रीते जे राजा दरवर्षे करेछे, तेना नगरने विशे कोई प्रजा दुःख भोगवती नथी. आ विधि सत्ययुगने अमरीष राजाए करलो छे. ते विधिना प्रतापे दुर्वासाऋषिए अग्नि प्रगट करीने अमरीषने बाळवामाटे मोकलीने वैश्रवी अग्निनाम सुदर्शन महाराज कोटी सूर्यनो प्रकाश करीने, सांभली आग्नेने वारीने दुर्वासा मुनिने महान् दुःख दीधुं छे. ए वार्ता श्रीमद् भागवतना नवमस्कंन्धने विशे प्रसिद्ध छे. शिवाय अनेक शास्त्र, स्मृति, पुराण, इतिहास अने वेदना मत छ के जीवहिंसा न करवी. ए वचन समान बीजुं कोई वचन बलवान् नथी. उपर पद्मपुराणना श्लोक ल्रष्यां छे. तंत्र सहवर्तमान वेदोक्त प्रयोग छे. हारीतस्मृति अने वेदनां पुरुषसूक्त, विष्णुसूक्त, लक्ष्मीसूक्त वगैरेनां प्रमाणो छे. महा-देवे पार्वती प्रत्ये कहुं छे के हे पार्वती अढारपुराण अढारस्मृति एमना मध्ये छ सात्विक, छ राजास, छ तामसी परन्तु जे साव्विक श्रुतिस्मृतिना वचनो छे ते बलवान् छे. विगेरेनो जे ते बाबतनो निर्णय करवो होय तो वडोदराना पूर्वभागनी भणी दशगाउ उपर चाणोलथी नर्मदा जतां सात गाउ वेगले डमोई करीने शहर छे. तेमां वडोदरा तरफनी दिशामां बदरी नार।यणनं मंदीर छे. तेने विषे विशिष्टाद्वैतमत स्थापन करनार श्री गोपालाचार्य गुरू चेतनाचार्य महाराज छे तेमने पूछेथी खुलासो मलशे.

#### शुभमस्तु

आ जे श्लोकनी व्याख्या गुजरातीमां छखी छे. तेनुं कारण ए छे के राजाने संस्कृत ज्ञान न होवाथी छख्युं छे. अने जो कोई विद्वानने संस्कृत व्याख्यानी इच्छा होय तो संस्कृतमां छखी मोकछीशुं. जे कोईनी एवी इच्छा होय के जीविहेंसा नहीं करवी ए बाबत पुरावो शुं तो तेनो प्रतिउत्तर आपवाने वास्ते रामानुजिसद्धान्तमतना आचार्य छे ते सिद्धान्त करी आपवा समर्थ छे. अने कछीने विशे गवाछंभ (यज्ञ) करवानु निषेध छे. अने दीयर थकी दिकरा उत्पन्न करवानुं तथा सन्यास निषेध छे. ए विगेरेना बीजा हार्रातस्मृतिने विशे तेमज मिताक्षराने विशे मनुस्मृतिने विशे निषेध छे. ए वचन आप्यां नथी. तेनुं कारण के प्रन्थमां प्रसिद्ध छे.

#### समाप्त

# यादृशं पुस्तकं द्रष्टं तादृशं लिखितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयतां॥

आ कापीनी अस्सलनी कापी महाराजा मोहनदेवजी नारणदेवजी स्वस्थान धर्मपुरना तरफथी मंगावी उतारो करेल छे. उतारो करनार भट बदीनाथ केशवराम गाम वारणना.

भ्रद्ध केशवरामात्मजबद्गिनाथ शर्मणः सम्मतिरत्रः

# नं, २९.

#### अमदाबादवाळा शास्त्री रामचंद्र दीनानाथ भद्दनो अभिप्राय.

मेहरबान साहेब प्राणजीवनभाई जगजीवन महेता.

मु. धर्मपुर.

अमदाबादथी शास्त्री रामचंद्र दीनानाथना आशीर्वोद वांचशो विशेष आपनी तरफथी भावेला सात प्रश्नोना उत्तरो नीचेप्रमाणे—

?—अहंसापरमोधमः—न हिंस्यात् सर्वभूतानि—आहंसा ए उत्कृष्ट धर्म छे कोई जीव प्राणिमात्रनी हिंसा न करवी. इत्यादिक अनेक स्मृतिनां प्रमण छे. तथा स्कंदपुराण, वायुपराण, अग्निपुराण, मार्केडेयपुराण इत्यादिक पुराणोमां पण हिंसानो निषेध करवामां घणा मोटा इतिहास वर्णन कर्या छे, तथा मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मित, गर्गस्मृति, विश्वस्मृतिमां पण हिंसानो निषेध कर्यो छे. नवरात्र वृत्तमां तथा तेने एटले दशराने दिवस तो सर्वथा हिंसा न करवी, एम शास्त्रनो सिद्धांत छे. ते दिवस तो पशुनुं पूजन करी देवताने समक्ष ते पशुने अभयदान आपत्रुं एम कह्युं छे. तेने बदले दुष्ट अधर्मी असुर लोकोए पशुनी हिंसा करवानुं प्रवर्तान्युं छे ते केवल अध्यरंपरा छे. विचार विनाना लोको गाडीरीआ प्रवाह प्रमाणे वर्ते छे, पण एटलो विचार नथी करता के दशरानुं पर्व श्रीरामचन्द्रजीथी आरंभीने प्रवर्त्युं छे एम दशरा माहात्म्यमां कह्युं छे. त्यां घी, साकर, दुधपाक, पकान विगेरेनुं नैवेद्य करी ब्रह्मा मोजन करावी घणां दान आप्यां छे अने घणां जीवोने अभयदान आप्युं छे.

सारा वृत्तेन धारण करनार एवा सनत समत विगेरे ऋषियो प्रत्ये धर्मराजाए आशंक करी पुंछयुं त्यारे तेमणे आ प्रकारे कह्युं छ तेमांना केटलाक स्लोक.

कुलाचारोपपन्नं नो नवरात्रवतं मुने ॥
तत्र कचित्कचिद्धिंसा सुरापानं च दृश्यते ॥ १ ॥
दत्र युक्तं तद्ब्रूहि त्वं हि धर्मप्रवर्तकः ॥
इत्युक्तस्तेन भगवानिदं प्रोवाच युक्तकृत् ॥ २ ॥
राजसा स्तामसा देवाः सुरामांसाशनं नृप ॥
कुर्वते सात्विका नैव देवा देव्यश्च कर्हिचित् ॥ ३ ॥

पार्वती सात्विकी देवी तथा लक्ष्मीश्च वेदसूः॥ धर्मज्ञानतपोयोगवैराग्यादिगुणोर्जिता ॥ ४ ॥ अस्माकं सा तु पूज्यास्ति शंकरप्राणवस्त्रभा ॥ नवरात्रव्रतं तस्या भवतीत्यवगम्यतां ॥ ५॥ सात्विकानां तु देवानां देवीनां च नराधिप ॥ व्रताचीदिविधातव्यं नेतरेषां तु किहिचित् ॥ ६ ॥ पार्वत्या न प्रिया हिंसा सह पत्या तयोरातिः ॥ तद्योपि च तां ये तु कुर्युस्ते ह्यसुरा नराः ॥ ७ ॥ अतः तस्या व्रते राजन् मद्यमांसार्चनान्वितः॥ कुळाचारः कचित्स्याचेत्तं त्वधर्ममवेहि च ॥ ८ ॥ जीवहिंसा भवेद्यत्र सुरापानं च यत्र वा ॥ व्याभचारो भवेद्यत्र त्याज्यो धर्मः स दूरतः ॥ ९ ॥ धर्माभासो ह्यधर्मो सौ तत्त्यागे नास्ति पातकम् ॥ त्यागोस्य परमो धर्मः सच्छास्त्रप्रमितोऽनघ ॥ १० ॥ क्षुद्रा देवाश्च देव्यश्च येस्युर्मचामिषात्रेयाः॥ तामसानां न कर्त्तव्यं व्रतं तेषां च पूजनम् ॥ ११॥ अधर्मस्य प्रिया हिंसा ह्यहिंसा धर्मवरूभा ॥ अधार्मिकाणामाचेष्टा धार्मिकाणां तथेतरा ॥ १२ ॥ तामसेभ्यो न भेतव्यं भक्तैः कृष्णस्य कर्हिचित्।। यतः स कालमायादेरप्यस्त्येव नियामकः ॥ १३ ॥

२—उत्तरः—जे शास्त्रमां हिंसा करवानुं कहुं होय ते शास्त्रनी पंक्तिमां गणातुं नथी. तो ते ग्रंथ आर्यछोकोमां सर्वमान्य अथवा बहुमान्य गणायज क्यांथी.

शाक्त छोकोए मद्य मांसनुं भक्षण करवा रचेछा आधुनिक प्रंथो जेवा के कुळाणीव, शाक्त, संगम, तंत्रसार, देवीयूजापद्धित विगेरे अनार्थछोकोमां बहुमान्यता पामेळाछे. अने ते ग्रंथोमां पोतानी मितकिष्पित वचनो पण घणां छख्यां छे ते आर्थ लोकोने कदापि काळे मान्य थतांज नथी. वळी तेने ग्रंथोमां वेदनी श्रुत्तिना जेवुं डोल करी लोकने भूलमां नांखवाने पंचमकारनुं प्रतिपादन कर्युछे ते तो बुद्धिमान् दैवीजीवोने जणाया विना रहेतुंज नथी.

एवा प्रंथना करनार तथा मानकार द्विज कहेतां ब्राम्हण, क्षत्रिय ने वैश्य तेमनी पंक्तिमां गणाता नथी तेतो केवल अधमाधम नीच शूद्रज गणाय छे.

ते उपर प्रमाणरूप स्मृतियोना वचनो घणां छे. तेमां हेमाद्रीनामा सूरिए पोताना सर्वमान्य प्रंथमां छखेलां केटलांक वचन नीचे प्रमाणे छे.

#### ब्रह्मपुराणे

न जातिर्न कुछं राजन्न खाध्यायः श्रुतं न च ॥
कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेव तु कारणम् ॥ १॥
किं कुछं वृत्तहीनस्य करिष्यति दुरात्मनः ॥
कृमयः किं न जायंते कुसुमेषु सुगंधिषु ॥ २॥
नैकमेकांततो याद्यं पठनं हि विशां पतेः ॥
वृत्तमन्विष्यतां तात रक्षोभिः किं न पद्यते ॥ ३॥
बहुना किमधीतेन नटस्येव दुरात्मनः ॥
तेनाधीतं श्रुतं वापि यः क्रियामनुतिष्ठति ॥ ४॥
कपालस्यं यथा तोयं श्रद्दतों च यथा पयः ॥
दूष्यं स्यात्स्थानदोषेण वृत्तं हीनं तथा श्रुतम् ॥ ५॥
दूष्यं स्यात्स्थानदोषेण वृत्तं हीनं तथा श्रुतम् ॥ ५॥

बहुनेत्यस्य टीका—नटस्येव वेषमात्रेण ब्राह्मणस्य दुरात्मनो हिंसादिपापमनसः बहुना प्रचुरेण अधीतेन शास्त्राध्ययनेनापि किं न किमपीत्यर्थः अतो यो ब्राह्मणः कियां अहिंसासत्यादिसदृत्तं अनुतिष्ठत्याचरति तेन ब्राह्मणेन श्रुतं शास्त्रं अधीतं वा पठितमेव ॥

> तसाद्विद्धि महाराज वृत्तं ब्राह्मणळक्षणम्॥ चतुर्वेदोपि दुर्वृत्तः शूद्रादल्पतरः स्वृतः॥ ६॥

सत्यं दमस्तपो दानमहिंसेन्द्रियनियहः॥ दृश्यंते यत्र राजेंद्र स ब्राह्मण इति स्मृतः॥७॥

यमः ॥

आहिंसानिरतो नित्यं जुह्वानो जातवेदसम् ॥ खदारनिरतो दाता स वै ब्राह्मण उच्यते ॥ ८॥ सत्यं दानं सदाशीलमानृशस्यं दया घृणा॥ दृश्यंते यत्र लोकेस्मिस्तं देवा ब्राह्मणं विदुः॥ ९॥

#### यमशातातपौ ॥

तपो धर्मो दमो दानं श्रुतं शोचं सत्यं घृणा ॥ विद्या विनयमस्तेयमेतद् ब्राह्मणलक्षणम् ॥ १० ॥

वशिष्ठः ॥

त्यागस्तपो दया दानं सत्यं शौचं दया घृणा ॥ विद्या विनयमस्तेयमेतद्बाह्मणलक्षणम् ॥ ११ ॥

ये क्षांतदांताश्चत र्णकर्णा जितेंद्रियाः प्राणवधान्निवृताः ॥ प्रतिग्रहे संकुचिताप्रहस्तास्ते बाह्मणास्तारायेतुं समर्थाः ॥१२॥

भविष्यत्पुराणे ॥

क्षांतिर्दांतिर्दया सत्यं दानं शीलं तपः श्रुतम् ॥ एतदृष्टांतमुद्दिष्टं परमं पात्रलक्षणम् ॥ १३॥

याज्ञवल्कयः ॥

न विद्यया केवलया तपसा वापि पात्रता ॥ यत्र वृत्तामिमेचोभे ताद्धि पात्रं प्रकीर्त्तितम् ॥ १४ ॥

आ प्रकारनां शास्त्र वचनोथी जे हिंसानु प्रतिपादन करे छे तेने **ब्राह्मण जाणवाज** नहीं. हिंसक ब्राह्मणोने खाटकी जाणवा. वेदमां पशुहिंसा करवानु कहयुं छे एवं बोलवाथी वसुराजा मोटी अधमगतिने पांम्यो छ. तेनुं सविस्तर वृत्तान्त स्कंदपुराणमां रहेला वासुदेव महात्म्यना छठा अध्यायथी जुवो.

ए उपरी वसुराजानुं वृत्तांत केवळ स्कंदपुराणमां छे एमज न जाणवुं. वायुपुराणमां छे, मत्स्यपुराणमां छे तथा भारतादि इतिहासना प्रंथमां पण छे.

अन्नैर्नीह्यादिभिर्यज्ञः पयोदिधगृतादिभिः॥
रसैश्च कियतां तेन तृतिं यास्यंति देवताः॥ १॥
सात्विका देवता प्रोक्तास्तामसा असुरास्तथा॥
राजसा मनजाः शास्त्रेऽप्यूर्ध्वाधो मध्यवासिनः॥ २॥
मद्यमांसिप्रया दैत्यास्तामसत्वाद्भवंति च॥
देवास्तु सात्विकाब्रह्मन्नाज्यादिरसिप्रयाः॥ ३॥

३-प्रश्न-ते शास्त्र करतां (हिंसक शास्त्र करतां) पण जे शास्त्रनुं प्रमाण वधारे बळवान् गणातुं होय एवां कोई शास्त्रमां ते हिंसानो निषेध कर्यो छे के केम.

३—उत्तर—हिंसासूचक ग्रंथथी अतिशे वधारे प्रमाणरूप बलवान् गणाता शास्त्रमां अतिशे हिंसानो निषेध कर्यो छे.

सर्वोपारं वेदनुं प्रमाण छे ते वेदनो अर्थ अतिशे गहन छे. केमके तेना अर्थमां मोटा पुरुषोनं पण मोह उत्पन्न थयो छे माटे ते वेदनो अर्थ मोटा पुरुषोए स्मृतिओमां आण्यो छे. ते स्मृतियोनुं पण अनेकांतपणुं थवाथी वेद प्रवर्तक श्री वेदव्यासऋषिए अतिशे श्रेष्ठ शास्त्रोनुं रहस्यरूप श्रीमद्भागवत नामे पुराण कह्युं तेनुं वाक्य.

निगमकल्पतरोर्गिलितफलं वेदरूप कल्पवृक्षथी आ श्रीमद्भागवत नामे फळ उत्पन्न थयुं छे.

ते भागवतमां तो यज्ञमांपण हिंसा न करवी. एवं तात्पर्य जणाववा सारुं प्राचीन बर्हिषी विगेरे राजाओनं सविस्तर वृत्तांत लख्युं छे.

वळी हिंसा करवी एवं वेदनुं वाक्य नथी. पण निरंतर जे हिंसा करें हे तेना संकोचने अर्थे राजसी तामसी जीवोने कहुं छे के यद्ममां हिंसा छे ते यद्म आ काळमां थवो घणोज कठण छे. केमके एक बळवान् पुरुष हाथमां धनुष्वाण छईने चार दिशाओमां बाण फेंके तथा उंचे पण फेंके एटलो उंचो लांबो फथोलो द्रव्यनो ढगलो करी वापरे त्यारे एक यद्म कर्यो कहेवाय, एटलुं द्रव्यतो आ काळमां कोई मोटा राजाने धरपण नथी. तो बीजाने धर होयज क्यांथी ? ते माटे भागवतनां वाक्यो.

भागवतैकादशस्त्रंचे अध्याय ५ श्लोक ११

लोके व्यवायामिषमयसवा नित्यास्तु जंतोर्न हि तत्र चोदना ॥ व्यवस्थितिस्तेषु विवाहयज्ञसुरायहैरासु निवृत्ति रिष्टा ॥ परोक्षवादो वेदोयं बालानामनुशासनम् ॥ कर्मे मोक्षाय कर्माणि विधत्ते ह्यगदं यथा ॥ भागवतचतुर्थस्कंधे अध्याय २५ स्लोक ७-८

नारदो प्राचीनबर्हिषभूपं प्रति ॥

भो भो प्रजापते राजन पशून् पश्य त्वयाऽध्वरे ॥ संज्ञापिताञ्जीवसंघान् निर्घृणेन सहस्रशः ॥ एते त्वां संप्रतीक्षंते स्मरंतो वैशसं तव ॥ संपरेतमयःक्टैच्छदंत्युत्थितमन्यवः ॥

#### पुरंजननृषेण ॥

तं यज्ञपशवो तेन संज्ञक्षा येऽदयालुना ॥ कुठारैश्चिछिदुः कुद्धाः स्मरंतोऽमीवमस्य तत् पापं पुरंजनस्य खहननरूपं

वळी देव सात्विक छे दैस्य दानव राजस छे ने राक्षसादिक तामस छे. तेमां राक्षस प्रकृतिवाळा जीवोने मद्य मांस प्रिय छे.

भागवतमां पृथुराजाए सर्वने प्रेरणा करी के पोत पोतान जे प्रिय वस्तु होय ते आ गायरूप थयेडी पृथ्वीमांथी दोहन करील्यो त्यारे

> कृत्वा वत्सं सुरगणा इंद्रं सोममदूहहन् ॥ हिण्मयेन पात्रेण वीर्यमोजो बलं पयः ॥ १ ॥ देत्ययो दानवा वत्सं प्रहादमसुर्षभम् ॥ विधायादुदुहन् क्षीरमयःपात्रे सुरासवम् ॥ २ ॥

तथा च

# यक्षरक्षांसि भूतानि पिशाचाः पिशिताशनाः॥ भूतेशवत्सादूदुहुः कपाले क्षतजासवम् ॥ ३ ॥

देवताओए अमृत दोहन करी छीधु दैत्य छोकोए सुरानुं दोहन कर्यु अने राक्षसोए रुधिरनुं दोहन कर्यु. माटे देवताने मद्य मांसनुं नैत्रेद्य करवुं ते योग्य नथी एम प्रतिपादन कर्यु छे. अने मांस छे ते वृक्षादिक थकी उत्पन्न थतुं नथी. जीविहसा करे त्यारेज उत्पन्न थायछे. बाटे हिंसा न करवी एम मागवतशास्त्रना सिद्धांत छे.

वर्टी भारतने विषे तथ्। वाल्मिकिरामायणादिकने विषे हिंसानी वातो छखीने छेचट सिद्धांत एवा देखाड्यो छे के (अहिंसा परमो धर्मः) न हिंसा करवी एज उत्कृष्टी धर्म छे.

वर्टी देवीरहस्य प्रंथमां देवीनी पूजा मांसे करीने करवी एवं कोई जगाए देखाय छे ते रहस्यमंथ मार्केडेय पुराणमां नथी. कोईनो कल्पेटो नथी परंतु तेमां पण छेवट एम उस्युं छे के—सुरामांसाहिपूजेयंवज्यामयोदिता

देवीनी सुरा मांसे करीने पूजा करवानी जे में कही छे ते बाह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तिमेन वर्जीने जाणवी.

#### महाभारते

ओहालिकिश्वेतकेतुर्निषिषेध च तच्छूणु ॥ मांसं तु सर्वथा नेव कस्यचित् जंतोपि वै ॥ १ ॥ भक्षणाईमनुष्याणा मिति घंटापथः किल ॥ यज्ञशेषस्य मांसस्य भक्षणेपि द्विजन्मनः ॥ २ ॥ महान् दोषोस्ति निद्धेषं मांसं नास्त्येव कर्हिचित् ॥ यज्जुषा संस्कृतं मांसं निवृत्तो मांसभक्षणात् ॥ ३ ॥ न भक्षयेद्वथा मांसं षष्टमांसं च वर्जयेत् ॥

अस्यार्थष्टीकायाम् ॥ मांसभक्षणानिवृत्तो भवेत्पुरुषः यजुषा यजुर्वेदविदा अध्वर्युणा संस्कृतं यज्ञियमपि मांसं न भक्षयेत् तथा वृथा मांसं असंस्कृतं षष्टमांसं श्राद्धशेषं च वर्जयेत्

हिंसाविना मांस थतुं नथी माटे मांसना निषेधनी जोडे हिसानी निषेत्र पण आवी गयो.

आ प्रमाणे महाभारतमां पण एवो सिद्धांत छे के मनुष्योए कोई जीव प्राणीमात्रनुं मांसभक्षण न करवुं. कारण के जे जीवनी हिंसा करे छे ते जीव जन्मांतरे तेनुं वैर छे छे. ते उपर मनुस्मृतिनुं वचन नीचे प्रमाणे छे.

मनुस्मृतौ अध्याय ५ स्रोक ५५

मांसभक्षयिताऽमुत्र यस्य मांसामिहाझ्यहम् ॥ एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदांति मनीषिणः॥ ५५ ॥

जेनुं हुं मांसभक्षण करूं छुं ते प्राणि परछोकमां मारूं भक्षण करहो ए प्रकारे मांस रान्दनुं मासपणुं छे. एटले मांस भक्षयिता तेनो अर्थ मां केतां मने स केतां ते भक्षयिता केतां मक्षण करहो एवो अर्थ एज वाक्यमां रह्यो छे एम मोटापुरुष कहे छे.

महाभारते मोक्षधर्मे अध्याये २६५

अव्यवस्थितमयींदैर्विमृढेर्नास्तिकेर्नरेः॥ संशयात्मभिरव्यक्तेर्हिसा समनुवर्णिता 11 १ ॥ सर्वकर्मस्वहिंसां हि धर्मात्मा मनुरब्रवीत् ॥ भूर्ते: प्रवर्तितं ह्येतन्नैतद्देदेषु कल्पितम् ॥ २ ॥ मानानमोहाच लोभाच लैल्यमेतस्प्रकल्पितं ॥ पायसै: सुमनोभिश्च तस्यापि यजनं स्मृतम् ॥ ३ ॥ यज्ञियाश्चेव ये वृक्षः वेदेषु पश्किल्पिताः ॥ श्रीमद्भागवतस्यापि सिद्धांतोस्त्ययमेव हि ॥ ४ ॥ आहुर्धूम्रधियो वेदं सकर्मकमतादिदः ॥ अग्निमुग्धा धूमतांताः स्वं लोकं न विदंति ते ॥ ५ ॥ मानिनः रूपणा लुब्धाः पुष्पेषु फलबुद्धयः॥ पशून् दुद्यंति विस्रब्धाः प्रेत्य खादंति ते च तान् ॥ ६ ॥ न दयादामिषं श्राद्धे न चायाद्वर्मतत्त्रावित् ॥ मुन्यन्नैः स्यात्परात्रीतिर्यथा न पशुःहतया ॥ ७ ॥

बळी श्रीमद्भावना पण एज सिद्धांत छे के पशुहिंसा न करवी. वेदना अभिप्रायने न जाणनार एका मर्छीन पुरुषो वेदधर्मने प्रधान कहे छे ते पुरुषो अग्निसाध्य कर्में करीने नाश पाम्यो छे विवेक जेमनो एवा थईने घूम्रमार्गे करीने गति करे छे. पण पोताना खरा तत्वने जाणी शकता नथी.

अने वर्श मानी, शठ अने लोमी एवा पुरुषोज वेदनुं रहस्य जाण्यां विना पश्चनो द्रोह करे छे ते पशु पाछा जन्मांतरमां वेर छे छे माटे, देवताना पूजनमां मांस न आपवुं. देवतामात्रने जेवी प्रीति सुंदर अन्नवडे थाय छे तेवी प्रीति कोई काळे पशुहिंसावडे थतीज नथी.

सप्तार्ष तथा सूर्यना रथनी आगळ चालनार वालिख्यादि मुनि तथा मरीचि आदि मुनि ए सर्वे आहिंसक पुरुषोनी प्रशंशा करे छे.

पोताना मांसने एटले शरीर ते परमांस वहे एटले पशु आदिकना मांस वहे जे ब-धारवानी इच्छा करे छे. निश्चे अतिषे कष्ट पामे छे एम नारदस्मृतिनुं वाक्य छे. जे पुरुष मांस मांसण नधी करतो तथा पशुनी हिंसा करती नथी तथा करावतो नथी ते सर्व भूत प्राणी-मांत्रने पूज्य छे. एम आद्यमुनि केतां स्वयंभू मनुनुं वाक्य छे. जे पुरुषे मद्यमांसनो त्याग कर्यी छे ते दाता छे. तेज पुरुषे यज्ञ कर्यो एटले देवपूजन कर्यु एम जाणवू, तथा ते पुरुषने त-पस्वी जाणवे ए प्रकारनुं बृहस्पतिस्मृतिनुं वाक्य छे.

भीष्मिपता युधिष्टिर राजा प्रत्ये कहे छे के जे पुरुष अश्वमेधयद्भ करीने महान् महान् देवपूजन करे छे. अने जे मांस भक्षण नथी करतो ए ते पुरुषतुल्य छे. एटले जे पुरुष आहिं सक छे तेने प्रतिमासे अश्वमेध यज्ञनुं पुण्य थाय छे.

जे पुरुष प्रथम अज्ञानथी मांसमक्षण करीने पछी निवृत्ति पामे छे एटले त्याग करे छे, ते पुरुष जो फरीथी मांसमक्षण न करे तो मांसमक्षणथी सदा निवृत्ति पामेला पुरुषोने जेवुं फळ थाय छे तेवुं तेने पण थाय छे.

जे विद्वान् पुरुष सर्व भूतप्राणिमात्रने निरंतर अभयदान आपे छे तेज विद्वान् मानवा योग्य छे, तथा विश्वास करवा योग्य छे तथा तेनो क्यारे पण पराभव न करवो.

जेवो पोतानो प्राण पोताने प्रिय छे तेवो बीजानो पण प्रिय छे एम जाणवुं. माटे सर्व देह गरिने मृत्युसमान बीजुं दुःख नथी. ब्रह्मस्वरूप निष्ट एवा त्यागिमुनिने पण पोताना वधकाळने विषे प्रसन्नता थटी नथी. एटले देहथी जुदो आत्मा छ एवा आत्मज्ञानिने पण वध कालने विषे जेवी प्रथम प्रसन्नता हती तेवी प्रसन्नता रहेती नथी.

अनेक कारण माट धर्मशास्त्रमां ब्रह्मनिष्ट मुनिना वधने विषे ब्रह्महत्या करतां पण अतिशे अधिक पाप कहां छे. तथा विदेह मुक्तना वधमां पण अतिशे अधिक दोष निश्चये धाय छे एम कह्युं छे. ४ मश्रनो उचर --राजाओने पशुहिंसानुं अवस्य कर्तव्य कदापि काळे छेज नहीं. अने ते पशुहिंसाज न करवामां आवे तो बळवान् शास्त्रनी आज्ञा पाळी गणाय पण तोडी न गणाय एवां प्रमाण हजारो छे.

वेद एटले (मंत्रब्राह्मणयोर्वेदः) ऋग्वेदसंहिता, यजुर्वेदसंहिता, सामवेदसंहिता, अर्थवेवेदसंहिता, तथा शतपथब्राह्मण विगरे ब्राह्मण ए सर्व वेद कहेवाय छे, तेमां पण कोई जगाए राजाओने तथा अन्य मनुष्योने हिंसा करवानुं कह्युं नथी उलटो हिंसानो निषेध अतिशे स्पष्ट पणे छे.

तेमां ऋग्वेदना ऐतरेय ब्राह्मणमां बीजि पंचिकाना प्रथम अध्यायमां तथा बीजा अध्या-यमां तथा यजुर्वेदना शतपथना ब्राह्मणना नवमां खंडमां याग केतां देव देवीना पूजनमां अहिंसानुंज प्रतिपादन करेलुं छे.

वेदमां जे जगाए पशुराब्द आवे छे ते जगाए पिष्टपशु एटछे डांगेरना चोखानो छोट तेनो करवानो कह्यो छे. तथा अजवडे यज्ञ करवो एटछे पूजन करवुं ते जगाए अज केतां त्रण वर्षनी जुनी डांगर जेने खेतरमां वावे तो उगे नहीं तेवी डांगरवड होमादिक करवुं एम अर्थ कह्यो छे. ते उपर प्रमाण—

#### महाभारतना दानधर्मने विषे

श्रूयते हि पुराकल्पे नृणां वीहिमयः पशुः ॥ येनायजंत यज्वानः पुण्यस्रोकपरायणाः ॥१॥ अजस्रैवार्षिको त्रीहिरिति धनंजयः ॥

वर्ली श्रुति केतां वेद तेना अर्थने स्मृति अनुसरे छे एटले वेदनो अर्थ अतीशे गूढ छे माटे तेना अर्थने स्मृतियो प्रकाश करे छे.

# ( श्रुतोरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छादीत कालिदासः )

ते स्मृतियोनो पण एज सिद्धांत छे के (निहिंस्यात्सर्वभूतानि) कोई जीव प्राणीमात्रनी ाहिंसा न करवी.

वळी वेदना साररूप उपनिषद् छे तेमां पण प्राणिमात्रपर दया राखवी पण तेने कष्ट थाय तिम आचरण न करवुं. एवी रीते कहुं छे पण तेनी हिंसा करवा कोई उपनिषदमां कहुं नथी.

वर्ळा छ शास्त्र छे तेमां पण हिंसा करवानुं कह्युं नथी. ते छ शास्त्रनां माम--

#### द्वे न्याये द्वे च मीमांसे सांख्ययागी तथैव च

बे प्रकारनां न्याय शास्त्र छे ते एक प्राचीनन्याय ने बीर्ज नवीनन्याय, तेमां गौतम ऋषि प्रणीत सोळ पदार्थ वाची ने काणद ऋषि प्रणीत सात पदार्थ वाची. तेनो पण एवो सिद्धांत छे के पदार्थज्ञान थकी मोक्षी थाय छे. एटले जे वस्तु जेवी छे तेने तद्गत केतां तेमां रहेला यथार्थ धर्म जाणवारूप ज्ञानथी सर्व दुःखमात्रनो अंत थाय छे एनो भावार्थ ऐवो छे के.

## आत्मवत्सर्वभूतानि यः पश्याति स पश्यति

पोतानी पेठे सर्व भूत प्राणिमात्रने देखे तेज देखे छे एटले बीजा तो देखे छे तो पण ते अंघ जाणवा. केम के जेम कोई पोताने छदन भेदन करे त्यारे केंबुं दुःख थाय छे तेबुं दुःख बीजाने पण छेदन भेदन करवाथी थाय. एम जाणे छे ते जाणकार पुरुषो कहेवाय छे. माटे एवी रीतना जाणपुरुषो निरपराधी पशुने केम दुःख दे नज दे. अने ज्यारे दुःख देवानो निषेध न्यायशास्त्रने मते थयो तो ते शास्त्रने मते पशुनी हिंसा करवानो निषेध एनी मेळेज आवी गयो.

अने वळी केटलाक वैदीकपुरुषो एम कहे छे के यज्ञमां एटले देवदेवीना पूजनमां जे पशुनी हिंसा करी बलिदान आपीए छीए ते पश स्वर्गे जाय छे अने महाखुखी थाय छे. एवं बोलनार केवळ दांभीक पुरुषो छे केम के, जो एवं बोलनार पुरुष पोताना मनमां एम नक्की जाणे छे जे देवदेवीना बलिदानमां वापरवाथी स्वर्गे जवाय छे तो पोताना अतिशे प्रिय एवां स्त्री पुत्र पुत्री तेमनां गलां कापीने तेमनो बलिदानमां भोग केम आपता नथी. बापडां गरीं विरुपराधी पशुने बळात्कारे केम मारी नांखे छे.

माटे ए न्यायशास्त्रने। मत नथी ए तो अन्याय शास्त्रने। मत छे. वळी बे प्रकारनुं मीमांसा शास्त्र छे तेमां पूर्वमीमांसा अने उत्तरमीमांसा तेमां पूर्वमीमांसा जैमिनी ऋषिकृत छे, ने उत्तरमीमांसा व्यासमुनीकृत छे. तेमां पूर्वमीमांसामां कर्मनुं प्रतिपादन छे, ने उत्तरमीमांसामां ज्ञाननुं प्रतिपादन छे. ए बे शास्त्रनो पण एवो अभिप्राय छे के कोई प्रकारना प्राणिनी जाणी जोईने हिंसा न करवी. अने अजाणे हिंसा थाय ते। तेनुं प्रायिश्वत्त करी शुद्ध थवुं माटे ते शा-स्त्रना आरंभमां कहुं छे के,

#### ( अथातो धर्मजिज्ञासा )

हवे धर्म जाणवानी इच्छा एटले अहींसा ए परम धर्म क्रे. इत्यादि धर्म पाळवाथी चित्तनी शुद्धि थायछे अने चित्तनी शुद्धि थया पछी ते पुरुष ज्ञाननो अधिकारी थायछे; ते ज्ञानानो अधिकारी थयापछी तेने ज्ञानोपदेश करवाने अर्थे उत्तम मीमांसा एटले न्यास सूत्र प्रमुख वेदांत शास्त्रनो जे उपर कहाांछे तेनो अधिकारी थायछे त्यारे तेने.

# (अयातो ब्रह्म जिज्ञासा )

हवे ब्रह्मज्ञान जाणवानी इच्छा एटछे आत्माने अनात्मा जे देहादिक तेनेज जुदा जाणवा. तेनुं कारण एवंज छे के ते क्षणभंगुर एवा देहनी मांसभक्षणादि पापाचरण करी पुष्टी न करवी. तेनी पुष्टी करनार ने कोई काले आत्मज्ञान उत्पन्न थतुंज नथी. आ प्रकारनी मीमांसा शास्त्रनी सिद्धांत जोतां पण पशु हिंसानी निषेध आवी गयो केमके पापनुं आचरण करवाथी चित्तनुं अतिशे मलीनपणुं थाय छे अने मेला चित्तवाळाने ज्ञाननी अधिकार नथी. अने ज्ञान विना मोक्ष थतो नथी. माटे पश हिंसामां तथा मांस भक्षणमां जरूर पाप रहेलुंज छे.

#### न हि मांसं तृणात्काष्टादुपलाद्वापि जायते॥ हननादेवजंतूनां जायते नाद्यमस्यतः॥१॥

केमके मांस जे ते तृण थकी तथा काष्ट थकी तथा पाषाण थकी पण उत्पन्न थतुं नथी. ए तो जंतुनी हिंसा थकीज उत्पन्न थाय छे ए कारण माटे पाप छे.

## अनुद्वेजयतोजीवान्न भयं कापि विद्यते ॥ भूतद्रोग्धुस्त्विहामुत्र भयं नैव निवर्त्तते ॥ २॥

जे पुरुष जे कोई जीव प्राणीमात्रने उद्देग करतो नथी एटले छेदन भेदनादिक कष्टने करतो नथी ते पुरुषने कोई काळे पण भय उत्पन थतुं नथी. जे जे प्राणिनो द्रोह करे छे तेने आ लोकमां भयनी निवृत्ति थतीज नथी. एटले हिंसक पुरुषने आ लोकमां तथा परलोकमां जरूर दु:खनी प्राप्ति थशे. कदापि काले हिंसक पुरुष पूर्वना पुण्यथी सुखी जेवो देखातो हशे तो पण परिणामे तेन परलोकमां अतिशे कष्ट उत्पन्न थशे.

#### यद्यत्र खादको नस्यान्न तदा घातको भनेत्॥ न केता नापि विकेता मांसस्यातो न भक्षयेत्॥ ३॥

जो मांसनो मक्षण करनार न होय तो पशुनो हणनार पण न होय, अने मांसनो छेनार न होय तो मांसनो वेचनार पण न होय माटे मांस मक्षण न करवुं.

#### धनेन क्रायिको हंति खादकश्चोपभोगतः॥ घातको वधवधाभ्यां मार्कडेयो व्रवीदिति॥

मांसने वेचातुं लेनार पुरुष धनवडे पशुने मारे छे एम जाणवुं, अने मांसभक्षक पुरुष तेनो उपमोग करवाथी पशुने मारे छे एम जाणवुं, अने पशुघातक पुरुष पशुने मारवाथी तथा बांधवाथी पशुहिंसक छे, एम ए त्रण पुरुष सरखा पातकी छे. ए प्रकारे मार्केडेय ऋषिनुं वाक्य छे.

# आहर्ता चानुमंता च विशस्ता ऋयविऋवी ॥ संस्कर्ती चोपभोक्ता च खादकाः सर्व एव हि ॥

मारवाने अर्थे पशुने आणी आपनार तथा मांसने आणी आपनार तथा तेनी अनुमीर दना करनार तथा तेने हणनार तथा वेचनार तथा वेचातुं ठेनार तथा तेनो उपभोग करनार ए सर्व पुरुषो निश्चे मांसमक्षकज छे. अनुमंत शब्दमां आठछो विशेषार्थ जाणवो के अनुमोदना करनार एटछे कोई राजा प्रमुख मोटां माणस कोई विद्वान् पुरुषने पूछे के अमुक पर्वने विषे हुं पशुहिंसा करुंछुं ते ठीक छे? पछी ते विद्वान् कोईनुं मुख्य दाक्षिण्य राखीने अथवा माध्य राखीने अथवा अंधपरंपरा देखीने अथवा पोतानी आजीविका प्रतिष्ठामां थशे एवं कांइक नुकसान धारीने अथवा अन्य कोई कारणथी अनुमोदना करे. अर्थात् हाजी हा साहेब आपवामां बापदादाथी चाछी आवती पशुहिंसा योग्य छे एम प्रकारनी अनुमोदना करे तेने पशुधातक जाणवो. केतां खाटकी जाणवो पण विद्वान् न जाणवो तथा बाह्मण न जाणवो.

वळी ते विद्वानमां पण जे विद्वान् पशुनां नाक कान कापवानु कहेता होय तो समर्थ राजाओए तेज विद्वाननां नाक कान कापवां जोईए. केम के एवी गणो छे ते केवळ शास्त्रथी विरुद्ध निर्मूळ छे.

वली पांचमुं सांख्यशास्त्र किपलदेवप्रणीत छे तेमां पण हिंसा करवानुं कह्युं नथी. केमके सांख्यशास्त्रमां चोवीस तत्वनुं पृथक् करण कह्युं छे अने देहना भावने देहने विषे समजवा अने आत्माना भाव आत्माने विषे समजवा एटलेज दुःख ने मिथ्या इत्यादि देहना भाव ते कदापि काले आत्माने विषे न समजवा. अने सत् चैतन्य अने सुखरूप आत्माना भाव छे ते कदापि काले देहने विषे समजवा नहि. इत्यादि विचारने जणावनार सांख्य शास्त्रने मते पण शरीर पृष्टिकारक मांसनो निषेच छे तो तेमां पशु हिंसानो लेश पण आवेज क्यांथी उल्रहुं इंद्रियोनो निप्रह करी शरीर शोषण करवानुं ए मतमां छे.

वळी छठुं जे योगशास्त्र तेमां पण हिंसा करवानुं कह्युं नथी तेमां तो यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा अने समाधि, ए अष्टांग योगनी वार्ता छे तेमां प्रथम यम कह्यों छे.

## अहिंसासत्यास्तेयापरिग्रहब्रह्मचर्या यमाः ॥

ए पातंजल योगशास्त्रना सूत्रमां पण प्रथम आहंसानु ग्रहण कर्यु छे माटे जे आहंसक पुरुषो छे तेनेज योग सिद्ध थाय छे.

# अत्रिस्मृतौ

# अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यपरियहों ॥ भावशुद्धिईरेर्भक्तिः संतोषः शौचमार्दवामिलादि॥

वळी अत्रिऋषिए पोतानी स्मृतिमां योग सिद्ध करनार पुरुषनां छक्षण छढ्याँ छे तेमां पण प्रथम अहिंसा गणावी छे. माटे योगशास्त्रनो मत पण एवे।ज सिद्ध थयो छे के प्रथम अहिंसा धर्म पाछवो.

याज्ञवस्त्वयमृतौ अ. १ श्लो. ८

# इज्याचारदमोऽहिंसा दानस्वाध्यायकमणाम् अयं तु परमो धर्मो यद्योगेनात्मदर्शनम् ॥

आ लोक परलोकसंबंधी सुख लेवामां चमत्कारी योगसाधन बतावनार योगशास्त्रनुं सर्वोपारे मुख्यपणुं छे एम याज्ञवल्क्य ऋषिनो सिद्धांत छे तेमां पण अहिंसा कही छे.

इज्या केतां यज्ञ करवो एटले देवतानुं पूजन करवुं तथा सदाचार पाळवो तथा अहिंसा व्रत पाळवुं तथा सत्पात्रमां दान आपवुं तथा भणवुं ने भणाववुं ए सर्व सत्कर्म छे. तेनीमध्ये आ उत्कृष्ट धर्म छे के जे योगशास्त्रमां कहेला योगे करीने एटले पूर्वीक्त अहिंसा-दिक साधने करी चित्तशादि करीने योगनुं साधन करवाथी अनेक ऋदिसिद्धि प्रगट थया पछी शेवट आत्मदर्शन पण योगथीज धाय छे. माटे योगारूढ थयो होय तो पण कामचार एटले मनमां आवे तेम हिंसादिकनु आचरण करे तो (योगारूढोपतत्यधः) ते पण योगश्रष्ट धई अधोगतिने पामे छे.

आ प्रकारे छ शास्त्रने मते हिंसानी निषेध कर्यो.

५ प्रश्ननो उत्तर—िहंसानी प्रवृत्ति जो न करवामी आवे तो कोई प्रकारनो आपित काळ आववानो होय तो पण ते नाश पामे अने पुण्यकर्म कर्युं कहेवाय एम बळवान् शास्त्रनां प्रमाण छे.

### श्रीमद्भागवते ॥

# तस्मान्न कस्यचिद्रोहमाचरेत्स तथाविधः॥ आत्मनः क्षेममन्त्रिच्छन् द्रोग्धुर्वै एरता भयम॥

जे पुरुष पोतानुं सारुं इच्छे छे तेणे कोई काळे पण पारको एटले अन्य प्राणिनो दोह न करवो. जे अन्य प्राणिदोह करे छे तेने परधकी भय प्राप्त थाय छे, एटले ते प्राणि आ छो- कमां तथा परनेकार जिल्द तेनुं वैर छे छे, माटे नारदजीए प्राचीनवर्हिष राजाने दिव्यदृष्टि जापी देखाड्युं छे के हे राजन् अज्ञान पणाथी प्रथम तें जे जे जीव यज्ञमां मारेला छे ते तारो करेलो द्रोह संभारी तेनुं वैर लेवा जो केवी तैयारी करे छे के, जे जे शस्त्र करीने जे जे प्राणिने मार्यी छे ते ते शस्त्रने घसी उजळां धारवाळां करी तारी वार जुवे छे. जे ए राजा मरण पामी अत्र क्यारे आवे के एनं छेदन मेदन करी एनं मांस मक्षण करवा मंडी पिडिए. आ प्रकारनं थशे एनं पोतानुं दुःख संभारी थरथर कंप पामी महाभय पामी हिंसानो त्याग करी नारदिजनो शिष्य थई घणो सुखी थयो. ते कथा श्रीमद्रागवतना चतुर्थ स्कंधमां कही छे के,

# भोभो प्रजापते राजन् पशून् पश्य त्वयाध्वरे ॥ संज्ञापितान् जीवसंघान् सारंतो वैशसं तव ॥ इत्यादि

### भारते मौक्षधर्मे

महाभारतना मोक्षधर्मने विषे जाजली ऋषि अने तुलाधार नामे विणिक तेना संवादमां (अध्याय ८० मां) तथा धर्मों वृत्तिना संवादमां (अध्याय ९० मां) तथा धर्मों वृत्तिना संवादमां (अध्याय ९० मां) तथा धुमत्सेन सत्यवादसंवादमां तथा विश्वगीत नामे इंद्र अश्वमेध करवा मांड्यों छे तेमां आवेला महा मोटा ऋषियों अने देवता तेमना संवादमां (अध्याय १५४ मां) यज्ञमां केतां देवताना धूजनमां सर्वथा हिंसानो निषेध कर्यों छे. अने ते अंधपरंपराधी चाली आवती हिंसानो त्याग थवाथी राजा प्रजा सर्वे सुखी थाय छे. अने एवा उज्ज्वळ देवताना धूजन विगेरे शुभ कृत्यमां हिंसानी प्रवृत्ति कोणे करावी छे तेना उपर पण त्यांज अध्यायमां ८९ मां लख्युं छे के,

लुब्धेर्वृत्तिपरेराजक्रास्तिकैः संप्रवर्त्तितम् ॥ १॥ वेदवादानिवज्ञाय सत्याभासिमवानृतम् ॥ १॥ तथा—अव्यवस्थितमर्यादैर्विमृहैर्नास्तिकैर्नरेः ॥ संशयात्मभिरव्यक्तेर्हिसा समनुवर्णिता ॥ अध्याय ९२ तस्य तेनानुभावेन मृगहिंसात्मनस्तदा ॥ तपोमहत्समुच्छिन्नं तस्मादिसा न यज्ञिया॥ अध्याय ९९

व्याख्यातश्चायं श्लोको भारतभावदीपे (तट्टीकायां) चातु र्घरनीलकंठेन हिंसाशून्यस्य धर्मस्य श्रेष्ठग्रं वक्तुं हिंस्नयज्ञनिंदार्थे। यमध्यायो आरभ्यते तस्य सत्यसंज्ञस्य उञ्छवृत्तिबाह्मणस्य तेन

# अनुभावेन पशुं इत्वा खर्गं प्राप्तोमीत्यभिप्रायेण हिंसासंकल्पेना-पीत्यर्थः । यज्ञिया यज्ञाय हितेति ॥

द्रव्यना लोभी, नास्तिक वेदार्थना अजाण एवा महादुष्ट पुरुषोए हिंसानुं प्रवर्तन कर्युं छे. ते छे तो खोटुं पण सत्याभास केतां सत्य जेवुं थई कह्युं छे. तथा जे पुरुष शास्त्र मर्यादाथी वेगळा छे अने वस्तुता ए छे तो पोते मृद्ध केतां मूर्खपण पोताने विषे पराणे विद्वत्तानुं अभिमान ठसावे छे माटे विशेष मूर्ख एवा अने नास्तिक एवा अने शास्त्र सत्य हरो के नहीं एवा संशयवाळा अने अमो याज्ञिकछीए एवुं मिथ्याभिमान धरावनार पुरुषोए देवताना पूजनमां हिंसानो प्रवेश कराव्यो छे. शिलोंछ वृत्तिवालो महा तपस्वी बाह्मण हतो, पण तेने एवो विचार थयो के हुं आ देवता पूजनमां पश्चिंहसा करूतो सुखी थाउ एवो विचार कर्यो तथी तेनुं महातप हतुं ते पण नाश पाम्युं. माटे आ काळना राजा प्रमुख लोकोए तो अवश्य विचार करवो के पूर्वना कांईक पुण्ययोग वडे आटला सुखी छीए ते पण आ प्रकारनी पश्चिंहसा करीशुं तो पूर्वनुं तप पुण्य सर्व शीव्रपणे नाश पामशे. तथी महा मोटी आपत्तिमां अकरमात् आवी पडशुं एवुं धारीने ते हिंसारूप अकार्यनो एटले शास्त्रविरुद्ध कार्यने। तत्काल त्याग करवो योग्य छे एम बलवान् शास्त्रनी आज्ञा छे ते उपर प्रमाणे के

याज्ञवल्यस्मृतौ अध्याय १ श्लोक ३३५ तवाहं वादिनं क्लीबं निर्हतिं परसंगतम् ॥ नहन्याद्विनिवृत्तं च युद्धप्रेक्षणकादिकम् ॥

पोतानो द्रोह करतो होय तेनो द्रोह करवो एवं श्रुतिनुं वचन छे. तथी अपराधीने मारतां पछी ते आदरथी एम बोले के मने मारशो नहीं हुं तमारो छुं तो तेने न मारवो. केम के ते पोतानो थयो माटे तथा विनिवृत्तं केतां अपराधीने मारवा लीधो पण ते नाशभाग कहे छे तो तेन न मारवो ए प्रकारनो राजाओने धर्म छे. तो पारका पशुने पैसा खरची पोतानो करी तेनुं पूजन सत्कार करी बिचारो निरपराधी मरणना भयथी नाश भाग करे तो तेने बळात्कारे घसडी लावीने तेने मारवारूप महाक्रूर राक्षसी कर्म करीने तेमां धर्म मानवो ए केवळ शास्त्रविरुद्ध दुष्ट कर्म छे. पोताना राज्यमां जे जे प्राणी रहेता होय, तेने पोतानी प्रजाने जाणी तेवुं रक्षण करवुं पण पीडन न करवुं. एटले निरपराध दुःख न देवुं जेम करवाथी राजाने घणुंज नुकशान थाय छे.

ते याज्ञवल्क्यस्मृतिमां कहुं छे अध्याय श्लोक ३४० प्रजापीडनसंतापात् समुद्धतो हुताशनः ॥ राज्ञः कुळं श्रियं प्राणां श्वादुग्ध्वा न निवर्त्तते॥ किरानी निरमाधी रैयतने पीडवाथी राजाना कुळनो नाश थायछे एटले ए राजाना वंशनो उच्छेद थाय छे. तथा लक्ष्मीनो नाश थाय छे. छेवट राजाना प्राण जाय छे एटले ए राजाने कमोते मरतुं पडे छ; जेम अग्नि घासनी गंजीने बाळे छे तेम ते राजानां सर्वसुख बाळी मस्म करे एवा शास्त्रनो बळवान सिद्धांत छे. वळी नाततायिवधे दोष:—एटले संप्राममां मारवा आव्यो होय तेने मारवो एम क्षत्रियोना धर्ममां छे पण निरपराधी गरीब झवोनां गळां रहेसवां क्या शास्त्रमां कहां छे? कोई शास्त्रमां नथी.

आततायिनः उक्ताः कात्यायनेन ॥
उद्यतासि विषाप्तिश्च शापोद्यतकरस्तथा ॥
आथवंणेन प्रहंताच पिशुनश्चापि राजनि ॥
भाषातिक्रमकारी च रंध्रान्वेषणतत्परः ॥
एवमाद्यान्विजानीयात्सर्वानेवाततायिनः ॥

जेने मारवामां राजान दोष छागतो नथी एवा आतताई पुरुषो, कात्यायन ऋषिए गणाव्या छे. तेमां पण कोई निरपराधी जीव गणाव्यो नथी.

श्रीमद्भागवत जेवां पुराणोमां तो, अज्ञानी एवा अपराधी जीवाने पण न मारवां एवं छे —

यस्तिह वै भूतानामीश्वरकिष्पतवृत्तीनामविकिपरव्य-थानां स्वयं पुरुषेण ब्रह्मादिभावेन विधिनिषेधपूर्वमुपकिष्पतावृ-त्तिर्यस्य सः विविक्तपरव्यथो व्यथामाचरति स परशंपकूषे तद्मिद्रोहेण निपतित तत्र हासौ तैस्तैर्जंतुभिः पशुपिक्षमृगसरी-तृपैर्मशकयूकामत्कुणमिक्षकादिभियें के चाभिदुग्धास्त सर्वतोभि-दुद्यमाणस्तमिस विहितनिद्रानिवृत्तिरलब्धावस्थानः परिकामित यथा कुशरीरे जीव इति ॥

न ब्रह्मदंडदुग्धस्य न भूतभयदस्य च ।
नारकाश्चानुगृह्णंति यां यां योनिमसौ गतः॥
भारते देवान् प्रति महर्षिवाक्यम् । मोक्षधर्मे अध्याय १६६ वीजिर्यज्ञेषु यष्टव्यमिति वै वैदिकी श्रुतिः।
अजसंज्ञानि बीजानि छागं नो हंतुमहैथ।।

नैव भर्मः सतां देवा यत्र वे वध्यते पशुः वायुपुराणे मत्स्यपुराणे च यज्ञो बीजः सुरश्लेष्ठ येषु हिंसा न विद्यते॥ त्रिवष परमं कालमुषितैरप्ररोहिभिः॥

वायुपुराण अने मत्स्यपुराणनो तो एवो सिद्धांत छे के जेमां हिंसा नथी ते यह कहेतां देवता पूजन कहेवाय अने बीज़ं तो, पेट पूजन कहेवाय. माटे तेमां एम कहां छे के त्रणा वर्षनी नउगे एवी जुनी डांगर प्रमुख धान्य बीजवडे यह करवो के जेमां हिंसा न होय.

### नारदपंचरात्रे चोक्तम्.

श्रुतिवदाति विश्वस्य जननीव हितं सदा।
कस्यापि द्रोहजनकं न वक्ति प्रभुतत्परा ॥ १॥
न तच्छास्रं तु यच्छास्रं विक्ति हिंसामनर्थदाम्
यतो भवात संसारः सर्वानर्थपरंपरः॥ २॥
अंतरंगं विजानाति भगवत्याः श्रुतेः स्वयम्।
चराचरात्मा भगवान् नापरः कोपि तत्विवत् ॥ ३॥
आत्मवत्सर्वभूतानि आत्मज्योत्येवमञ्जवम् ।
भगवान्कथमञ्जेनां हिंसामुपदिशेत्किचित् ॥ ४॥

श्रुति कहेतां वेद, मातुश्रीनी पेठे निरंतर जगतनुं हित थाय एवुंज वचन बोले छे, पण कोई जीव प्राणिमात्रनो द्रोह थाय एवुं वचन कहती नथी. केमके ते श्रुति प्रभु तत्पर छे एटले जेम कोईनो द्रोह थाय तम प्रभु कहता नथी. तेम श्रुति पण कोईनो द्रोह थाय तेवुं वचन बोलती नथी, कोई जीवने दुःख देवुं एवुं वेद वचन होय तो नहीं हिंसा करवी एवुं वेदवचन होयज क्यांथी एटले जेमां हिंसा करवानं कहुं होय ते वेद वचन न कहेवाय; पण एतो मांसमक्षक एवा राक्षसोनुं वचन कहेवाय ॥ १॥ वळी जे शास्त्रमां हिंसा करवानुं कहुं होय ते शास्त्रज न कहेवाय, अर्थात् एतो अशास्त्र कहेवाय केमके हिंसा अनर्थने आपनारी छे, एटले हिंसा करवाथी था लोक परलोक संबधी अनेक प्रकारनां कष्ट आवे छ; अन जेनी हिंसा करी छे ते प्राणि तेनुं वेर लेवा अनक जन्मसूधी शस्त्रवेड करनारनुं माथुं काणे छे. माटे एने शस्त्र कहीए छीए, एम उत्तरार्धमां कह छे. यतः कहतां जे हिंसाथी सर्व अनर्थनी छे

परंपरा जेने विषे एको संसार याय छै. एटले संसार संबंधी मुखमात्रनो नाहा करनारी हिंसा छे, अर्थात हिंसा करवाथी पुत्र नाहा पामे, ख्री नाहा पामे, घन नाहा पामे, राज्यनो नाहा याव, हारीरे कोढ नीकळे, पतनो रोग थाय, ज्यां जाय त्यां अपमान पामे इत्यादि जगत्मां जिटलां जेटलां दुःख कहेवाय छ ते सर्व दुःख हिंसाथी प्रत थाय छ ॥ २ ॥

भगवती कहेता भगवतनी वाणीरूप श्रुतिना अंतरंग अभिप्रायने स्थावरजंगमना आत्मा एवा भगवान् जाणे छे पण बीजो कोई ते तत्वने जाणी शकतो नथी. श्रुतिनो आभि-प्राय केवळ अहिंसानुं प्रतिपादन करनार छे एवा तत्वने बीजाथी यथार्थ जाणी शकातुं नथी. ३

श्रुतिनो अहिंसारूप अभिप्राय छ तेन भगवान् पोते जाणे छ तेमां कारण देखाडे छे के—हे भगवान् एम कहे छे के पोताना आत्मानी पेठे सर्वभूत प्राणीमात्रने मानवां. एटले जेम कोई पोताने छदन भेदन करे त्यारे जेवुं दुःख थाय छे तेवुंज बीजां प्राणीने छेदन करवाथी थाय. माटे कोई प्राणिनो द्रोह न करवो, एम भगवान कहे छे, ते भगवान आ वेदमां कोई जगाए पण हिंसानो उपदेश करेज केम! अर्थात् ।हिंसा करवानुं वचन होय ते भगवद् वचन कहेवाय नहीं ।। ४ ॥ मनुस्मृतिनो पण अहिंसारूप सिद्धांत छ, ते सिद्धांतने भारतन विषे भीष्म पिताए युधिष्टिर राजापासे कहा। छे के—

सर्वकर्मस्विहंसां हि धर्मातमा मनुरत्रवीत्।। मोक्षधर्मे अ. ९२ अहिंसा सर्वभूतेभ्यो धर्मभ्यो ज्यायसी मता। न भूतानामिहंसाया ज्यायान् धर्मोस्ति कश्चन॥

धर्मात्मा एवा मनु सर्व कर्मन विषे हिंसा न करवी एम कहे छे. भूतप्राणिमात्रनी हिंसा न करवी ए धर्म सर्व धर्म करतां अतिरो श्रेष्ट छे अहिंसाथी कोई मोटो धर्म नथी.

#### तथाच वृद्धबराहारश्चाह ।

शोंचं पात्रश्रुद्धिश्च श्रद्धा च परमा याद अनंततृतिक्रछ्गाणि एतदेव न चानिषम् ॥ यस्तु प्राणिवधं कृत्वा पितृन्मांसेन तर्पयेत् सोऽविद्वांश्चंदनं दण्ध्वा कुर्यादंगारलेपनम् ॥

नारदश्चाह्य (भागवतसप्तमस्कंधे अ ९५) न दद्यादामिषं श्राद्धे न चाद्याद्धर्मतस्ववित् । मन्यक्रैः स्यात्परात्रीतिर्यथा न पशुहिंसया॥ नैताहराः परो धर्मो नृणां सद्धर्ममिच्छताम् ॥ न्यासोदंडस्य भूतेषु मनोवाकायजस्य यः ॥

भगवान् बादरायणो भाष्यकारः महाव्रतं व्याचरूयो सर्वदा भृतानामनभिद्रोहः आहंसा जातिदेशकालसमयैरनवच्छिन्ना अहिंसा महाव्रतमित्युच्यते ॥

पश्च छद्वानो उत्तर.

पशु वधने बदल कोई हिंसारहित क्रिया करीने पर्व आराधश्रमां आवे तो बलवान् शास्त्रनी साचे साची आज्ञा मानी गणाय, ते विश्रेना प्रमाण कह्यामां प्रथम आव्यां छे के, पवित्र अनवेड जेनी परा कहेतां उत्कृष्टि प्रीति थाय छे एटले देवतानी प्रसन्नता थाय छे. तेवी पशुहिंसाथी थती नथी. अने आहिंसा समान उत्कृष्टो धर्म नथी. माटे शरीर, मन, वाणी ए त्रिकरण योगवेड भूतप्राणिमात्रनी हिंसानी त्याग करवो. एम भागवत पुराणमां कहेलुं नारदजीनुं वचन (पां. नं. उपलाना स्त्रोक नदवाई मांजुओ)

याज्ञवल्वयसृतौ अ० १ श्लोक ४-५
पुराणन्यायमीमांसा धर्मशास्त्रांगमिश्रिताः
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ॥
मन्वित्रविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनांगिराः
यमापस्तंबसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती ॥
पराशरव्यासशंखिलिखितौ दक्षगौतमो ॥
शातातपो विशष्टश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः

याज्ञवल्क्य स्मृतिमां कहुं छे के पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र, ए चार ४ वेद अने तेनां अंगद मळी कुळ १४ चौद विद्यानां अने धर्मनां रहेवानां स्थान छे. अने मनुआ-दिक स्मृतिओ ए धर्मशास्त्र छे, माटे प्रथम गणावेळा पुराणमां सर्वोपरी श्रीमद्भागवतनुं प्रमाण आ प्रश्नउत्तरमां प्रथम दाखळ कर्युं छे. अने पशुने बदळे छोटनो पशु करी तेन मारे तो कायिक हिंसानो त्याग थयो पण मन वचनथी हिंसानी प्राप्ति थई पण ते पुराणना वचनमां तो त्रण प्रकारे हिंसानो त्याग करवा ळख्यो छे.

मनुस्पृतौ

श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्पृतिः।

श्रुति एटले वेद खने धर्मशास्त्र एटले स्मृति पूर्वे गणायेला ऋषिओनां वाक्य तेने धर्म जाणवा. माटे याञ्चवस्क्य ऋषि पोतानो अभिप्राय कहें ले के,

> महोक्षं वा महाजं वा श्रोत्रियाय निवेदयेत् तद्दीका-मिताक्षरा-

लक्षणसंपन्नाय श्रोत्रियाय तत्त्रीत्यर्थं परिकल्पितोयं न तु दानायव्यापादनाय वा

> कर्मणा मनसा वाचा यन्नाधर्म समाचरेत् अस्वर्ग्य लोकविद्धिष्टं धर्ममप्याचरेन्न तु ॥

> > तद्दीका मिताक्षरा.

धर्मं विहितमपि लोकविद्विष्टं लोकानिमशस्ति जननं यथा मधुपर्के गोवधादिकं नाचरेत् । यस्मादखर्ग्यमग्निष्टोमीयवत्स्वर्ग साधनं न भवति ॥ ११५॥

देवतादिकने पशु आदिकनुं अपेण करचुं ते काई मारघाने अर्थे नथी. ते तो देवता-दिकने अपेण करेला प्राणिन अभयदान आपवाने अर्थे छे. आ वस्तु देवादिक मोटा पुरुषनी यई छे. माटे एनो कोई अपराध करें नहीं, ते जीव निर्भयपणे आनंदमां रहे तने जोईने पशु आदिकने अपेण करनार उपर ते देवादिक प्रसन्त थाय छे, माटे प्रात्यर्थे कहेतां प्रीति अर्थे निवेदन करवो.

वळी सा पशुहिंसा शास्त्रविहित छे. ए पोताने मिथ्या धर्माभास जाणतो होय, ते। पण ते धर्म, छोक विदिष्ट कहेतां सज्जन पुरुषोने प्रशंसा करवा योग्य न होय तो तेनुं आचरण न करवुं, शरीर, मन, वाणीधी ते धर्मनो त्याग करवो, केमके तेमांधी परिणाम सार्क फळ थतुं नथी.

# तथा च बहुचन्नाहाणे

तस्मादेष एतेषां पशूनां प्रयुक्ततमो यहजस्ते ज्ञमालभंतं । सोजादाब्यादुदक्रामत्संझां प्राविशत्तस्मादियं मेध्या भवत्तस्यामन्ववायन्सो नुगतो ब्रीहरभवदिति वेदनु शतपथ जेम ब्राह्मण छे तथा ऐतरेय ब्राह्मण छे तेमां बहुवचनामे ब्राह्मण छे तेमां तो घणी वात छे पण तेमांनो एक छेश मात्र दिग्प्रदर्शन आ प्रकार छे के सुधिना आरंभकालनी ने वात छे ते

निरंतर रेवाती नथी. एंटरे अन्ननी उत्पत्ति थया पहेलानी के बात छे ते अन्ननी उत्पत्ति थया पछी न रुवी एम आ वेदनी श्रुतिनो तात्पर्यार्थ छे.

## यज्ञार्थ पशवः स्रष्टाः अजेन यजेत् ॥

इत्यादि वाक्योने देखी मोह पामी भडकी मरता ब्राम्हणो, वेदना ब्राह्मणनो अर्थ तपा-सता नथीज केमक—अन्नमध, गोमेध, अश्वमेध, इत्यादि शब्दोमां जे मेथ शब्द संभळाय छ. ते मेध एटले एक जातनी कोई अदश पावित्रवस्तु ज यज्ञमां खप आवे छे ते मेध पशुनी मध्ये अजनामे पशुमां रहेतो हतो त्यारे यज्ञ करनारे अजनुं आलंभन कर्युं एटले यज्ञमां वापर-वाने लेवा मांड्या. त्यारे ते मेध तेमांथी उडीने अश्वमां पठो त्यारे अश्वने आलंभन करवा छीधो. ने तेमांथी उडी गायमां पेठो त्यारे गायने आलंभन करवा लीधी. त्यारे मेध हतो ते अश्वमांथी उडीने अन्तर्भे छेवट अन्ननी उत्पत्ति थया पछी अन्नमां प्रवेश करी ब्रीहि कहेतां डांगररूपे थयो. मांट हालमां पश्चने ठेकाणे अन्ननुं प्रहण करवुं अने अजेन कहेतां न उत्पन्न थाय एवा धान्यवंड यजन करवुं एटले देवतानुं पूजन करवुं.

भा प्रकारे साक्षात् वेदमांज पश हिंसानो निषेध उघाडो देखातो छे. पण तेने ना देखीने चूर्त्त लोकोए हिंसानुं प्रवेतन कर्युं छे ते उपर भारतादिकनुं प्रमाण प्रथम देखाडयुं छे.

वली (तेवी हिंसा रहित शुं शुं ) तेना उत्तरमां.

भारते मोक्षधर्मे.

पायसेः सुमनोभिश्च तस्यापि यजनं स्मृतम् । यज्ञियाश्चव ये वृक्षा वेदेषु परिकल्पिताः ॥ यज्ञापि किंचित्कार्त्तिव्यमन्नं चोक्ष्यैः सुसंस्कृतम् । महत्सत्वैः श्रुद्धभावैः सर्वदेवार्हमेव च ॥

दूधपाक एटले दूधथी उत्पन्न थयेलां पदार्थ वडे देवपूजन करतुं तथा यज्ञ करवा योग्य एटले देव पूजनमां खप आवे एवा वृक्ष वेदमां गणाव्या छे. तेने वृक्षमांथी तथा शेरडी ईसादिमांथी उत्पन्न थयेलां पदार्थी वडे तथा होमादिकमां तेते वृक्षनी समिधा वडे एटले काष्ट्रवडे देवकार्य करतुं. वळी नवरात्रने अंते पूजनमांतो नवान कहेतां डांगर प्रमुख जे नतुं अन्न उत्पन्न थयुं होय, अले शद्ध भावथी सारा पुरुष चोख्खाई पवित्राई पार्छीने रांघ्युं होय ते सर्व देवताना भोगमां खप आवे छे, एम मोक्ष धर्ममां कहां छे वळी श्रीमद् भागवतमां एवी कथा छे के श्रीकृष्ण भगवाने पोताने वसुदेवने त्यां जन्म थारण करवी हतो त्यार पहलां योतानी मायाने (माताने) एवी आहा आपिक तुंपण (पाष्ट देवी अक्षेप हैं) विद्यांणा प्रमुख

मुखे जा अने त्यां जन्म धारण कर अने तने छोक पूजरो अने घणुं मान करशे अने तारां घणां नाम थरो ईत्यादि.

# दुर्गेति भद्रकाळीति विजया वैष्णवीति च॥ माया नारायणीशानी शारदेत्यंबिकेति च अर्चिष्यंति मनुष्यास्त्वां सर्वकामवरप्रदां॥ इत्यादि

भगवद्वाक्यना प्रतापथी आ छोकमां देवीनुं वहुमान थयुं अने विजया एवं पण ते देवीनुं न्नाम छे, तेनुं नवरात्र व्रत छे तेने अंते विजया देवीनुं पूजन करवानुं कह्युं छे. माटे विजया ्दशमीनुं व्रत राजा लोकोन दिग्विजय करवामां घणुं मददगारी थायछे. तेथी ते पर्वनुं भाराधान करवु पडेंछे. अने स्कंद पुराणना श्रीकृष्णजन्म खंडमां ए देवी पार्वतीनो अवतार छे. एम कह्युं छे माटे ए उज्वल देवीछे पण जेबीक शिकोतरी—झांपडी—उच्लिष्ट चंडालिर्षा इसादि मिलन देवीओ जेवी ए देवी नधी. माटे एनी पूजा आराधना विषे पर्शाहसा रहिन्न अनेक प्रकारनां शुद्ध बल्टिदान आपवां ते योग्य छे अने तेथीज ते देविनी प्रसन्नता थायछ. कारण के जे उत्तम देवताछे तेनां नैवेद्य पण उत्तम छे ते स्कंद पुराणना वासुदेव माहात्म्यने विषे गणाव्यां छे त त्यांथी जो जो. बली ए देवीनुं जेवुं विजया नाम छे तेवुं भद्रकाली नाम पण छे ते नाम प्रथम गणान्यां छे. ते भद्रकालीने पण पशुहिंसा करी दशरा विगेरे पर्वने विष विद्यान आपवुं ते प्रीतिकारक नथी उल्टुं कोपकारक छे. ते उपर श्रीमद् भागवतमां पंचम स्कंधना जः भरतना आख्यानमां जुओ ते इतिहासनो अतिसंक्षेप अन्यपुराण शंथनो मतर्र्इ दिगप्रदर्शन करंछुं के ईक्षुमतीना तरनेविषे त्यांना रहनारा राजाए भद्रकाछीने आति प्रसन्नता करवान कोई वैदिक विद्वान् पुरुषने पूछ्युं के मारे पुत्रादिकनुं सुख नथी माटे आपणा गामने समीपे मंदिरमां रहेलां श्री भद्रकाली देवीनी मारा उपर अतिशे प्रसन्नता थाय तैवुं बलिदान आपवानुं छ माटे देखाडों ? त्यारे तेणे विचार कर्यों के वेदमां ( पुरुषं पुरु मालभते ) पुरुष पशुनुं स्मरण प्रथम कर्बुछ माटे पशुनुं बलिदान आपवा करतां पुरुष पशुनुं बिंदान आपवुं ते श्रेष्ट छे. एम विचारीने कह्युं के-लक्षणवंत पुरुष पशुने लावी तेने स्नान, पान, खान पुष्कळ करावी वस्त्रालंकारथी सुशोभित करी सुगंधी मान पुष्पना घणाहार पेहेरावीने भद्रकाली देविने बलिदान आपोतो तमारुं कार्य सिद्ध थाय. आ प्रकारनं वचन सांभळी प्रसन्न थई ते राजाए लक्षणवंत पुरुष पशुने खोली लाववाने पोताना बुद्धिमान घणा मागसने दिशोदिश दे। डाव्या ते वखत जड भरतजी पोताना वडीलनी आज्ञाथी खेतरना क्यारडामां पाणीवाली लाववानं काम हाथमां पावडो झालीने व्यता हता; अतिरो न्हन्न पुष्ट क्षपाला अने जड पुरुषनी पेठे जेमतम बोली जेमतेम काम करता राज पुरुषोए दीठा; पछी तेमणे विचार कर्यो के आपणा राजाए जवां लक्षण कह्यां हता तेवां सर्वलक्षण संपन्न **आ** पुरुष छे एम धारी तेमने झाछी लाती राजाने अर्पण कर्या.

राजाए पण प्रथम जाणेला विधिए सहित ते पुरुषना सर्व संस्कार करी कुटुंक्सहित बाजते गाजते तेने भद्रकालीना मंदीरमां लई गया. त्यां पण ब्राह्मण लोकोए होम हवननी संपूर्णता करी बिलदाननी वखते ते पुरुषने पुष्कल शणगारीने भद्रकाली देवीनी सन्मुख उभा राख्या. ते वखते जडभरतजी तो ब्रह्मनिष्ट छे माटे मरवानो भय न राखीने सारीपेठे राजी-पणामां उभा रह्या छे. अने चारे पास राजा प्रमुख लोको उघाडी तरवारो करीने ते पुरुष पशुनो वध करवाने उभा रह्या छे. ब्राह्मण लोकोए मंत्राचारणमां गर्जनाओ करवा मांडी छे. अनेक प्रकारनां वाजींत्रनो ध्वनि चारे पास धई रह्यो छ ते बलिदान आपवानी वखते भद्रकाली देवीनो एवो कोप थयो के पाषाणनी प्रतिमा फाटीने तेमांथी पोते देवी साक्षात् प्रगट धईने पोताना सहस्त्रभुजाए करीने मारनार लोकोनी तरवारो तेमनां हाथमांथी झुंटावी लईने तेज तरवारो वडे ते सर्व लोकनां माथा एकदम कापी नाख्यां. ते माथीने दडानी पेठे आकाश्यां उछळीने पोतानी सखियो साथे रमत करी एवी कथा छे. माटे उत्तम पुरुष पशुना बिलदानथी एटलो बधा कोप थयो तो बिचारां गरीब अधम पशुने मारी बलिदान आपवाथी केटलो बधो कोप थशे तेनो विचार करवो जोईए.

अनुशासनिक पर्वणि अध्याय ११५.

नाभागेनोबरीषेण गयेन च महातमना ॥
आयुनाथा नरण्येन दिलीपरघुकुरुभिः ॥ ६८ ॥
कार्त्तवीर्या निरुद्धाभ्यां बहृषेण ययातिना ॥
नृगण विश्वगश्चेन तथेव रार्शाबंदुना ॥ ६९ ॥
युवनाश्चेन च तथा शिबिनौशा नरेण च ॥
मुचुकुंदेन मांधात्रा हरिश्चंद्रेण वा विभो ॥ ७० ॥
रेवते रंतिदेवेन वसुना संजयेन च ॥ ७१ ॥
एतैश्चान्येश्च राजेंद्र सोमकेन एकेण च ॥
एतैश्चान्येश्च राजेंद्र क्पेण भरतेन च ॥
दुष्यंतेन करूषेण रामालकेनरैस्तथा ॥ ७२ ॥
विरूपाश्चेन नामिना जनकेन च धीमता ॥
ऐलैन पृथुना चैव वीरसेनेन चैव हि ॥ ७३ ॥

इक्ष्माकुमा शांभुना च श्वतेन सगरेण च ॥
अजैन धुंधुना चेव तथेव च सुवाहुना ॥ ७४ ॥
ह्यश्वेन च राजेंद्र क्षुपेन भरते न च ॥
एतेश्वान्येश्व राजेंद्र पुरा मांसं न भिक्षतम् ॥ ७५ ॥
शारदं कोमुदं मासं ततस्ते स्वर्ग माप्नुयात् ॥
ब्रह्मलोके च तिष्ठंति ज्वलमानाः श्रियान्विताः ॥ ७६ ॥
तदेतदुत्तमं धर्म महिंसा धर्मलक्षणम् ॥
ये चरंति महात्मानो नाकपृष्टे वसंतिते ॥ ७७ ॥
मधु मांसं ये नित्यं वर्जयंति हि धार्मिकाः ॥
जनमत्रभृति मधं च ते सर्वे मुनयः स्मृताः ॥ ७८ ॥

अनुशासनिक पर्वाण अध्याय ११५

यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत्सुदारुणम् ॥
यश्चेवं वर्जयेन्मांसं सममेत्तन्मतं मम् ॥ ६२ ॥
कोमुर्द तु विशेषेण जुक्लपक्षे नराधिप ॥
वर्जयेन् मधु मांसानि धर्मोद्यत्र विधीयते ॥ ६३ ॥
चतुरोवार्षिकान्मासान्यो मांसं परिवर्जयेत् ॥
चत्वारि भद्राण्याप्तोति कीर्त्तिमायुर्यशोबलम् ॥ ६४ ॥
अथवा मासमेकं वे सर्व मांसान्य भक्षयन् ॥
अतील सर्व दुःखानि सुखंजीवेश्विरामयः ॥ ६५ ॥
वर्जयंति मांसानि मासशः पक्षशोपि वा ॥
तेषां हिंसा निवृत्तानां ब्रह्मलोको विधीयते ॥ ६६ ॥

इति सत्यम्

७ सातमां प्रभनो उत्तर.

भा प्रश्ननो उत्तर प्रथम प्रश्नोना उत्तरमा भतर्भत धई जाय छे; तो पण तेने भ-नुसरी काईक छक्कं छुं. पशुवध करवाने बदले ते पशुने नाक, कान, काम्याविना धूजन करी धर्बाढ, गुलाल विगेरे सौभाग्यवस्तुथी अंकित करी चिन्हवालां करी, अभेददान आपी छूटुं मुकी दीधामां आवे तो किया संपूर्ण थई गणाय कोई शास्त्रमां पशुनां नाक कान कापवानां कहां नथी. माटे शास्त्रचन रहित निर्मूल पोतानी गांठनुं गणुं मारी भोळालोकने भमाववा ए विद्वाननुं लक्षण नथी. आ प्रकरणने शोमावनार स्मरणमां आवेलां साहित्यनां व काव्य विद्वान् लोकनी सेवामां निवेदन करं छुं.

ते कान्यनुं संगति कारण आ प्रकारनुं छे के—कोई जगाए यह थतो हरो तेमां होम-वाने पराणे झाछी आणे तो बोकडो पोतानी जातना शब्दो करे छे. तेने जोई यह करनार राजाए त्यां ओर्चिता आवेछा कोई तत्वज्ञानी पुरुषने पूछ्युं के आ बोकडो शुं बोळतो हरो ? त्यारे ते तत्वज्ञानी पुरुषे राजाने प्रतिबोध करी पशुने छोडाववाबास्ते ब काव्य कहां छे. जेमके—

> नाहं स्वर्गफलोपभागतृषितोनाभ्यर्थितस्त्वं मया संतुष्ट स्त्रणभक्षणेन सततं साधो न युक्तं तव॥ स्वर्गे याप्ति यदि त्वया विनिहिता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो यज्ञं किं न करोषि मातृषितृभिः पुत्रैस्तथाबांधवैः॥१॥

ते वखत कोई बोकडमार वृद्ध विद्वान् बोल्यों के ए बोकडाना नाक, कान कापीने काढी मूको. तेना जवाबमां वळी बोकडो बोल्यों के—

हे साधो मम कर्ण नासिकमलं छेत्तुं वृथा भाषसे किं न खट्यभिचारिणी प्रियतमापुत्रोश्च पुत्रस्य च ॥ सवस्त्रप्रहणोद्यतस्य विहितभ्रूणप्रणाशश्वसु-मातुश्चापि कथं छिनित्स न ततच्छेत्तुं त वे बोचितम् ॥३॥

हे साधु तारुं कुन चन छ एटले तुं उपरथी तो साधु कहेतां साय माणस जिनो देखाऊं छुं पण अंतरथी तो घणो मेले असाधु छुं. केमके मारा नाक, कान कापवात तो अलं कहेतां अतिशे वृथा छे, शाधीके अपराधी होय तेनां नाक, कान कापवां जोईए. अने हुं तो निर-पराधी छुं माटे तारा घरवालानां नाक, कान कापवां योग्य छ. तेनां केम कापतो नथी एम देखाडे छे के—तारी प्राणिप्रया स्त्री तथा पुत्री ते तो व्यभिचारिणी छे. तथा तारी पुत्र सर्वनुं धन चेसवामां तत्पर छ. अथवा तारी यर्तिकित् मात्र धनादि वस्तु तेने केनानो उद्योग

करें हैं केहेंसा सने भारी नाखीन तारी माळमता छेवाना उद्योगमां छे. अने तारी बाछवि-धवा बेन छे ते गर्भपात करें छे अने नांनपणथो तारा बापविनानी थयेछी तारी मा पण एज कर्म करें छे तो पण तेमनां नाक, कान कापवानुं केम कहेतो नथी. माटे हवे तो तारांज नाक, कान कापवां योग्य छे. अर्थात् तारुं स्वजन कुटुंब जे खरुं दोषनुं मत छे तेने शिक्षा करावतो तथी. अने हुं जेवा अनाथ पामर निरपराधी जीवने मारवाने विषे तु तत्पर छे तेथी जो नाक कान छेदवां योग्य शिक्षा करवा राजा इछता होय तो तनेज करवी घटेछे. ३

आ प्रकारनां वचन सांभळी राजाए पशुहिंसानो त्याग करी हिंसक ब्राह्मणनुं मुख पण न जोवुं एवे। नियम र्छेई तत्वज्ञानीनो समागम करी काले करीने मोक्ष पाम्यो. एवी वात वृद्धपरंपराथी सांभळवामां आवी छे आ कालमां पण केटलाक विचारवा लायक पुरुषे कुकडां विगेरे पश्चोंने कांईपण क्षल कर्या विना माताने अर्पण करी तेने कोई मारे निहं एवा बंदोबस्तथी रमता मुकेछे. हवे आ अहिंसा निबंधनो आरंभ वेदना प्रमाण आपी कर्यो हतो तेमनी समाप्ति पण वेदना प्रमाणथी करुंछुं. सर्व प्रमाणमां वेदप्रमाण मुख्य छे (वेद प्रमाणम्) एम प्रसिद्ध छे माटे अने ते वेदमां पण सामवेद मुख्य छे केमके भगव-द्गीतामां श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं छे के:—

### वेदानां सामवेदोऽहं।

वेद मध्ये सामवेद ए मा**रुं** स्वरूप छे, ते सामवेदनुं उपनिषत् कहेतां साररूप (केनोपनिषद्-तस्यैव अन्यन्नाम तलवरोपनिषद्) छे. ते उपनिषद्ना चोथा खंडमां कह्युं छे के—

# योवा **एता** मेवं वेदापहत्यपाप्मान मनंते स्वर्गे छोके ज्येये प्रति तिष्ठति ॥

हिंसादि पापनो परिहार करवाथी स्वर्गीदिक सुख भोगवायं छे. पण पाप करी सुखी थवातुं नथी. एवो वेदादिक सर्व शास्त्रनो अभिप्राय समजी अज्ञानपणांमांथी चाछी आवती हिंसा करवा रूप अंधपरंपरानो परित्याग करवो.

शास्त्रिणा रामचंद्रेण दीनानाथ समुद्भुवा ॥ अहिंसायाः प्रबंधोयं रचितोऽस्तु सतांमुदे ॥ १ ॥ मदुक्तं श्रृणु राजेंद्र सार्थके तेऽपि नामनि एक मात्रापरित्यामा. न्मोहनो माहनो भव ॥ २॥ खशरांक मृगांकाब्दे नभस्या माह्वि वैक्रमे पूर्णकृतः प्रबोधोयं पशुहिंसा पराङ्मुखः ॥ १॥

शास्त्रि रामचंद्र दीनानाथ.

अमदावाद हालमां मुंबई.



आ पुस्तकमांना अभिप्रायोना छेखोनी कापी छखानों घणीज अशुद्ध छखी हती. परंतु तेने अमीए घणीज महनते यथामाति शुद्ध करी प्रसिद्ध करी छे. तो पण एमां मितमांद्यथी अथवा प्रमादथी जे दोष ख्छो हो मितनी कृषापर सूज्ञो क्षमा करी, सुधारी वांच हो. अने करेखा महत् प्रयासनुं साफल्य करहो एवी नम्र विनंति छे.

# पशुवध निषेध. भाग ३ जैरे

# उपसंहार.

-moderne

### पशुवध बंघ करावबा संबंधमा करवामां आवेलो प्रयास.

गये वर्षे दशराना तहेवारो उपर हिंदुस्थानमां जे पशुवध थायछे ते बंध कराववाना हेतुथी आपणा देशना तमाम देशी राजा महाराजाओ तथा जागीरदारोने आ पशुवध बंध कराववा अर्थे लगभग ३०० विनंतीपत्री गुजराती, मराठी, हिंदी अने अंग्रेजी भाषामां छपावीने मोकलवामां आव्यां हतां जेनी नकळ नीचे प्रमाणे छे.

श्री जैन श्वतांम्बर कोन्फरन्स ओफीस

चंपागळी मुंबई,

ता०

160

गोब्राह्मणप्रतिपाल, निराश्रिताधार, आर्थभूषण, प्रजापालक, न्याय-दया-क्षमा-आदिगुणालंकृत, धर्मधुरंधर, महाराजाधिराज महाराजजी साहेब.

श्री श्री १०८

नी खीदमतमां अरज मालुम थायजे

जेम अमे सांभळ्युं छे तेम दशराना पवित्र अने धार्मिक दिवसीमां हजुरना राज्यमां पाडा बकरांओनो वध करवामां आवेछे.

देवीने भोग आपीने संतुष्ट करवाना इरादाथी आ वध करवामां आवेछे, जेथी करीने महामारी [ प्रेग ] शीतळा, कोछेरा, आदि दुष्ट बिमारीओनी आफतो वस्तीमां आवे नहीं; परंतु दर वरस आवो वध थतां छतां प्रेग, कोछेरा, शीतळा, ताव, दुर्भिक्ष ( दुकाळ ) आदि आफतो हिंदुस्थानमां आव्येज जाय छे. राजाथी रंक सुधी सर्वेने पोताना पूर्व जन्मना कर्मानुसार सुख दुःख भोगववुं पडे छे, अने आ आफतो केवळ मनुष्योना पापोनी शिक्षारूप छे. आ पापोथी बचवाने वास्ते माणस निरपराधि ( निर्देश ) अवाचक ( मुंगा ) जानवरोनी हत्या करे आ केवो न्याय १ शुं आवा न्यायधी सर्व शिक्तमान परमेश्वर राजी थशे १ कदी नहीं.

नामदार अंग्रेज सरकारना राज्यमां पण वखतो बखत मरकी ( हेग ) विगेरे बीमारीओ आवेछ अने कुदरतथी नाबुद थायछे, तेवा रोगोनी शांतता माटे काई पाड़ी आदीनो पशुवध थतो नथी; परंतु तंनदुरस्तीना नियमोने अनुसरवामा इलाज लेवामां आवेछे. पशुवध शास्त्र रीति नथी, भावो निर्णय मोटा मोटा विद्वान शास्त्रीओनी सभाश्रीमां घणीएक वार थई चुक्यो छे, अने भावा असळ श्लास्त्रना अनुसार केटलाक धर्मिष्ट राज्य कर्ताभोए भा पशुवध पोतानी वस्तीमां सर्वथा बंध करावी, ते जानवरोनी नेक दुवा प्राप्त करीछे.

हजुर रहेमदिल, बुद्धिमान अने न्यायी होवाथी अमारी अरज छ जे दशराना दिवसे भापना राज्यमां पाडा, बकरां विगेरेनो वध बंध करवानो हुकम जारी करवानी मेहेरबानी फरमावशो अने सनातव आर्यधर्मनी रक्षा करशो.—एज अरज.

हजुरनो दानानुदास,

( सही ) वीरचंद दीपचंद सी. भाई. ई. जे. पी.

रेसीडंट जनरल सेक्रेटरी.

आ विनंती पत्रोनी साथे पत्नुवध निषधनो प्रथममाग पण घणीअ ताकीदश्ची जे जे ठेकाणे भाषा समजी शकाय तेम इतुं त्यां मोकळवामां आव्यो हतो. आ तजवीज दश्चराना बहिवारो घणाज नजदीक आव्या त्यारे करवानुं बनी शक्युं हतुं कारण के अभिप्रायोषुं पुरक्क मेळववामां ढीळ थई हती. तो पण घणीज मेहनते प्रथमभाग छपावीने मोकळवामां आव्यो हतो.

दशराना तहेवारो पहेळां १५—२० दिवस पहेळां जो आ अरजी अने पुस्तक मोकळवानुं बनी शक्युं होत तो हाळ जे परीणाम आव्युं छे तेथीपण विषेश परीणाम आवी शक्ते अने आवते वर्षे जो योग्य वखते तजवीज करवामां आवशे तो जरुर विषेश लाम थवा संभव छे.

पोनाने त्यां पशुवध बंध थयेलो एवा केक्लांएक ठेकाणेथी आवेलो उत्तरः

श्रा विनंती पत्रेना उत्तरमां नीचे जणाव्या प्रमाणे ठेकानेथी पोताने त्यां पशुवध थतो नथी एवा उत्तरो आव्यां हतां. तो आ राज्यकर्ताओंनो मुंगा अवाचक प्राणीओ तरफनी तेमनी लागणीने माटे अमे अंत:करणथी उपकार मानीए छीए अने बीजा रजवाडाओंने पण तेमने पगले चालवा विनंती करीए छीए.

मोरबीना ठाकोर साहेब, विजावरना महाराजा साहेब, गोंडलना ठाकोर साहेव, साय-लाना ठाकोरसाहेब, बोबिलीना महाराजा, ध्रांगध्राना महाराजा साहेब, कोठडा सांगाणीना ठाकोरसाहेब, लींबडीना ठाकोरसाहेब, पाटडीना ठाकोरसाहेब, खंबातना नबाबसाहेब, मादीनाना महाराजा साहेब, बरावना राजासाहेब, राज्लाना महाराजा साहेब विगेरे विगेरे. आ वर्षना प्रयासनुं थोडुं पण शुभ फळ अमे उपर कही गया ते प्रमाणे आ वर्ष मोडुं थई गयाथी आपणा दयाळु राज्यकर्ताओने आ संबंधमां योग्य विचार करवाने वखत मल्यो हतो नहि. अने तथी करीने फकत नीचे जणावेळ स्थळो शिवाय बीजे ठेकाणे आ विनंती पत्रोनी असर थेयेळी जाणवामां आवी नथी.

स्वस्थान जांबुवा, जामनगर, डुंगरपुर, वांसदा, रामपुरा, पाडीआ, गांफ, घसायता विगेरे.

पशुवध निषेध अने वर्तमान पत्रो

क्षमारा तरफथी मोकलवामां आवेलां विनंती पत्रोना संबंधमा नीचे प्रमाणे लेखी हिंदना जुदा जुदा भागना जाहेर वर्तमान पत्रो जेवाके, मुंबईसमाचार, अखबारे सोदागर, अखबारे इसलाम, जामेजमरोद, सयाजीविजय, मोहिनी, गुजरातिमित्र तथा गुजरातदर्पण, गुजराथीपंच, जैन, जैनविजय, धी इंडियन एडवर टाइझर, हिंदु पॉट्रियेट, पंजाब टाइम्स, एडव्होकेट, रंगून गॅझेट, जबलपुर पत्र विगेरेए पोतानुं मत प्रगट करी आ दुष्ट रिवाज तरफ प्रजानुं ध्यान खेच्युं हतुं जे माटे अमे अत्र तेमना उपकार मानीए छीए.

जैन श्वेतांबर कॉन्फरन्सः

# पशुवधनिषेध.

# भाग ३ जो.

नं. १

# સ્વ. શ્રી મારબી-હજુર એાર્રીસ,

તા. ૨૬-૯-૧૯૦૬.

શ્રી જૈન <sup>શ્</sup>વેતાંખર કાેન્ફરન્સ તરફથી.

મિ. વીરચંદ દીપચંદ.

આપણા તરફથી તા. ૨૦–૯–૦૬ નાે સૂચીપત્ર ખડાનેક નામદાર મહારાજા સાહેળ હુજુરમાં પહાંચ્યા છે. તેના જવાબમાં ક્રમાનથી લખવાનું જે આ સ્વસ્થાનમાં દશરાને દિવસે કાેઈપણ જાતના પશુવધ કરવામાં આવતા નથી; જેથી તે ખબર જાણી આપે ખુશી થવા જેવું છે. તા. સદર.

પ્રાણ્**લન રાજપાલભાઇ.** હજીર શિરસ્તેદાર, સ્વ. મારબી.

नं. २

### विजावर

ता. २४-९-०६.

महाशय,

आपका पत्र ता. २० सितंबरका श्री मानसवाई महाराजा साहिब बहादुरकी सेवामें पहुंचा. आज्ञानुसार छिखता हुं कि इस रियासतमें कोई पशुवध दशहरा (विजयादशमी) को नहीं होता किंतु पशुके बदछे कुमडाका फल देवको समर्प किया जाता है वैश्नवी पदित पुजनकी है.

भापकाः शुभित्वकः, दुर्गापसादः प्राईवेट सिकचरः

# नं. ३

### એાંડલ.

તા. ૨૫-૯-૧૯૦૬

સકલસો મ્યગુણગણાલ કૃત રા. રા. કોઠ વીરચ દ દી પચ દ.

સી. આઈ. ઇ. ઈત્યાદિ, મું બઈ.

વિશેષ વિન'તી કે આપના ચાલતા માસની તા. ૧૮ મી ના પત્ર અમારા નામદાર મહારાજ ઠાકાર સાંહેખને મળતાં તેના ઉત્તરમાં અહીંના રાજ્યમાં દશરા કે એવા કાઇ માંગલિક દિવસાએ પાડા કે અકરાંના વધ થતાજ નથી એવા ખબર પાતાના સલામસાથે આપને આપવા તેઓ સાંહેખનું કરમાન થએલું છે તે વિદિત થાય. તા. સદર.

લિ. સેવક.

મણીલાલ ગાવી દરામના યથાયાગ્ય.

नं. ४

સાયલા.

તા. ૨૦-૯-૧૯.૬.

#### શેઠ વીરચંદ દીપચંદ.

સી. આઇ. ઇ. જે. પી.

મું અઇ.

આપના તા. ૧૮-૯-• ક ના પત્ર અમારા નામદાર ઠાકારસાહેળ ઉપર આવ્યા. જેમા ટુંકા વિસ્તારથી દશરાનાં પવિત્ર દિવસે પશુવધ અટકાવવા વિગેરે માટે જે શિક્ષ-ખૂતા અતાવેલ છે તેના સંબંધમાં પ્રત્યુત્તર લખવા ફરમાન થતાં આપને લખવા હાંસલ કે, આ સ'સ્થાનમાં દશરા યા કાઈ પણ દિવસે પશુવધ યાને જીવહિંસા મૂલથીજ કરવામાં આવતાં નથી.

આવું સ્તુતિપાત્ર પગલું જે આપે ભરેલું છે. તેને માટે આપને ધન્યવાદ ઘટતાં એ આપની ઉજવળ સુકીતિનાં ચિન્હાે છે.

આ પ્રસ'ગે અમારે જણાવવાની જરૂર પહે છે કે, હાલમાં હિંદુસ્થાનમાં કેટલાક ભાગામાં ગાવધ થતા કહેવામાં આવે છે તે તરફ આપે મજબુત ઉપાયા ગ્રહણ કર્યા હશે તા પણ એ વિષે ખાસ જરૂર નેઇતા ઉપાયા લેવા ભલામણ કરીએ છીએ. તા. સદર.

> KALLIANJI. આ. કારલારી-સાયલા.

# नं. ५

BOBBILI.

25-9-1906.

SIR,

I am desired by the Maharajah of Bobbili to acknowledge your letter of the 21st instant and to inform you that there is no custom of sacrifices of animal to the goddess in these parts except in rural villages as you supposed.

Yours faithfully,
W. K. SARMA.
HAZUR WRITER.
Huzur Office.

नं. ६

DHRANGADHRA 21-9-6

The

Resident general secretary Jain Swetamber conference office, Champagali, Bombay.

SIR,

I have the honour under instructions from His Highness the Maharaja Rajsaheb to acknowledge the receipt of your letter of the 18th instant and to state that the killing of an animal on the Dasara holiday was a religious rite performed in the Jhala family of the Rajputs whose head His Highness the Rajsaheb is, but that since his accession to the gadi, which went took place in December 1900, His Highness has prohibited this ceremony out of regard to the common principles of humanity so nobly cherished by the Jain community.

The right has ceased altogether in this state and I may remind you, that His Highness' action was myde the subject of a congratulatory address presented to His Highness when he visited Bombay in 1902 at a public Meeting of which you were the president.

I have the honour to be Sir,

Your most obedient servant
Parshuram B. Purmarker
Private Secretary to
H.H. the Rajsaheb Dhrangadra

## नं. ७

सूनी राजधानि.

ता. १० अकतूवर १९०६.

यथायोग्य श्रीकारपूर्वक जैनश्वेताम्बर कॉन्फरन्स रेसिडंट जनरल सेक्रेट्री साहिब.

वापका प्रेषित पत्र २३-९-१९०६ का प्राप्त होकर असीमाल्हाद हुवा. सो धन्य-वादादनन्तर जवाबन् तेहरी रहे के इस हमारे राज्यमें असी पचास व पचपन सालसे दश-हरा आदि नवरात्रेकी देवी पूजामें पाडा वगैराके बलिदानकी रस्म मेरे पिताजी साहिबके सम-यसे बिलकुल मोकूफ की गई है. जिसकी पुष्टिमें हमनेभी यथाशक्य सहायताकी और आई-दाके लिये भी इस कुरीतिके रोकनेमें तत्पर हुं. याने जहांतक मुमिकन् हे वकरां वगैरह वेजवान् पशुओंके वध रोकनेका उपाय भी किया जाता है और उन्की रक्षाका ख्याल रखा जाता है. और हमारी हरगीज येः मनशा निह है के किसी भी किस्मके वेजवान् पशुकी हिंसा हो यतः यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपत्र्यित ॥ सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विज-गुप्सते ॥ अन्यज्ञ ॥ सर्वभृतेषु चात्मानं सर्व भूतानि चात्मिनि ॥ समपत्र्यन् ब्रम्ह पर्मं याति नान्येन हेतुना ॥ अतएव ॥ अहिंसा पूर्वको धर्मः यस्मात्सिव्हिख्दाहृतः ॥ इति ॥

परन्तु हमारे इन पहाडी राज्योमें क्षत्रियजाति और विशेषतः शूद्रजातिकी आधिक्यता बैनिकी वजेसे विजयादशमी आदि देवी पूजाके अतिरिक्त विवाहाऽऽदिक उत्सवोर्मेभी वक्तन् फरवक्तन बकरे आदि भक्ष्य जीवोंका वध कर्ते है. इस्को उक्त जातीय रास्त्रविद्याके संबंधमें स्वजातीय धर्मख्याल कर्ते है. इस्के रोकनेपर ये उजर कर्ते हैं के यदि इस रस्मको बंद किया जायगा तो राख्नसंचालन विद्याके त्यागसे हम और आइंदा हमारी सन्तती ऐसी वुजदिल हो जायगी के भाछ वगरह जंगली दरिंदे जानवरानसे अपनी मवेशी और खेतीवाडी जिसपर हमारी जिंदगीका दार व मदार है रक्षा कर्नेमें असमर्थ हो जायगी. सो यदि जीवींहसा वंद कर्नेके लिये उक्त प्रजासे वलात् शस्त्र लेनेकी चेष्टा की जावे तो इस्से प्रत्यक्षतः तीन हानि जे होती हैं (१) स्वजातिद्वेष, (२) प्रजाद्वेष (३) प्रजादःख अगर इस्को एक प्रकारका प्रजानाशभी कहा जाय तो इस्मे व्याजोक्ति और अत्युक्ति दोष नहीं है. क्योंके श-स्रोंके ही वलसे पहाडी प्रजागण दरिंदा व गुजन्दा जंगली जानवरानसे भन्नी जान और विशे-षतः खेतोंके अनाजकी रक्षा कर्ते हैं. परन्तु दढ आशा की जासक्ती है के ज्यों ज्यों विद्याका प्रचार वृद्धिको प्राप्त होता जायगा और साथ साथही अहिंसा प्रमोधर्मी: । और योऽतियस्य यदा मां समुभयोः पश्यतान्तरम् ॥ एकस्य क्षणिका जीतिरन्यः जाणैर्विमुच्यते ॥ १ ॥ ऐसे ऐसे भयोत्पादक हिंसानिवृत्तिके सदुपदेशभी होते रहेंगे तो स्वतः प्रजावर्गके दयाका अंकुर उत्पन्न होकर धीरे धीरे विद्युत्सरूप धारण करके इसकुं प्रथाके हिंसारूप

वृक्षको छिन्नभिन्न करके निर्मूछ कर देगा. परन्तु इसमें उद्यमकी आवश्यकता है, सो महाशय करही रहेहें अपरंच हम आपके छेखको सीकृत करके कोटिष: धन्यवादा दनंतर जिन हमारे पंजाबप्रातकी राजधानीओं अपी रूढी कामना सिद्धिके छिये पाढोंका वकस्रत बछिदान या वेरहभीसे वध होता है उनके नाम सूचनार्थ जेछमें दर्ज करते हैं. नाम राजधानी (१) सुकेत, (२) मराडी, (३) कांगडा ज्वाछामुखी, (४) नाहन समींर, (५) क्योंट भजुगा—आदि और इस प्रान्तकी छोटी छोटी चन्द्र राजधानी जे है सो आप इन नरेंशोकी सेवामें इस पशु क्छेश निवारक पत्र भेजनेका यत्न करें. और किसी संस्कृतज्ञ उपदेशक पण्डित साहिबकोभी इन नरेशोंकी सेवामें भेजनेका उद्यम करे. परन्तु उपदेशक साहिब इन राजधानीओं जानेसे पेश्तर मुझसे साक्षात्कार करछेवे क्योंके उन्को इस अमरमें कुछन शेव व फराजम ए इस तर्फकी राह व रस्मके समझादिये जावे ताके हमभी वेदानुकूछ उन्की सहायता कर सके बहुनाऽछम्विज्ञेष्विति ॥ संवत् १९६३ कार्तिक प्र० ४॥

॥ महाराणादि पदवाच्य भज्जो देशाधिप दुर्गासिंह वम्मेणः हस्ताक्षराणि ॥

# नं ८

# કાટડાસાંગાણી.

મેહેરબાન વીરચ'દ દોપચ'દ સી. આઈ. ઈ. જે, પી.

રસીડન્ટ જનરલ સેક્રેટરી સાહેખ શ્રી જૈન શ્વેતાંખર કાેન્ક્રરન્સઓપ્રીસ—મું અઇ. વિ. કે આપના તરફથી અહીંના ખુદાવિંદ ઠાકાેરસાહેખ ઉપરના દેશી રાજયામાં દશરાના પવિત્ર અને ધાર્મીક દિવસામાં પાડા અકરાંના વધ થતા હાેય તાે તે અધ કરા વાના હુકમ કાઢવા તથા સનાતન આર્યધર્મની રક્ષા કરવાના ગયા માસના તા ૧૮ મી. ના છાપેલા વિન તાપત્ર મળ્યા છે, તેના જવાખમાં આપને લખી જણાવવાનું કે આપ જાણીને ખુશી થશાે કે અહીંના રાજ્યમાં ઘણા વર્ષો થયાં તેવા દિવસામાં પાડા અકરાંના વધ ખીલકુલ થતાે નથી એટલુંજ નહિ પણ તેવા મુંગા પ્રાણીએા તરફ ખુદાવિંદ ઠાકાર સાહેખની ઘણી દયાની વૃત્તિ રહેલી છે.

તેમજ ધર્મ તરફ તેઓ સાહેખની લાગણી પણ વિશેષ દાવાથી સનાતન આર્યધર્મની રક્ષા કરવા તેમજ ઉત્તેજને આપવાને માટે હમેશાં તેમના તરફથી કાશીશ જારી રહેલી છે.

આપના તરફથી "પશુવધના સંખ'ધમાં હિંદુશાસ્ત્ર શું કહે છે" તે પુસ્તકના ભાગ ૧ લા મળ્યા છે ને ભાગ ૨ જો તૈયાર થયે તે પણ માકલાવવાની કૃપા કરશા. કારણ કે તેમાંથી પણ ઘણું જાણવાનું અની શકે તેવું છે. તા. ૩–૧૦-૦૬.

કારભારી–કાટડા સાંગાણી. 🗷

D. P. & 100

# नं**.** ९ વારાહી,

તા. ૨૮-૯-૧૯-૬.

મિ. વીરચંદ દોપચંદ, સી, આઈ, ઇ, જે, પી, શ્રી જૈન શ્વેતાંબર કેાન્ફરન્સના રેસીડન્ટ જનરલ સેક્રેટરી સાહેબ.

આપના તા. રલ્ન-૯-૦૬ ના પત્ર મલ્યા-વાંચી બીના જાણી. અવાચક પ્રાણીઓના રક્ષણાર્યે આપની પરાપકાર વૃત્તિ તથા જીગર પૂર્વકની લાગણી એઈ અમને પારાવાર ખુશાલી ઉપજે છે અને તે બામત અમા આપને ધન્યવાદ તથા મુખારકી આપીએ છીએ. અને તેના સંબંધમાં આપને જણાવવાનું કે અમારા રાજ્યની અંદર દશરાની કીયાઓની અંદર તેવા પશુવધ બિલંકુલ કરવામાં આવતા નથી, એમ જણાવવાને અમાને ખુશી ઉપજે છે, એટલુંજ નહિ પરન્તુ તેવા રિવાજ આ રાજ્યની અંદર પ્રથમથીજ નથી. તેવાં પ્રાણીઓની તરફ અમા બહુજ દયાની હૃષ્ટિથી એવા ખુશી છીએ. આપની તન્દુરસ્તી ચાહું છું. આ તરફનું કામકાજ બીજીં લખાવશા-હાલ એજ.

નામદાર હુજીર સાહેખનાં ક્રમાનથી.

લિ. સેવક**.** 

Baxi.

Head clerk Warahi state.

नं. १०

કટાેસણા.

તા. ૧૬–૧૦–**૦૬**. મ<sup>•</sup>ગળ.

શ્રાં જન રવેતાંબર કેાન્ક્રરન્સ એાફ્રીસ.

ચ પાંગદ્ધી–મું બઈ.

આપના ગયા માસની તા. ર૧ મીના પત્ર મલ્યેા. તેમાં પશુવધ 'શાસ્ત્ર રીતિ ન**થી** એ વિષે વિવેચન કરી આપે જે મહાન્ કાર્ય બજાવવા ઉત્સાહ અને ખ'તથી મને જે ભલામણ કરી છે તે ખાતે હું આપના અ'તઃકરણ્**યી** આભાર માનું છું.

અત્રે દશરાના તેંદ્રેવારમાં માતા આગળ પૂર્વના જડ ઘાલી બેઠેલા અજ્ઞાન વિચા-રાશી જે પશુવધ થતો હતો તેમેં અયા ત્રણ વર્ષાથી હંમેશને માટે બ ધ કર્યો છે. અને જયાં જયાં આ તેહિવારમાં માતા આગળ પશુવધ થતા માલુમ પડે છે, ત્યાં ત્યાં આગ્રહ પૂર્વક ખ'ધ કરાવવામાં તજવીજ થાય છે. તો પણ આપે સમયાનુસાર જે ચેતવણી આપી આપની ક્રજ અદા કરી છે જેને માટે હું ધન્યવાદ આપુ' છું.

અમારા તાલુકામાં આ દશરાના તેહેવારમાં માતા આગળ થતા પશુવધ હુમેશને માટે બ'ધ કરેલા છે તેના દાખલા બીજાં રાજ્યા કે જ્યાં આવા તેહેવારામાં પશુવધ થતા હાય તેઓ લેશે એમ હું આશા રાખુ છું. અને એટલા માટે આ દાખલા શ્રી જૈન પેપરમાં પ્રસિદ્ધ કરાવવા આપને હું ભલામણ કરૂં છું.

> હું-છું-આપના ઉન્નતી ચાહક. Takhat sinhji K. ઢાકાર શ્રી. તાલુકા કટાસણા.

नं. ११

લીંબડી.

તા. ૨૭-૯-૧૯-૬-ગુરૂવાર.

મેહેરખાન શેઠ સાહેખ.

વીરચંદભાઇ.

મું બઇ.

દશરાના દિવસ ઉપર પશુહિ સા ખ ધ કરવાના સ ખ ધમાં આપના તા. રુ મીના પત્ર નામદાર ખુ. હજુર સાહેખ શ્રીને નીઘા રાશન થયેલ છે. તે સ ખ ધમાં લખવાનું કે આપનું લખવું યાગ્ય છે. પર તુ આ રાજ્યમાં તેવા પ્રસ ગે કાઈ પણ પશુવધ મૂળથીજ કરવામાં આવતા નથી. તેથી તે અ ધ કરવાપણુંજ નથી એ આપના ધ્યાનમાં આવશે. તા-સદર.

પ્રભાલ જીવણુલાઇના સલા**મ.** સેક્રેટરી ઠાકાર સા**હેળ–લી**'બડી.

नं. १२

પાટડી.

સ્વસ્તિશ્રી મું બાઇ અ'દર મહા શુભસ્થાને સર્વે શુભાપમા ચાગ્ય શેઢ્છ વીરચંદ દીપચ'દ સી. આઇ. ઇ. જે. પી. ની ચીર'જવી. જોતાન શ્રી પાટહીથી લખાવીત કરખર શ્રી સુરજમલજીના રામરામ વાંચને. વિશેષ આપના પત્ર તા. ૧૮-૯-૦૬ ના દશરાના પવિત્ર અને ધાર્મીક દિવસામાં પાડાં, અકરાંઓના વધ કરવામાં આવે છે તે અધ કરવા વિગેર સંઅધીના આવ્યા તે વિષે જણાવવાનું કે આપે આવાં મુંગા પ્રાણી ઉપર હત્યા નહીં ગુનરવા આખત જે પરીશ્રમ લીધા છે તે નણી ઘણા ખુશી થયા છીએ. અમારા સ્ટેટમાં આવા મુંગા પ્રાણી ઉપર ઘાતકીપણું ગુજરવામાં આવતું નથી તે સહેજ નાણવા સારૂ લખ્યું છે.

અત્રે સર્વ કુશલ છે, આપની ખુશાલી ચાહીએ છીએ.

આ તરફનું કામકાજ બીન જીદાઇ લખશા. સા. ૧૯૬૨ ના આશા શુદ્દી ૬ તા. ૨૪ માહે સ'દે'બર સને. ૧૯૦૬.

# **નં.** ૧૨ ખંભાત.

શ્રી જૈન શ્વેતાંબર કેન્ફરન્સના જનરલ સેક્રેટરી સાહેબ તરફ સ્વસ્થાન ખંભાતના દિવાન તરફથી લખી માકલવાનું એ જે આપના છાપેલા કાગળ તા. ૧૮ મી સપ્ટ-મ્બરના દશરાના દિવસે બકરાં પાડાના વધ અટકાવવા સંબ'ધીના નામદાર નવાળ સાહેબ બહાદુરને મલ્યા છે. તેના જવાબમાં આપને જણાવવાને મને ઉમંગ થયા છે કે દશરાના દિવસે બકરાં પાડા વધ કરવાના અત્રે રિવાજ નથી. તે સાથે આપ જાણીને રાજ્ થશા કે આ મુસલમાની રાજ્ય છતાં આ રાજ્યામાં ગૌ વધના પ્રતીબ'ધ લાંબી મુદતથી કરવામાં આવ્યા છે. અને તેજ પ્રમાણે હજા સુધી પ્રતિબ'ધ કાયમ છે. તા ૨૦–૯–૧૯૦૬. દીવાન.

नं. १४

Madena 28th September. 1906r

From

B. Raja Rajaswara Sathupati

Minor Raja of Ramnad.

To

The Secretary Shri Jayna Swetamber Conference

Your letter asking to stop animal sacrifice during Dasara festivals at Ramnad to shree goddess Raj Rajaswari to hand. This custom has been

abandoned since 12 years under personal orders from H.H. the Jagad Guru Maha Swamiji of Sringari Mysore.

Many thanks for your kind and noble undertaking as my father to whom you the leter died. I have taken the liberty of replying to you.

Yours truly,
B. RAJA RAJSWARA.
MINOR RAJA RAMNAD.

# नं. १५

### बरावँ, करछन, इलाहावाद.

१६-१०-१९०६.

शीयुत वीरचन्द दीपचन्द रेसीडेन्ट जनरल सेक्रंटरी श्री जैन श्वेताम्बर कान्फरन्स समीपेषु, महाशय!

भापका पत्र सेवामें श्रीमान कुंबर राघव प्रसाद नारायण सिंहजी देव बरावाधिपतिके उपिथत किया गया. श्रीमानने कया ये लोगोंके जीव रक्षांके उद्योग करनेकी उपत्याधिक प्रशंसा की भौर यह राज्य श्री रामानुजीय वैश्ववकी है. यहां किसी पशुपक्षीका वध किसी भौसरमें नहीं होता. जीवोंपर दया करना इस मतका सिद्धान्त है-कमधिकम्

भवदीय

भैरवसिंह बर्म्मा

नं. १६

राजूला.

प्रिय महाशय,

आपका खत पाया हाळ जानयस हमारे रियास्तमे किसी पशुका काम नहीं कराया जाता. आपको यकीन रखना चाहिये कि यहां धर्मसे विकद्ध कभी न होगा आपको यकीन रखना चाहिये क्येंकि कोई सखस एसा काम करता है उसको सजाय जेहळकी जाती है जबाब पोंचे:

RAO RAMPRASAD JAJIRDAR of kamtee. Rojowla.

નં. ૧.

**\*** ~ ·

# મુંબઈ સમાચાર.

મું અઈ તા. ૨૧-૯-૧૯∙૬.

દશરાના પવિત્ર હિંદુ તેહેવાર ઉપર વહેમથી હિંદુ રાજ્યામાં ભાગ થઇ પડતાં પ્રાણીએા તરફ દયાભાવ રાખવાની કરવામાં આવેલી વાજળી અરજ.

દશરા એટલે કે આારવન શુદ દશમના દિવસ હિંદુ ભાઇએ વચ્ચે ઘણા શુકન ભર્યા અને પવિત્ર ગણવામાં આવે છે. હિંદુભાઇએોને કેોઇ પણ સાહસ ખેડવાનું હાય ત્યારે તેએા **તેની શરૂ**આત કરવા માટે દશરાના દિવસ પસ**ંદ** કરે છે, કારણકે શ્રી સીતાજીને હુરી જનારા રાવણ ઉપર શ્રી રામચ'દ્રજી જે દિવસે ચઢાઇ લઈ ગયા હતા તે વિજયા દશમી અથવા દશરાના દિવસ હતા. તે ઉપરાંત મહાભારતમાં પણ આ દિવસ માટે ઘણું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. મહાભારતના વિરાટપર્વમાં જણાવવામા આવ્યું છે કે, પાંચ પાંડવામાંના એક અર્જાને જે હથીયારાને એક વર્ષસુધી નહીં અડકવાની ખાધા લઇને સમડીનાં ઝાડ ઉપર સંતાડી રાખ્યાં હતાં તે આખું વર્ષ ખલાસ થયા પછી ઝાડ ઉપરથી વિજયા દશમીને દિવસે ઉતાર્યાં હતાં. અને તે પછી તેણે જે પરાક્રમ કરવા આરંભ્યા તેમાં તેને કૃતેહ મળી હતી. એ કારણાને લીધે વિજયા દશમીના દિવસ ઘણા શુભ ગણવામાં આવે છે, અને તેથી તે દિવસે કેટલીક ધાર્મીક ક્રિયાએા દાખલા તરીકે સમડી પૂજન વગેરે કરવાના રિવાજ દા-ખલ થયેા છે. સમડીનું પૂજન કરવાનું મુખ્ય કારણ એટલું જ છે કે તે ઝાડને પવિત્ર માનવામાં આવે છે, અને અર્જાને તે ઝાડ ઉપરથી હથીયાર ઉતારતાં પહેલાં તેની પૂજા કરી હતી. તેથી દરેક હિંદુરાજા તે દશમીને દિવસે સમડીના ઝાડનું પૂજન કરવાની ક્રુજ માને છે ઇતિ-હાસિક પુસ્તકા વગેરમાંથી તેટલું મળી આવે છે, પણ તેની સાથે પાડા યા બકરાંના ભાગ આપવાના રિવાજ કયારથી દાખલ થયા તે કાંઇ મળી શકતું નથી, અનુમાન માત્ર એટલુંજ કહાડી શકાય છે કે જે કાળમાં ખાદાણા વેદાલ્યાસમાં નખળા પડતા ગયા ત્યારે નવા તત્વા ઉમેરીને પાતાનું સર્વાપરીપણ ટકાવી રાખવાની તજવીજ કરવા લાગ્યા, તે વખતમાં આ રિવાજ દાખલ થયા હશે. મહાકાળીના ભક્તા તે દેવીના ભાગ ચઢાવવામાંજ પાતાનું કર્ત્તવ્યા માને છે. અને ખંગાળામાં દુર્ગા પૂજાના એટલે કે વિજયા દશમીના દિવસે હજારા ખકરાં મહાકાળીના નામે રે દુસવામાં આવે છે તે આપણુ જાણીએ છીચે. પણુ હિંદુરાજા, મહા-રાજાઓ માત્ર પ્રાह્મણાનાં ગુરૂપણાં હેઠળ કામ કરતા આવ્યા છે, તેઓએ દશરાના પવિત્ર દિવસે પશુવધ કરવાના રિવાજ શા કારણે અને કયારથી પસંદ કર્યાં તે નકી કહી શકાતું નથી. એટલું તાે ચાક્કસ છે કે જે રાજકત્તાં આ તે રિવાજનું નિરૂપયાગીપણું નેઇ શકયા છે તેએ તે અધ કરવામાં પછાત પડ્યા નથી; તેા પણ હુજુ ઘણા રાજકર્તાએા આગલા વખતથી ચાલતા આવેલા રિવાજ બંધ પાડવાની જરૂર નેઈ અથવા હિ'મત બતાવી શકતા

નથી. રાજાઓ એ પવિત્ર દિવસે દેવાને નામે પશુવધ કરે એટલે પ્રજાના કાઈ માણુસા પણ તેમ કરે તે અટકાવવાનું ખની શકે નહી. કાળી, ભીલ વગેરે જાતના લાકા પણ તે દિવસે ખાસ કરીને પાડાઓના વધ કરે છે, અને તેથી જોકે પ્રજાના ઘણાક લાકાની લાગ. ણીઓ દુખાય છે તા પણ તે ચલાવી લેવામાં આવે છે. તે રાજકર્તાઓ પાસે તેમની પ્રજા તરફથી ખાનગી રીતે અરજ કરવામાં આવતી રહી છે, પણ તે ઉપર ઘટતું ધ્યાન આપવામાં આવ્યું નથી; જેનું કારણ ચાલતા આવેલા રિવાજને અધ પાડવાની અનીચ્છાનુંજ આપણે જોઇયે છીએ. પ્રજાવર્ગના ચાહ્કસ લાકા પાતાનાં ધાર્મીક જનકને અગે એકાંતમાં ગમે તે રીતે કામ લે તે સામે બીજા ધર્મના લાકા વાંધા ઉઠાવી શકે નહીં; પણ એક ધર્મનિષ્ઠ રાજકર્તા તેવા વાંધા ભરેલા રિવાજને સ્વકૃત્યવડે ઉત્તેજન આપે તે સામેતા તેની પ્રજા વાંધા ઉઠાવે તે વાજબી ગણવા અને તે ઉપર ધ્યાન અપાયું જોઇએ.

પશુવધ કરવાના તે રિવાજ સામે જાહેરરીતે વાંધા ઉઠાવવાની શરૂઆત આશરે ચાર વર્ષની વાત ઉપર મુંબઇના કેટલાક હિંદુ અને જૈન પ્રહસ્થા તરફથી કરવામાં આવી હતી, પણ તે વખતે કેટલીક કહ ગી રીતે કામ લેવામાં આવ્યું હતું. છેક છેલ્લે દિવસે મુંબઈની ગેઇડી નાટક શાળામાં એક સભા ભરવામાં આવી હતી અને તેમાં ઠરાવ પસાર કરવાખાદ કેટલાક રાજકર્તા<mark>ંઓ ઉપ</mark>ર તારના સંદેશા માેકલવામાં આવ્યા હતા કે તેઓ પશુવધ કરશે તા પ્રજાની લાગણી દુખાશે. એક ખાનગી શખ્સ પણ એ જાતના કરમાનને માન આપવાની દરકાર નહિં કરે, તો પછી એક રાજકર્તા તેનાં કરમાનના અમલ ક્રેમ કરે તે સમજતાં કદાચજ મુશ્કેલ પડશે. તે પછીનાં વરસે પણ છેક આખેરીમાંજ તેની હિલચાલ કરવામાં આવી હતી, અને એક વખત મું બઇમાં ચાકસ રાજકર્તાઓની હાજરાના લાલ લઇને એક ડેપ્યુટેશને તેમની મુલાકત લીધી હતી જે વેળાએ વિવેક ભર્યા જવાળ વાળી ધ્યાન આપવાનું વચન આપવામાં આવ્યું હતું. છવ દયાના ઝુંડા ઉપાડનારા જૈનાએ તેની સાથે સાથે દર વર્ષે પાતાની કાન્ફરન્સામાં દશરાને દિવસે કરવામાં આવતા પશુવધ માટે દીલગીરી જાહેર કર્યા કરી છે અને તે અટકાવવામાટે આગઢ કર્યા **છે તે** રીતે ચારેક વર્ષ માત્ર ઠરાવા કરવામાં પસાર થયા પછી આ વરસે જે વળણ જૈન કાેન્ક્રરન્સના કારાેખારાઓએ ધારણ કરી છે તે આગલાં અધાં પગળાંથી જાદા પ્રકારની અને પસ'દ કરવા જોગ છે. જૈન કાેન્ક્ર્રન્સના મુંબઇ ખાતેના રેસીડન્ટ જનરલ સેક્રેટરીએ નુદા નુદા રાજકર્તાએ ઉપર એક વિવેક લયા પત્ર લખી અરજ ગુજારી છે કે સનાતન આર્યધર્મના રક્ષણાર્થે અને અવાચક નિરપરાધી જાનવરાની હત્યા થતી અટકાવવા માટે તેઓ પાતાના રાજ્યમાં પાડા <mark>ખકરાં વગેરેના વધ બધ કરવાન</mark>ા હુકમ કાઢરો અથવા જારી કરશે. તે અરજ વિવેક સાથે અને ઘટતી દલીલા જોડે કર-વામાં આવી છે. અને તે ઉપર ઘટતું ધ્યાંન આપવાની જરૂર રાજકર્ત્તાંએા સ્વીકારશે તે જૈન જેવી કાેમને ખુશીજ કરવાનું કામ અજાવશે. ઘણા હિંદુ રાજકત્તાંઓએ પાતે વધ કરવાનું ખંધ કર્યું છે. અને બીજાઓ કરતા હાય તેમને પણ અટકાવવાના હકમ કઢા-ડયા છે. તેના માટા ભાગ ખુશી થયા છે. વળી , પાતાના રાજ્યની હદમાં તેવા હુંકમે કહા-

ડવાની સપૂર્લું સત્તા તેઓ ધરાવે છે, જોકે કદાચ કાેઈ સ્થાનીક સંભેગા જીદા દાવાને લીધે તેવા હુકમ મહિ કહાડવામાં તેઓ વાજળી રીતે કામ લેતા ગણી શકાય તે સત્તાના ઉપયોગ કરવા ન કરવા તેના આધાર રાજ્યકર્તાઓ અને તેમના સુકાનીઓ ઉપર રહે છે, પણ આપણે તાે તેમને સૂચના માત્ર કરવાના અધિકારી છીયે, અને તે ઉપર તેઓ ઘટતું ધ્યાન આપે એટલીજ આપણે ઉમેદ ધરાવીશું.

નં• ૨.

# અખબારે સાદાગર,

મું**બર્ડ,** તા. ૨૧-૯-૧૯**૦**૬.

### દશરાના દિવસે પાડાના થતા વધ તે અઠકાવવાને હિંદ રાજ્યોને જૈન અપીલ.

દશરાના હિંદુ તંહેવાર ઉપર! કરવામાં આવતા પશુવધ અટકાવવાને હિંદુ રાજ-કતાએ ને શ્રી જૈન શ્વેતાં ખર કાેન્કરન્સના રેસીડેન્ટ જનરલ સેકેટરી મિ. વીરચ'દ દીપ-ચંદ સી. આઇ. ઈ. તરફથી કરવામાં આવેલી અરજ અમા અમારા ગઇ કાલના અ'કમાં પ્રગટ કરી ગયા છીએ, દરસાલ હિંદુ ભાઇએાના એ સગણવ'તા તહેવારને ટાંકણે મુંગા **જાનવરાની કરપી**ણ કત્તલ કરવાના સે'કડા કસકસાટ ઉપજાવનારા અનાવા દેશી રાજ્યામાં ખને છે, અને દરસાલ તે કરપીણકત્તલ અટકાવવાને અનેક અરજીઓ દયા ધર્મને માન-નારી! જીવદયાળુ જૈનકામ તરક્થી કરવામાં આવે છે; પરંતુ હુના તેનું નેઇએ તેલું મનમાનતું પરિણામ આવેલું નહીં જોઈ, કેળવાયલા હિંદુવર્ગ ખરેખર દિલગીર થશે. ક લવણી અને સુધારા વધારાના આ. જમાનામાં વહેમ, અજ્ઞાનતા અને ખીન કેળવન ણીના જ'ગલી જમાનાની માકુક ધર્મને ખહાને મુ'ગા પ્રાણીઓના વધ કરવાના દહાડા હવ વહી ગયા છે, કારણુક કેળવાયલી ખુદ્ધિ, સાદી સમજ અને ધુજરી છુટાવનારૂં કામ કરવાને આજના જમાના સાકુ ના પાઉ છે. આજના જમાના કેલવણી રૂપી સુર-જના અળવડે અધકાર રૂપી અધારાના નાશ કરનારા છે, તેમ છતાં સુધરેલા જમાનાને નહા છાજતા બનાવા બને એ ખરે એક વિચિત્ર ખીના છે. અમાને જણાવવાને સંતાષ ઉપજ છે કે અગાઉ દેશી રાજ્યામાં પાડા, બકરાઓ વિગેરે મુગા જાનવરાના જે ધમ-ધાૈકાર વધ કરવામાં આવતા હતા તે હવે માટા પ્રમાણમાં બ'ધ પડયાે છે. અને સાદી સમજ અને કેળવાયલી ખુદ્ધિ જ્યાં ત્યાં કરી વલી છે; તા પણ કેટલાંક હિંદુ રાજ્યામાં એ ઘાતકી રિવાજ હસતી ભાગવે છે, જે અટકાવલને એ રાજ્યોના કૈળવાયલા નરપતિ-એાને દરેક પગલાં ભરવાં જોઇએ છે. દ્વેવ દેવીઓને સંતોષ પમાડવાના નિયમથી આ-મુંગાં જનવરાનાં જાનની ખુવારી કરવામાં આવે છે. અને એમ માનવામ આવે છે કે

તેથી મરકી, કાેલેરા, શીતળા અને દુકાળ, વિગેરે ભય કર આક્તાે નાબુદ થશે, પણુ આ એક વિચીત્ર વહેમનું કારલુ છે અને કાઇળી કેળવાયલા રાજકર્તા તે વહેમને લેશ ભારખી વજન આપશે નહીં. જે ઠેકાણે વહેવારૂ ઉપાયા લેવા નાઇયે તે છાડી દઇને વહે-મને શરણ થઇ, ગમે તેવા હસી કહાડવા જેગ ઈલાજે હાથ ધરવામાં આવે, એજ હિ'દુ-એામાં તેમજ બીજી કેામામાં લાંબા વખત થયાં જડઘાલી બેઠેલાં સ સ્કારાને પુરવાર કરી આપવાને પૂરતા છે. કેટલીક વાર આવા પ્રકારના પશુવધ અમાએ ઉપર જણાવ્યું તેમ ધર્મને ખઢાને કરી તેને શાસ્ત્રસંમત જણાવવામાં આવે છે, પણ તેને લગતા નિર્ણય માેટા માેટા હિંદુ વિદ્વાન્ શાસ્ત્રીએાની સભામાં અનેકવાર થઈ ચુકયાે છે. અને ત નિર્ણયને અનુસરી રહેમદીલના કેટલાક હિંદુ રાજ્યકરર્તાઓએ પાતાના રાજ્યમાં દશરાને દિવસે લાંબા વખત થયાં ચાલતા આવેલા પશુવધને ખધ કર્યો છે. ગાંડળના નામદાર ઠાકાર સાહેબ, જામનગરના નામદાર જામ સાહેબ, ધાંગધાના નામદાર રાજ સાહેખ, વગેરે દેશી રાજયકર્તાં ઓએ તેવું ડહાપણ ભરેલું પગલું ભર્યું છે. અને તેવું પગલું ભરી તેઓએ સુગાં જાનવરાની નેક દુવા સંપાદન કરી છે. અમારે આ તકે જણાવવું જોઇયે કે, કેટલાંક દેશી રાજ્યામાં પશુવધ અધ પડયા છે, તેના મુખ્ય સબબ જૈન લાઇએાની એકસરખી ચાલુ લડતને આલારી છે. હુન્નુખી જૈન લાઇએા આ લડત પૂરનેશ અને ઉલટથી ચાલુ રાખશે, તા તેનું દરેક રીતે ક્તેહમ'દ પરિણામ આવશે અને ઘણાં ખરાં દેશી રાજ્યામાં પશુવધ થાય છે, તે પણ બ'ધ પડશે. જૈન કાૈન્પરન્સના જનરલ સેક્રેટરી શેઠ વીરચંદ દશરાના તૈહેવાર આવી પુગતાં અગાઉ હિંદૂ રાજયકર્તાઓને અરજ કરી જે ચેતવણી આપી છે, તે અમા વખતસરની લેખીએ છીએ. છેક છેલ્લી ઘડીએ યાને બીજા શબ્દામાં બાલીએ તા છેક ખારમે કલાકે જાગી તાર માર-ફતે દશરાને દિવસેજ અરજી કરવાનું પગદ્ધં ભરવા કરતાં આગમજથી આ પ્રમાણે કર-વામાં આવેલી અરજ અલખત્તે પસ'દ કરવા જાેગ છે; કારણ કે તેથી તે ઉપર યુખ્ત વિચાર ચલાવવાને અને સાદી સમજ વાપરી તે ઉપર અમલ કરવાને પુરતા વખત રાજકર્તાઓને મળે છે. અમા ઈચ્છીશું કે પાડા અકરાંના વધ બંધ કરવાના હુકમ મહાર પાડી દેશી રાજકર્તાઓ પાતાના રહેમ દીલના અરછા ધડા લેવા નેગ દાખલા આપવાને હવે પછાત પડશે નહીં.

નં૦ ૩.

# અખળારે ઈસલામ.

મુ અઈ, તા. ૨૧-૯-૧૯૦૬.

## દશરાના દહાંકે ચાલતી નિર્દય કત્તલ.

હિંદુ ભાઇઓના દશરાના માટા તહેવારના દિને દેવીને સંતાષ રાખવાને ખહાને અકરાં, પાડા વગેરેની નિર્દય કત્તલ દેશના જુદા જુદા ભાગામાં માટા પ્રમાણમાં ચલાવવામાં

આવે છે. કાઠિઆવાડના કેટલાક હિંદુ રાજાઓ તરફથી પણ એવા લોગો દશરાનાં દિવસે **અપા**તા હાેવાથી અત્રેની શ્રી જૈન કાેન્ક્રન્સે તેના અટકાવ કરવા એ રાજાઓને અપીલ ગુજારી છે. જે અમા અમારા ગઈ કાલનાં અંકમાં પ્રગઢ કરી ગયા છીએ. એ ભાગા **આપવાના ખ**ચાવમાં એવી દલીલ રજુ કરવામાં આવે છે કે, તે દેવીને સંતોષ કરવાના હિતુથી આપવામાં આવે છે કે, જેથી દેશમાં ઉડતા રાેગા અને બીજી કુદરતી આકતા કેલાવ પામે નહીં. કેટલાક વર્ષો થયાં આવા ભાગા અપાયા છતાં દેશના જુદાજુદા ભાગામાં મરકી, કાલેરા, દુકાલ, ધરતીક પ, રેલા, આગા વગેરેની આકૃતા પડયાજ કરે છે. જેથી હિંદ ભાઇએાની ખાત્રી થવી નેઇયે કે એવા ભાગાની કાઈપણ તરેહની અસર થતી નથી. હિંદુઓના માટા ભાગ અન, કલ, શાકના ખારાક ખાનારા હાય છે, તેઓ માંસના ખારાકથી અલગ રહે છે: અને તેથી કુદરતી માંસ ખાનારા બીજી જાતા કરતાં મુંગા પ્રાણી-એાના સ'બ'ધમાં તેમની લાગણી વધારે દયાળુ હાય છે. એમ છતાં ખુદ હિ'દુએાજ એક માટા તહેવારના દિને એક ખાટા ધાર્મીક એાઠા હેઠલ નિર્દાષ જાનવરાની કત્તલ વર્ષો સુધી ચાલરાખે એ જેટલુ અજાયળી ભરેલું છે તેટલુંજ હિંદુઓની જાનવરા તરફની દયા લાગણીને હીણસ્પતી લગાડનારૂં છે. કમનશીએ આ રીવાજને હિંદુ રાજાએ તરફથી માટું ઉત્તેજન મળે છે. તેઓ પાત પાતાના રાજ્યની હુદની અંદર, રાજ્યની તિજેરીના ં અર્ચે માટા પ્રમાણમાં જાનવરાના વધ કરાવે છે. અને તેવા ભાગ આપવાની કીયાને માટું રૂપ આપી તેમાં અંગતલાભ લેછે. રાજાઓ તરકથી જ્યારે આ નિર્દય રિવાજને એવું ઉત્તેજન આપવામાં આવે ત્યારે પ્રજા તેમને પગલે પગલે ચાલે તેા તેમાં નવાઈ નથી. વર્ષો સુધી આ રિવાજ પુરત્નેરમાં ચાલ્યા બાદ કેલવણીના ફેલાવા સાથ આ કમકમાટ ઉપજાવનારી રસમ તરફ ધાર્મીંક હિંદુ ભાઇએાનું ધ્યાન ખે ચાયું છે. અને તેએા અને ખસુસ કરી જૈન ભાઇઓના સંભ'ષમાં આજ કેટલુંક થયું ચર્ચા ચલાવતા રહ્યા છે જેનું શુલ પરિણામ કેટલાક દાખલાએામાં ખુલ્લું જણાઈ આવે છે. અને એવાજ રીતે જાન-વરાની એ વધ સામેની ચકચાર ખ'ત અને કાેશેશથી ચાલુ રાખ્યાથી વખતના વટેવા સાથ એ ભાગાના સ'બ'ધમાં પ્રજામત તેઓ પાતા તરફ ખે'ચવા શકતીમાન થશે અને રફતે રકૃતે મુંગા પ્રાણીઓ ઉપર ગુજરતું આ નિર્દય ઘાતકીપણું માેટા ભાગે હિંદમાંથી નાયૂદ થયા વગર રહેશે નહીં.

નં∘ ૪.

## જામેજમરોદ.

સું અઇ તા. ૨૨-૯-૧૯**૦૬.** 

દશરાના તેહેવારા ઉપર મુંગા જનવરાના લાગ. ત્રારબીના કાકાર સાહેળનું સ્તુત્ય પગલું.

ગઇ તા. ૧૮ મીએ શીઘ કવિ શંકરલાલ મહેશ્વરના પ્રમુખપણા હેઠળ મારબી ખાતે

સરસ્વલી સમાજના મેળાવડા ભેગા મળ્યા હતા. જે વેળાએ દશરાના તેહેવારા ઉપર નિર્દોષ જાનવરાના ખીન જરૂરના ભાગ અપાતા અટકાવના હુકમ ઠાકાર સાહેબે બહાર પાડવાથી તેમના ઉપકાર માનવા તથા ખીજા દેશી રાજાઓને જાનવરાના રિવાજ અધ પાડવા અરજ કરવાના ઠરાવ પસાર કરવામાં આવ્યા હતા.

નં૦ પ.

# નિર્દોષી **માણિઓનો વર્કાલ.** સાંજ વર્તમાન તથા અખબારે સાદાગર પ્રત્યે માેકલેલા તેના પત્ર.

મું બર્ક, તા. ૨૨-૯–૧૯૦૬.

જીવિદયાના હીમાયતીએોને સૂચના

<sup>''</sup> સાંજ વર્ત'માન <sup>''</sup> ના અધિપતિ જોગઃ—

સાહેખ,

હિંદુ ભાઇએોના દશરાના તહેવાર આવી પહોંચ્યા છે. હમણાં બે ચાર વર્ષ થયાં જોવામાં આવે છે તે મુજબ " જીવદયા " મતવાળા લાકા તરફથી શેઠ વીરચંદે દશરાપર દેશી રાજવાપર તેમનાં રાજ્યમાં થતા પાડાના વધ અટકાવવા સારૂં એક પત્ર લખી! માકલ્યા છે.

જયારે ' જીવદયા ' વાળા લે કાથી દ્ર રદેશમાં વર્ષમાં એક દિવસ અજ્ઞાનપણાથી અથવા ધર્મા ધપણાથી થતા નિરપરાધી પ્રાણીઓના વધ ખમી શકતા નથી અને તેને સારૂં દાડાદાડ કરે છે, તા ખુદ મુખઈમાં તેમના ગાયા મરાડાં આગળ વાંદરામાં જાણી જોઇને ધર્મ અથવા અજ્ઞાનનાં કંઈપણ ખહાના વગર રાજ ભરવા સે કડા નિર્દોષ પ્રાણીઓના વધ ફકત માણુસાનાં હાજરાં ભરવા સારૂં થાય છે ને થતા આવે છે, તેથી કેમ લાગણી દુખાતી નથી. તથા તે વધ અટાવવા અથવા ઓછા કરાવવા કેમ પગલાં ભરતા નથી તે કાંઈ સમજ શકાતું નથી.

વિદ્વાન માણુસાનું તથા એ બાબતના અનુભવી ડાકટરાનું મત છે કે માણુસને માંસા-ઢારની જરૂર નથી. અને સામુ એવા ખારાખ ખાવાથી નુકસાન થાય છે, તેવા લાકામાંથી– જીવિદયા મતવાળામાંથી-હિંદના ખેતીના ઉદ્યોગમાં વપરાતા, તથા દુધાળાં જાનવરાના નાશ એ છે થતા જેવાને રાજ હાય તે લાકામાંથી, અથવા બીજા પરાપકારી અથવા દેશ હિતચિ તક વગેરે લાકામાંથી એવા કાઇ વીરપુરૂષ નીકળશે કે આ નિર્દોષ પ્રાણીઓ તરફથી બાથલીડી આ દેશમાં નહીં તા શહેરમાં તેમના થતા વધ અટકાવે અથવા એછા કરે.

શેઠ વીરચંદ તથા તેમના મિત્રા આ પત્ર ઉપર ધ્યાનપૂર્વક વિચાર કરશે એવી આશા છે.

ાનદાષ પ્રાણીઓના વકીલ.

નં ૰ ૬.

## સયાજ વિજય.

वडाहरा, ता. २७-८-१८०६.

### દશરાને દિને થતા પશુવધ.

કેટલાક સનાતન મતવાળાઓનું એવું માનવું છે કે યજ્ઞની અ'દર વધ બલિદાન આપવું બેઇએ, નહિતો દેવીના કાપ થાય અને તેથી અનેક રાગા અને આપત્તિના ઉદ્ભવ થાય. સાધારણ સમજથી કહી શકાય તેમ છે કે દેવ અથવા દેવી પરમાત્માના એક અન્ય ઉતરતાં સ્વરૂપરૂપે છે. અને સર્વ કાઈ પ્રાણી તેને બાળક રૂપેજ છે. પાતાના બાળકને મારી પાતાને ભાગ આપવાને કાઈ માતા સંબોધે તો તે નવા યુગની નવાઈજ કહેવાય; તથાપિ આપણા ભાળા હિંદુઓનું તેવું માનવું છે, તે કાઈ ઓછા ખેદની વાત નથી. માંસભક્ષીને હિંદુશાસ્ત્ર અપવિત્ર ને શૂદ્રવત્ ગણે છે. એ બાબીતી વાત છે તથાપિ તેને માટે એવા અચાવ થાય છે કે ખાસ અમુક દિવસાને માટે દેવીને તે પ્રિય છે. વર્ષના મુકરર કરેલા દિવસેજ વર્ષાવર્ષ તેની પસંદગી એકજ ચીજ ઉપર ટકી રહે એ માનતાનું તો માત્ર કમઅક્કલના માટેજ કહી શકાશે. અમુક ચીજ ઉપર અમુકને વધુ પ્રીતિ હાય તે સંભવિત છે પણ તે અમુક દિવસેજ વખતા વખતા થાય તે તો આશ્ચર્ય ઉત્પન્ન કીધા વિના રહે તેમ નથી. વળી વધુ આશ્ચર્યની વાત તો એજ છે કે માતાને પાતાના બાળ-કના વધની ઈચ્છા હાય છે!

અમુક દિવસે જેના આહાર કરવામાં વાંધા નથી. તે અન્ય દિવસા માટે અપવિત્ર પણ ક્રેમ ગણી શકાય ? આ સર્વ પરથી માલુમ પડે છે કે માત્ર હિંદુઓએ-ખ્રાદ્મણોએ પાતાની અધર્મ સ્વાદિષ્ટ વૃત્તિનેજ આધિન થઇ આ કાર્ય શરૂ કીધુ છે.

માતાને—સર્વ માતાઓને પાતાના અમુક પ્રકારના બાળક ઉપર રાશ હાય છે! તેમ પણ આમાંથી પ્રશ્ન ઉભા થયા વિના રહેતા નથી અને તેથી કહી શકાય કે કદાચ કાઇ દિવસ વારા ક્રતી બીજા બાળક (મનુષ્ય પ્રાણી) ઉપર પણ રાષ આવવાજ જોઇએ!! પણ અમારા બ્રાહ્મણા પાતાના હાથે પાતાનું ગળું કાપે તેવા નથી. "પારકે ઘેર પનાતા" જેવું અમારા હિંદુલાઇઓનું વર્તન છે અને તેવી તુચ્છ બુદ્ધિથી હરહમ્મેશ દરેક વર્ષે આવી રીતે હજારા નિર્દાષ પ્રાણીઓના વધ થાય છે. " શ્રી જૈન શ્વેતાંબર કાન્ક્ર્રન્સ " ના રેસિડેંટ જનરલ સેક્રેટરી અને ગુજરાતના જાણીતા સખાવતી અને સુધારક શેઠ મિ. વીરચંદ દીપચંદ આ ખાબતમાં દેશી રાજાઓને અરજી માકલેલી છે. આ અરજીની એક નકલ અમાને મળી છે તે ઉપરથી સમજાય છે કે તેઓની આ અરજીનું લખાણ ઢુંકું પણ ખરા અંતઃ કરણની લાગણીનું છે.

જૈન મતના "અહિં સા પરમા ધર્મે: " આ એક મુખ્ય સિદ્ધાંત છે; અને તે સિદ્ધાંત સાથે આ બાબતના પુરતા સંબંધ સમાવેશ છે તે જણાવવું જ બીન જરૂરી છે. સનાતની વૈષ્ણુવ મહારાને પણ ગાપ્રતિપાલક અને સર્વ પ્રાણીપર દયા રાખનાર તરીકે એાળખાય છે. તેઓ પાતાના હાથમાં જ બાજી હોવા છતાં પ્રાહ્મણોને અટકાવે નહિ એ કાંઈ એાછા ખેદની વાત નથી. હિંદુ ભાઈએા અંતઃ કરણથી વિચારશે તો સહજ સમનાશે કે માત્ર આ એક મૂર્ખતા દર્શાવનાર કાર્યજ છે. આવા બનાવા અન્ય તરફથી બને છે ત્યારે હિંદુ ભાઈએા હૃદયલેદકતાના અસાધારણ બુમાટા કરે છે. તો પાતાના તરફથી થતા આ કાર્યને સત્વર બધ કરી દેવું નેઇએ.

કાઠિયાવાડ, લીં ખડી, મારખી અને વીરપુર ઈ. સ્ટેટાએ આ બાબતમાં તદન અટ-કાયત કીધી છે, અને ઉત્તર હિંદમાં પણ કેટલાંક રાજ્યા તે માટે હિલચાલ કરી રહ્યા છે. પણ તેઓની પ્રજાપર કે તેઓની જાતપર દેવીકાપ કાઈ પણ પ્રકારના થતા નથી; ત્યારે એથી ઉલટું અત્રે અસાધારણ ત્રાસ અનેક રીતે ઉદ્દલવે છે. આ સર્વ પરથી એ સહેલા-ઇથી સિદ્ધ થાય છે કે દેવીના કાપ થાય ઇત્યાદિ માત્ર બ્રમ છે. અને પાતાની અજ્ઞાનતાજ પ્રદર્શાત થાય છે તા તેવા કાર્યને સત્વર અટકાવી સત્તાવાળાએ અને ધર્માધકારીએ! નિર્દાષ પ્રાણીએ!ના આશિર્વાદ લેવા સાથે પાતાના ઉજવલ કીર્તિધ્વજ ચાતરફ ફરકાવશે.

નં ૭ ૭.

## સયાજ વિજય,

વડાદરા, તા. ૨૯–૯–૧૯૦૬.

### પશુવધ વિષે નાપસંદગી.

ક્ષત્રિય મરાઠા સભાની બેઠક તા. ર૪ મીએ શ્રી. દિ. ખ. આનંદરાવ ગાયકવાડના અંગલે મળી. તે વેળા જૈનસંઘના પણ ઘણાંક ગ્રહ્યા હાજાર હતા. મે. દાદા સાહેબ માનેએ કહ્યું કે આજની સભાના હેતુ દશરામાં જે ખકરાં વગેરેના પશુવધ થાય છે, તે ખ ધ કરવા સંખ ધી વિચાર કરવાના છે. અને તેવીજ દીલસાજના રા. ખા. ખાસેરાવજના આવેલા પત્ર વ ચાયા પછી શ્રી. આનંદરાવે કહ્યું કે આજ ઘણા મેમ્ખરા હાજર નથી માટે કરી ખાસ સભા ભરી આ વિષે ઠરાવ કરવા અને આજે જેઓ હાજર છે તેમણે આવા વધ ન કરવા મત દર્શાવવા જે વાત એક સરદાર શિવાય સર્વેએ માન્ય કરી હતી. આ ઠરાવ જાણી હિંદુ પ્રજા ઘણી ખુશી થઇ છે.

#### નં ૦ ૮.

## **બકરાના** બેલી.

તા. ૨૬-૯-૧૯૦૬.

### દ્દશરાની દેવીએ પાડા અકરાંના ભાગ લેવા હાજર થયાં છે.

શું હિંદુધર્મની મૂર્ખાંઇ! શું દેશી રાજાઓની ઘેલછાઇ! દશરા જેવા પવિત્ર દિવસ હિંદુ તહેવાર તરીકે મનયા છે. તે દિવસે પ્રજા આનંદ કલાલમાં કંસાર, ચૂરમાં અને વેડમી જમે છે. દેવીયાને નૈવેદ્ય ઘરે છે. શમીનાં પૂજન કરે છે. સ્ટેટામાં રાજ્યસ્વારીયા નીકળી ઘાડાઓને ગામ ખહાર પુરવાટ દાડાવે છે. ગાન, તાનની ધામધુમ થઈ રહે છે. આવા ઉત્તમ પર્વના દિવસે રાજાથી રાંક સુધી સર્વ કાઇ જીવાતમા આનંદ પામે છે. જવ ઉદ્યાસમાં રાખે છે. ત્યારે તે દિવસ બિચારાં અવાચક નિરપરાધી મુગાં પ્રાણી પાડા અકરાનાં ગળાં બે ગુન્હે અમારા રજપુત ખહાદુરાની સમશેરથી દેવીના નિમિત્તે દેવીના દેવલ આગળ રેસાય છે. તેઓ બે બે ના અરાડા પાડે છે, છતાં આ કૃપણકામ રાજાઓ હર્ષાન દમાં કરે છે. આથી તમામ પ્રજા નારાજ, આપું મહાજન નારાજ, આપું સમગ્ર ગામ નારાજ છતાં શુદ્ધ ક્ષત્રિયોના હૃદય કેમ અવાચક પશુપ્રત્યે નિષ્દ્રર અને જડવત થતાં હશે!

પાડા અને બકરાંના વધથી દેવી પ્રસન્ન થાય છે, એમ તમામ રાજ્યકર્તાના હુદ-યમાં કયા દુષ્ટ ધર્મગુરૂએ ઠસાવી દીધું હશે! તે કાંઈ સમજાતું નથી. દેવીઓ બકરાં પાડાના ભાગ કદી લહેજ નહીં. એ નિશ્ચય સમજવું જે તેને બકરાં પાડા લેવા હાય તા પાતે જાતે લેત પણ તમારી સમશેરથી લેવરાવત નહીં. દેવીઓ દયાલુ હાય છે, મા ખેલાય છે. તેઓ જે ભાગની તરશી હાત તા બકરાં પાડા જેવા ગરી બ પ્રાણીઓ ન લેત પણ સિંહ, ચિતા,વાદ જેવાં પ્રાણીઓના ભાગ લેત. આ તા બધું રાજાઓના વહેમનુંજ પાગળ જેવાય છે. દેવીઓ પાડા બકરાંથી કદી પ્રસન્ન થવાની નથી. એ વધથી કાંઈ રાજી કરાજી થતી નથી. નાઢક આવા પવિત્ર દિવસે પશુઓના વધ એ કુદરતના કાયદા વિરૃદ્ધ હિંદુ ધર્મશાસ્ત્ર પ્રમાણે મહાન પાપ ગણાય છે એમ શાસ્ત્રા કહે છે.

હાલમાં સુધરેલા જમાના છે. અમારા રાજા ખહાદુરા કાલેજમાં વિદ્યાદેવી પ્રાપ્ત કરી કેળવાયા છે. પુરાણુધર્મનું, પાપકલાનું કેવું પાગળ છે તે કાલેજમાં લણુતી વખત સારી રીતે જાણી શકયા છે. અને તેથી પાડા બકરાંના વધના વહેમથી ઘણા રાજાઓ હવે મુક્ત થયેલા અમા જોઇયે છીયે, પરંતુ હજી કેટલાક રાજાઓ કેળવાયેલા છતાં આ ખાટા વહેમમાં ધુસાઈ પાડાં બકરાં દશરાને દિવસ મારે છે એ ખરેખર અયાગ્ય કામ મહાજનની લાગણી દુખાયા જેવું છે.

જે દેવી બકરાં પાડાના વધથી પ્રસન્ન થઈ રાજાએાનું કુશળ કરતી હાેય તાે પછી અમારા ઘણા રાજાએા ક્રાળને સરણુ થાય છે તે કદી ન થાત તેઓનાં શરીર દેવી અમર કરત. માણુસ પ્રસન્ન થતાં પણુ શરીર રક્ષણુ કરે છે. તાે પ**છી દે**વી ક્રેમ**ાજાને મરવા**  દે? એજ તપાસા. આ તો દેવી ભકતોએ ખાટા વહેમ ઠસાવ્યા છે. વગર ગુન્હે પશુ મારલું એ રાજાને શીર નાઢક પાપ ગણાય. માટ સ્ત્ર અને શાણા રાજાએ આપ આ ખાટા વહેમ ઇશ્વર અથ છાડી દો ? દેવીઓ તમારીપાસે પાડા બકરાં માગતી નથી. દેવીની ઇચ્છા અને શક્તિ હશે તો પાતાને ઢાથેજ તેના પ્રાણ લેશે ? નાહક માંસભક્ષક દેવી ભકતોયે માંસ ખાવાના સ્વાદથીજ અમારા પવિત્ર રાજાને પાપિષ્ટ અનાવી પાતાનું એાઝરૂં ભરલું છે. શિવાય બીજુ કાંઈ જેવાનું નથી. એમ અમારી તો ખાસ માન્યતા છે. માટે અમારા ક્ષત્રિયકુળદીપક રાજાઓએ દીઈ ખ્યાલ કરી દશરાના દિવસના પવિત્ર તહેવાર આવા પ્રાય-શ્વિત્તના રૂપમાં ઉજવવા જરૂર નથી. મારબી નરેશ સર વાઘજી બહાદુર, ગાંડલ ઠાકાર શ્રી સર ભગવતસિંહજી બહાદુર અને ધ્રાંગધા નૃપ અજીતસિંહજી જેવા સુધારક નૃપાએ ગાદીપર બેઠા પછી આ વધ બધા કર્યો છે, તો તેએા શું સુખી નથી ? તપાસા સુખી છે. માટે આ ખાટો વહેમ નૃપતીઓયે છોડવા જોઇયે.

**બકરાનાે** બેલી.

નં ૦ ૯.

## માહિની.

કેનાજ, તા. ૨૧-૯-૧૯૬.

श्री जैन श्वेतांबर कांफ्रेंसके रेसीडेंट जनरल सेक्रेटरी द्वारा एक आंबेदन पत्र हमें प्राप्त हुना है, जिस्के द्वारा भारतीय नृपित गणाकी सेवामें विजयादशमी महोत्सव पर पशुवध न किएजानेकी प्रार्थना कीइगई है। आशा है कि हिन्दू नृपित गणा कन्फेंसकी प्रार्थना पर ध्यान दे कर हिंसाकी पृथाको दूर करनेकी चेष्ट करें गे।

નં ૦ ૧૦.

## ગુજરાત મિત્ર તથા ગુજરાત દર્પણ.

સુરત, તા. ર૩ મી સ<sup>પ્</sup>ટેંખર સને ૧૯**•૬**.

### દેશી રાજ્યામાં દશરા નિમિત્ત થતા પશુવધ.

હિંદુ ભાઇઓના વિજયા દશમીના યાને દશરાના પવિત્ર ધાર્મીક તહેવાર પ્રસંચ દેશી રાજાઓ તરક્થી થતા પશુવધ વિરૂદ્ધ ઘણી ચર્ચા ચાલે છે. અને વર્તમાનપત્રામાં એ સંભ'ધી લખાણા થઈ જૈનમ ડેળા તરક્થી પણ દેશી રાજાઓને પશુવધના અટ-કાવ કરવાના આગ્રહ થાય છે, તેની અસર કેટલાક દેશી રાજાઓને અત્યાર આગમચ થયલી જેઇ સંતાષ ઉપજે છે. આ વર્ષ પણ એ તહેવાર નજદીક આવવાથી શ્રી જૈન ધાતાંબર કાન્કરન્સના રેસીડેટ જનરલ સેક્રેટરી મિ. વીરચંદ દીપચંદ સી. આ. ઇ.

તરક્થી જે રાજ્યમાં એ રીવાજ હસ્તી ધરાવે છે ત્યાંના રાજકર્તા જેગ પશુવધ કરવામાં અયાગ્ય હિંસા સમજ એ રિવાજ બધ પાડવાની વિન'તી કરનારા એક પત્ર માકલવામાં આવ્યો છે જે ઉપર દરેક રાજ્યકર્તાએ પૂરતા ગાહર કરવાની જરૂર છે.

કેટલાંક દેશી રાજ્યા એવાં છે કે પશુવધ કરવામાં અયાગ્ય હિ'સા સમજી અમુક દિવસાએ જીવહિંસા નહીં કરવાના હુકમા અહાર પાડયા છે તેજ રાજ્યામાં વિજયા દશ-મીના તહેવાર પ્રસંગે પશુવધ થાય છે, જેથી " કાજી કહેનેકા મગર કુછ કરનેકે નહીં " તેવું થાય છે, તે માેટે એવાં રાજ્યાેએ પ્રજાના માેટા ભાગના અને તેમાં ખાસ કરી જૈન કામના વિચારને અને લાગણીને માન આપી જીના ચાલતા આવેલા એ કૂર રિવાજસબંધે ખીજી રાજાએાની માફક તર્ક કરવાની જરૂર છે. પશુવધ બે કારણાથી થતા કહેવાય છે. જેમાનું એક એ છે કે એ દિવસે અર્જુને શમીવૃક્ષ ઉપર સ'તાડેલા હુથીયારા ઉતારીને દુર્યોધનના લશકરને હુરાવ્યું હતું અને હુરણ કરેલી ગાયાને પાછી વાળી હતી, તથા રામ-સંદ્રે રાવણ ઉંપર એ **દિને** ચઢાઈ કરી વિજય મેળવ્યાે હતાે. તથા બીજીં કારણુ દેવીને ભાગ આપીને સંતુષ્ટ કરવાનું છે. હાલમાં દેશી રાજાઓને દુશ્મન સામે ચઢાઇ લઇ જઈ ઉપર જીહીત મેળવવાના વખત નથી તેથી એ દિવસે હથી આરનું પૂજન કરી સલેહના વખતમાં નિર્દોષ ભકરાં અને પાડાઓના વધ કરવામાં હથી આરના ઉપયોગ કરવા એ જળન કામ છે. ને દેવીને ભાગ આપીને સંતુષ્ટ કરવાના ઇરાદા પણ હાલના સુધરેલા જમાનામાં નહીં માનતા જેગ ગણાશે તેમજ તે શાસ્ત્રીય રીતીએ પણ નથી, એવા નિર્ણય ઘણી વખત માટા માટા વિદ્વાન શાસીઓની સભાઓમાં થઈ ચુક્યા છે. અને તેને અનુસરી કેટલાક રાજ્ય કર્તાંઓએ એ પશુવધ સર્વથા બંધ કરાવી અવાચક જાન-વરાની દ્વા લીધી છે, તે મુજબ જે રાજ્યામાં એ રિવાજ હુજી ચાલુ હાય તે રાજ્યામાં પશુવધના અટકાવ કરી નિર્દોષ પ્રાણીઓના લાગ લેતા દેશી રાજાઓ અટકે એવું ઈચ્છવામાં આવે છે.

#### નં• ૧૧.

### દશરાને દિવસે દેશી રાજ્યામાં થતા પશુવધ અને જૈન કાેન્ફરન્સ.

ઉત્તર હિંદમાં માટા દેશી રાજ્યામાં તેમજ ગુજરાત કાહિયાવાડનાં કેટલાંક નાનાં રાજ્યામાં દશરાના પવિત્ર તહેવારને દિવસે જયારે રાજકર્તાઓની સ્વારી ચઢે છે ત્યારે કે દેવીના હવન વખતે ખકરાં અને પાડાના નિર્દયતાથી વધ કરવામાં આવે છે. દેવીને પ્રસન્ન કરવાનું તેમજ મહામારી, પ્લેગ આદિ ઉડતા અને ચેપી રાગાને અટકાવવાનું ખહાનું આ વધના કારણ રૂપે આગળ ધરવામાં આવે છે. હવે આ વધની રૂઢી સશાસ્ત્ર છે એમ જે કહેવામાં આવતું હાય તા તેમાં પણ માટા મતભેદ છે. ત'ત્રશાસ્ત્રના વામ અને દક્ષિણ એવા છે સ'પ્રદાય છે. તેમાં વામમાર્ગની અમુક ક્રિયામાં મદ્ય માંસની વપરાશ્વના નિષેધ કરેલા નથી પરંતુ વામમાર્ગ કાઈ પણ રીતે મુક્તિને અપાવી શકતા નથી.

તેથી જેઓ માેક્ષ મેળવવાની ઇચ્છાથી ધર્મકાય કે યજ્ઞયાગાદિ કરે છે તેઓ વામ માર્ગની ક્રિયાએોને બદલે દક્ષિણ માર્ગની ક્રિયા આચરે છે. સંસારની ક્ષુદ્ર મનઃકામનાની સિદ્ધી માટે જેઓ વામ માર્ગની કિયાએ કરે છે તેઓની માન્યતા પણ ખરી છે કે કેમ? હાલના તર્કવાદના જમાનામાં એક જબરા તકરારી વિષય છે કે નિરપરાધી અવાચક પશુના નિષ્કારણ ક્રુરપણાથી વધ કરવા તે નિ**દેયની પ્ર**રિસીમા છે. તે અપરાધના ગ**ંભીરૃપણા** આગળ ખાનગી હાજતની કે મના વાસનાની પરિતૃષ્તિનું અહાનું કેવળ હસવા સરખું અને ધિક્કારવા યાગ્યજ ગણાય છે. માટે હાલના ક્રેળવણીના અને સુધારાના રાજ વધતા જતા ફેલાવાના સમયમાં દશરાને દિવસે થતા પશુવધના રિવાજ એકદમ બધ પડવ્ નાઇએ છીએ. હાલ ઘણા દેશી રાજાઓએ કેળવણી સંપાદન કરેલી છે. તા પણ તેઓ આ કુર અને વહેમ ભરેલાે રિવાજ હુજી ચલાવ્યે જાય છે, તે અમને તાે ખચીત ખહુ અન્નયખ જેવું લાગે છે. આ ખુના દશરાના દિવસ હવે નજીક આવ્યા છે તે તકના લાભ લઇને જૈન કાેન્કરન્સના જનરલ સેક્રેટરી શઠ વીરચંદ દીપચંદે આ સંખ ધની એક અરજ તૈયાર કરી છે. જેની એક નકલ તેમણે અમને મે!કલી છે. જે જે દેશી રાજ્યામાં હજી દશરાને દિવસે પશુવધ થાય છે ત્યાંના નુપતિઓ તરફ તે અરજીની નકલા તેમણે માકલીને અરજ કરી છે કે પશુવધના રિવાજ નિર્દયતા અને વહેમ ભરેલા છે. એટલ જ નહિ પણ સનાતન આર્યધર્મની વિરુદ્ધ જનારા છે માટે તે બંધ કરાવવાની મહિરખાની થવી જોઇએ છીએ. જૈન કાેન્કરન્સના સેક્રેટરીની ઉપરની અરજના વાજબી-પણા વિષે બે મત છેજ નહિ તેથી તેમાં સમસ્ત આર્યપ્રજાની અનુમતિ છે. માટે અમે આશા રાખીએ છીએ કે, સમજ અને સુશિક્ષિત દેશી રાજાઓ તેનાપર ઘટતું ધ્યાન આપીને તેમના રાજ્યમાં ચાલતા પશુવધના રિવાજ હંમેશને માટે બંધ પાડશે. લહેલા ગાણેલા રાજાઓ પણ જો વહેમી રિવાજો અને રૂઢીઓના અ'ધનમાંથી મુક્ત થવાની જાહેર હિ મત નહિ ખતાવે તાે પછી પ્રજાને દીલાસાે મળવાનું કશું સ્થાન રહેશ નાહ. વઢવાણના મહું મ રાજા દાજરાજજ જેઓ એક ખહુ સુધરેલા અને આગળ પડતા વિચારના તથા स्वतंत्र रीति कृतिना नृपति હता. तेमण् आ पशुवधना रिवाक तेमनी अरधीहमां अध પાડ્યા હતા. તેથા જૈન પ્રજાજ નહિ પરંતુ સમસ્ત હિંદુપ્રજા તેમની ઘણા અહેશાનમદ થઇ હતી, પરંતુ દાજરાજના મરણ પછી તેમના અનુગામીના રાજ્યમાં હાલ પૂર્વના રિવાજ ચાલુ કરવામાં આવ્યા છે. તે હાલના રાજકર્તાની એક જાતની નિર્ણળતા અને વહેમીપણાના પૂરાવા છે. સુધરેલા દેશી રાજાઓમાં આવી નિર્ભળતા અને વહેમાંધતા ઓછી થએલી જોવાને અમે ઇન્તેજાર છીએ અને તેટલા માટે અમે ઇચ્છીએ છીએ કે હવે પછી જે જે રાજ્યામાંથી આ જ ગલી રિવાજ નાખુદ થાય તેમાં તેનું યુનરાવર્ત્તન ન શાય તેની કાળજ ખાસ કરીને રાજ્યકર્તાંઓ અને તેમનાં પ્રકૃતિ મંડળા રાખશે

નં• ૧૨.

## ગુજરાથી પંચ.

અમદાવાદ, તા. ૨૩-૯-૧૯૦૭.

### દશરાના પશુવધ-શ્રી જૈન શ્વેતાંબર કાેન્કરન્સની અપીલ.

દશરાના માંગલિક અને પવિત્ર દિવસે કેટલાંક દેશી રાજ્યામાં પાડા અને અકરાંના વધ કરવાના વધા દુષ્ટ રિવાજ ચાલતા આવ્યા છે. આ ઘાતકી રિવાજના અટકાવ કરવા દેશી રાજ્યોને ઘણીવાર વિનંતીએ કરવામાં આવી છે ત્યારે એકાદ છે જગોએજ તેના ઉપર ધ્યાન આપવામાં આવ્યું છે. શિવાયનાં સ્થળાએ તે રિવાજ ચાલુજ છે. અમને નાઇને સંતાષ થાય છે કે અવાચક પ્રાણીઓની થતી આ હિંસા અટકાવવા આ વર્ષે શ્રી ્જેન શ્વે**તાંળર કેાન્ક્**રન્સે કાંઇક પગલું ભર્યું છે. અમારા ઉપર માકલી આપવામાં આવેલા ાગળા ઉપરથી જણાય છે કે જે રાજ્યામાં આવા વધ થાય છે ત્યાંના રાજકર્ત્તાઓને ૈકાન્કરન્સના **રેસીડ**ંટ જનરલ સેક્રેટરી મિ. વીરચંદ દીપચંદની સહી સાથે છાપેલા વિજ્ઞ-ં**સિપત્રા માેકલવામાં** આવ્યા છે, તેમાં નીચે પ્રમાણે જણાવ્યું છેઃ—દેવીને ભાેગ આપી**ને** સ'તુષ્ટ કરવાના ઇરાદાથી આ વધ કરવામાં આવે છે, જેથી કરીને પ્લેગ, શીતળા, ે **કાલે**રા, **આદિ** ૬ષ્ટ ભિમારીએાની આક્તો વસ્તીમાં આવે નહીં; પરંતુ દરવષ આવા વધ થતાં છતાં પ્લેગ, કાલેરા, શીતળા, તાવ, દુકાળ આદિ આકૃતા હિન્દુસ્થા-નમાં આવેજ લાય છે, રાજાથી રંક સુધી સર્વને પાતાના પૂર્વજન્મના કર્માનુસાર સુખદ્ર:ખ શાગવનું પડે છે અને આ આફતા કેવળ મનુષ્યાના શિક્ષારૂપ છે. આ પાપાથી અચવાને વાસ્તે માણુસ નિદેશ અવાચક જાનવરાની ં <sub>હત્યા</sub> કરે આ કેવા ન્યાય ? શું આવા ન્યાયથી સર્વ શક્તિમાન પરમે<sup>શ</sup>્વર રાજી થશે ? કુદ્દી નહીં. ના ઇંગ્રેજ સરકારના રાજ્યમાં પણ વખતા વખત પ્લેગ વિગેરે બીમારીએા આવે છે અને કુદરથી નાખુદ થાય છે. તેવા રાગાની શાંતતા માટે કાંઇ પાડા આદીના પશુવધ થતા નથી, પરંતુ તન્દુરસ્તીના નિયમાને અનુસરવાના ઇલાજ લેવામાં આવે છે. પશુવધ શાસ્ત્રરીતે નથી. આવાં નિર્ણય માટા માટા વિદ્વાન શાસ્ત્રીઓની સભાઓમાં ઘણીવાર શાઇ ગુકરા છે. અને આવા અસલ શાસ્ત્રના અનુસાર કેટલાક ધાર્મિક રાજ્ય કર્તાઓ એ આવા પશુવધ પાતાની વસ્તીમાં સર્વથા બંધ કરાવી, તે જાનવરાની નેક દુવા પ્રાપ્ત કરી છે હજાર રહેમ દિલ, બુદ્ધિ માન અને ન્યાયી હાવાથી અમારી અરજ છે જે દશરાના દિવસે આપના રાજ્યમાં પાડાં બકરાં વિગેરેના વધ બંધ કરવાના હુકમ જારી કરવાની મહેરભાની કરમાવશા અને સનાતન આર્ય ધર્મની રક્ષા કરશા. શ્રી જૈન શ્વેતાંખર કાન્ફરન્સે ગુજરેલી આ અરજ વખતસરની છે. પાડાં અને બકરાનાં વધને લીધે કાેઈપણ પ્રકારનું સુખ થતું નથી. પરંતુ નિર્દોષ પ્રાણીઓના સંહારકારણ વિના કરવામાં આવે છે અને તે કૃત્ય કમકમાટ ઉપજાવે તેવું છે. અમારા દેશી રાજ્ય કર્તાઓના ઘણા ભાગ કેળવણીના સંસ્કારી થએલા છે એને ખરા પૂજ્ય તથા પાદશા છે તે ખરાખર સમજવા લાગ્યા છે. તા હુવ આશા રખાય છે કે પોતાના રાજ્યમાં આ ઘારકૃત્ય હવેથી થતું ન રહે એવા ઉપાયા તેઓ તુરત યાજશે. અવાચક પશુઓના વ્હારે આ પ્રમાણે ઉતરવા સારૂ શ્રી જૈન શ્વેતાંબર કેાન્ક્રરન્સને કું અમે શાખાશી આપીએ છીયે. અને ઇચ્છીએ છીએ કે દેશી રાજ્ય કર્તાઓને તેણે કરેલી અ પાલ નિર્શક જાય નહીં.

ન\*- ૧૩

### જૈન.

અમદાવાદ, તા. ૨૩-૭-૧૯૦૬.

હશરાના વિજયવંત ાદવસ પશુ હિંસાથી કલ કિત ન કરવાના જૈન શ્વેતાંબર કાેન્ફરન્સના રેસીડન્ટ જનરલ સેકેટરીના વિજ્ઞપ્તિ પત્ર.

હિંદુ કથાએ તથા ઇતિહાસ ઉપરથી સ્પષ્ઠપણે પ્રતીત થાય છે કે દશરાના વિજયવ ત દિવસ હિ'દુ તહેવારામાં એક અલાકિક તહેવાર છે. અને તે મહાન્ દિવસ આપણા પ્રાચિન આર્યોનું જાહાજલાલી તથા ઉન્નતીની ઉત્કૃષ્ટતાની ઝાંખી કરાવવાને નિર્મળ આયના રૂપ છે. પાંડવાએ તથા રામે એ વિજયવંત દિવસે જય મેળવી નગરમાં પ્રવેશ કર્યાંના એ દિવસ એક જાહેર હ કેરા રૂપ હાઇને તેને રાજ્યભક્ત પ્રજા વિજયા દશમી કહી તહેવાર પાળતી આવી છે. એવા માંગલીક પરમ કલ્યાણકારી અને આનંદ વર્ધક દિવસને કેવી રીતે ઉજવવા જાઇએ તેને લગતી પુરાણામાં અનેક વાર્તાએા દર્શાવેલી છે. આ દિવસ આર્ય પ્રજાની ઉન્નતીના ઉદયના મહાન દિવસ છે. અને જેવા આયં પ્રજાને રાજકીય સવાલામાં પછાત પડેલી ચિતરવાના પ્રયાસ કરે છે તેઓને દસરાના દિવસની મૂળ ત્તેમ એક સચાટ જવાય છે. આર્યાવર્તની જાહાઝલાલીનું દશરાના દિવસ એક કેંદ્રરૂપ છે. અને તેથીજ એ રાજ્યકીય વિજયવંત દિવસ ભારત વર્ષમાં સામાન્ય રીતે આલ્હાદ વર્ધક પર્વ તરીકે થવાય છે. હજારા વર્ષ અને અનેક રાજ્યકાંતિઓ થયાં છતાંપિ આ મહાનુ રાજકીય દિવસના મહિમા ગૌણ પણ રૂપેપ્રત્યેક ભારત વાસીના મનમાં બીજા કરરૂપે વહેલા છે એજ અતાવી આપે છે કે આ મહાન દિવસનું મહાત્મ્ય કેટલું અને કેવું નૈસર્ગિક છે, ક્ષત્રિયકુળ ભૂષણ રઘુન દન રામે પ્રજાને ત્રાસ આપી <mark>ધર્મકાર્યમાં વિકા નાંખનાર</mark> ાક્ષસ, રાજે' કે, રાવણાદિ દેસના સંહાર કરી સામ્રાજ્યની સ્થાપના કરી પ્રજામાં " રામ-રાજ્ય " નીુંઅનુપમ્રુછાય પાડી વિજયના પાડા વગડાવી જે દિવસે વિજય શ્રીર'ગ દર્શાવ્યા હતા તેજ દિવસ આ દશરાના અથવા વિજયા દશમીના છે; મૂળ તાત્પર્ય એ છે કે એ મહાન્ શુલ દિવસ વિજયના આનંદ પ્રદર્શિત કરવાના છે. પ્રજામાં આંગણે આંગણે ઘરાઘર વિજય પતાકારૂપ તારણા ખાંધી, વાવટાવા લટકાવી પૂર હર્ષમાં વર્ષના ચા ચ્એકન દિવસ રાજા પ્રત્યેના ભક્તિભાવ દર્શાવવાને નિયત થયેલા છે. આ પર પરા માંચીત સમયથી અંદળ કિંત રીતે ચાલી આવે છે, અને એજ પ્રમાણે કાં રજપુત રાજ મહા-રાજો કે કાં મુસલમાન ખાદશાહાના રાજય અમલમાં પણ થઈ રહ્યું હતું. તહેવારના મૂળ હતું જ્ય મેળવવાની તો શક્તિ નેષ્ટપાય થવાથી, મનુષ્ય જાતને દરરોજના ત્રાવહારના કામમાં ઘણા ઉપયોગી પશુઓ ઉપર સમશેરની પટાબાજ અજમાવાના શરમ ભરેલા રિવાજ દેખાદેખી સાજ મહાસજાએ અને બાદશહાઓએ સ્વીકાર્યાં. કાળખળે પ્રજા પણ વહેમાની જાળમાં સપડાઇ જવાથી આ ચાંડાલ કૃત્યમાં સામેલ થઇ, જેથી રાજા પ્રજાના એકત્ર જેસથી મૂળ અભિપ્રાય હાલમાં ઉડી ગયા અને આધુનિક ક્ષત્રિય કુળના કહેવાતા રાજા મહારાજાએ તથા મુસલમાન નવાબ અમીરા પણ તકાવારની અજમાયસ કરવા લાગ્યા અને તેનેજ શુરાતની શીખવાની શાળા ગણવા લાગ્યા. કેળવણીના અભાવે કરી પ્રજામાં ધર્મ તત્વોના જ્ઞાનના અજ્ઞાનરૂપ અધકાર છવાતા ચાલ્યા. જેથી સ્વાભાવિક આપત્તિએ પડતાં તેના પ્રતિકાર કરવાને બદલે માતા અને ભૂત પિશાઓને આવી વિર્મત્તઓના આપનાર અધિષ્ઠાતા દેવગણા તેને ખુશ કરવા પાતાનું બલિદાન આપવાને બદલે મુંગા પ્રાલ્ધઓ તરફ દર્ષી ફે'કી નિરાધાર અવાચક પશુઓને હણવા લાગ્યા.

ક્રેટલાક નરાધમાે પવિત્ર વેદમાં પશુયત્તના વિધિ વિહિત ગણ્યાની દીવાના સધ સ્વાર્થની ખાતર વાતા કરતાં શરમાતા નથી. વેદમાં એવા કાેઇપણ યજ્ઞની આજ્ઞા આપવામાં આવી નથી. તેના પુરાવામાં ધરમપુરના માજ ડૉકટર રા રા પ્રાથ્છવનદાસ મહેતાએ થાડા વખત પહેલાં હિંદુ શાસ્ત્રીઓના મેળવેલ અભિમાય રજી કરી શકાશે, એ સઘળા શાસ્ત્રીએ માતા કે કાઇ દેવને પશુલાગ આપવાની તથા હિંદુધર્મમાં તેની આગ્રા હાવાની સાકુ ના પાંડે છે. એટલું જ નહીં પણ શ્રી ગારધન મઠના હાલના શંકરાચાર્ય શ્રોમદ પરિવાજકાચાર્ય સ્વામી જગન્નાથતીર્થ કે જેવા સ'સ્કૃત જ્ઞાનમાં ઘણા પ્રવીણ ગણાય છે અને જેમણે ગયા કું લના મેળા વખતે હિન્દુસ્થાનના મળેલા વિદ્વાનાની સંભામાં ઉત્તમ પ્રકારનું ધાર્મિક ભાષણ આપ્તું હતું તેએા શ્રી પશુયત્તની કે પશુવધની હિંદુશાસ્ત્રમાં કયાંઇ પણ આગ્રા આપ્યાનું પાકારીને ના પાઉ છે. સનાતન હિંદુધર્મના કેટલાક દુરાગ્રહીઓ થાડા વર્ષ પહેલાં આ પાપિષ્ટ કર્મની હીમાયત કરતા હતા. પરંતુ પાથાત્ત મ્લેચ્છ સંકૃત વિદ્વાનાએ તેઓની પાપિષ્ઠ વૃત્તિને પ્રાણીજન્ય પેમના પુનિત જળંથી ધાઇ નાંખી, છે, અને તેથી હવે આ પશુવધના કર રિવાજની કાેઈ હિંદુ અચ્ચાે હિમાયત કરવાને મેદાન પઉ તેમ નથી, તા પણ આ કર ઘતકી, નિર્દય: નિલજય અને અમાનુષિક રીવાજ હજા પણ કેટલાંક દેશી રાજ્યામાં વિજયા દશમીના માંગલિક દિવસે પ્રચલિત રહેલાે દૃષ્ટિ ગાેચર થાય છે રાજ્ય કુમારાને તેમના રાજ્યકર્તા તરીકેના ધર્મ આપે, અને સાંપ્રત સમયને અનુકૂળ આવે એવી તેએાની સ્થિતિ સાચવનારી કેળવણી નામદાર સરકાર તર**ક્યી આ**પવી શરૂ થઇ છે, અને જાણાવતાં પરમ હર્ષ થાય છે કે ઘણાખરા રાજ્યકત્તાંઓએ આ કેળવણીને કીર્તિવંત કરી નિરપરાધી પશુંઓ અને સ્વય શકતીની તુલના કરાવી છે, અને આ વહેમી, ધર્મ-

જીષ્ટ, ધર્મપતિત તથા અમાનુષિક રૂઢીનું નિક દન કરવાને જાગૃત કર્યા છે, જ**ાતાં હુન્** ઘણા રાજયકર્ત્તાઓ આ દુષ્ટ રિવાજને છાેડી દેવાને વહેમ અને ધર્મના આંદાેલનમાં ત્રિશ'કુની ગતિમાં રહેલા છે. રાજયકર્તી કાેમ જોકે માંસાઢારી છે, પણ તેઓ આવા વહેમી વિચારાથી પશુદ્ધિસા કરનારી નથી. રાજયનીતિનું શિક્ષણ સ્પષ્ટ શખ્દામાં કહે છે કે રાજાએ સખળના જુલમથી નિર્ખળનું હુમેશાં રક્ષણ કરવું જોઇએ. આ રાજયધર્મ પણ કેટલાક રાજાઓ પાળતા જણાતા નથી. આમાં અમે તેઓના વિશેષ દેાષ કહાડ-વાને પગભર થતા નથી, કારણકે પ્રજાપણ કેળવણીના અભાવે વહેમાને તજી શકી નથી, દીવાના, કારભારીએ તથા સ્વાર્થ સાંધુમ ત્રીમ ડળ પણ હાજ હા કરનાર આસ પાસ વી'ડળાએલ હાવાથી રાજ્યકર્ત્તા આ પુરાણા રિવાજને છાડવા જેટલી નેતિક હીમત અતાવી શકતા નથી. '' યથા રાજા તથા પ્રજા " એ કહેવત ઠીક છે પણ જમાનાની ખુખી એવી પણ છે કે "યથા પ્રજા તથા રાજા " એમ પણ થએલું આપણે આધુનિક કાળમાં આપણી ચક્ષુએ નિદ્વાલીએ છીએ. સુભાગ્યે શનૈ:શનૈ: પ્રજા તથા રાજમાંથી અજ્ઞાનરૂપ અ ધકાર કેળવણીરૂપ સૂર્યના પ્રકાશથી અદશ્ય થતા જાય છે અને તેથીજ આશા રખાય છે કે નજીકના ભવિષ્યમાં કુદરતે માણસાને પશુઓના જે હવાલા સાંપ્યા છે તેને અની શકતી રાહત આપવાને મનુષ્યની પક્ષપાતિ અૃદ્ધિ ટળી જઈ નિઃસ્વાર્થ અને પરાપકાર બુદ્ધિ અવશ્ય ઉદ્ભવશે વિજયાદશમીના તહેવાર ઉપર પાડાએ બકરાંએ અને ઇતર પ્રાણીઓના કુકત વહેમી વિચારાથી તથા ધર્મના જુઠા ખહાના તળે વધ કરવામાં આવે છે. તેવા વધના પાપથીજ આ પવિત્ર ભારત ભૂમિની કંગાળ સ્થિતિ થઈ પડી હેાય તે સંભવિત છે. એ નિશ્ચય છે, માટે દેશના ઉદયની તથા આખાદીની જે કાઇ હિંદીવાન અંતરમાં અભિલાષા રાખતા હૈાય તેઓએ આ થતા પશુવધના નિર્દય કામને અટકા-વવાના અવશ્ય પ્રયત્ન આદરવાની પ્રતિજ્ઞા લઇ શરૂઆત કરવી નેઇએ.

કલકત્તાની કાલીમાતાને દશરાને દિવસે અપાતા બકરાના ભાગ સુધરેલા અપાળી ઓને માથે ન ધાવાય તેવુંજ કાળું કલંક છે, અને અમાને આશ્ચર્ય થાય છે કે આવા સુધરેલા જમાનામાં આગળ વધેલા અપાળીઓ આવી રકત તૃષાતુર કાળી માતાને સંતુષ્ટ કરવા અવાચક પ્રાણીઓની નિર્દય કતલ ચલાવી અપાળી મેજાને પાપકર્મમાં ડુખાવી માતાને વિશેષ કૃષ્ણરંગી ચિતારવાની રાક્ષસી રૂઢીને હજા પણ કેમ અનુમાદતા હશે તેની સમજ પડતી નથી. આળલગ્નની તથા વિધવા પુનર્લગ્નની દયાની ખાતર હિમાયત કરનારા વિદ્વાન અપાળીઓને પામર પશુઓની દયા આવતી નથી એ કેવું શાચ નિય છે, તે અમારા વાંચકા ફિટકારથી વિચારશે. ગુજરાતના રાજયકર્તાઓ તથા મજા કાંઈક જાગી છે અને પ્રાણી રક્ષકના હિમાયતીઓ તે પ્રાણીને અભયદાન આપવાની તકલીફ લેતા રહે છે તેથી ઘણા રાજા મહારાજાઓ પ્રાણીઓની દયા ખાવા લાગ્યા છે. જેને ધાતાંબર ( મૂર્તિપુજક) કાન્ફરન્સ સ્થપાયા પછી નકામી જીવહિંસા થતી મટકાવવાના શુભ પ્રયત્ન થવા લાગ્યા છે તે જેઈ દરેક દયાળુ મનુષ્યનું અતાંકરણ વિચાર હતી મારકાવવાના શુભ પ્રયત્ન થવા લાગ્યા છે તે જેઈ દરેક દયાળુ મનુષ્યનું અતાંકરણ વિચાર હતી મારકાવવાના શુભ પ્રયત્ન થવા લાગ્યા છે તે જેઈ દરેક દયાળુ મનુષ્યનું અતાંકરણ વિચાર હતી મારકાવવાના સામ પ્રયત્ન થવા લાગ્યા છે તે જેઈ દરેક દયાળુ મનુષ્યનું અતાંકરણ વિચાર હતી મારકાવવાના શુભ પ્રયત્ન થવા લાગ્યા છે તે જેઈ દરેક દયાળુ મનુષ્યનું અતાંકરણ વિચાર હતી મારકાવવાના કામ પ્રયત્ન થવા લાગ્યા છે તે જેઈ દરેક દયાળુ મનુષ્યનું અતાંકરણ વિચાર હતા મારકાવવાના સામ પ્રયત્ન થવા લાગ્યા છે તે જેઈ દરેક દયાળુ મનુષ્યનું અતાંકરણ વિચાર મામ તાંકરણ વિચાર મામ તાંકર હતા મામ તાંકર હતા મામ તાંકર તાંક સામ તાંક સામ તાંક સામ તાંક મામ તાંક મામ તાંક સામ તાંક

મહાસાસરમાં કુળતું હશેજ. દશરાના વિજયવ'ત દિવસ સમીપમાં આવ્યા છે તેની યાદી આપી જૈન યતાંખર કેન્ફરન્સના રેસીડન્ટ જનરલ સેક્રેટરી શેઠ વીરચ'ઠ દીપચ'દ સી. આઈ. ઇ. તરફથી દેશા રાજયકર્તાઓને દશરાના તહેવાર ઉપર પશુવધ ન કરવાના વિજ્ઞાપત પત્ર પાઠવવામાં આવ્યા છે, જે જૈનકામની મુંગ! પશુઓ તરફની કેટલી કાળજ છે તે દર્શાવે છે. તેથી એ પત્ર અમે સદાખરા નીચે આપીએ છીએ જે આ પુસ્તકના ભાગ ત્રીજાના શરૂવાતમાં આવી ગઇ છે. તે વાંચી વિદિત થશે. અને પરમાતમાને પ્રાર્થના કરીએ છીએ કે અમારી જૈન સમાજના એ વયાવુદ મંત્રીના પ્રયાસ સફળ થાય અને પવિત્ર આર્યાવર્તની અહિંસા ધર્મના ઉદ્યાગની વૃદ્ધિ થાય તથા દેશીરાજાઓના મનમાં પરમાતમા સદ્યુદ્ધિ મેરી માનવકુળને ભૂષણરૂપ જે દયા તે તેઓના મનમાં ઉદ્લ-વિત કરા. આમીન.

ન**ં**. ૧૪

# જૈન વિજય.

મુ અઇ, તા. ૧૯–૯–૧૯૦૬.

### દશરાના દિવસ અને જૈનાની તે તરફ દયાની લાગણી.

જમાનાનું કે ધર્મનું વાતાવરણ ગમે તે દિશા તરફ વળેલું હાય તા પણ એ તા ઘણું ખુશી થવા જેવું છે કે કાઇ પણ ધર્મના અનુયાયીઓ દયાધર્મને સૌથી ઉચું અને ઉત્તમ સ્થાન આપતા જાય છે. આપણા દેશ આર્ય કહેવાય છે અને હજા પણ તેમાં જેઓ આર્યાન્વર્તનું જે અભિમાન દર્શાવે છે તે અમારા ધારવા અને માનવા પ્રમાણે આવી દયાધર્મની ઉત્તમ લાગણીને લઇનેજ છે. જે દેશમાં પ્રાણી માત્ર તરફ દયાની લાગણી જેવામાં પણ આવતી નથી તેને આપણે અને બીજા બધાઓ એમ એક આવાજે કહીએ છીએ કે ચુરાપ અને અમેરિકા જેવા અનાર્યદેશમાં પણ વેજીટરીઅના માટા પ્રમાણમાં વધતા જાય છે, અને જેમ જેમ તે વિશેષ વિશેષ સમજતા થશે તેમ તેમ તેઓ પ્રાણીપર પાતાની લાગણી એક સરખી દર્શાવ્યા વગ<sup>ા</sup> રહેશે નહીં. બધા ધર્મમાં એ ફરમાન છે. એટલું જ નહિ પણ જેઓ જડવ દિ કહેવાય છે. અને ધર્મ કે ઇશ્વર કાંઈ પણ માનતા નથી તેઓ એમ જરૂર કહેશે કે પ્રાણીમાત્રપર દયા એ એક ઉત્તમ નીતિ છે, જડવાદિઓ નીતિને માન આપનારા છે અને તેમાં પ્રાણીમાત્ર તરફ દયા એ એક ઉત્તમ નીતિ તેઓ માને છે. આ પ્રમાણે દયા એ દરેક સમજી અને વિચાર કરનારા માણસના હાડમાંના એક ઉત્તમ રાણ અને સિઢાંત છે.

આમ છે છતાં ધર્મના નામે ઓછી હિ'સા થાય છે એમ નથી. કેટલાએક માંસગૃધ્ધી લેકિની ક્ષુદ્ર લાલસાને લીધે કેટલાએક લાળા લાકાને એ લાકાએ ધર્મને નામે હિ'સા કરવાને પ્રેયાં છે. અને એવી રીતે કેટલીક વખતે માતાએ કે હલકા દેવ દેવીએ။ આગળ

ખિચારાં મુ'ગા અને નિરપરાધી પ્રાણીઓને વિનાકારણ હલાલ કરી નાંખવામાં આવે છે. સુસલમાની રાજયમાં જયારે લાેકાને પાતાની માલમતાની રક્ષણની ભારે ફિકર લાગી હતી. ત્યારે ધર્મના નામે અને જુલમમાંથી કે રાેગામાંથી અચવાને માટે ખેડી આશાઓ આપી સ્વાથી ધર્મગુરૂઓ તરફથી આવી રીતે માંસ ચડાવવાની પ્રવૃત્તિ ચાલુ થઈ હાય તાે તે સ'ભવિત છે.

દશરાના દિવસે પણ એજ રીત મુજબ કેાબુજાણે કેવા હેતુથી બિચારાં નિરપરાધી પંચે કિ અને ઉપયોગી પાડા જેવા પ્રાણીઓના વધ કરવામાં આવે છે. એક નિરપરાધી માણસને કાઈ વિનાકારણ શકતી ચલાવી મારી નાખવાને કાઈ રીતે હકદાર નથી. અને તેલું અપકૃત્ય જે કાઈ કરે છે તો તે ફાંસીની સજાના ગુન્હેગાર ગણાય છે ત્યારે સરખા આતમા ધરાવનાર બિચારા અબાલ પ'ચે કી તીર્યંચ પ્રાણીની ક્રરીયાદ કાઇ ન સાંભળે, તેની વડીલાત કાઇ ન કરે અને કેવળ નિર્દાષ જવને પાતાના અળના ગેર ઉપયોગ કરી મારી નાખવામાં આવે એ શું માણસ જાતને માટે એાલું ખેદકારક છે!

પાડાના વધ કરવામાં અધ શ્રદ્ધાળુ ગમે તે ધર્મનું ખાનું કાઢવામાં આવતું દ્વાય તો પણ તેથી તે નિર્દેષ પાણીની લાગણી અતીશે દુઃખાય છે એમ જેઓ સમજ શકે છે તેઓ એમ કદી પણ નહીં કહે કે એ ધર્મનું ક્રરમાન કાઇ કાળે હાઈ શકે! કાઇપણ જીવની લેશમાત્ર લાગણી દુઃખાય તેને ને ધર્મ કહેવાતા હાય તા અત્યારે કુદરતી રીતે અને શાસ્ત્રના આધારે જેને ધર્મના ક્રમાના કહેવાય છે તે ખધા નુઠાં હાવા નેઇએ અને ને તેમ નથી તા પછી કાઇપણ રીતે પારકાના આત્માને દુભાવવા તે એક માટા પાપનું અને અધર્મનું કૃત્ય છે એમ વગર વિલ'એ ક્ષ્યુલ કરવું પડશે.

 તથી મળવા એઇએ એંડહુ પણ ને સમજતા હાય તો આ દેશ આવી છેક અધમ-સ્થીતિએ પહોંચ્યા ન હાત! અમે એમ નથી કહેતા કે તમે દેવીને માના નહિ, તમે તેના ખુશીથી ગુણુંગાન કરા, તેના પગમાં પડા, અને તેની આશિષ માગા, પણ તે એટ-લેથી તમારી માતાએ પ્રયત્ન થતી નહિ હાય તો તે માતા પ્રાણીના લાગ લેતાં કાઇ-દિવસ તમારા પાતાનાજ લાગ લઇ જશે એમ તમને કેમ ડર લાગતા નથી ?

અમને વિશેષ અજ્યળીતો એ ઉપરથી લાગે છે કે આપણા માનવ'તા ગોંડળ, જમનનગર વિગેરના મહારાજાઓએ એ દુષ્ટ રિવાજ અંદ કરવાથી કયા ઉપર એ ભાગની તૃષ્ણાવાળી માતાએ કાપ કીધા ? એવા દાખલા કાઇ અંધ શ્રદ્ધાળુ હાલ અતાવશે, અને જ્યારે તેવું નથી ત્યારે બિચારા પાડા જેવા પ'એ'દ્રિ નિર્દોષી જીવને અચાવવાનું પુન્યકરી સ્વર્ગના માર્ગ લેવાની તમને કેમ બુદ્ધિ સુઝતી નથી ? પરમાતમા અને એ તમારી માતા તમને સદ્યુદ્ધિ સુજાઢ અને પાડાને મારી તમે ઘાર નર્કમાં જતાં અચી જતાં અટકા એવી અમારી તમારા તરફ કર્ણા જનક આશીય છે.

આપણા જૈન ધર્મના શાસ્ત્રમાં દશરાનું પર્વ હાય એમ અમારા જાણવામાં નથી અને આપણા જૈન ભાઇઓ કે જેઓ બધા જીવા તરફ એક સરખી દયાની લાગણી ધરાવે છે. તેઓ માતાને ભાગ આપવાના ખાટા રિવાજમાં કદીપણ સામેળ થાય કે તેને લેશ માત્ર અનુમાદન આપે એમ માનવું એ એક તદન ભુલ ભરેલું છે. તા પણ આપણા ભાઇ એને પણ સંસર્ગને લઇને લડાઇઓ કરવામાં અને હિંસાને ઉત્તેજન મળે તેવી રીતે તે દિવસ પસાર કરવાને કાંઇક ચડસ લાગ્યા હાય છે. એમ દક્ષિણ તરફના ભાગમાં અમાએ અનુભવ્યું છે. તે દિવસે ગાડીઓની, ઘાડાઓની, અને અળદની દાડધામ કરી મુકે છે બિચારાં મુંગા પ્રાણીઓને પાતાની રમત ખાતર માર મારવામાં આવે છે એ અજ્ઞાનતાને લીધે અમા ઘણાજ ખેદ પ્રદર્શિત કરીએ છીએ. અને આવા પર્વમાં ભાગ નહિ લે તો એટલુંજ નહિ પણ આપણાથી જયાં સુધી એ બિચારા જવાની સર્વારા લાગી શકાય ત્યાં સુધી આપણે એ દિવસ આપણામાટે માટા શાકના કારણરૂપ ગણવા બેઇએ.

જે દેશી મહારાજાઓએ આવી રીતે થતા નિર્દોષ પાડાના વધ દૂર કરવાને સ્તુતિપાત્ર કરાવ કરી પાતાની કરજ બજાવવા ઉપરાંત આપણાપર ઉપકારની લાગણી દર્શાવી છે, તેઓને અમા અંતઃકરણ પૂર્વક ધન્યવાદ આપીએ છીએ અને આપણી માયાળુ બ્રીટીશ સરકારને અને બીજા દેશી રાજાઓને નસતા ભરેલી અરજ ગુજારીએ છીએ કે તેઓ પણ એ પ્રમાણે ઠરાવ કરી બિચારાં પ્રાણીઓના જીવ હાંસલ કરી અમારાપર માટા ઉપકાર કરશે. પરમાતમા ધર્મને નામે આવી હિસા કરનારા અધ શ્રદ્ધાળુ જીવને સદ્દ્યુદ્ધિ આપા.

1. 48 J. Charles 1994

#### નં. ૧૫

## ધી ઈન્ડીયન એડવર ટાઇઝર.

અમદાવાદ, તા. ૨૨–૯–૧૯૦૬.

દેશી રાજ્યાને દશરાના પવિત્ર તહેવાર હિંદુ લાેકામાં દશરાના દિવસને એક માેટા તહેવાર ગણવામાં આવે છે. તે પવિત્ર દિવસને સૌ આનંદસહ ગાળવાને તલ્પી રહેલા હાય છે. પર'તુ તે દિવસે પ્રાણીયાનાં જીવ ઘણાંજ ગલરાયલા હાય છે. કુદરતે એક નાનામાં નાના જીવથી તે માટામાં માટા સર્વ જીવાને સરખી ખક્ષીસા આપેલી છે. છતાં દશરાના જેવા પવિત્ર દિવસે ધર્મને ખહાને બકરાં, પાડા જેવાનાં વધ થતા હાવાથી પ્રાણીયા ઉદાસીન રહે છે, ધર્મને ખઢાને માટાં પ્રાણીઓનાં રૂધિર વિનાકારણે દેવા આગળ લહેવરાવવામાં આવે છે. તે ત્રાસ જનક વાત સાંભળી કયા વિચારવંત જનનું હૃદય નહિ પીગળે. અક્શાસ ? અફરોાસ ? શું ધર્મ જે દુર્ગતિમાં પડતા અટકનાર છે ધર્મનાં કાર્યજ અધાગતિમાં લઇ જવાનાં દરવાજા ખુલ્લા મુકે ? કેટલાંક દેશી રાજયામાં આશા શુદી ૮ તથા આશા શુદી ૧૦ નાં રાજ પ્લેગ, કાલેરા, શીતલા, વિગેરે દુષ્ટ ખીમારીયા આવે નહીં તેથી દેવીને સંતુષ્ટ કરવા આવા નિરપરાધી અવાચક મુંગા પ્રાણીયાના વધ કરવા એ શું ન્યાય ? શું આથી પરમેશ્વર રાજી થશે. જરા નહિ. આજે આપણે થાડા વખતથી દશરા જેવા પવિત્ર તહેવારાએ મુ'ગા પ્રાણીઓનાં વધ થતાં સાંભળીએ છીએ, પરંતુ તેથી જરા પણ આક્તા દ્ભર થઈ સાંભળી છે ? હમેશાં વધતીને વધતી આકૃતા આવતી એઇએ છીએ ત્યારે એનું શું કારણ કહું ? કહીશ કે અવાચક પ્રાણીયાના વધજ છે. રાજાથી ૨'ક સુધી સર્વને પાતાનાં પૂર્વ જન્મના કર્માનુસાર સુખદુ:ખ લાેગવવું પડે છે ને જે આફતાે આવે છે તે મનુષ્યાેનાં પાપાની શીક્ષાજ છે. પ્રાણીયાને મારવામાં પુષ્ય દ્વાય તે " અહિંસા પરમા ધર્મઃ " એ સૂત્ર કેવી રીતે આર્યધર્મમાં ઉત્કષ્ટ **પદ પામ્યું. કેટલાંક ભાેળા અંધ શ્રદ્ધા**ળુ મનુષ્યા કહે છે કે માતાનું કરાડું છે, તા નહિ કરાએ તા માતાને કુકું પડશે. અરે જે માતા તમે મહા દ્વાળુ, ભકત વત્સલ, આખી સૃષ્ટિની જનેતાં રૂપ માના છા તે પાતાનાં એક આળકનાં રૂધિર પાનથી સંતુષ્ટ થશે ? તમે તે માતાને તમારા ધર્મને આખા આર્યા વર્તને આવા દુષ્ટ કર્મથી કલક લગાડા છા.

કેટલાંક રાજ્યામાં "જૈન કાેન્ફરન્સની " વખતા વખત અરજઐાથી આવા **હુષ્ટ** રીવાજો બ'ધ થયેલા છે. ત્યાં શું તેથી દેવ, દેવીએાએ અસ'તુષ્ટ થઈ આક્તામાં ગરક કરેલ છે ?

આવા નિરપરાધી મુંગા ઉપયોગી પ્રાણીયાને વિના કારણે મારી નાંખવાનાં રિવાન્જથી રાજા, મહારાજાને ગાણાદ્મણ પ્રતિપાલ-નિરાશ્રીતાધાર-પ્રજાપાલક-ત્યાય-દયા-ક્ષમા વિગેરે વિગેર " ઇલ્કાંબા આર્ય તનુંજામારકતે માતાએ માકલ્યા હશે ? આગળ શું આવા રિવાજ હતા ? પુરાણા તપાસતાં આવા દાખલા કાઇ મળી આવતા નથી. પશુવધ એ

શાસ્ત્ર રીતિ નથી. હુમા રાજા મહારાજાઓને વિનંતી કરી શું કે હિંદુઓનાં તહેવારાના. દિવસે પશુવધ કરનારી સલાહ આપનાર શાસી પાસે આર્થમાતા તરફથી મળેલા ઈલકા-એાના અર્થ કરાવવા !

હિંદુ રાજાએ એકદમ આવા રિવાજને દેશવટા આપી મુ'ગા અવાચક પ્રાણીયાનાં. જીવ ઉગારી સનાતન આર્યધર્મની રક્ષા કરશેજ ? એવું ધારી અમને આ પ્રસ'ગે અ. લખવાની જરૂર જણાય છે. આમીન.

નં. ૧૬

## ધી કાેરાેનેશન એડવર ટાઈઝર.

તા ૨૮-૧٠-૧૯૦૬.

## દશરાને ુૈદિવસે દેશી રાજ્યામાં થતા પશુવધ.

દર વર્ષે દશરાના માંગલિક તહેવારા નજી દીક આવતાં કેટલાક દેશી રાજ્યામાં ધર્મને ખહાને દશરાના માંગલિક દિવસ ઉપર બકરાં, પાડા તથા બીજ મુંગા અને નિર્દેષ જાનવરાના થતા વધના અટકાવ વિષે દેશી રાજાઓની જાહેરમાં અરજ કરવામાં આવે છે જે ઉપરથી કેટલાક દેશી રાજાઓએ પાતાના ગજ્યામાંથી એ ઘાતકી રસમ દૂર કરી મુંગા અને નિર્દોષ જાનવરાના થતા વધને અટકાવ્યા છે. પરંતુ હજુ કેટલાંક રાજ્યામાં તેવા રિવાજ નાખુદ થયા નથી તેવાં રાજ્યાને દશરાના માંગલીક તહેવારા આ વરસ પણ પાસે આવતા હાવાથી કેળવાયલા દેશી રાજાઓએ અસલી વહેમથી ચાલતા આવતા રિવાજ દ્વર કરવા જાહેર વર્તમાન પત્રાની અરજ ઉપર ધ્યાન આપી તેઓ પાતાના રાજ્યામાં ધર્મને બહાને મુંગા અને નિર્દોષ પાણીઓના થતા વધને અટકાવી તે રિવાજ નાખુદ કરશે એમ ઇચ્છીએ છીએ.

#### નં. ૧૭

#### ADVOCATE OF INDIA.

Bombay. Date. 28-9-1906.

The "Hindoo Patriot" has the following on the subject of the sacrifice of animals.

A very timely appeal has been issued by the Bombay Jain Swetamber Conference to Hindoo ruling chiefs on the Subject of animal sacrifices. The appeal is to forbid the killing of any animals during the "Pujahs." We trust the appeal in the name of religion and humanity will have its due effect. In Bengal at least, the practice of sacrificing animals on religious

occasions is slowly dying out. Still in important temples a fearful number of animals is sacrified all thraugh the year. The priestly classes ought to condemn the barbarous and inhuman practice, which has crept into Hindu religious ceremonies along with many other evils scarcely less gross and offensive to the senses as well as to religious feelings. The very idea of winning the favour of the Most High by killing before Him and in His name His own creatures, is so preposterous that it is a wonder that the poactice has not altogether ceased in these days of advanced education and diffused shastraie knowledge. There ought to be an agitation set on foot by the educated public to bring the intensely conservative pandit and priestly classes to their senses and effect the abolition of the cruel, loathsome and sinful practice.

#### નં. ૧૮

#### THE RAGOON GAZETTE.

Date. 27-9- 906.

#### Animal sacrifices in India.

The jain conference has addressed an appeal to Hindoo chiefs to abstain from the offering af animal sacrifice. The appeal says:—

As heard by us, offerings in the shape of male buffaloes and goats are offered to please and satisfy the goddess on the sacred and religious Dashera holidays in your Highness' territory may not suffer from plague, cholera, smallpox and other kindred terrible curses on man. to submit that notwithstanding the annual recurring offerings to the goddes these terrible visitants are only the punishment of the wicked actions of humanity. Can it be called just and fair to offer dumb, inno-cent, pitiable animals to escape these? Can the Almighty be pleased in this way? The British dominious also are visited by the same terrific curses which disappear in due course of nature, but no such sacrifices are ever offered for the pacification of these curses in British terrirories. Only sanitary measures are adopted for the pacification of these visitants. Animal offerings are not scientific or according to scriptures, which decision has very often been arrived at and testified to by able and lerned pandits and some humam rulers following true scriptures have secured the blessings of these dumb creatures by totally prohibiting such sacrifices if their territories. We request your highness who is kind hearted, intellectual and a yover of justice, to forbid the killing of any animals on the Dashera holidays and thereby protect the "Dharma".

[ 42]

#### નં. ૧૯

#### THE HINDOO PATRIOT.

Culcutta, Dated. 24-9-1906.

A very timely appeal has been issued by the Bombay Jain Swetamber Conference to Hindoo ruling Chiefs on the subject of animal sacrifices. The appeal is to forbid the killing of any animals during the pujahs. We trust the appeal in the name of religion and humanity will have its due effect. In Bengal at least, the practice of sacrificing animals on religious occasions is slowly dying out. Still in important temples a fearful number of animals is sacrificed all through the year. The priestly classes ought to condemn the barbarous and inhuman practice which has crept into Hindoo religious ceremonies along with many other evils scarcely less gross and offensive to the senses as well as to religious feeling. The very idea of winning the favour of the Most High by Killing before Him and in His Name His own creatures, is so preposterous that it is a wonder that the practice has not altogether ceased in these days of advanced education and diffused shastraic knowledge. There ought to be an agitation set on foot by the educated public to bring the intensely conservative pandit and priestly classes to their senses and effect the abolition of the cruel, loathsome and sinful practice.

#### નં. ૨૦

#### PUNJAB TIMES.

Rawalpindi, Dated-21-9-1906.

#### A REFINED DUSSERAH.

Dusserah and Holi are equally important Hindoo holidays when the festivities are always in their full swing. People had come to degrade the very morality of these events, and the curse had extended to such a degree that a reform was more than necessary. On the occasion of a Dasserah or a Holi, you would see the majorities of the public maddened with enthusiasm and carrying on their enjoyments to the extent af shameful immoderation in all conceiveable directions. Money on such occasions is spent lavishly and the major portion of it goes towards the so called enjoyments in the form of dances and drink. The after effects of all this are in serveral cases the abominable contagion contracted at an opportune moment but which results into a sad predicament. In fact the things had gone so bad and the pinch of immoralily had grown so high that many a respectable family had to undergo untoward circumtances as a sequel to the demoralised way of pleasure making.

#### 1 33 }

We are however glad to notice in this connection that a daparture for the good has been made at Rawalpindi and would like the other big towns to follow the example. It appears that Lala Uttamchand who is by the way, a young man of much public spirit and actions, unheeded by the opposition offered to him, has given a particularly reformed form to the festivities of Dusserah which will be followed year after year and would no doubt impart a very healthy form to the occasion.

In brief a coming feature for this year and the years to follow has been given the form of a tournament of sport for all comers which evidently means a most useful occupation of the time for young folks and a regular treat for onlooker. Just compare the significance of this event with the immoderate and immortal bearing of the Dasserah festivities, in common and you would at once realise the change for the good. We would publish the result of the events hereafter which consist of cricket and football competitions, Tug-of-war, Kabbadi, 100 yards race, quarter-mile race, long and high jumps, putting the weight, sack and three legged races and the Blindman's buff.

The competing teams for the cricket play in the following order.

24th September, S. N. Government High School, versus, D. A. V.

High School (a).

25th September, Winners of (a) versus, U. S. Mission High School.

#### **ન**ં. ૨૧

#### JUBBULPORE POST.

Dt. 21-9-1906.

The Jain "Swetamber Conference" has sent us a Copy of a appeal addressed to Hindoo Chiefs, begging them to stop animal Sacrifices in their territories on the Sacred day of Dasra. The object of these Sacrificies is to keep away plague, Cholera and small-pox and the Conference point to the fact that these Visitations occur notwithstanding the Slaughter that takes place for the propitiation of the goddess and suggests, with good reason that, the Sanitary Measures adopted in British territory may be followed with better results. The appeal is a reasonable one and we hope it will have the desired effect.



